श्रीमान् हरिभद्रसूरिकृत पंचाशक तथा षोडशकाधारे

शुद्ध देव गुरु धर्मनी सेवा–उपासना विधि

अने

श्रीचैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह भाग बीजो

तत्वजिज्ञासु तथा विधिरसिक भव्यजनाना हित माटे

लेखक अने योजक

सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री श्री १००८ श्री कर्पूरविजयजी

तपगच्छना पुज्यपाद गुरुणीजी महाराज श्री श्री १००८ श्री

मगनश्रीजी मानश्रीजीना सदुपदेशथी

श्री पुना निवासी शा. भगवानजी भीमाजीनी विधवा भार्या भागुबाईना स्मरणार्थ एमना नन्दीनीपुत्री चंपाबाई तरफथी

साधु साध्वीने तथा जाहेर संस्थाने भेट

छपावी प्रसिद्ध करनार

शा शिवनाथ लुंबाजी–जैन पुस्तकालय

(१) वेताळ पेठ नंबर ४९–पुना सिटी

(२) मुकाम जावाळ–जिल्हा सीरोही–देश मारवाड

आवृत्ति पहेली–प्रत १०००

संवत १९७३–वीर संवत २४४३–सन १९१७ शके १८३८

किंमत ८ आना

* पुस्तक भेट अथवा किंमतथी मंगावनारे पृष्ठ २ उपर लखेली सुचना वांची पछी मंगाववी.

पुस्तक भेट मगावनारने सुचना

१ कोइ पण साधु साध्वीने पुस्तकनो खप हो, तेने प्रसिद्ध कर्त्ता पासेथी पोष्ट तथा पेकींग खर्च वास्ते त्रण आनानी टीकीटो मोकली मगावी लेवु

२ कोइ साधु साध्वीने भेट तरीके एक नकल मळसे एकथी वधारे मगावनारे पुस्तकनी कीमत अने पोष्ट पेकींग खर्च मोकली मगाववु.

३ साधु साध्वीए पोताना समुदायनु (संघाडानु) तेमज पोताना वडेरा गुरुनु नाम पुस्तक मगावती वखते अवश्य लखवु. अने एक नकलथी वधारे नकल भेट तरीके कोइये मगाववी नही

४ अमने खात्री पडया वगर भेट तरीके पुस्तक मोकलाशे नही

५ भेट पुस्तक मगावनारे पोष्ट पेकींग खर्चनी टीकीटो अगाउ मोकलवी पत्रना वास्ते वी० पी० करवामा आवशे नही.

६ पोतानु चोक्स सरनामु नाम गाम पोस्ट जिल्हा विगेरे शुद्ध शाही अथवा गुजराती लीपीमां लखवु

७ जुवाप मगावनारे साथे टीकीट अथवा रीपलाय कार्ड मोकलवु. ते शिवाय कोइने जुवाप आपवामा आवशे नही

शिवनाथ लुवाजी

वेताळपेठ नबर ४९ पुना सिटी

अमदावाद—ढींकवा गेट पास आवेला शान्तिविजय प्रिन्टिंग प्रेसमा
इश्वरलाल केशवलाल वकील अने माणेकलाल माधवजीए छाप्यु

प्रस्तावना

शास्त्रकार कहे छे के विधि पक्षनु आराधन करनार, तेनु बहुमान करनार, तेनु पोषण करनार अने छेवटे तेनी निंदाथी अलगा रहेनार पण धन्य छे अन्न पण पथ्य, मात्रादिक विधि सहित खाधु छतुं जीवाडे छे अन्यथा ते मृत्यु नीपजावे छे, तो पछी शुद्ध देव गुरु धर्मनी उपासना करवामा योग्य विधिनो आदर करवानी केटली बधी जरुर छे ? अने तेनो अनादर करवाथी केटली बधी हानि थाय छे ? ते स्पष्ट रीते शास्त्रकार हेतु युक्तिसर बतावी आपे छे आज काल गतानुगतिकता घणी वधी पडी छे.। "आनंदघनजी" जेवा समर्थ अध्यात्म वेदी पुरुषो कहेछे के "सुगम सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप," तेमज "दर्शन दुर्लभ सुलभ कृपा थकी" "सामान्ये करी दरशन दोहेलु, निर्णय सकल विशेष," "घाति डुंगर आडा अति घणा, तुम दर्शन जगनाथ, धिट्ठाई करी मारग संचरु, सेंगु कोइ न साथ." ईत्यादिक वचनोथी शुद्ध देव गुरु धर्म-उपासनानी दुर्लभता स्पष्ट जणाय छे. जेवी रीते विद्या साधवामा विद्या साधक प्रमाद रहित प्रवर्ते छे तेम भव्यात्माए शुद्ध तत्वनी उपासना विधिमा तत्पर रहेवु जोइए आवा शुभ आशयथीज श्रीमान् हरिभद्र सूरीश्वरे पचाशकोमां तथा षोडशकोमा उपासना विधि विस्तारथी दर्शावेल छे ते भव्यात्माओने लक्षगत थाय एवा हेतुथी ते अत्र संग्रहवामां आवेल छे पचम षोडशकमां लोकोत्तर तत्त्व या परमार्थ पदनी प्राप्ति क्यारे थई शके छे ? ते चर्चवामां आवेल छे त्यार।पछी नवमा षोडशकमां देववदनादिक प्रसंगे स्तुति, स्तोत्र, स्तवनादिक कहेवामां आवे छे ते केवा होवा जोइए ? ते स-

मजावबामां आवेल छे आज काल सोता शास्त्रीनी जेम अर्थ शून्य या विचार शून्यपणे करणी बहुधा करवामां आवे छे तेमा गुरुगम मेळवी सर्वी जीवोए सुधारो करवो जोइए तेमज प्रभू पूजा प्रसंगे थता अनिवार्य आरंभ माटे केटलाक मुग्धजनो शंका उठावे छे तेनु पण आमा समाधान दृष्टान्त सह करवामा आवेल छे तद उपरान्त अनुष्ठानना भेदादिक प्रश्नोत्तर रुपे समजाववामा आवेल छे. एकंदर जो आ लघु ग्रथनु वाचन मनन यथार्थ रीते करी ते मुजब विवेकथी वर्तन करवामा आवशे तो विधि बहुमानथी देवगुरुनी आज्ञानु आराधन थई शकशे. प्रसंगोपात जे कंइ उपयोगी सूचनाओ करवामा आवी छे ते उपर भव्यात्माओ लक्ष आपी पोतानी थती भूलोने सुधारी विधिना रसपी थइ अन्य जनोने पण विधि मार्गमा जोडवा बनतो प्रयास सेवशे दरेक पचांगनी शरुआतमाज संक्षिप्त प्रस्तावना लखेली होवाथी ते त्यांथीज जोइ लइ उचित आचरण सेववा भलामण करी अत्र विरमवामा आवे छे

वळी आ पुस्तकना त्रीजा विभागमा उपयोगी पद्यो जेवाके चैत्यवदनो, स्तुतिओ, स्तवनो, छंदो, लावणीओ विगेरे अनेक विषयो छापेल तथा लखेल ग्रथमाथी चुटी काढी संग्रह करी तेनु यथामति संशोधन करी आ पुस्तकमा दाखल करेल छे ते सघळु भक्तिरागी जनोने जिनमंदिरादिकमा तथा सामायक पौषधादिकमा हमेशाना स्वाभ्यणना निमित्ते उपयोगी थाय अने भक्तिमां लयलीन बनवा निमित्त रुप थाय एवी भलामण करी अत्र विरमवामा आवे छे इति शम्

संवत १९७३ पोष सुद १५ सोमवार, तारिख ८ जानेवारी सन १९१७	लेखक सद्गुणानु रागी कर्पूर विजयजी पालीताणा (सिद्धक्षेत्र)

बे बोल

हालना वखतमा पुस्तको प्रसिद्ध करवानो प्रचार दीवसे दी-वसे वधतो जाय छे. अने तेथी घणा लोकोने ज्ञाननो बोध थाय छे पण घणा भागे पुस्तको गुजराती टाइपमां प्रसिद्ध थाय छे तेथी मारवाड, मेवाड, पंजाब, माळवा, दक्षिण महाराष्ट्र विगेरे देशोमा जेओ गुजराती लीपीना जाणकार न होय तेवा लोकोने सदर पुस्तको उपयोगी थता नथी ए कारणथी अमारा तरफथी अत्यार पहेला "चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह भाग पहेलो १ अने श्री शत्रुंजय महातिर्थादि यात्रा विचार २ अने संगीत रचनावली ३ अने गहुली संग्रह ४ ए प्रमाणे च्यार पुस्तको शास्त्री टाइपमा प्रसिद्ध थयेला छे ते पुस्तको ते ते देशोमा विशेष उपयोगी थयेल होवाथी आ पुस्तक प्रसिद्ध करवा विचार थयो.

आपणा पूर्वाचार्योए परोपकार अर्थे अनेक ग्रंथो रचेला छे पण ते संस्कृत तथा मागधी भाषामां रचेला होवाथी तेवा ग्रंथो बाळजी-वोने समजवा मुश्केल पडे छे विद्वान मुनिराजो तेवा ग्रंथोनु रहस्य समजावे त्यारे ते समजी शकाय छे तेना पण घणे ठेकाने विद्वान मुनिराजोनो योग मळवो मुश्केल छे, अने ज्या योग होय त्या घणा एक जीवो संसारीक उपाधीने लीधे एवा माहात्माओनी वाणीनो लाभ लेई शकता नथी एवा अनेक कारणोथी हालना जमानामा कोई कोइ मुनिमहाराजाओ आवा संस्कृत ग्रंथोनु भाषांतर अथवा रहस्य संक्षेपमा लखी तेमज जमानाने अनुसारे नवा लेखो लखी ते

कोई कोइ सस्था मडळ द्वारा पुस्तकरूपे प्रसिद्ध करावे छे जे ठेकाणे मुनिराजनो योग न होय तथा ससारिक उपाधीने लीधे तेवो योग छता पण लाभ न लई शकातो होय एवा गृहस्थोने आवां पुस्तको पोताने घेर बेठा पण हमेशा काळजी पूर्वक वाचवानी टेव राखवाथी ठीक लाभ थवा सभव छे नकामां नोवेलो अथवा वार्ताओ विगेरे वाचवाथी विवेक प्राप्त थतो नथी परतु आवा बोधदायक पुस्तको वाचवाथी विवेक प्रगट थइ शके छे अने विवेक प्रगट थवाथी योग्या योग्य तथा हिता हितनो विचार करवानी शक्ति प्राप्त थाय छे अने तेवी शक्ति प्राप्त थये पोताना आत्मानु कल्याण करवानो खरो मार्ग कयो ते तरफ मनुष्यनु लक्ष दोराय छे. सवब आवा पुस्तको वाचवानी अने ते प्रमाणे विवेक (उपयोग) राखवानी जरूर होवाथी तेम करवा सहुने नम्र विनती छे

शातमूर्त्ति मुनिराज श्री वृद्धिचद्रजीना शिष्य सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री कपूरविजयजी माहाराज साहेब पोतानो अमूल्य वखत रोकी परोपकारार्थे पूर्वाचार्योना बनावेला ग्रथोने अनुसरी सहेली भाषामा ते ते ग्रथनो भावार्थ लखी जाहेर सस्था पासे प्रसिद्ध करायवा प्रयत्न करे छे ते वावत उक्त महाराजश्रीनो उपकार मानीये एटलो ओछो छे अने पण ए रीते उपकृत थया छीये.

वली आ पुस्तकमा आवेला चैत्यवदन, स्तुति, स्तवन, छद विगेरेना बधा फारमो छपाया पछी उक्त मुनिमाहाराजे पोते तपासी जे जे भुलो काहाडी आपी एनु शुद्धिपत्रक छपावी आ साथे जोडेलु छे ते शुद्धिपत्रक प्रमाणे प्रथम पुस्तक सुधारी पछी पुस्तकनो उप-

योग करवा सज्जनोने विनती छे जे अशुद्धी रहेली छे तेनो अथवा हवे पछी जे कोइ मालम पडशे तेनो सुधारो बीजी आद्रतिना वखते करवामां आवशे.

सद्‌गुणानुरागी मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी माहाराज साहेबे आ पुस्तकनु काम चालतां पत्र व्यवहारथी वखतो वखत जे सलाह आपी छे तेमज पुस्तक तैयार थया पछी सपूर्ण वाची शुद्धिपत्रक तैयार करी आपवाना पोताना अमुल्य वखत रोकीने जे मदद आपी छे ते बाबत उक्त माहाराज श्रीजीनो उपकार मानवामां आवे छे

आ पुस्तकना शुद्धिपत्रक थयु ते शिवाय बीजी कोइ भुलो रहेली कोइ पण मुनिराजने अथवा विद्वान वगेरे जाणवामा आवे तो अमोने लखी जणाववा कृपा करशे, जेथी तेमनो उपकार मानी ते भुलोने सुधारी लेवा बीजी आद्रतिना वखते अवश्य उपयोग करवामां आवशे

आ पुस्तकमां आवेला कोइ कोइ पदारथ विषयो आज सुधी बीलकुल छपायेला जोवामा आवता नथी एवा विषयो लखेला पाना उपरथी लीधा छे पण मुल पानामा जे थाइ अशुद्धि हती ते बाबत तेना कोइ कोइ ठेकाने सुधारो करवा सरखो मालम पडयो ते ठेकाने सुधारो कर्यो छे अने कोइ कोइ ठेकाने बीजी प्रतनु साधन न मलवाथी सुधारवानु बनी शक्यु नथी तेथी कोइ कोइ ठेकाणे अशुद्धि रही हशे अने प्रेस दोषथी पण कोइ कोइ ठेकाणे भुलो रहेली हशे ते गुणग्राह्य सुधारी लेइ वाचना भणवा विनति कराय छे.

आ पुस्तकमाना कोइ कोइ स्तवनो चैयवंदनो स्तुतिओ आने एवी कोइ पण पुस्तकमां छपायला जोवामां आवता नथी, तेथीज बीजा कोइ पासे पण एवा विषयो छपायला न होय अने प्रसिद्ध करवानी इच्छा होय तो अमारी तरफ मोकलवाथी ते प्रसिद्ध करवामा आवशे

हाल्मां अमारो प्रण वरसथी मारवाड देशना सीरोही जिल्हाना जावाळ गाममां रहेवानो प्रसंग होवाथी ते गाममां हाल ७–८ वर्षथी वृद्धावस्थाने लइने आवि न देरासरना नजीक कायम रहेला गुरुणीजी महाराज श्री मगनश्रीजी ३५ थी वधारे वर्षना दीक्षीतने तेमने तथा तेमना शिष्या मानश्रीजी रुपश्रीजी विगेरे आ पुस्तक छपावना प्रेरणा करवाथी पुना निवासी शा भगवानजी भीमाजीनी विधवा भार्या भागुबाईना स्मरणार्थे एमना मर्व्हीनी पुत्री छपावाइए सदर भागुबाइना द्रव्यमाथी आ पुस्तक छपावाने मदद आपेली छे तेवीज रीते बीजा पण सद्‌गृहस्थोए आवा काममां द्रव्यनी सहाय आपवाथी आवा उपयोगी पुस्तको प्रसिद्ध करवाने उत्तेजन मळशे.

इति शुभम्

संवत १९७३	प्रसिद्ध कर्त्ता
माहा सुदी १ बुधवार	शिवनाथ लुंबाजी.
तारीख २४ जानेवारी	जैन पुस्तकालय,
सन १९१७	बेताल पेठ न. ४९ पुना सिटी.

खास सूचना

आ पुस्तकमां ह्रस्व दीर्घ अनुस्वार विगेरे साधारण भुलोनुं शुद्धिपत्रक न उतारता फक्त मोटी भुलोनु छापेलु छे ते शुद्धिपत्रक प्रमाणे प्रथम पुस्तकमां सुधारो कर्या पछी वांचवा भणवामां पुस्तकनो उपयोग करवा नम्र विनंती छे ए सिवाय जे कोई भुलो सज्जनोने जणाय ते सुधारीने वांचवा विनती छे, अने ते भुलो अमने जणाववाथी बीजी आवृत्तिना वखते ते प्रमाणे सुधारी छापवामां आवशे.

शुद्ध देव गुरु धर्मनी सेवा–उपासना विधिनु शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	लीटी.	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध.
६	१०	पण	पण	२०	११	महावीर	महावीर
८	९	यथादिक	यथादिक	२४	११	धारवाना	धारवानाना
११	६	ताव	ताप	२५	१५	शुभाशुभ	शुभाशुभ
१३	५	देखीने	दर्शीने	३७	१०	ढिकना	ढिकना
१४	६	अज्ञेय	अश्लेय	४२	१७	यथोदित	यथोचित
१७	१०	क्षमाजधैर्य	क्षमा–धैर्य	५०	१८	समधारी	समधारी
„	१८	भरम	मरम	५४	१०	येरा	येरां

पृष्ठ	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
६६	3	चारित्र	चारित्र
६०	८	विशुद्ध	विशुद्ध
६२	१३	घर्य	धर्या
६५	८	जीवे	जीवे
६७	१९	पोषनरा	पोषनारा
६८	१४	आरोपना	आरोपना
,,	१७	जणावेल्या	जणावेल्या
,,	२०	पूज	पूजा
७१	१७	विशिष्ट	विशिष्ट
,,	१२	सजीवन	सजीवन
७२	११	भावना	भावना
,,	१५	थाय	थाय
७३	४	परतु	परंतु
७४	१५	नगर	नगर
७४	१७	सेवनार	सेवनार

पृष्ठ	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
७५	१६	होवायी	होवाथी
७८	१४	यत्र	यत्र
,,	१६	अथ	अथ
७९	१२	निग्रंथ	निग्रंथ
८३	८	वळी	वळी
८३	५	शत्रुजया	शत्रुजया
८४	८	श्रवाक	श्रावक
,,	,	कोणे	कोण
८६	१८	अने	+
८६	२०	थवाना	थवाना
८७	१	तीर्थंकर	तीर्थंकर
८७	७	निवि	निविर
९३	५	रा	रा
९४	१९	मनोत्सव	मनोत्सव
९६	३	आगलनानो	आगलनानो

९६	९	सैनमक्ष	सैनमक्षमार्थी	१०९	१२	व्यर्सी	व्यस्त
९८	१८	पात्रथमा	पात्रयमा	११२	२०	णयरायिगय	जयरीगराय
९९	१	आदिनोप	अवनोप	११५	१७	अने के	छे अने
१००	११	ओ ी	ओेजी	११६	१७	यधारे	वधारे
१०१	८	उची	उभी	११७	७	गार्य	कार्य
१०३	१३	योग्य	पोग	"	२०	यत्नेन	योतन
१०५	"	मुघरी	जुघरी	११८	"	परखा	पख्खी
१०५	१५	कडर	कडर	११९	१०	नगी	नथी
१०५	१८	भेद्रा	भेगा	१२१	६	सर्न	सर्व
१०६	६	ररवी	करवी	"	१२	पुण्यतान	पुण्यवान
१०७	८	निर्वाण	निर्वाण	"	१३	फरनामा	करनामा
"	२१	वूनता	न्यूनता	१२२	२१	नहिरि,	नहि
०८	३	टुरु	गुरु	१२३	८	भांगा	मागवी
"	१२	भवनी	भवनी	१२५	१४	गिष्टाचार २	शिष्टाचार
,	१४	भर	भव	"	९	वेवार	वेपार
				१२८	२०	पुर्तेमा	रतीमा

॥ शुद्ध देव गुरु धर्मनी सेवा–उपासना विगेरे विषयानुक्रमणिका ॥

॥ श्री चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह भाग बीजानी विषयानुक्रमणीका ॥

॥ चैत्यवंदन ३५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ स्तुति (थोयो) जोडा २७ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ स्तुति (थोय) जुदी एक एक गाथा वालीधनी अनुक्रमणिका ॥

॥ स्तवनो ६० नी अनुक्रमणीका ॥

॥ मोटा स्तवनो ढालबध ५ नी अनुक्रमणीका ॥

एकदर पाच स्तवननी ढाळ ३३ तेत्रीश

॥ आत्माने उपदेश कारक न्हाना पदो १५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ वीतरागनी स्तुतिरुप न्हाना स्तवनो ३५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ छंदो ७ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ लावणी ८ नी अनुक्रमीका ॥

॥ परचुरण विषय ४ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ एकदर विषयो ॥

चैत्यवदन ३५ थोय जोडा २७ छुटी थोय ४ स्तवन ६० मोटा स्तवन ढाल वध ५ उपदेशना पद १५ न्हाना स्तवन ३५ छद ७ लावणी ८ परचुरण विषय ४ एकदर विषय २०० अने शुद्धदेव गुरुधर्मनी सेवा उपासना विधीना विषय १६ मळी कुळ विषय २१६

चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह भाग बीजानु शुद्धिपत्रक

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध	पृष्ट.	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध.
३	५	चव्या	चव्या	१५	१३	कोडी	योडी
५	५	,,	,,	१६	५	उज्जायनो	उवज्झायनो
,,	१२	,,	,,	,,	१२	कोंड	कोड
७	१७	परवडा	परवडा	,,	१७	पाये	पावे
१४	४	सुरगिर	सुरगिरि	१७	७	जे	जिन
,,	,,	विश्नद	विश्वानद	,,	१०	दीप	दीपे
,,	१०	पुन	पुन्य	१८	८	लग	लगे
,,	११	सोभद्र	सुभद्र कामुक	,,	११	मुर	मुभ
,,	१३	जेहत हे	जयंत ए	१९	९	तीथ	तीथे
,,	१६	पुड	पुन्य	२०	३	मुवाधि	सुविधि
,,	,,	हे	ए	,,	४	मधु	मभ
५	२	,,	,,	,,	१७	पाळज्यो	पाळशे
,,	९	सवि	+	,,	१८	पामस्यो	पामशे
,,	१२	जीना	+	२१	५	सुरधी	सुविधि

पृष्ट.	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध.	पृष्ट.	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२४	७	सात,	त्रिसत	४३	२	मोद	मोदन
२७	१४	श्रम	रम	,,	४	रमल	रमण
२८	१०	श्लक	श्लके	,,	८	र	रे
२९	२	पणमु	प्रणमु	४८	२	मंदिर	मदर
,,	१४	सपाति	सप्राति	,,	१४	तणा	तणी
३०	६	अधर	अधर	५०	१३	पक्षी	पखी
,,	१८	न	ने	५२	११	करो मुजने	धाउ हु
३२	१	फारी	फार	५४	९	महमूर	भरपूर
,,	३	नाथ	ताय	५५	३	ध्ययेन	ध्येयने
३३	९	भूप	चूप	५६	१८	भाग्ट	भाग्ठ
३५	९	योर	योरे	५७	६	,,	,,
३६	४	अत्रि	अव	५८	६	वेर	वेरे
,,	१०	निंश	निश	५९	२	थासु	थांसु
४२	११	मधु	मभ	,,	७	आगले	आकरो
,,	१७	स्थ	स्थ्य	,,	११	नम्प	नम्पा

५९	१२	भ	भर	७५	९	हरो	हरी
"	१८	अरिहत	अरिअत	"	१०	तिन	अर
६०	१०	आम्ला	आमला	७८	७	निर्रति	निवृत्तिने
६१	८	मपान	प्रमाण	"	"	अपवर्ति	प्रवृत्ति
६२	१	सज्जन	सजन	"	१०	सुमता	समता
"	७	साहय	साहेब	"	१२	पण	पाँच
६४	९	डवडीयो	रडवडीयो	"	१५	साह्य	सहाय
"	११	जी	+	"	१७	सेवा	सानिध्य
६९	१६	लोकके	लोकना	८१	५	उवेखी	उखेरी
७२	८	आठसु	आठगु	८२	६	वजु	वजो
"	१७	मूख	मुख	८३	४	अना	अन
७३	४	नद	नरिंद	८४	१	पजाली	प्रजाली
७५	१	कयो	थयो	"	३	जीर	जीरे
"	३	गयोर	गयोरे	"	१३	जाणे	जाणो
"	४	ते	तें	८९	१	घन	धन
"	७	हे	तुप	९०	१	सही	लही

पृ.	लीटी	अशुद्ध.	शुद्ध	पृष्ट	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध.
९१	१५	सात	वार	११५	३	शांत लतां	सांभळश
९३	,,	मव	मांव	११६	११	नारीनो	मळवानो
९८	७	मडिक	मडित	११७	१५	चसेर	वसेरे
९९	,,	सर्पिणी	स्वापिनी	,,	१७	दोढ्या	दोढ्यो
१००	३	करपो	कर्यो	११८	१२	किरयोर	किरयोरे
१०५	१८	साम्नाज	साम्राज	,,	१३	छुणोर	छुणोरे
१०९	१५	अध्यारु	अध्यारु	११९	,,	सद्दगुरु	सुद्दगुरु
११०	४	श्टि	फिट	१२३	३	लोपेर	लोपेरे
११०	९	वचण	वचन	,,	,,	मुन	मुनि
१११	१५	मत्य	मत	,,	१७	सहेजें	सहेजेंभव
१११	१६	युगत्य	युगत	१२४	७	हा	हो
११२	८	सहगुरु	सुद्दगुरु	१२७	१०	कल्पद्रम	कल्पद्रुम
११३	१	चिंतवेर	चिंतवेरे	१२८	८	धरे	घरे
११३	२	शास्त्रमां	शास्त्र में	१३२	८	मित्र	मित्रु
११४	११	नो	ते	१३३	१८	घु	घर

१३४	१२	नारीओ	नारी	१६२	१	हित्त	दित
१३७	१	वहीया	वहीयो	,,	१४	ज्ञान	मान
,,	१३	सफळ	सफल	१६३	४	दुकतु	दुकाद
१४२	१५	सोर	सोरे	,,	१२	,,	,,
[illegible]	१८	हिर	हिरे	१६४	१८	थइए	न पइए
१४७	१२	स्येर	स्येरे	१६५	१२	भेद	भेदें
,,	१६	पामशेर	पामशेरे	१६७	१३	रोष	क्रोध
१५०	१३	दातोर	दातोरे	१७१	५	आसन	आसन्न
१५२	७	योर	योरे	१७२	९	विज्ञातिम	निज्ञातिम
१५४	१८	वा, लाने	वाल्हाने	,,	१३	ओक्ति	उक्ति
१५५	८	वाणीर	वाणीरे	१७४	९	वारे	वाधे
१५८	११	यदि	स्यादि	१७७	१७	द्रत।	द्रुत
१६०	१	दंदूभीर	दुदूभीरे	,,	१८	सुरेसुरा	सुरेश्वरा
	११	योग	योगे	,,	१८	नरेस(	नरेन्द्र
	,,	भजण	भजन	१७८	१६	अरिहतं	अरिहतें
	१८	रीव	रीव	१८०	१०	दिसदिस	दसदिस्मी

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध	पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१८१	१५	जिन	जन	१९२	११	चौवीसजी	जिन चौवीसजी
१८४	११	मोहे	मोहन	१९३	५	जेहने	जेहणे
,,	१६	मासे	माहु	,,	१५	रूचि	रूद्धि
१८५	३	इम	×	१९४	११	दव	देव
,,	८	समरसी	समरसी	,,	१७	त्रिना	त्रिना
,,	१४	पार्ए	पाए	१९५	१६	धीरा	धीर
,,	,,	सरू	समरूे	,,	१७	वीरा	वीर
१८६	३	निंदा	नंदा	१९८	१८	फाति	फालि
,,	४	समुदाई	समुदाये	२००	९	लाधा	लीधा
१८७	८	मदाक्षिणा	मदक्षिणा	२०२	४	गत्त	गत
,,	१८	स्तुत	श्रुत	,,	१३	समुद्रा	समुद्रो
१८८	१६	नौध'	नौध.	२०३	४	सिद्धात	सिद्धान्त
१८९	१२	भू	भूं	२०४	७	तुरग	तुरग
१९२	३	मुदर	सुंदर	,,	८	अर्थ	अर्थमां
,,	,,	मभु	मभ	२०५	३	विगत	विगत

२०६	७	जूता	जुत्ता	२२४	६	ग्ग्त	देत
२०७	१६	तारे	त्यारे	२२५	४	आनेइ	आठोइ
२०९	१४	रसा	वखत	२२७	११	राजल	राजुल
,,	१६	ते	गये	२२९	१८	जिनदा	जिनदासके
२१४	१८	अंचरिच	अचरिज	२३०	१५	मरी	मेरी
२१५	१३	वहेरन	वेहरन	,,	१६	क्रिनारपेर	किनारेपर
२१८	८	मजणो	भजणो	२३१	१३	जिनराइ	जिनराज
२१९	१४	भानि०	भवि०	२३२	१६	पावोग	पावोगे
,,	१६	,,	,,	२३७	१५	नर	नर
२२०	५	भवज	भवजल	२३८	६	मिटावें	मिटावे
,,	,,	लतारण	तारण	२४३	११	तोर	तोरे
,,	१४	कान	काने	२४४	२	सन	सन
२२१	११	निवाद्य	निवारा	२४६	१६	कोर	कोरे
२२३	७	मय	मैं	२४८	२	ठत्र	छत्र
,,	,,	ग	न	२४९	३	लहियें	लहिये
,,	११	मूवारे	सधारे	२५३	१८	सोन	सोरन
				२५५	१५	जोगें	जोगे

ज्ञानाचारना आठ प्रकारमानो पहेलो काळ नामे.

आचार कहे छे (उपदेश प्रासाद भाषान्तर भा ४ थो पानु २६३)

कन्नीय श्रुतकाले, व्याख्यान पाठनतया ॥ आचार, श्रुत धर्मस्य, चाद्यो पद्धिरयतेबुधो १

भावार्थ –योग्यकाळे श्रुत भणवु, भणाववुं तथा व्याख्यान करवु, ते श्रुत धर्मनो पहेलो आचार पंडित पुरुषोए कहेलो छे

अग्यार अग अने उत्तराध्ययन विगेरे कालिक श्रुत कहेवाय छे. ते दिवसे तथा राते पहेली अने चोथी पोरसीमा भणवु गणवु अने दस वैकालिक विगेरे तथा द्रष्टिवाद उत्कालिक श्रुत कहेवाय छे, तेनो भणवा विगेरेनो काळ सर्व पोरसीनो छे, तेमा सूत्रनी पोरसीमा सूत्र भणवु अने अर्थनी पोरसीमा अर्थ अथवा उत्कालिक श्रुत विगेरे भणवु दिवस तथा रात्रीनी पहेली अने छेल्ली पोरसीमां अस्वाध्याय [असज्झाय] ने,अभावे भणाय तेथी तेनु नाम कालिक कहेवायछे कालिकनो शब्दार्थ एवोछेके योग्य काळेज भणवु ते अनेमात्र काळ वेला सिवाय बधी पोरसीमा भणाय तेने उत्कालिक कहु छे

कालिक तथा उत्कालिक बन्ने श्रुतनो लघु अनध्याय काळ बे घडीना छे तेवी काळवेळा प्रत्येक अहोरात्रमा चार आवे छे, तेमनो वखत तजवो ते चार वखत आ प्रमाणे १ संध्या वखते [सायंकाळे] २ मध्यरात्रीए, ३ प्रभाते तथा ४ मध्याह्न वखते ए चार काळवेळाए तो कोइपण दिवस स्वाध्याय करवो नहि. पण पडिलेहण विगेरे बीजी क्रिया करवानो निषेध नथी, अन्य धर्ममा पण काळने वखते संध्या, वंदन विगेरे क्रिआओ करवामां आवे छे, ब्राह्मणो हमेशा त्रण संध्याए मळीने त्रणसो चोवीस वार गायत्री मत्रनो जाप पूर्ण करेछे दृष्ट काळवखते सर्व शास्त्रोमा सूत्रादिकनु पठन पाठन सर्वथा निषेध करेलुछे



श्री सर्वज्ञाय नमः

शुद्धदेव गुरु ने धर्म प्रत्ये केवो अविहड प्रेम होवो जोइये ?



(लेखक सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी–पालीताणा)

१ शुद्ध देव, गुरु, सच साधर्मिक प्रत्ये खरी अंतरंग भक्ति ए मुक्तिनुं अमोघ (अचूक) वशीकरण छे

२ खरी भक्ति सद्गुणानुरागथी (सद्गुण–सद्गुणी प्रत्ये खरो प्रेम–बहुमान राखवाथी) प्रगटे छे अने तेथी तेनी वृद्धि पण थाय छे

३ विनय–नम्रता गुण वगर खरी भक्ति बनती नथी पण विनयथीज तेवी भक्ति बने छे अने तेवी भक्तिथी विनयगुणनी वृद्धि पण थाय छे खरी भक्ति कल्पवेली समान सुखदायी नीवडे छे.

४ नम्रता वगरनुं ज्ञान, नीर वगरनी नदी जेवुं नकामुं छे–शोभतुं नथी. शुष्क–पोपटीया ज्ञानथी मद–अहंकार आववानो मोटो भय रहे छे खरी भक्तिथी ए भय दूर थाय छे अने नम्रतामां पण वधारोज थाय छे. खरी भक्ति मुक्तिने पण खेंची लावे छे

५ विनय पांच प्रकारे थइ शके छे (१) निर्दोष अने अनुकूळ

खान पानादिक देवावडे तथा वदनादिक बाह्य भक्ति करवावडे (२) अतरंग प्रेमवडे. (३) सद्गुणनी प्रशंसा—स्तुति स्तवना करवा वडे (४) नजीवा दोषनी उपेक्षा करवा वडे अने (५) मन वचन कायाथी थती आशातना तजवा वडे.

६ काइ पण पवित्र धर्मकरणी करता विधि रसिक जनोए शास्त्रोक्त दोष तजवानो जरुर खप करवो जोइये कह्यु छे के—

"दग्ध[1] शून्य[2] ने अविधि दोष,[3] अति प्रवृत्ति[4] जेह
चार दोष छंडी भजो, भक्ति भाव गुण गेह"

(१) अमुक एक करणी (देव दर्शन, गुरुवंदन सामायक, प्रतिक्रमणादि) करतां अनेरी अनेरी करणी उपर लक्ष दोडे, मूळ कराती करणीमां लक्ष(उपयोग)न रहे, मन अन्यत्र भटके ते "दग्ध दोष"

(२) कराती धर्म करणीमां कशु लक्ष राख्या वगरज संमूर्छिमनी जेम करणी कराय, बेभान जेवी अवस्थामां करणी कराय, तेना हेतु परमार्थ तरफ कशुं लक्ष न देतां, बेदरकार रहेवाय ते "शून्य दोष"

(३) जे धर्म करणी जेवी मर्यादाथी करवी जोइए ते तेम नहि करतां आप इच्छाए न्युनाधिक करे अथवा आगळ पाछळ करे अथवा इच्छा मुजब तेनी उपेक्षा—बे दरकार करे, मर्यादा न साचवे ते "अविधि" दोष

(४) देश काळ स्थिति संयोगोनो विचार कर्या वगर, स्वशक्ति उपरान्त हद ओलघी आप इच्छाए जे काम करवामां आवे ते "अति ॰ दोष." कह्यु छे के

" उचित क्रिया निज शक्ति छंडी, जे अति वेगे चडतो ॥
ते भव स्थिति परिपाक थया विना, जगमां दीसे पडतो ॥
इत्यादि.

७ विधि रसिक भक्तजनोए भक्ति प्रसंगे शास्त्रोक्त सात प्रकारनी शुद्धि साचववा जरुर खप करवो जोइए, सात प्रकारनी शुद्धि नीचे मुजब साचववानी कही छे

"अंग[1] वसन[2] मन[3] भूमिका[4], पूजो पकरण[5] सार॥
न्याय द्रव्य[6] विधि शुद्धता[7] शुद्धि सात प्रकार ॥ "

प्रथम देह शुद्धि, बीजी वस्त्र शुद्धि, त्रीजी मनशुद्धि, चोथी भूमिका शुद्धि, पांचमी पूजा उपकरण शुद्धि, छट्ठी द्रव्य शुद्धि अने सातमी विधि शुद्धि ए सात प्रकारनी शुद्धिनो विशेष अधिकार "श्री शत्रुंजय महातीर्थादि यात्रा विचार " नामना शास्त्री टाइप पुस्तकना पाना ५३ थी ६७ सुधी अने गुजराती टाइप पुस्तकना पाना ११८ थी १४३ सुधी विस्तारथी आपेल छे. तो पण दिशा मात्र अहीं प्रदर्शित करवामा आवे छे

(१) काइक उष्ण जळ (तीर्थजळ शीतळ होय तो पण ते) वडे शरीर शुद्धि जयणा पूर्वक (अन्य एकेन्द्रिय प्रमुख जीवनी विराधना न थाय तेम) निर्जीव स्थळे करी, अगुंछावडे शरीरने सारी रीते लुछी साफ करी लेवुं ते " देह शुद्धि "

(२) साफ धोयेलुं अखंड धोतर (धोतीयु) अने उत्तरासंग धारीने, भक्ति प्रसंगे अष्ट पुट (आठ वडे) मुखकोश बांधीने निज

स्वशक्ति या स्थिति अनुसारे अन्य आभूषणादिक पहेरीने शुद्ध देव गुरुनी भक्तिमां अथवा तीर्थराजनी सेवामां जोडावुं ते "वस्त्र शुद्धि."

(३) अनेरा सघळा सकल्प विकल्पो शमावी देई, भक्ति करवा योग्य शुद्ध देव गुरु सघ साधर्मिकना गुणानुवाद (गुण चिन्तवन) करवामां, एवी दिव्य योग्यता पामवा माटे (तन) मन जोडी देवुं ते "मन शुद्धि"

(४) देव गुरुनी वास भूमिका (देरासर उपाश्रय प्रमुख) ने भक्ति प्रसगे बराबर जयणाथी पुंजी प्रमार्जीने साफ करी लेवी, ते भूमिका शुद्धि अथवा शल्य समान परिणामनी अस्थिरता, अशांति अने चालु प्रवृत्तिमां खेदरूप मनना दोष दूर करवा पूरतो प्रयत्न करवो ते "भूमिका शुद्धि"

(५) भक्तिनां साधन सारां-सुंदर राखवां ते "उपकरण शुद्धि."

(६) भक्ति प्रसगे वापरवा योग्य द्रव्य अनीति अन्याय या अप्रमाणिकताथी प्राप्त करेल न होय पण न्यायोपार्जित होय ते "द्रव्य शुद्धि" भाव शुद्धि करवा माटे तेनी खास जरुर छे

(७) देव गुरु सघ सार्धर्मिकनां दर्शन, वदन, पूजन भक्ति बहुमान प्रसगे शास्त्रोक्त विधिनुं यथा शक्ति पालन करवुं ते "विधिशुद्धि"

आ उपर जणावेली सात शुद्धि यथा योग्य रीते साचववा सहु कोइ भव्यात्माओए यथा शक्ति अवश्य आदर करवो, तेनी उपेक्षा न करवी केमके अवश्य करवा योग्य करणीमां उपेक्षा (अनादर) करवाथी खरो लाभ मळतो नथी, जन्म मरणनां बधन तूटतां नथी,

जेथी परिणामे जीवने स्वेच्छाचारिता वडे अनंत अपार संसार परिभ्रमण करवुं पडे छे. विधि रसिक जीव आराधक भावने पामे छे तेथी तेने वधारे वखत भव भ्रमण करवु पडतु नथी.

८ जिन भुवने ८४ आशातना (मोटी १० आशातना) अने गुरु प्रत्ये ३३ आशातना तजवा भव्य जनोए जरूर लक्ष राखवु। तेनो विशेष अधिकार " भाष्यत्रय " पैकी " देववंदनभाष्य " अने " गुरु वंदनभाष्य "मांथी तपासी लइने उक्त आशातना दोष तजवा हरदम खप करता रहेवुं. आशातना करवाथी भव भ्रमण वधे छे.

९ देव गुरुनी जमणी बाजुए रहीने पुरुषोए अने डाबी बाजुए रहीने स्त्रीयोए दर्शन, वंदन, पूजन, स्तुति स्तवनादिक करवां जोइए अने चैत्यवंदन करतां कममां कम नव हाथनो अने अधिकमां अधिक साठ हाथनो अवग्रह (वचलु अंतर) राखी बेसवु जोइये. घर देरासरमां स्थल संकोचथी अवग्रह कमी राखी शकाय उपर मुजब देववंदन करता वचमां अंतर राखवानो हेतु आपणा (औदारिक) शरीरथी प्रभुनी आशातना थवा न पामे ए छे तेवीज रीते गुरु वंदनादि प्रसंगे पण स्त्री पुरुषोए गुरु अवग्रह साचववो जोइये. पुरुषने ३॥ हाथनो, अने स्त्रीने १३ हाथनो उत्कृष्ट अने जघन्य ३॥ हाथनो अवग्रह राखवोज जोइये साधु साध्वीओने पण ए नियम एक सरखी रीते पाळवो जोइए. एवी शास्त्र आम्नायनो स्वेच्छाचारथी अनादर करनारने आज्ञा भंग प्रमुख कइक दोष लागे छे

१० देव गुरुने जुहारतां " दशत्रिक " अने " पांच अभिगम "

ाचवना खास लक्ष राखवु जोइए दश त्रिकादिकनु संक्षेपथी स्वरूप
ीचे मुजब छे.

(१) अग्रद्वारे, मध्य द्वारे अने चैत्यवंदन करती वखते एम अनु-
क्रमे "त्रणवार निस्सिही" करवी. घरनो, देरासरनो अने द्रव्य पूजानो
व्यापार तजवानो छे निस्सिही शब्द निषेध वाचक छे ते निस्सिही
कीधा पछी जे जे व्यापार तजवानी प्रतिज्ञा थइ तेनो भंग न थाय
तेवु लक्ष राखवु लक्ष सहितज करातो करणी लेखे थाय छे.

(२) अग्रद्वारे पहेली निस्सिही कहीने दूरथी प्रभु दर्शन थतांज
अंजलि बंध नमस्कार करी प्रभुना फेरा टाळवा रत्नत्रयीनी प्राप्ति माटे
चैत्यफरती "त्रण प्रदक्षिणा" देवी अने प्रदक्षिणा देतां कोइ पण प्रकारनी
आशातना नजरे पडे ते टाळवी

(३) देवगुरु दूरथीज नजरे पडतां प्रथम "अंजलि बंध" नम-
स्कार करवो, मध्यद्वारे नजीक जतां अर्धु अंग नमाडवा रूप "अर्ध-
अवनत" नमस्कार, अने चैत्यवंदन स्तुति स्तवना करती वखते बे हाथ,
बे ढींचण अने मस्तक ए पांचे अंग भूमि उपर लागे तेम नमवु ते
"पंचांग" नमस्कार करवो ए रीते "त्रण प्रणाम" अथवा उपर
मुजब सर्वत्र त्रण त्रण वार प्रणाम करवा

(४) प्रभुना अंगे जे जळ चंदनादिक पूजा करवी ते "अंगपूजा"
प्रभुनी आगळ जे अक्षत फळ नैवेद्य प्रमुख धरवां ते "अग्रपूजा"
अने ए रीते द्रव्य पूजा करीने एकाग्र पणे चैत्यवंदन स्तुति स्तवना-

दिक करवां ते "भाव पूजा." एम त्रण प्रकारनी पूजा गृहस्थ उचित कही छे साधुने तो केवळ भाव पूजानोज अधिकार छे.

(५) पिंडस्थ, पदस्थ अने रूपातीत ए त्रण अवस्था अनुक्रमे छद्मस्थता, कैवल्य अने सिद्धता रूपे भाववी तेमां प्रभुना (जन्म, दीक्षादि प्रसंगे) स्नात्र अभिषेक पूर्वक वावना चदनादिक वडे विलेपन करतां "छद्मस्थ अवस्था," केवळज्ञान उपज्याबाद छत्र चामरादिक आठ प्रातिहार्यो वडे "केवळी अवस्था" अने पर्यंकासन तथा काउस्सग्ग मुद्रावडे प्रभुनी "सिद्ध अवस्था" भाववी घटे छे

(६) देव गुरुनां दर्शन, वंदन, पूजन, स्तवनादिक करतां केवळ देव गुरुना मुख सामेज दृष्टि स्थापवी. ते शिवाय "उंचे, नीचे" के "आसपास क्यांय" (पाछळ, जमणी के डावी बाजुए) आडु अवळु जोवुं नहि स्थिर दृष्टि राखवाथीज रस जामे छे

(७) पंचांग प्रणाम करती वखते यथायोग्य रजोहरण, चरवळा के उत्तरासग वडे "त्रण वखत" जयणा पूर्वक "भूमिनु प्रमार्जन" करवुं

(८) चैत्यवंदन, स्तुति स्तवनादिक करतां तेना "शब्द" अने "अर्थ" उपर तथा प्रभु "प्रतिमादि उपर" बराबर लक्ष राखवु.

(९) चैत्यवंदनादिक करता यथास्थाने १ "जोगमुद्रा," "मुक्ताशुक्ति मुद्रा" अने "जिनमुद्रा" करवा लक्ष राखवु. नमुथ्थुणं कहेती वखते "जोगमुद्रा," प्रणिधान त्रिक (जयवीयराय जावंति चेइयाइ प्रमुख) कहेती वखते "मुक्ताशुक्ति मुद्रा," अने काउस्सग्ग ध्याने रहेतां "जिनमुद्रा" धारण करवानु कहेलु छे.

(१०) " जयवीयराय " (प्रार्थना स्वरूप)," जावंति चेइयाइं" अने " जावंत केविसाहू " ए त्रण अथवा मन, वचन कायानी एकाग्रता ए " प्रणिधान त्रिक " कहेवाय छे उक्त दश त्रिकोनुं सविशेष स्वरूप " देववंदन भाष्यथी " के "हितबोध प्रकरणथी" जाणवुं

(१) पोताना भोगमां आवे एवां फळ फूलादिक सचित्त पदार्थ, देवगुरुना दर्शन करवा जिनमंदिर के पौषधशाळामां पेसतां, बाहेर मूकी देवा साथे लइ जवा नहि

(२) स्वस्थिति अनुसारे शुद्ध (सारां) वस्त्र अलंकारादिक सजीनेज जवु. जेवा तेवा अशुद्ध वस्त्रादिकथी अनादर दोष लागे छे

(३) बीजा बधा संकल्प विकल्प शमावी दइ मनने स्वस्थ, एकाग्र करीने जावुं बीजा कोइ लगनी तमा नहि राखवी

(४) एक शाटक—सळंग–अखंड उत्तरासंग जनोइना आकारे धारीने जावु. तेना छेडा वती यथोचित प्रमार्जनादि करवु

(५) देव गुरुनां (दूरथी पण) दर्शन थताज बे हाथ जोडी, मस्तके लगाडीने अंजलि बद्ध नमस्कार एकवार अथवा त्रण वार करवो. " ए पांच अभिगम " सर्व सामान्य कह्या. बाकी राजा प्रमुख अधिकारी जनोए राजचिन्हतरीके लेखाता मुगट, छत्र, चामर, खड्गादि शस्त्र अने पादुका (बुट) प्रमुख बधा वानां बाहेर मूकीनेज अंदर प्रवेश करवो जेमके प्रभुतो राजाना पण राजा छे

११ देव गुरुनां दर्शन, वंदन, पूजन, स्तवनादिक करीने बाहेर नीकळतां जेम प्रभुने पुंठ पडे नहि एवुं लक्ष राखवुं पडखाना द्वारे

थइने नीकळवुं अथवा पाछे पगले चालीने नीकळवुं. जिन मंदिरमां माप. त्रण द्वार (नीकळवाना) होवानो एज हेतु सभवे छे के स्त्रीओए डावा बारणे थइने अने पुरुषोए जमणा बारणे थइने प्रभुने पुठ न पडे तेम उपयोगथी नीसरवु पुठ दइने तो नज निसरवु

१२ जळ चंन्दनादिक वडे प्रभुनी द्रव्य पूजा करवानो हेतु भाव उल्लास—शुद्धिने माटेज छे, एम समजी दरेक प्रकारनी द्रव्य पूजा करतां सुज्ञ भाइ ब्हेनोए तेना अंतरग हेतु तरफ बराबर लक्ष राखवु उचित छे तेम करवामां न आवे अथवा ते दरेक द्रव्य पूजाना अंतरंग हेतु तरफ दुर्लक्ष रहेतो द्रव्य पूजा करनारने तेटला मात्रथी सविशेष लाभ थइ शके नहि तेथी अत्र प्रस्तावे ते द्रव्य पूजाना अंतरग हेतु समजाववा माटे कांइक विस्तारथी उल्लेख करशु

प्रभु पोते कृत कृत्य छे तेमने पोतानी पूजा कराववानी कशी जरूर नथी एटले के प्रभुनी पूजा करनार पूजा करवावडे कांइ प्रभुने उपकार करतो नथी पण वस्तुतः विचारता पोतानोज उपकार साधे छे—साधी शके छे. शी रीते ? ते हवे तपासीये.

(१) ' जेवी भावना एवी सिद्धि ' ' खरी अंतरग भावना भवनो नाश करी शके छे ' एवी अतरग भावना प्रगटाववा जिनेश्वर प्रभु (अने साक्षात् प्रभुना अभावे प्रभुनी पवित्र प्रतिमा) पुष्ट आलंबन रूप छे. प्रभु पोते निर्मळ छतां भव्यजनो पोताना भावमळनी शुद्धि माटे इन्द्रादिक देवोनी पेरे निर्मळ (सुगंधि) जळवडे, जन्म अभिषेक राज्य अभिषेक अने दीक्षा अभिषेक रूपे प्रभुनी छद्मस्थ अवस्था

दीलमां धारी प्रभुनो स्नात्र अभिषेक करी भक्तिथी एराती आनंदित थाय छे के तेवा प्रसगे पोतानाज मलीन कर्म [पाप] नो नाश अने शुभ कर्म [पुन्य] नो संचय करवा रूप जे लाभ थाय छे तेनी पासे देवतादिकनी ऋद्धिने पण तृण जेवी असार अने प्रभु भक्तिनेज सार रूप लेखे छे जळ अभिषेक कर्या पहेला पूर्वे निर्माल्यने जयणाथी उतारी लेतां तेमज अभिषेक कर्या पछी प्रभुना अंगने उत्तम प्रकारना सुगंधि सूक्ष्म वस्त्र वडे लुछी लेतां भाविक आत्मा शुभाशयथी सारी निर्जरा करी शके छे तेथी वस्तुत पूजा करनार, करावनार [सहाय अर्पनार] अने तेनी अनुमोदना करनार पोतानाज आत्माने उज्वळ -निर्मळ करे छे तेमां पुष्ट आलंबन [निमित्त कारण] रूप जिनेश्वर प्रभु अथवा परम शान्त रसने द्रवती प्रभुनी पवित्र प्रतिमाज छे. आ स्थळे एक अगत्यनी वात तरफ भक्त जनोनु लक्ष खेचवुं उचित जणाय छे ते ए छे के इन्द्रादिक देवोनी पेरे प्रभुनो स्नात्र अभिषेक करवानी पोतानी फरज विसारी देइ, घडक स्थलेए माहुती नोकरो पासे ते काम करावबामां आवे छे एटलुज नहि पण तेवे प्रसगे आपणा हैडाना हार अने माथाना मुगट जेवा प्रभुना अगे अण छाजती रीते अति करकस अने अणीदार वाळाकुंचीओनो एवो त्रास दायक उपयोग कराय छे के ते देखीने सहृदय भक्तजनोनुं हृदय भराइ आवे छे, कपे छे अने द्रवे छे भीना अंग लुछणाथी जे काम सुखे थइ शके छे ते काम करवा नाहक देवादेवीयी तीक्ष्ण अणीवाळी वाळाकुंची-वडे छूटथी करवा देवाय ते केवा प्रकारनी भक्ति ? सुज्ञजनो भक्तिवश थारशे तो आवी अनेक बाबतोमां जल्दी सुधारो करी शकशे अने अन्य

अविचारी जनोनें पण शुभ मार्ग दर्शक थनी शकशे

[२] चदननो स्वभाव शीतल करवानो छे अनंती क्षमा अने समता वडे प्रभु परम शीतळ छतां भव्यजनो पोताना अनादि रागादि कषाय तापने उपशमाववा निमित्ते अने क्षमा, समतादिक उत्तम गुणो प्राप्त करवा माटे ते परम प्रभुने यजी [पूजी-अर्ची] एज प्रार्थे छे के हे प्रभो [1] अमे भाव शीतलता पामीए अने भाव ताप वमीए एवो अनुग्रह आप अमारी उपर करो. अत्र जणाववु जरुरनु छे के मुख्य पूजा चदननीज छे केसर, कस्तुरी प्रमुख सुगधी द्रव्यो अंग रचनादिक प्रसगे शोभाकारी होवाथी अन्य भव्यजनोने अनुमोदनाना कारण रूप थाय तेथी तेनो निषेध नथी अन्यथा तेनो आग्रह पण नथी तेम छतां मुग्धजनो केशर पाछळ पुष्कळ खर्च करे छे अने चदन माटे बहु ओछी दरकार करे छे. तेमणे पोतानी थती भूल सुधारी जरुरी वस्तु माटे खास लक्ष राखवु जोइये.

[३] सुमनस नाम पुष्पनु, पडितनु तेमज देवतानु पण छे. ताजां विकसित, सुगधी एवां विवेकथी अणायेलां उचां पुष्पो वडे परम प्रभुने यजतां-पूजतां मन प्रसन्न-प्रफुल्लित थाय छे, प्रशसा पात्र थाय छे अने देवतादिकने पण अनुमोदनीय थाय छे तेथी सुज्ञजनो इन्द्रादिक देवोनी पेरे परम प्रभुने विविध जातनां उत्तम पुष्पोवडे, पुष्पमाल्य[१] (काचा दोरावती ढीली गांठ दइने तैयार करेल फूलना हार) वडे, पुष्प पगर वडे यजे-छे-पूजे छे अने पोताना मन

१ विवेकथी गुथेल, पण सोय घोंचेल नहि एवा.

ने प्रमुदित करे छे तेमज अन्य जनोने पण अंगरचनादिक वडे कर्म निर्जराना कारणिक बनी प्रमुदित करे छे

[४] धूप अग्निमां दही, मलीन वास दूर करी, उत्तम सुगंधी आपी, उंचे जाय छे तेम भाविक आत्मा प्रभु पासे धूपपूजा वडे स्वार्थ त्याग शिखीकरीने अनादि मिथ्या वासना दूर करी, शुभ लेश्या प्रगटावी,स्वपरनुं हित साधी, उंची गति पामे छे प्रभुनी आशातना न थाय तेम दूरथी धूप उखेवी ने ते प्रभुनी डाबी बाजुए राखवो जोइये प्रभुनी अति नजदीक धूपदीपक करवाथी आशातना थइ जाय छे

[५] दीपकनो स्वभाव अंधकारने दूर करवानो छे जगदीपक एवा जिनेश्वर प्रभु पासे जयणा सहित उत्तम दीपक प्रगटावी पोतानामां स्वाभाविक ज्ञानदीपक प्रगट करवा शुभमति आपवा प्रभु पासे भव्य आत्मा मांगे छे कुदां विगेरे त्रस जीवोनो नाश न थाय तेम ते दीपक फानस प्रमुखमां प्रभुनी जमणी बाजुए राखवो जोइये

[६] अक्षत नाम [अखंड] तंदूलनुं छे एवा अखंड उज्वल अक्षतवडे स्वस्तिकादिक अष्टमगल आलेखी, भव्य आत्मा प्रभु पासे अखंड अने उज्वळ एवुं मोक्ष सुख मांगे छे थोडा पण अखंड अणी शुद्ध अक्षतज वापरवा उचित छे. पण जेवा तेवा अण शोधेला जीवाकुळ चोखा वापरवा उचित नथी. केमके ' द्रव्य ते भाव निमित्त' जेवु द्रव्य वापरीए तेवो भाव प्रगट थवा पामे.

(७) अणहारी पद-मोक्षने प्राप्त थयेला परम प्रभुनी पासे स्व-

शक्ति अनुसारे विविध रसवती ढोकीने भव्यात्मा " निवेदन " करे के आप मारी अनादिनी रस लोलुपता निवारीने मने आपना अनुपम अनुभव रसमां लीनता थाय तेम करो !

(८) उत्तम प्रकारना रसवाळा (सरस) फळो स्वशक्ति अनुसारे प्रभु पासे ढोकीने जेनाथी उत्तम बीजुं कइ नथी एवा मोक्ष फळनी.ज भव्य आत्मा प्रार्थना करे. आवी सहेतुक प्रार्थना प्रभु पासे करवाथी आत्मामां वीर्योल्लास प्रगटे छे जेथी प्रभुए फरमावेला सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्र रूप मोक्ष मार्ग भणी आत्ना प्रयाण करवा उजमाळ बने छे. अने अनुक्रमे गुण स्थानकमां आगळ वधी छेवटे " नागकेतु " नी पेरे निर्मळ केवळज्ञान पामीने जन्म जरा मरण, आधि व्याधि उपाधि रहित मोक्ष स्थानने प्राप्त करे छे अष्ट प्रकारी पूजा प्रतिदिन करनारा अभ्यासी भक्त जनो तेनुं कांइक रहस्य पामीने तेमां अधिक रस-अनुभव मेळवी अन्य मुग्धजनोने द्रष्टान्तरूप बने एवा आशयथी तद्गत हेतु, कइक विस्तारथी वर्णवेल छे एज रीते १७ प्रकारी, २१ प्रकारी, १०८ प्रकारी एम अनेक प्रकारी द्रव्य पूजा, भाव प्राप्ति-रक्षा-वृद्धि निमित्ते शास्त्रमा वर्णवी छे तेनु रहस्य गुरु गम्य मेळवी तेनो रस-अनुभव मेळवी भव्यात्माओ स्वश्रेय साधो ! ए अत्र इच्छवा योग्य छे.

[१२] पूर्वकृत पुन्य जोगे आ मानव भवादिक दुर्लभ सामग्री पाम्या छतां जो पुन्य करणीनो अनादर करवामां आवशे तो शुभ गति शी रीते मळशे ? अने कल्याण पण केवी रीते थशे ?

१४ क्षणे क्षणे आवत्तु खुटतुं जाय छे, लक्ष्मी यौवन अने जीवित कुटुंबादिक सघळां अस्थिर छे, ते सघळु छोडी क्षणवारमां जवु पडशे चेती शकाय तो चेती ले.

१५ जे जे क्षण, श्वासो श्वास, घडी, दिवस, मास वर्ष प्रमुख धर्म करणीमां जाय छे ते ते लेखे थइ शके छे आळस करी बेसी रहेनारने तो ते सघळां अलेखे जाय छे.

१६ जे जे किंमती क्षणो जाय छे ते पाछी नहि आवशे एम समजी चेती शकाय तो चेत.

१७ मद (*Intoxication*) विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा ए पांचे प्रमाद जीवनी पायमाली करे छे अने संसारमां रझळावे छे. स्वच्छंद वर्तन मात्र परिणामे दु ख दायक्ज छे

१८ चिन्तामणि रत्न, कामकुंभ, कामधेनु अने कल्पद्रुम समान शुद्ध देव, गुरु अने धर्म उपर दृढ विश्वासरूप समकित मेळववा खूब प्रयत्न करवो. सर्व सुखनु मूळज समकित छे

१९ कुदेव, कुगुरु अने कुधर्म प्रत्ये आस्थारुप मिथ्यात्व अवश्य तजवु जोइये विपरीत श्रद्धा एज मिथ्यात्व जाणवु

२० मिथ्यात्व रूप उग्र विष वम्या वगर शुद्ध श्रद्धानो संचार थइ शकशे नहि. तेथी प्रथम मिथ्यात्वनेज तजवु जोइए

२१ शम संवेग निर्वेद (वैराग्य) अनुकंपा अने आस्तिकता ए समकितनां पांच लक्षण छे तेमज वीतराग–सर्वज्ञना वचनमां शंका.

परमतनी वांचउना, धर्मना फळमां संदेह, मूढमतिनी प्रशंसा अने तेनो परिचय ए तेनां पांच दूषण छे.

२२ शुद्ध देव गुरु धर्मनी त्रिकरण शुद्धिथी सेवा करता थके समकित निर्मळ थाय छे

२३ समकितवंतनु ज्ञान सफळ थाय छे अने मिथ्यामतिनु अफळ जाय छे समकितवंतने ज्ञान, अमृत थइ परिणमे छे अने मिथ्या मतिने ते विष रूपे परिणमे छे.

२४ समकित वंते प्रमाद वर्जीने शास्त्र संबंधी श्रवण, मनन अने परिशीलन करवानु खास व्यसन पाडी देवु जोइए. ते वारे तो मंद बुद्धिवाळा अन्य जनोने तेनो बोध पण करी शके.

२५ "अवसर पामी आळस करशे, ते मूरखमां पहेलोजी
भूख्याने जेम घेवर देता, हाथ न मांडे घेलोजी ॥"

ए न्याये आवेलो अमूल्य अवसर सफळ करी लेवो घटे छे.

२६ कुगुरुनी संगति वर्जीने, सुगुरुनी संगति करी, तेमनो सदुपदेश दीलमां धारवाथी आपणी अनादिनी कड्रू कुटेवो सुधरी शके छे तेथी तेवो समागम शोधी लेइने सार्थक करवो जोइए.

२७ शुद्ध देव गुरुनी सेवा—उपासना (भक्ति) करवानो खरो अंतरंग हेतु, तेमनामां प्रगटी रहेला अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिक गुणो आपणामां प्रगटी नीकळे ए छे. ए मुद्दानी वात खुब लक्षमां राखीनेज तेमनी आज्ञानु आराधन—पालन कर्या करवुं जोइए

२८ 'नमे छे आंबा आंबली, नमे छे दाडम द्राख ।। एरंड बिचारो शु नमे ? जेनी ओछी शाख ।।' 'नमे ते सहुने गमे.'

२९ जेमनु मुख सदा प्रसन्न रहे छे, हृदय दयार्द्र (दयाथी अत्यंत भीनु) रहे छे, वचन अमृत जेवु मधुर होय छे अने काया परोपकार करवा तत्पर रहे छे एवा आनंदित अने अनुकंपावंत उत्तम जनो कोने वंदवा योग्य न होय ? तेओज विश्ववंद्य थाय छे.

३० आंबा जेवा फाल्या फुल्या नमी—ढळी पडे छे तेम सुगुण जनो (सज्जनो) पण जेम जेम गुणमां वृद्धि करता जाय छे तेम तेम अधिक नम्रता धारे छे. एज महत्ता पामवानो सरल मार्ग छे

३१ आपणे जेवा (आदर्श) नी सेवा करीए छीए तेवा बनीए छीए, ते माटे आपणुं आदर्श उत्तम होवु जोइए

३२ कागडानी जेम पराया छिद्र (चांदां) जोवानी टेव तजी, आपणे हंसनी जेम सार ग्राही (गुण ग्राही) थावुं, अर्थात् आपणे गंभीरता आदरीने क्षुद्रता तजी देवी जोइए

३३ सुख दु खना प्रसंगमां श्वानवृत्ति तजी सिंहवृत्ति सेववी जोइए तेवे प्रसंगे हर्ष खेद तजीने सुख दुःखनु मूळ कारण शोधीने समभाव सेववो जोइए

३४ सुख दु खमां अन्यतो मात्र निमित्तरूप होय छे. पोते पोतानी शुभाशुभ करणी [illegible] ख दु ख पामे छे माटे प्रथमथी 'पाणी पहेलां पाळ बांधवी' [illegible]

३५ प्रथमथीज परिणामनो पूरतो विचार करी प्रवृत्ति करता पछी शोचवु पडतु नथी

३६ योग्यता वगर परतु धर्मनी प्राप्ति थती नथी अने अन्यने ठगवा जतां तो आपणेज ठगाइए छीए. सतोषमाज सुख रहेलु छे सरल स्वभावीनुज कल्याण थइ शके छे तेथी जेवु मनमां, तेवु वचनमां अने तेवुज क्रिया (वर्तन)मां मूक्वु जोइए. पण मनमां कइ, वाणीमां कंइ अने वर्तनमां कइ एवो पूर्वापर विरोध होवो नहि जोइए जेम बनेतेम विचार, वाणी अने वर्तनमां पवित्रता सचवावी जोइए.

३७ मद–अहकारवडे जीव लघुता पामे छे, वली तेथी भवान्तरमां पण शुभ सजोग मळतो नथी.

३८ क्रोध, अग्निनी पेरे स्वपरनो नाश करे छे अने लोभ–तृष्णा तो सर्व विनाशक छे–क्षमाज धैर्य–समता ए क्रोधनु अने संतोषवृत्ति राखवी ए लोभनु वारण (उपाय) छे

३९ कदापि आप वडाइ करवी नहि, मनमां एवु कंइक आवी जाय तो पूर्व महापुरुषोना पवित्र चरित्र तरफ द्रष्टि देवी, जेथी स्वउत्कर्षरूपी ज्वर जल्दी शान्त थइ जशे.

४० काळ, सघयण के इलका आलंबन लइ बेसी रहेवु नहि रोदणां रोवाथी राज्य रहेशे नहि. स्वपुरुषार्थ फोरवी, उत्तम आलंबन पकडी, आत्मामां जे अनंती क्षेत्ररात भरी छे, तेनी श्रद्धा मतीति राखी, जे सुविहित मार्गे भक्मपणे सचरशे ते जरूर फतेह पामशे इति शम् .

निवेदन

१४४४ ग्रथोना कर्त्ता महान् श्वेताम्बर आचार्य श्री हरिभद्र सूरीश्वरे पचाशक नामनो अति उपयोगी सुदर सुबोधग्रथ भव्यजनोना हित अर्थे बनाव्यो छे तेमाथी अमुक (२-३-४) पचाशको अत्र प्रस्तावे खास उपयोगी जाणी तेनी सरल व्याख्या सह गुणानुरागी मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी महाराज साहेबे करी छे ते व्याख्या अत्र दाखल करवामा आवेल छे, तेनो लाभ लई भव्यजनो विधि रसिक बनी अविधिनो त्याग करो इति शम्



श्रीमान् हरिभद्रसूरिविरचितं

जिनदीक्षा विधि–प्रकरणम्

(द्वितीय पचाशक)

श्रीमान् अभयदेवसूरिकृत टीका उपरथी सक्षिप्त व्याख्या

प्रस्तावना

जिनदीक्षा पचाशकमा जिनदीक्षा प्रकरण समावेलु छे तेनो अर्थ सामान्य रीते एवो करेलो छे के 'अनादि काळथी परिचित थयेल मिथ्यात्व कषायनो त्याग करवो अने सर्वज्ञ सर्वदर्शी श्री जिनेश्वर देवे प्ररूपेला तत्त्वार्थनो सुपरिचय करी ते उपर दृढ प्रतीति राखी स्वउचित कर्तव्य शुद्ध लक्षथी करवामा स्खलना आवती अटकाववी, तेमज अनुक्रमे दृढ अभ्यासबळथी स्वउन्नति साधवापूर्वक अन्य योग्य जनोने पण आ पवित्र धर्म मार्गमा, यथाशक्ति तेमना पण सहायक थवी, परमार्थथी पवित्र जिनशासननी प्रभावना करवी' आवी रीते उन्नतिक्रम साधवाना अधिकारी कोण छे ? तेनामा स्वाभाविक गुणो केवा जोइए ? जिनदीक्षा उपर तेनो केवो अकृत्रिम राग होवो जोइए ? छता गुरुमहाराज तेनाज हितनी खातर केवा प्रकारे परीक्षा करी योग्यता समये पोताने खात्री थाय तोज तेने उक्त जिनदीक्षा आपे ? जिनशासनमा दीक्षित थनार खरो दीक्षित केवा लक्षणथी जणाय ? तेनु अनतर अने परपर कर्तव्य शु अने शा माटे ? उक्त सम्यक्त्व प्राप्ति अथवा मिथ्यात्व परिहार पूर्वक जिनदीक्षाना प्रभावे अनुक्रमे योग्य अधिकारी आत्मा कैवल्य थयी आत्मउन्नति

साधी शके छे ? ते अंतिम फळ अने जे तात्कालिक फळ जि दीक्षार्थी सहेजे सपजे छे ते विगेरे अति उपयोगी यायतोनु संक्षेपथी स्वरुप श्रीमान् हरिभद्रसूरि महाराजे उक्त प्रकरणमां दर्शाव्युं छे तेनेज टीकाकार श्री अभयदेवसूरिजीए पल्लवित करेलु छे. एनी अंदर "आत्मनिवेदन"मां पोतानी सर्व ऋद्धिसिद्धि जैन दीक्षा लेनार सम्यक्त्व प्रमुख श्रावक योग्य व्रतादि उच्चर्या, निवेदन करी दे एम समजवु "आत्मार्पण"मां गुरु महाराजनी आज्ञामां सर्वस्व अर्पण करेलुं समजवु "समवसरणने" बदले अत्यारे माय. नंदि (नांद) वडेज काम चलावी लेवातु जणाय छे मूळ मर्यादा समवसरणनी छे.

व्याख्या

श्री महावीर प्रभुने नमस्कार करीने आप्त वचनानुसारे निपुण नीतियुक्त श्री जिन-दीक्षानो विधि भव्य जनोना हितने अर्थे हु लेश मात्र (संक्षेपथी) कहीश १

द्रव्य मुंडन (केश लोच) अने भाव मुंडन (क्रोधादिक टाळवा रुप) लक्षणवाळी दीक्षा बे प्रकारे छे, तेमां अत्र प्रस्तावे जिन-दिक्षा * मनतु मुंडन करवाथीज बनी शके छे, एम जाणवु कारणके अप्रशान्त-उत्कट क्रोधादिकथी दूषित एवो अल्प सत्ववत (सत्वहीन)

---

* प्रस्तुत जिन दीक्षा प्रथम मिथ्यात्व अने उत्कट कषायने परिहरी शुद्ध सम्यक्त्व मूळ श्रावक योग्य सुखे निर्वही शकाय तेवां व्रत-नियम-देशविरति के सर्वविरति अंगीकार करवा रुप समजवी. सर्व विरतिमां तो द्रव्य ... [illegible]

प्राणी सम्यग् दर्शनादिरुप कल्याणकारी धर्मना अधिकारी कहो नथी। २

"आ भावमुक्तरुप दीक्षा कोने क्यारे प्राप्त थाय?
ते शास्त्रकार कहे छे."

भव भ्रमण करता सहुथी छेल्ला पुद्गलपरावर्तनमाज, कर्मनी स्थिति पातळी पडी जवाथी निर्मळ स्वभाववाळा अने उत्तरोत्तर (अधिक) विशुद्धिने अनुभवता प्राणीनेज आ भावदीक्षा प्राप्त थइ शके छे, परतु बीजा संक्लिश्यमान परिणामवतने प्राप्त थती नथी ३

"ते दीक्षाना अधिकारीनु विशेष स्वरुप कहे छे"

जेने जिनदीक्षा उपरज राग होय, लोकविरुद्ध सर्व कार्यनो अनादर होय तथा सम्यग् ज्ञान अने सदनुष्ठानसपन्न सद्गुरुनो स बध थयो होय, तेवो विशिष्ट जीव आ जिनदीक्षाने योग्य जाणवो ४

"दीक्षा रागनुं स्वरुप त्रण गाथाथी बतावे छे"

तथाविध कर्मना क्षयोपशमथी स्वभावेज अथवा सम्यग्दर्शनादिक मोक्ष मार्गने सदाय समाचरता अने धार्मिक जनोने बहु मान्य एवा कोइ दीक्षित जीवोने श्रवणे साभळीने अथवा नजरे देखीने आ जिनदीक्षामाज एवी रुचि उत्पन्न थाय के भवसागरनो पार पमाडवा सफरी वहाण जेवी, लौकिक वस्तुओनी स्पृहा नहि राखनारी तथा सतत तद्भाव परिणामवाळी आ जिनदीक्षा हु केवी रीते पामी शकु? दीक्षा ग्रहण करता विघ्नज न आवे अने कदाच प्रबळ कर्मयोगे विघ्न आवी पडे तो ते अत्यत दृढता राखवी,

विघ्नरहितता अने चित्तनी स्वस्थता) " दीक्षाराग " सिद्धान्तकारोए कह्यो छे ५-६-७.

" हवे लोकविरुद्ध त्याग जणाववा लोकविरुद्ध आचरण समजावे छे "

सर्व कोइनी निंदा एटले कोइनी पण निंदा करवी ते, तथा ज्ञानादिक गुणसंपन्न आचार्य प्रमुखनी निंदा तो विशेषे लोकविरुद्धज छे सरल पण स्थूल बुद्धिवाळा जनोनी धर्मकरणी देखी तेमनी तथा तेमना धर्मगुरुनी मश्करी करवी, तेमज लोकमां पूजनीय गणाता एवा राजा, अमात्य, श्रेष्ठी तथा तेमना गुरु प्रमुखनी हीलना करवी, बहु लोकोनी साथे विरोध करनारनो संग करवो, देशादिक आचारनुं उल्लंघन करवुं, उद्भट वेश प्रमुखनुं धारवुं तथा दान विगेरे गंभीरता रहित करवां, सारां माणसो (सज्जनो) ने कष्ट पडे तेमां संतोष मानवो, तेमज छती शक्तिए तेमना दु ख दूर करवा उपाय न करवो, ए सर्वां लोकविरुद्ध कह्यो जाणवा ८-९-१०

" हवे सुंदर गुरुयोग बतावता छता कहे छे "

सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्रयुक्त जे गुरु होय ते सुगुरु कहेवाय. स्वप्न अवस्थामां ते (गुरु) ना योगे जळ, अग्नि प्रमुखथी आपणुं बचवुं, पर्वत प्रासाद के वृक्षना शिखर उपर चढवुं, तेमज सर्प के तेवा क्रूर जनावरथी आपणी रक्षा थवी, ते उपरथी गुरुना सुंदर योगनुं अनुमान करी शकाय छे ११

"हवे समवसरण रचनादिक दीक्षाविधि जणावे छे."

निज निज मनोवडे मुक्ताशुक्ति मुद्राथी वायुकुमार प्रमुख देवोनु आह्वान करी पछी यथोग्य क्रिया करवी १२.

वायुकुमारनु आह्वान कर्यां पछी समवसरण भूमिमां सारी रीते प्रमार्जन करवु अने मेघकुमार देवोनु आह्वान करीने त्यां सुगंधी जळनी वृष्टि करवी १३

ऋतुदेवीओनु आह्वान करी सुगंधी पुष्पोनी वृष्टि करवी अने अग्निकुमार देवोनु आह्वान करी त्यां कालागुरु प्रमुख धूप उखेववो एम केटलाक आचार्यो कहे छे १४.

पछी वैमानिक, ज्योतिषी अने भवनपति देवोनां आह्वान पूर्वक रत्न, सुवर्ण अने रूपाना वर्ण जेवा त्रण गढनी रचना त्यां करवी १५

व्यंतर देवोनु आह्वान करीने तोरण प्रमुखनी रचना करवी तथा अशोक वृक्ष, सिंहासन, छत्र, धर्मचक्र अने महेन्द्रध्वजादिकनी पण रचना करवी (आदि शब्दथी सुवर्ण कमळ अने उज्वळ चामर प्रमुखनी रचना पण समजी लेवी.) १६.

त्यारबाद त्यां उत्कृष्ट (प्रधान) चन्दननी उपर सकळ जगत्‌ना परम पूज्य त्रिभुवनगुरु श्री जिनेश्वरना चउमुख बिंबनी स्थापना करवी १७.

भुवनगुरुनी अग्निकोणे एक बीजानी पाछळ गणधर महाराज, सातिशयादि मुनिराजो, वैमानिक देवीओ तथा सा[illegible]

नैरत्यकोणे भवनपति, वाणव्यतर अने ज्योतिष् सत्रधी देवी-ओनी स्थापना जाणवी १९.

वायुकोणे भुवनपति, वाणव्यतर अने ज्योतिषी देवोनी स्थापना करवानुं शास्त्रकारोए फरमावेलुं छे २०

इशानकोणे वैमानिक देवो, मनुष्यो अने मनुष्य स्त्रीना समुदायनी मगळकारी स्थापना पोतपोताना देह सत्रधी वर्णसहित करवी

एवी रीते पहेला प्राकार (गढ) मा वार पर्षदानी स्थापना करी, बीजा प्राकारमा देवतानी पेरे पोतपोताना शरीरना वर्णसहित साप, नोळीया, मृग अने केशरी सिंह प्रमुख तिर्यच जीवोनी स्थापना अने त्रीजा प्राकारमां हाथी, मगर, केसरी, मयूर अने कल्हस प्रमुख आकारने धारवाळा देव–वाहनोनी स्थापना करवी २२

एवी रीते भक्ति अने वैभव अनुसारे समवसरणनी रचना कर्ये छते प्रदोष (साज) समये शुभ तिथि वार नक्षत्र योगे चद्रबळवाळु लग्न (मुहुर्त) प्राप्त थये जेने दीक्षा देवानी होय ते समवसरणमा आवे २३

पछी त्रिभुवनगुरुना गुण ग्राम करवाथी तेमना उपर तीव्र रुचि जेने उत्पन्न थइ छे एवा तेने सामान्य रीते जिनदीक्षानी मर्यादा जणाववामा आवे त्यारबाद तेने समवसरणमां आगल कहेवामा आवती रीति मुजब प्रवेश करावबामां आवे २४.

दीक्षा लेवानी इच्छावाळाना करसपुट (खोबा) मां सुगधी पुष्पो (अथवा सुगधी चूर्ण अने पुष्पो) आपवा तथा श्वेत वस्त्रवडे

(धीमे रहीं) तेनी आखे पाटो बाधवो पछी तेना हाथे समवसरण-मां क्षेपवामां आवता पुष्पना पडवावडे दीक्षानी आराधना के विराधनारुप तेनी सारी नरसी गति आथी गुरु महाराजाए निर्णय करवो के तेने दीक्षा आपवी के न आपवी. (आ विधि दीक्षा लेनार होय तेने प्रथम पवित्र जळथी स्नान करावीने करावाय छे) निर्णय करवा माटे तेना हस्तसपुटमां आपेला सुगधी पुष्पो क्षेपववामां आवे ते जो समवसरणनी मध्यमां पडे तो दीक्षानी आराधनावडे तेनी सुगति अने जो ते पुष्प समवसरणनी बहार पडे तो दीक्षानी विराधना वडे तेनी कुगति समजवी २५

" ते बाबत निर्णय करवा अत्र मतांतर दर्शावता कहे छे "

दीक्षा लेनारे के बीजाए तेवे प्रसगे उच्चरेला 'सिद्धि वृद्धि' इत्यादिक शुभाशुभ अर्थसूचक शब्दोवडे ते दीक्षा सबधी निर्णय थाय एम अन्य आचार्यो कहे छे, वळी आचार्य(दीक्षागुरु)सबधी मन वचन कायाना योगनी शुभाशुभ प्रवृत्तिथी तेनो निर्णय थइ शके छे, एम केटलाक आचार्यो कहे छे, तेमज दीपक, चद्र, तारा प्रमुखनी ज्योति अधिक तेजवाळी के मद तेजवाळी थवाथी पण तेनो निर्णय थइ शके छे तथा दीक्षा ग्रहण कर्याबाद तेना शुभ योग (आचरण) उपरथी तेनो निर्णय थाय छे, एम कइक आचार्यो कहे छे. २६

" समवसरणमां पुष्प पडवाथी योग्यतानो निर्णय थता तेने दीक्षा अपाय पण ते पुष्प समवसरण बहार पडे तो शो विधि आचरवो ? ते कहे छे "

जो तेना करसंपुटमां आपेल पुष्प समवसरणनी बहार पडे तो शकादिक अनिचारने आलोचवा पूर्वक ' चत्तारि सरणं पवज्जामि' ए रूप चार शरणां लेवां, पंच परमेष्ठि नमस्कार पाठ विगेरे तेने करावता आ विधि केटली वार करावतो ? ने कहे छे के त्रणवार कराववो. ते उपरांत निषेध करवो तेनो परमार्थ ए छे के पहेली वार पुष्प समवसरणनी बहार पडवाथी उपर मुजब विधि करावी फरी पुष्प समवसरणमां क्षेपवा माटे पूर्वनी पेरे ज दीक्षा लेनारे प्रवर्तवु. बीजी वखत पण जो पुष्प समवसरणनी बहार ज पडे तो पण उपर मुजब बधो विधि फरी करावतो ते विधि साचव्या बाद त्रीजीवार फरी प्रसन्न चित्तथी पुष्प क्षेपवा दीक्षा लेनारे प्रवर्तवु जो त्रीजी वार पण बहार ज पुष्प पडे तो तेनी अयोग्यता (दीक्षा संबंधी) नो निर्णय थइ जवाथी तेने दीक्षा ग्रहण करवानो आवी रीते निषेध करवो के 'भद्र ! बीजा अवसरे तने दीक्षा दइ शकाशे, हवणां नहि' इत्यादिक कोमळ वचनो वडेज निषेध करवो. २७.

"जो पुष्प समवसरणमांज पडे तो निषेध नहि करतां तेनी ऊचितता जणावे छे "

पूर्वोक्त रीति मुजब समवसरण मध्ये पुष्प पडवाथी दीक्षा उचित विशुद्धिनी प्रतीति थया बाद दीक्षायोग्य जीवने पूर्वे बाधेलो आखनो पाटो दूर करी, गुरु महाराजाए प्रभुना दर्शन कराववां अथवा तेनामां सम्यग् दर्शन (समकित) आरोपवु पछी दीक्षास- बंधी स्थिति—मर्यादानु कथन करवु के 'हे भद्र' दीक्षा अंगीकार करवानो उपर बताव्यो तेवो क्रम—समदाय छे ' वळी तेनी प्रशंसा करवी एम कहीने के ' भुवनगुरु भगवाननी पासेज पुष्प पडवाथी तार शीघ्र कल्याण थवु निश्चित जणाय छे माटे तु धन्य छे 'अथवा ' सकळ कल्याणकारी श्री भागवती दीक्षा तुजने प्राप्त थइ, तेथी तारु सर्व श्रेय थइ चूक्यु माटे तु धन्य छे ' तथा उपर मुजब परीक्षा करवाथी ते खुशी थयो छे के केम ? ते आचार्य महाराजाए जोवु तेना मुख—प्रसन्नतादिक लक्षणोथी तेनो निश्चय करवो २८.

"ए प्रमाणे गुरुकर्तव्य कह्यु हवे शिष्यकर्तव्य बतावे छे "

पछी त्रण प्रदक्षिणा दइने शिष्ये निर्मळ चित्त—रत्नथी सम्यग् रीते अत्र प्रस्तावे (दीक्षा दीधे छते) गुरु महाराजने लगारे संकोच वगर सर्वथा " आत्मनिवेदन " करवु. मतलब के ' हु आपश्रीनो किंकर छु, आप आ दीन सेवकना स्वामी छो ' एवी रीते निर्दंभपणे " आत्मार्पण " गुरुने करवु. २९

आवी रीते निष्कपटपणे आत्मार्पण करवु ते 'गुरुभक्ति' छे तथा अत्यत भावविशुद्धिथी ए उत्कृष्ट दानधर्म छे, तेथी ते अवश्य कर्तव्य छे, तेमज तथा प्रकारनी दृढ भावविशुद्धिवगर पण करेलु ते 'आत्मार्पण' उत्कृष्ट दान धर्मना बीज (कारण) रुप समजवु कारणके—३०

आवु शिष्टाचरित आत्मनिवेदन (आत्मार्पण) करवानु जेवा तेवा कायर माणसो तथाविध वीर्यनी खामीथी साभळी पण शकता नथी (ते तेमने कर्णकटुक लागे छे) तो पछी ते मुजब करवानी तो वातज शी ? तेथी जो के तथाविध दृढ भावविशुद्धिरहित करवामा आवता आत्मनिवेदन करता अत्यत भावविशुद्धियी करवामा आवतु आत्मार्पण उत्कृष्ट दानधर्म छे, तो पण ते उत्कृष्ट दानधर्मना बीजरुप होवाथी तथाविध भावविशुद्धिरहित आत्मनिवेदन पण कर्तव्यज छे.३१

दीक्षितनी भावशुद्धि माटे तेना उपकार अर्थे शास्त्र आज्ञाथी प्रवर्तता दीक्षित वस्तुमा ममत्व रहित होवाथी गुरु महाराजने ए पर दूषण लागतु नथी ३२

दीक्षितना परिणाम तेना इगित आकारादिकथी जाणी, जेम तेने सयम मार्गमा दृढता-स्थिरतारूप भाव वृद्धि थाय तेम तेने दान गुरुसेवा, तप अने कुससर्ग निषेध प्रमुखनो उपदेश देवा सबधी गुरु महाराजाए आ प्रसगे यत्न करवो ३३

जे शिष्य सम्यग् ज्ञानदर्शनादिक युक्त होय, मिथ्यादृष्टियोग व्यवहारमा तथा बाह्यद्रव्यमा स्पृहारहित होय-नि:स्पृही होय तय

આગમમાં કહેલાં શુદ્ધ તત્ત્વમાં રસિક હોય, તેજ પૂર્વોક્ત રીતે મિથ્યાત્વ ત્યાગ, સમ્યક્ત્વ અંગીકાર અને આત્મનિવેદન (આત્માર્પણ) વિગેરે વડે યત્ન કરી શકે પરંતુ ઉક્ત ગુણવિકલ શિષ્ય યત્ન કરી શકે નહિ, તેમજ ગુરુ પણ ઉક્ત જ્ઞાનાદિક ગુણ વિશિષ્ટ હોય તેજ તેવી રીતે યત્ન કરી શકે, તેવા વિશિષ્ટગુણરહિત ગુરુ તેવો યત્ન કરી શકે નહિ. ૩૪.

ધન્ય–કૃતપુણ્ય–ભાગ્યવંત ભવ્યજનોનેજ આ જિનદીક્ષાનો યોગ પ્રાપ્ત થાય છે તે દીક્ષાનો યોગ પ્રાપ્ત થયે છતે ધન્ય–કૃતપુણ્ય જનોજ ના કાયદા મુજબ ચાલે છે–ચાલી શકે છે. ધન્ય–કૃતપુણ્ય જનોજ તેવા દીક્ષિત સાધુઓનું તેમજ તેવી ભાગવતી દીક્ષાનું બહુ માન કરે છે (કદાચ કર્મદોષથી પોતે તે દીક્ષા અંગીકાર કરી ન શકે તો પણ તેનાથી બને તેટલી તેની પુષ્ટિ કરે છે તેઓ પણ ધન્ય છે) અને તેઓ કલ્યાણકારી જિનદીક્ષાની તેમજ તેવા ભાગ્યવંત દીક્ષિત સાધુઓની કદ નિંદા કરતા નથી, તેઓ પણ ધન્ય—કૃતપુણ્યજ સમજવા કેમકે ક્ષુદ્ર જનો નિબિડ કર્મયોગે તે કલ્યાણકારી દીક્ષા અંગીકાર તો કરી શકતાજ નથી પરંતુ મોહાન્ધપણાથી તેના દ્વેષી બને છે, તેથી તે બાપડા અનંત સંસાર સમુદ્રમાં નિમગ્ન થઇ મહા દુઃખી થાય છે. પવિત્ર દીક્ષાની તેમજ પવિત્ર દીક્ષિત સાધુઓની નિંદાથી અલગ રહેનાર મધ્યસ્થ જનોને તેવાં દુઃખ સંસારમાં અનુભવવાં પડતાંજ નથી ૩૫

"जिनदीक्षा लीधा बाद दीक्षा लेनारे जे करवु योग्य छे ते उपदिशता छता कहे छे"

श्रद्धा (स्वरुचि-परनी अनुवृत्ति नहि ते), संवेग (मोक्षाभिलाष) अने क्रमयुक्त दान यथाशक्ति अवश्य देवु, तेमज स्वविभवानुसारे स्वपर योग्यता प्रमाणे स्वजनादिकनो सत्कार पण करवो. ३६

"सम्यग् दीक्षाना चिन्ह बतावे छे"

दीक्षा ग्रहणथी अंगीकार करेला सम्यक्त्व तथा तत्सहगत शम संवेगादि गुणो, साधर्मिक साथे प्रीति, तत्वबोध, अने गुरुभक्ति ते गुणोनी दीक्षा दिवसथी दिनदिन वृद्धि थवी ए सम्यग् दीक्षानां साचा चिन्ह समजवा ३७

अति शुद्ध अध्यवसायथी तेमज तेवडे मार्ग कर्म क्षपी जवाथी खरेखर उक्त गुणोनी वृद्धि थाय छे केमके एवो नियम छे के 'कारण जोगे कार्य नीपजे' माटे उक्त गुणवृद्धि ए तेनु खरु चिन्ह छे ३८

श्रुत चारित्ररुप धर्म उपर बहुमान राखवाथी तेमज साधर्मिक उपरना स्नेहथी तेमनु वात्सल्य (भक्ति) करवाथी निश्चे स्वगुणनी वृद्धि थायज छे तेथी ते सम्यग् दीक्षानु खरु चिन्ह समजवु ३९

करवामां आवतां सदनुष्ठानवडे घणु करीने समस्त ज्ञानावरणीय प्रमुख घाति कर्मोनो क्षयोपशम थाय छे एवी रीते ज्ञानावरणीय कर्म दूर टळवाथी निश्चे तत्वज्ञाननी वृद्धि थाय छे. तेथी ते तेनु खरु चिन्ह छे. ४०.

आ समस्त शुभ संपदाना परम हेतु (पुष्ट आलंबन—कारण) गुरु महाराज छे, एवा सम्यग् बोधथी खरेखर गुरु भक्तिनी वृद्धि पण थायज छे. ४१.

ए रीते कल्याणमार्गी आ महानुभाव देव गुरुनी भक्ति प्रमुख दीक्षागुणोने अनुक्रमें भावथी सेवतो छतो छेवटे सर्वविरतिरूप परम दीक्षाने पण पामे छे. जेम देशविरति दीक्षाने पाम्यो तेम सर्वविरति दीक्षाने पण पामेछेज ४२;

मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने दुष्ट व्यापाररूप मिथ्या (मोक्षमार्गथी विपरीत) आचारने परमार्थथी (शुद्ध अंत करणथी) परिहरी, "परम दीक्षावंत महात्मा जीवनमुक्ति" (परम निरूपाधिक आत्मसुख) ने भावथी अत्र अनुभवी, समस्त घाति अघाति कर्मथी संपूर्ण मुक्त थइ पछी "परम मुक्ति"ने पण प्राप्त थाय छे ४३

आ "जिन दीक्षा विधि" (प्रकरण) ने शास्त्रनी नीति प्रमाणे सम्यग् विचारवाथी पण (जे महानुभाव ते मुजब आचरण करे तेनु तो कहेवुज शु ?) सकृद्बंधक (एकवार फरी उत्कृष्टी कर्म स्थिति बांधनार) तथा अपुनर्बंधक (हवे पछी तेवी उत्कृष्ट स्थिति नहि बांधनार) उभयमा कदाग्रह संभवित होवाथी ते कदाग्रहनो तेमने शीघ्र क्षय थइ जशे ४४ इति शम्.

शुभं स्यात् सर्वसत्त्वानाम्

जिनचैत्यवदनविधि.

(तृतीय पञ्चाशक)

श्रीमान् अभयदेवसूरिकृत टीका उपरथी संक्षिप्त व्याख्या.

प्रस्तावना

मिथ्यात्व, कपटनो त्याग करी सुगुरुसमीपे सम्यक्त्व तथा श्रावक योग्य व्रत नियमादि अंगीकार करवा रूप जिनदीक्षा लेनार खरेखर जिनपूजानो अधिकारी थाय छे ते जिन पूजाना बे प्रकार पैकी भावपूजा चैत्यवदनादिथी थाय छे तेनो विधि शास्त्रकारे आ पचाशकमां बतावेल छे तेमां चैत्यवदनाना प्रकार, तेना अधिकारी, द्रव्य भाव चैत्यवदनानु स्वरूप, ते कोने अने क्यारे संभवे? तेनु फळ, खरा खोटा रुपीआना दृष्टांतथी चैत्यवदनानी भावना, खोटा रुपीआ जेवी अशुद्ध चैत्यवदनानो निषेध अने खरा रुपीआ जेवी शुद्ध चैत्यवदनानु प्रतिपादन, उपरांत जाते विधि रसिक बनीने अन्य मुग्धजनोनुं हित करवानी धर्माचार्योने भलामण इत्यादि बहु उपयोगी बाबतोनो समावेश करेलो छे आ पचाशकनो भावार्थ लक्षपूर्वक वांची तेनु मनन करी ते प्रमाणे वर्तन करवा योग्य छे. द्रव्य पूजामां घणो वखत गाळी भावपूजा बील्कुल नहीं करनारा अथवा तो टुकामांज पतावी देनाराओने आमांथी अवश्य धडो लेवा लायक छे द्रव्य पूजोने भावपूजाना फळमां पारावार अंतर छे, द्रव्यपूजा भाव पूजानुं कारण छे, तेथी ते श्रावकोए अवश्य करवा लायक छे; परंतु खरी

पार्थसिद्धि भावपूजावडेज होवाने लीधे दिनपरदिन तेनापर वधारे लक्ष आपवानी आवश्यकता छे.

भावार्थ

१ श्री वर्धमान स्वामीने भावथी नमस्कार करी, उत्कृष्ट मध्यम अने जघन्यरूप त्रण भेदे, मुद्रा विधानवडे विशुद्ध एवु " चैत्यवंदन विधिनु " स्वरूप (सक्षेपथी) कहीश.

एक नमस्कार (स्तुति) वडे जघन्य चै० जाणवु " अरिहंत चेइयाण " रुप दडक पछी एक स्तुति कहेवा वडे अथवा शक्रस्तव, अरिहत चेइयाण, लोगस्स, पुक्खरवर० अने सिद्धाण० रुप पाच दडको अने प्रसिद्ध चार थोइओ वडे मध्यम चै० जाणवु, तथा उत्कृष्ट चैत्य० प्रसिद्ध पाच दडको साथे त्रण स्तुतियो तथा जयवीयरायना पाठथी थाय छे (चतुर्थ[1] स्तुति अर्वाचिन ज छे) तेमज बीजा

१ आ प्रकरणनी बीजी गाथाना अर्थमा चतुर्थ स्तुति अर्वाचिनज छे एम जे लखेलु छे ते टीकाकारनो अभिप्राय वास्तविक छे, तोपण तेमणे पूर्व समर्थ महाज्ञानी पुरुषोए करेली चतुर्थ स्तुति (थोइ) नी आचरणा मान्य राखेली छे, जेने लइने श्रीमान् हरिभद्रसुरिजीए पोते पण ससार दावामा चतुर्थ स्तुति करेली छे, एटलुज नहीं परतु बीजा पण अनेक आचार्योए ए प्रमाणेज अनुकरण करेलु छे वळी ते श्री हरिभद्रसुरि, प्रमुख समर्थ आचार्योने आपणे तो प्राचीन लेखीए छीए, तेथी आपणी अपेक्षाए तो ते प्राचीनज छे, कारण के ते " आचरण " अल्पज्ञ के भवभीरुता विनाना आचार्यादिके करेल नथी, माटे ते " माननीयज " छे

आचार्यो एम कहे छे के पांच शक्रस्तवना पाठयुक्त चैत्य० संपूर्ण कहेवाय मतलब के पोषधादिकमां आजकाल जे चैत्य० प्रचलित छे ते उत्कृष्ट, अने प्रतिक्रमण समये जे चैत० विधि प्रचलित छे ते म ध्यम चैत्य० जाणवु. ते पण 'पांचे अभिगम' 'त्रण प्रदक्षिणा' तेमज पूजादि विधान सहित करवु एवी रीते चैत्यवंदना त्रण प्रकारे समजवी (ते दरेकना पाछा त्रण त्रण भेद थइ शके छे)

" अथवा प्रकारान्तरे तेना त्रण भेद बतावे छे "

३ अथवा सामान्य रीते अपुनर्बंधक विगेरे योग्य जीवोना प रिणाम विशेष अथवा गुणस्थानक विशेषथी सर्वे जघन्यादि प्रकार वाळी चैत्यवंदना त्रण प्रकारे जाणवी एटले अपुनर्बंधकने जघन्य, अविरत् सम्यग् दृष्टिने मध्यम अने विरतिवंतने उत्कृष्ट, अथवा अपुन र्बंधक प्रमुख दरेकने पण परिणाम विशेषथी, ते त्रणे प्रकारनी चै० जाणवी जेमके अपुनर्बंधक शिवाय बाकी बीजा सकृत् बंधक प्रमुख मिथ्यादृष्टि जनोने शास्त्रमां चैत्य वंदनानी योग्यता रहित होवाथी अधिकारी गण्या नथी अपुनर्बंधकादिकनेज अधिकारी गण्या छे तेथी ते अपुनर्बंधकादिकना अनुक्रमे शास्त्रकार संक्षेपथी लक्षण जणावता छता कहे छे

४ हिंसादिक पाप कर्म जे गाढ संक्लिष्ट परिणामथी करे नहि, भयंकर भव (संसार) ने सारो जाणे नहि अने माता, पिता, देव, गुरु प्रमुखनी सर्वत्र उचित मर्यादा साचवे, क्याय पण अनुचित आचरे नहि तेवा लक्षणवाळाने " अपुनर्बंधक " जाणवो

५ धर्म शास्त्र श्रवण करवानी (तीव्र) इच्छा, धर्म साधन करवानो (अत्यंत) राग, तेमज देव गुरुनी यथा समाधि भक्ति करवानो (आग्रहपूर्वक) नियम ए " समकितवतना लक्षण " छे.

६ मार्गानुसारी, श्रद्धावान्, सुखे समजावी शकाय एवो अनाग्रही, स्वधर्म करणीमां सावधान, सद्गुणरागी, शक्य अनुष्ठानमा आळस वगरनो एवो " चारित्री–विरतिवंत " होय

७ आ उपर कहेला अपुनर्बंधकादिक भाव वंदना करवाना पण अधिकारी छे ते शिवाय बीजा मिथ्यादृष्टि जनो तो द्रव्य वंदनाना पण अधिकारी नथी केमके द्रव्यवंदना पण भाववंदनानी योग्यता छते सभवे छे तेथी बाकीनाने तो केवळ अप्रधान द्रव्यवंदना होइ शके

८ अपुनर्बंधक थकी बीजा सकृत् बंधकादिक मिथ्या दृष्टि जीवोने आ भाव वंदना संबंधी योग्यता पण बहुल संसारीपणाथी होवी घटती नथी, तेथी तेमने भाववंदना तो संभवेज नहीं अने अप्रधान द्रव्य वंदना तो अभव्य जीवोने पण कहेल छे. तेथी तेतु द्रव्यवंदन सकृत् बंधकादिकने पण होवु घटे एम शास्त्र युक्तिथी समजी शकाय छे

" द्रव्य अने भाववंदनाना चिन्ह शास्त्रकार जणावे छे "

९ चैत्यवंदना करता तेमां उपयोग (लक्ष) न होय, तेना अर्थ (परमार्थ) नी विचारणा न होय, वंदन योग्य अरिहंतादिकना प्रगट गुण उपर बहुमान न होय, 'मने आ अति अद्भूत दर्शननो अपूर्व लाभ थयो मने अपूर्व प्रभुवंदननोअवसर प्राप्त थयो ' एवो प्रमोद

१८ बे ढींचण, बे हाथ अने पांचमु उत्तमांग–मस्तक, ए पांच अंगो सम्यग् भक्तिथी पृथ्वी उपर लगाडतां ते वडे पचांग प्रणिपात थयो जाणवो

१९ माहोमांहे दश आगळीओ आतरी, कमळना दोडाना आकारे बने हाथो राखी, पेटनी उपर हाथनी कोणीओ स्थापी राखवाथी "जोगमुद्रा" थाय छे "समाधिमुद्रा" होवाथी बने हाथ जोडी राखवा तेनु नाम जोगमुद्रा छे.

२० आगळना भागमां चार अगुळ जेटला पहोळा अने पाछळना भागमा तेथी कइक ओछा पहोळा बे पग राखी कायोत्सर्ग करवाथी "जिनमुद्रा" थाय छे विघ्न–उपद्रवने जीतवा समर्थ होवाथी ते जिनमुद्रा कहेवाय छे

२१ माहोमाहे आंगळीओ आंतरी न होय एवा बे हाथ पोला राखी ललाट (भाल) स्थले स्थाप्या होय (के न स्थाप्या होय) ते मुक्ताशुक्ति मुद्रा समजवी मुक्ताशुक्ति नाम मोतीनी सीपनु छे ते सीपना आकारे करवामां आवती मुद्रा तेनाज नामे मुक्ताशुक्ति कहेवाय छे

२२ चैत्यवदनामा आवती मुद्रादिक क्रिया, पद अने अकारादि वर्णने विषे तथा तेना अर्थने विषे अने साक्षात् जिनबिंबने विषे सर्वत्र "छिन्न ज्वाळानी" पेरे उपयोगनु अनुसधान होवु घटे छे. जेम दीपक मशुखनी प्रभा एक घरमां छती सामा घरमां प्रकाशे छे तेथी जोके वच्चला अतरमा जणाती न होय, तोपण तेनु अनुसधान होवु घटे छे तेवी रीते उक्त सर्व क्रियादिकमां पण उपयोगनु अनु-

सधान होइ शके छे. कोइ एक क्रियादिकमा उपयोग मुख्यपणे वर्ततो अन्यत्र अर्थादिकमां पण ते होवो घटे छे मतज्ञ के अभ्यास योगे उपयोग सर्वत्र फरी वळे छे.

२३ छिन्नज्वाळामां ज्वाळानो उच्छेद होय त्यारे पण अन्य परिणामने पामेला एवा ज्वाळा–परमाणुओनी सत्ता तो होयज छे, नहि तो ज्वाळानी प्राप्ति थाय नहि तेम जे अर्थादिकमा प्रगट उपयोग वर्ततो होय ते शिवाय बीजा पण विषयोमा चित्तनो उपयोग व्यक्तपणे नहि जणाता छतां ते तेमा सामान्यपणे वर्ते छे

२४ क्षायोपशमिक भावे आत्माना स्वाभाविक रुडा परिणाम वडे परम आदरथी करवामा आवेलु चैत्यवंदनादिक शुभ अनुष्ठान करतां करतां तथाविध कर्म दोषथी कदाच तूटी गयु होय (तूटी न गयु होय–कायम रयु होय तेनु तो कहेवुज शु ?) तोपण फरीने जे भावमा ते करायु हतु ते भावनी वृद्धि करनारु थाय छे, माटे मोक्ष हेतुरुप शुभ भावनी वृद्धि करनार होवाथी उक्त वंदनामां (अधिक) प्रयत्न करवो घटे छे

२५ आ वात प्राय शास्त्रोक्त प्रकारे धर्मवासित बुद्धिवत जनोने अनुभव सिद्ध होय छे तेथी ते लोकोत्तर बुद्धिवडे बुद्धिवत जनोए सम्यग् अवधारवी जोइए

"हवे परिशुद्ध वंदनानु चिन्ह बतावे छे"

२६ मोक्ष सुखना अर्थीजनोने सम्यग् ज्ञानादिक जे मोक्षना कारण छे तेने माटे जेम जिज्ञासा अवश्यनी छे तेम ते जिज्ञासा प्रमुख

आ शुद्ध वदनानुं खास लिंग छे केमके तेथी शुद्ध वदनानु यथार्थ स्वरुप जाणीने सुखे सेवी शकाय छे

२७ उद्वेगादिक दोषोने तजी चित्तने स्वस्थ राखवु, तत्त्व स्वरुपमां प्रीति लगाववी अने आनंदकारी तत्त्व जिज्ञासा (जाणवानी अभिरुचि राखवी) ते विगेरे माय सम्यग्ज्ञान दर्शनादिक आत्मगुणनो अभ्युदय थवामां कारणरुप थाय छे, एम पातजल्यादिक योग शास्त्रोमा सारी रीते सिद्ध करी बतावेल छे.

" जिज्ञासा रुप चिन्हवाली शुद्ध वदना क्यारे प्राप्त थाय ते कहे छे "

२८ प्रथम करण-" यथाप्रवृत्तिकरण उपरात वर्तता एवा अपुनर्बंधक प्रमुख जनो, जेओ कदाग्रह रहित होय छे, तेमने आ उपर जणावेली शुद्ध--निर्दोष वदना होवी घटे छे पण बीजा अयोग्य जनोने ते होवी घटती नथी. ते करण त्रण प्रकारनां प्रगटपणे शास्त्रमा कह्यां छे

२९ "यथाप्रवृत्ति" करण पहेलु (ते तो अनादि ससारमां अभव्य जीवोने पण कइ वखत प्राप्त थाय छे) बीजु "अपूर्वकरण" (अनादि ससारमा पूर्वे प्राप्त नहि थयेलु एवु अपूर्व होवाथी) अने त्रीजु " अनिवृत्तिकरण " (जे मोक्षरुपी वृक्षना बीज समान सम्यकत्वने पाम्या वगर पाछु न वळे ते) तेमा बीजु अने त्रीजु केवळ भव्यजनोने ज प्राप्त थाय छे, बीजा अभव्यने तो केवळ प्रथम यथाप्रवृत्तिकरण ज प्राप्त थाय छे, पण पछीना बे करण प्राप्त थइ शकताज नथी जीवना अध्यवसाय विशेषने शास्त्रकार करण कहे छे,

"त्रण करणोनो विभाग—विवेक बतावे छे "

३० निबिड राग—द्वेषना परिणामरूप ग्रंथि प्रदेशे पहोंचता सुधी प्रथम करण होय छे उक्त ग्रंथीने भेदनारने बीजु अपूर्वकरण प्राप्त थाय छे, अने त्रीजु अनिवृत्तिकरण तो जेने सम्यक्त्वनी प्राप्ति अवश्य तरतमाज थवानी होय तेनेज प्राप्त थाय छे. मतलब के अनिवृत्तिकरण करी जीव तरतज समकित पामे छे

३१ आ उपर जणावेला विवेकथी शुद्ध वंदनानो लाभ मळे छे तथा अनादि संसार चक्रमां भमतां द्रव्यलिंगे तो आ वंदना सर्वे एटला बधा आदरथी आलोचना करवी के ते आत्माने मोक्षने माटे ज थाय मतलब के हवे शुद्ध वंदना ज करवी.

३२ शुद्ध वंदनायोगे जीवने अर्ध पुद्गल परावर्तनथी अधिक संसार भ्रमण रहेतु ज नथी, एम जिन आगममां स्पष्ट जणावेलु छे

३३ उपर जणावेली शास्त्रयुक्तिथी बुद्धिवंत जनोए आ चैत्यवंदनानो सारी रीते विचार करवो केमके (जेम तेम) चैत्यवंदना करवा मात्रथी निर्वाण पदनी प्राप्ति थइ शकती नथी केवळ शुद्ध वंदनाथी ज तेनी प्राप्ति थाय छे

३४ वळी " आवश्यक निर्युक्ति " प्रमुख शास्त्रोमां चार प्रकारना साचा खोटा रुपीआनु दृष्टांत शास्त्रना जाण पुरुषो कहे छे, ते पण अत्र चैत्यवंदनाना प्रसंगे सारी रीते विचारवा योग्य ज छे "ते चार भेद बतावे छे "

३५ जेमां सोनु रुपु विगेरे साचु अने छाप पण साची ते रुपी-

ओ साचो समजवो जेमां छाप खरी न होय अने सोनु रुपु प्रमुख साचु होय ते रुपीओ सर्वथा शुद्ध नथी (तो पण ते मूळ शुद्ध हो वाथी सारो छे)

३६ सोनु रुपु विगेरे खोटुं छतां उपर छाप साची होय तो ते रुपीओ खोटो ज जाणवो तेमां वळी छाप पण खोटी होय (अने मूळ धातु तो खोटी छे ज) तेनु तो कहेवु ज शुं ? ते तो प्रगटपणे खोटो ज कहेवाय. उपर कहेला चार प्रकारमां पहेला प्रकारथी पूर्ण फळ, बीजाथी कइक अधुरु फळ अने त्रीजा चोथाथी तो मुग्धजनोने छेतरवा शिवाय बीजु कशु फळ नथी

३७ त्रीजा चोथा प्रकारमां जणावेलु मुग्धजनोने छेतरवारुप अनर्थकारी अथवा स्वपरने अपकारकारी फळ आ प्रस्तावे अनुपयोगी होवाथी जणाव्यु नथी. फक्त आगम अनुसारे आत्मगत मोक्षादि फळ ज आवी रीते चिंतववु घटे छे.

" उपनयवडे यथाक्रम जणावे छे "

३८ अपुनर्बंधकादिकने उचित एवा श्रद्धान अने भक्तिरुप भाववडे अने छापरुप शुद्धवर्णादि तेमज तद्गत क्रियावडे कराती वदना शुद्ध वदना जाणवी, ते यथोदित गुणवाळी होवाथी निश्चये मोक्षफळने आपनारी छे, अने प्रथम प्रकारना रुपीआ तुल्य छे

३९ पूर्वोक्त श्रद्धा अने भक्तिभावथी करवामां आवती बीजा प्रकारना रुपीआ जेवी चैत्यवदना तेना अक्षर, अर्थ विगेरेथी अशुद्ध होय तोपण ते अभ्यास दशाने बहु सुखकारी छे अथवा मोक्षादिक

फळ आपवावाळी होवाथी शुभ—प्रशस्त छे एम तीर्थंकरादिकोए फरमावेलुंछे केमके " भावशून्य क्रिया " अने " क्रिया शून्य भाव " ते बनेमां खजवा अने सूर्य जेटलु अंतर रह्यु छे, मतलब के भावनीज प्रधानता छे

४० भाव वगरनी वदना, वर्ण—अक्षरादिकथी शुद्ध होय तोपण ते त्रीजा प्रकारना रुपीआ जेवी कूडी—खोटी छे, अने उभय शुद्धि वगरनी वदना तो चोथा प्रकारना रुपीयाना जेवी होवाथी यावत् अनर्थ फळने आपवावाळी छे.

४१ प्राय' एवी अशुद्ध वदना क्लिष्ट परिणामी—भारेकर्मी जड-बुद्धि जनोनेज संभवे छे अने ते प्रायः दुर्गति (कुदेवत्वादिक) फ-ळने आपे छे, तेमज आवा दुषम काळमां काळदोषथी प्राय' एवी अशुद्ध वदना प्रवर्त्ते छे.

४२ अन्य आचार्यो तो आ नाममात्र जिन वंदनाने लौकिक वदना कहे छे तेथी तेनु फळ पण तेवुज छे (अर्थात् साक्षात् अनर्थ फळवाळु कहेता नथी) अथवा तेवी वदना लौकिक वदना करतां कंइ पण वधारे मोक्षादि फळरुपे थती नथी.

४३ ए उपर कहेली वात पण युक्त छे केमके " भावयुक्त जि-नवंदनानु सेवन नहि करवाथी मोक्षादिरुप तेना उत्तम फळनी जेम " उन्माद महत्व अनर्थ फळ थवु पण घटित नथी.

४४ जैन वदना तो, विधिथी करतां मोक्षादि फळ आपे अने तेथी विपरीत करतां विपरित फळ आपे, तेवी लौकिक वदना नथी एक उभय प्रकारना फळनो अभाव जेमां होय एवी वदना जैनी केम

होय ? अपितु नज होय तेथी अर्थानर्थ अभाववाळी ते वदना लौकिक जाणवी तेज वात स्पष्ट निर्धारपुर्वक समजावे छे.

४५ ते माटे उक्त दुर्वंदना (जैन सरखी देखाती) पुर्वोक्त युक्तिथी लौकिक्ज जाणवी. तेमज उक्त वदनामां शुद्ध श्रद्धान तथा भक्तिनो अभाव होवाथी केवळ अर्थशून्य--उपयोग शून्य 'ठाणेण, मोणेण, झाणेण' इत्यादिक पदो उच्चारवाथी ते अवश्य मृषावादरूप थाय छे एम विचारी हृदये सान लावी तेवा अविधि दोषथी पाछा ओसरी, जेम बने तेम विधिनो खप करी शुद्ध उपयोग सहित भाव वदना करवी

" विधियुक्त शुद्ध वदनानी दुर्लभता शास्त्रकार बतावे छे "

४६ शुभ (सुखकारी) फळने उत्पन्न करी आपनार चिंतामणि, कल्पवृक्ष, कामकुंभ, कामधेनु प्रमुख लौकिक पदार्थो पण अभव्य-अयोग्य जीवोने प्राप्त थता नथी, तो पछी परम पद--मोक्षना बीजरूप आ परम--विशुद्ध प्रभुवदनानु तो कहेवुज शु ? एतो कोइ हळुकर्मी--आसन्नभवी--अपुनर्बंधकादिक जीव विशेषनेज प्राप्त थइ शके छे दीर्घ ससारी--भारे कर्मी जीवोने तेनी प्राप्ति दुर्लभज छे.

" अभव्य अयोग्य जनोने उक्त शुद्ध जिनवदनानी प्राप्ति थतीज नथी, तेमज भव्य जीवोमां पण सर्व कोइने तेनी प्राप्ति थती नथी ते वात शास्त्रकार बतावे छे. "

४७ जे आसन्नभवी छे तेज अत्र शुद्ध वदना अधिकारे योग्य

जाणवा. "जातिमात्र भव्य" -कइ योग्य काळ नथी केमके तेनु जातिमात्र भव्यपणु तो शास्त्र-सिद्धांतमां अनादि काळनु [सहगत] कहेलु छे, परंतु ते कइ इष्ट फळ-मोक्ष पमाडनारु कह्यु नथी. मतलब के सर्व भव्योने निर्वाणनी प्राप्ति थती नथी

"जे भव्यजनो उक्त जिनवंदनाने विधियुक्त सेवे छे अथवा तेनी यथार्थ विधि उपर श्रद्धा राखे छे तेओ आसन्न भव्य छे. तेमज जेओ उक्त जिनवंदना तेमज तेनी विधिनो द्वेष करता नथी तेओ पण आसन्न भव्यज छे एम जणावे छे"

४८ जेमने यथार्थ विधि तरफ द्वेष-तिरस्कार नथी, तेओ पण क्लिष्ट कर्मना क्षयोपशमथी शुद्धिने पामेल्ला होवाथी आसन्न भव्य जाणवा अने जेओ साक्षात् विधियुक्त जिनवंदनादि करे छे अथवा उक्त विधिमार्ग उपर जेमनी सारी श्रद्धा छे तेमनु तो वळी कहेवुज शु ? तेओ तो आसन्न भव्य छेज एम चोक्स जाणवु क्लिष्ट कर्मवाळा क्षुद्र परिणामी जीवोने तो शुद्ध विधि संबंधी उपदेश सिंहनाद जेवो त्रासजनकज लागे छे.

"एवी रीते वंदना संबंधी विधि-अविधिनु फळ बतावी विधिनो खप करवा शास्त्रकार उपदिशे छे"

४९ एवी रीते पुर्वापर विरोध न आवे तेम आगम (शास्त्रार्थ) सारी रीते विचारी मुग्ध-मंद बुद्धिवाळा जीवोना हितने माटे धर्माचार्योए सम्यग् विधिनो खप करवो. मतलब के पुर्वे जणाव्या मुजब विधिमार्गमां पंडित पुरुषोए पोते पण खप करवो अने अन्य योग्य जनोने उक्त विधिमार्गनो उपदेश आपी तेमां जोडवा. अथवा

पोतेज आगम रहस्य जाणी विधि रसिक बनी क्रियानुष्ठान प्रमाद रहित करवु, जेथी मुग्धजनो पण स्वहितकारी शुद्ध मार्गमा सहेजे जोडाय.

५० अत्र प्रस्तावे पंडित जनोए पक्षपात तजीने तीव्र ग्लानादि वने देवा योग्य औपधादिकना दृष्टांत विचारवा योग्यज छे तेमा जेम बाळ युवान के वृद्ध रोगीने उचित काळे उचित प्रमाण (मात्रा) थी उचित पथ्य के औषध अपाय तोज ते तेने गुणकारी थाय छे, नहि तो उलटो नवो रोग उत्पन्न थाय छे अथवा तो पुर्वला रोगमां वृद्धि थाय छे, तेम सकळ कल्याणने साधी आपनारी जिनवदना सबधी नियमो पण योग्यनेज विधि साथे देवामां आवे अने ते प्रमाणे पाळवामां आवे तो ते गुणकारी थाय छे नहि तो अनर्थकारीज थाय छे एम समजी ते सबधी विशेष अधिकार मध्यस्थपणे टीका उपर थी जाणी सत्य मार्ग आदरवा सदाय उत्सुक थवु. इतिशम्,

॥ ॐ ॥

श्रीमान् हरिभद्र सूरिविरचित

जिन चतुर्थ पूजा विधि पचाशक.

(संक्षिप्त व्याख्या)

(प्रस्तावना)

श्रावके निरतर त्रिकाळ जिनपूजा करवी जोइए तेटला माटे आ चोथा पचाशकमां कर्त्ताए जिनपूजानो विधि दाखल करेलो छे. श्री जिनपूजाना समयनो निर्णय, केवी रीते द्रव्यभावथी पवित्र थइने श्री

जिनपूजा गृहस्थोए करवी ? पूजा मसगे पुष्पादिक सामग्री केवी उत्तम मेळववी ? प्रभुपूजा मसगे गृहस्थोए केवी जयणाथी–जयणानो खप करी पूजा करवी ? पुष्पादिकने किलामणा न थवा पामे तेने माटे केटली बधी काळजी राखवी ? तेमज उक्त पुष्पोनी काचा दोराथी अने बहुज ढीली गांठथी गुंथेली माळाओ प्रभुना कंठमा केवी रीते आरोपवी ? प्रभुनी पूजा करता पूजा करनार श्रावके प्रभु उपर अथवा प्रभुना गुणो उपर केटलु बधु बहुमान राखवु ? पूजा करवा आवनारे निर्मोहि प्रभुख दश त्रिकी साचववा पूरतु लक्ष राखवु, तेमज द्रव्यपूजा कर्या बाद गंभीर अर्थयुक्त (महापुरुष प्रणित) स्तुति स्तोत्रो वडे चढता परिणामे भावपूजा करवी, एवा उत्तम स्तुति स्तोत्रयुक्त चैत्यवंदन करवानु माहात्म्य, तेना प्रत्येक सूत्रो–शक्रस्तव प्रमुख यावत छेवटे 'जयवीयराय' रूप प्रणिधान कहेता तेना गंभीर अर्थमां आपणो उपयोग परोववा राखवी जोइती काळजी, अने काउसग्गमा क्षोभ रहित राखवी जोइती स्थिरता आदी उल्लेख करी, प्रभु पूजा अंगे थती अनिवार्य द्रव्यहिंसा आशयनी शुद्धिथी गृहस्थने परिणामे हिंसा रूप नथी एम 'कूपखनन' प्रमुख दाखला दलीलोथी शास्त्रकारे सिद्ध करी आप्युं छे. वळी उक्त पूजाथी पूजा करनारने प्रत्यक्ष अने परोक्ष बहु लाभ थाय छे, ते विगेरे अति उपयोगी बाबतोनो आ पूजा प्रकरणमां पुज्यपाद श्री हरिभद्र सूरीश्वरे बहु असरकारक रीते संक्षेपमां समावेश करेलो छे उक्त सर्व बाबतो उपरान शास्त्रकारनी लेखन शैली अद्भुत गौरववाळी छे. तेनो ---- लेइ भव्य जनो परमार्थ साधी स्वश्रेयने साधो. इतिशम्

ऋावार्थ

१ श्री "महावीर प्रभुने" प्रणाम करीने "जिनपूजानो विधि" अर्थ गंभीर छतां गुरु उपदेश अनुसारे "संक्षेपथी कहीश (ए शास्त्रकारनी प्रतिज्ञा छे.) विस्तारथी तो पूर्वना आचार्योए ते अन्यत्र प्रदर्शित करेल ज छे

२ आ लोक संबंधी पण खेतीवाडी प्रमुख सघळी क्रिया "विधिपूर्वक" करवामां आवती फळदायी नीवडे छे, तो पछी उभय लोकमां हितकारी जिनपूजा जो विधिपूर्वक करवामां आवे तो ते इष्ट फळदायी थायज तेमां नवाइ शी ?

३ आगळ कहेवामां आवता विधि मुजब "योग्य समये पवित्र थइ प्रधान पुष्पादिक सामग्रीवडे उत्तम स्तुति तेमज स्तोत्र विशिष्ट जिनपूजा (श्रद्धावत श्रावकोए) करवी जोइए "

"प्रथम पूजा समय आश्री शास्त्रकार कहे छे"

४ जेम खेतीवाडी वर्षारतु विगेरे टाकणे करवामां आवती बहु फळदायी नीवडे छे, तेम जिनपूजादिक सघळी क्रिया पोतपोताना समये सघातीज सुखदायी थाय छे

५ ते पूजाकाळ सामान्य रीते तो प्रभात, मध्याह्न अने सायं-काळ रुप त्रिसंध्या समय जाणवो अथवा राज्यसेवा, व्यापारादिक आजीवीकानां साधनमां विरोध न आवे ते अने तेटलो काळ पण पूजाकाळ जाणवो.

६ खरी रीते शुभ-सुख वृद्धि गवेषता बुद्धिमान जीवे जेम कल्याण परंपरा वृद्धि पामे तेम आदर करवो जोइए तेथी राजसेवकादिके पण स्वकार्यमा विरोध न आवे तेम जिनपूजामा प्रमाद रहित यत्न करवो

७ आजीवीकानो विघात थाय तो गृहस्थनी सर्व क्रियाओ सीदाइ जाय, तेथी गृहस्थने आजीविकानी अपेक्षा राखवी पडे, परंतु जेने तेवी दरकारज (स्पृहाज) नथी तेने तो संपूर्ण साधुधर्मज स्वीकारवो युक्त छे

८ ते माटे ए आजीविकाहेतुक क्रियामा विरोध न आवे तेम पूजामा आभिग्रहिक काळ पण मान्य राखेलो छे एटले चैत्यवंदन कर्या वगर मारे भोजन करवु नहि के शयन करवु नहि एवो नियम लेवो ते युक्त छे केमके तेथी जिनपूजा करवानो अध्यवसाय बन्यो रहेछे

"हवे पवित्रता राखवा शास्त्रकार कहे छे"

९ तेमा द्रव्यथी "अने भावथी बने रीते पवित्र बनी प्रभु पूजा करवी" द्रव्यथी देशस्नान के सर्वस्नान वडे देहशुद्धि करी, शुद्ध-धोएला धवल वस्त्र धोतर अने उत्तरासंग धारीने अने भावथी तो अवस्था उचित निर्दोष (न्याय युक्त वृत्तिथी युक्त बनीने) न्यायज सकळ धर्ममळ टाळवा समर्थ नीरतुल्य होवाथी ते भावथी शौच जाणवो

१० द्रव्यस्नानादि पण "जयणायुक्त करता" आरंभग्रस्त गृहस्थने नियमा गुणकारी ज थाय छे केमके ते 'उपलक्षण निश्चे शुभ भाव उत्पादक बने ... दाखता

कादवथी लेपावावडे कष्ट पेदा थाय छे, परतु जळ नीकळतां उक्त सर्व दोषो नष्ट थइ जाय छे अने स्वपरने उपकारक वने छे, तेम प्रभु पूजा अर्थे करवामां आवतां स्नानादिक पण आरभ दोषने टाळी शुभ परिणामनी प्राप्तिवडे अशुभ कर्मनी निर्जरा तेमज विशिष्ट पुण्यबंधनां कारणरूप थाय, माटे अधिकार परत्वे "आरभग्रस्त गृहस्थने जिन पूजा, तेमज जिनपूजा अर्थे द्रव्यस्नानादि उपकारक छे."

११ ते "जयणा"—जीवरक्षा माटे स्नान भूमिने नजरे जोवाथी तेमज जळने गाळ्या बाद वापरवा विगेरेथी बने छे एवी रीते "जयणापूर्वक स्नानादिक करता बुद्धिवंत जनोने शुभ अध्यवसाय अनुभवसिद्ध प्रगटी नीकळे छे.

१२ जिनपूजा अर्थे स्नानादिक वर्जी बीजे बधे स्थळे जीववधकारी आरभने सेवनारो प्राणी जिनपूजादि निमित्ते अनारभ सेवे (एटले उचित आरभ करतां अटके, मनमां शका लावे, तेनो निषेध करे) ते प्रगट रीते अज्ञान आचरण दीसे छे तेवा अज्ञान आचरणथी लोकमां जिनशासननी लघुता थाय छे. एवी रीते के जुओ आ जैनो! स्नानादिक कर्या वगर पण केवा, जिनोने पूजे छे! अने एवी रीते शासननी निंदा करावबाथी भवान्तरमां जिनधर्म प्राप्तिनो अभाव थाय छे ते माटे द्रव्यथी स्नान करी, शुद्ध वस्त्रधारीनेज जिनपूजा करवी युक्त छे अन्यथा उपर जणावेला दोषोनी प्राप्ति थाय छे

१३ अशुद्ध—"अन्याय" वृत्ति पण एवीज राते अधिक "दोषकारी" छे केमके तेथी तो वळी अनेरा राजनिग्रहादिक दोषो

नीपजे छे तेटला माटे द्रव्यथी अने भावथी बने रीते पवित्र थइ जिनपूजा करवी जोइए.

" हवे विशिष्ट पुष्पादिक सामग्री वडे प्रभुपूजा करवी युक्त छे एम बतावे छे "

१४ श्रेष्ठ सुगंधी धुपवडे, सर्व औषधीओवडे, जातजातना जळादिक वडे, (आदि शब्दथी दुध घृत अने इक्षुरस विगेरे समजवा.) सुगंधी चंदनादिकना विलेपन वडे, श्रेष्ठ सुगंधी पुष्पोनी माळाओवडे बलि [उपहार] वडे तेमज दीपक वडे—

१५ सर्षव, दधि अने अक्षत तथा गोरोचंदन प्रमुख मळी शके तेवा अने तेटला (मांगलिक पदार्थो) वडे, तेमज विविध सुवर्ण, मुक्ताफळ अने रत्नादिकनी माळओ वडे जिनपूजा करवी

१६ आवा उत्कृष्ट साधन (द्रव्यो) वडे पणु करीने मात्र (अध्यवसाय) पण श्रेष्ठ सपजे छे वळी आवां विद्यमान सारां द्रव्योनो श्री जिनपूजाथी बीजो कोइ वधारे सारो उपयोग जणातो नथी. माटे श्रेष्ठ पुष्पादिक सामग्रीवडे जिनपूजा करवी युक्त छे कयुं छे के 'देह पुत्र अने कलत्र (स्त्री) प्रमुख संसारनी वृद्धि माटे थाय छे, अने वीतराग प्रभुनी पूजा–भक्ति भव्यजनोने संसारना उच्छेदने अर्थे थाय छे.' आज बाबतने भावता छता शास्त्रकार कहे छे—

१७ आ लोक संबंधी अने परलोक संबंधी कार्योमां परलोक संबंधी कार्य साधन वधारे उत्तम छे 'तेनी उपेक्षा करनाथी बहुज अनर्थ संभवे छे' जिनपूजा ए (अति उत्तम) परलोक संबंधी कार्य

छे तेथी पूर्वोक्त उत्तम सामग्रीनो उपयोग करवा जिनपूजा जेवुं बीजु उत्तम स्थानक नथी ' ते पारलौकिक कार्य शुभभाववडे साधी शकाय तेवु छे ' माटे एवो शुभ भाव तत्कार्यार्थी जनो आदरवो अने तेवो भाव प्रभुपूजा अर्थे प्रवर पुष्पादिक सत्सामग्रीवडे सिद्ध थइ शके छे

१८ एटला माटे पोतपोतानी विभूति प्रमाणे बुद्धिवंत जनोए जिनेश्वर भगवान उपरना हृदयना प्रेम–उल्लास पूर्वक उत्तम पुष्पादिक सामग्रीवडे श्री जिनपूजा करवी यत 'श्री जिनेश्वर भगवान निष्कारण परोपकार रसिक छे, मोक्षदाता छे, इंद्रपूजित छे, स्वार्थत्यागी जनोने पूज्य छे अने जिनपद प्राप्ति करवा माटे पुष्ट आलंबनभूत छे ' माटे भक्तिथी पूजवा योग्य छे.

" हवे विधिद्वारनु निरुपण करवा माटे कहे छे. "

१९ आ पूर्वे वर्णवेलो ' काळ–नियम, शौच प्रमुख ' विधि जिनपूजानो सामान्य प्रकारेज समजवो विशेष प्रकारे तो पुष्पमाळादिक जे जे प्रभुना अंगे स्थापवां होय ते ते सर्व "जेम शोभायमान जणाय तेम यत्नथी एकाग्रपणे मौन शुद्धिथी करवु " श्री जिनपूजा करता " यत्नथी अन्य लक्ष " राखवु ते बतावे छे

२० वस्त्रवडे नासिका बांधी [अष्टपट मुखकोश बांधी] अथवा जो तेम करता असमाधि थती होय तो ते बांध्या वगर पण पुष्पमाळा आरोपणादिक सर्व कार्य यत्नथी करवा तेमज पूजाकाळे शरीरमां खरज खणवादिक क्रियानो पण त्याग करवो आदि शब्दथी नाक

छींकवानो तथा विकथा करवा प्रमुखनो पण त्याग करवानुं सूचव्युं
यत्नथी पूजा करनारने जे प्राप्ति थाय छे ते दृष्टांतथी देखाडे छे—

२१ जे सेवको पोताना स्वामी प्रत्ये पोतानी फरज[*Duty*] आदरथी बजावे छे ते स्वस्वामीने संतोष उपजाववाथी इच्छित फळने पामे छे. परंतु जेओ तेथी विपरीत वर्ती अनादरथी स्वकार्य करे छे तेमने इच्छित अर्थनी सिद्धि थती नथी, पण क्लेश मात्र प्राप्त थाय छे

२२ श्रीभुवनगुरु श्री जिनेश्वर आश्री तो उपर कहेली वात विशेषे लागु पडे छे एटले जगद्गुरु श्री जिनेश्वर भगवानती जे आदरपूर्वक भक्ति करे छे, ते अति उत्तम फळने पामे छे. तेथी विद्वान जनोए जिनेश्वरोनी पूजा पूर्वोक्त न्याये मुखकोश साथे अति आदर पूर्वकज करवी जोइए

" बहुमान पण विधिपुर्वकज प्रवर्तनार भक्तजनोने पेदा थाय छे ते बतावे छे. -

२३ एवी रीते प्रवर्तता परमपद—मोक्ष मेळवी आपनार बहुमान [हृदयप्रेम] पण निश्चे प्रगटे छे. तेमज अर्थगंभीर स्तुति स्तोत्र सहित चैत्यवंदन करवाथी पण परमपददायक बहुमान जागे छे माटे ते पण अवश्य कर्त्तव्य छे.

" स्तुति अने स्तोत्र केवां होय ? ते जणावे छे. "

२४ एक श्लोकमानवाळी स्तुति कहेवाय अने बहु श्लोक प्रमाण स्तोत्र कहेवाय. अनुक्रमे—"गंभीर शब्दार्थवडे युक्ति " अने " आप्त "

[सर्वज्ञ–वीतराग] ना " विद्यमान गुणोनुज जेमां गान करेउ होय तेज स्तुति स्तोत्र सारभूत प्रधान समजवां "

२५ ते सारभूत स्तुति स्तोत्रना अर्थावबोधथी जरुर शुभ अध्यवसाय जागे छे अने तेनो अर्थावबोध जेने थयो न होय तेने पण ते स्तुति स्तोत्र शुभ भावरूप होवाथी रत्नना दृष्टान्ते गुणकारीज थाय छे. जेम अजाण्यु पण रत्न तेना सुंदर स्वभावथी गुणकारीज थाय छे तेम पूर्वोक्त विशेषण विशिष्ट स्तुति स्तोत्र तेना अर्थ–रहस्यना अणजाणने पण हितकारीज थाय छे माटे ते सेववा योग्यज छे.

२६ रोगी जनोए जेना गुण जाण्या नथी एवा रत्नो जेम रोगीना ज्वर, शूळ प्रमुख रोगने शमावे छे तेम पूर्वोक्त स्तुति स्तोत्र रूप भावरत्नो पण कर्म रोगने टाळे छे

२७ तेटला माटे प्रभु पूजा कर्या पछी स्तुति स्तोत्रादिक पाठ पूर्वक, अस्खलितादि गुण युक्त, " आगम अनुसारे " अने " चढते परिणामे चैत्यवंदन अवश्य करवु जोइए "

२८ आवी रीते प्रथम प्रदर्शित पूजापूर्वक करवामा आवतु " चैत्यवन्दन कर्म–विषने दूर करवा परम मंत्र तुल्य छे " एवं सर्वज्ञ (अथवा शास्त्रज्ञ) कहे छे वेरुज चैत्यवंदन समये 'मुद्रा' त्रिधा 'योगमुद्रा' नमोथ्थुणं कहेती वखते, ' मुक्त सुक्ति मुद्रा ' जयवीयराय, जावंति चेइयाइं अने जावंत केवि साहू कहेती वखते, तथा 'जिनमुद्रा' काउस्सग्ग करती वखते] करवु जोइए, तेमज जिनो अने जिनकल्पिकोए आचरेल " अडोल कायोत्सर्ग करवो जोइए.

(५५)

" चैत्यवंदन समाप्त थता जे करवुं जोइए ते शास्त्रकार कहे छे "

२९ आ चैत्यवदननी समाप्ति रखने शुभ-मगळकारी प्रणिधान एटले प्रार्थनागर्भित एकाग्रता करवी जोइए उक्त प्रार्थना 'जय वीयराय' ना पाठवडे कहेवाय छे तेनाथी सद्धर्म व्यापारोमां प्रवृत्ति, मोक्षमार्गमां प्रवृत्ति करतां नडता विघ्नोनो जय (विघ्न विनाश), विघ्न विनाशथी धर्मकार्यनी सिद्धि तेमज स्वपर धर्मकार्योनुं स्थिरीकरण ए फळो प्रगटे छे एटला माटे तदर्थी जनोए 'प्रणिधान' अवश्य करवु.

३० आ 'प्रणिधान' करवाथी 'नियाणु' थतुंज नहि कुशळ प्रवृत्ति हेतुक होवाथी. 'प्रणिधान' तो 'आरुग्ग बोहिलाभ' इत्यादिक प्रार्थना तुल्य छे एटले बोधि प्रार्थना जेम नियाणा रूप नथी तेम आ 'प्रणिधान' पण शुभ अध्यवसायना कारणरूप होवाथी नियाणा रूप नथी तेथीज तेनी प्रवृत्ति छे. नहि तो चैत्यवदनना अंते ते भणायज नहि

३१ पूर्वी रीते 'प्रणिधान' योगे इष्टफळनी सिद्धि सपजे छे नहि तो प्रणिधान शून्य अनुष्ठान निश्चे द्रव्य अनुष्ठानज कहेवाय छे तेटला माटे योग्य भूमिका विशेषे आ 'प्रणिधान' नु करेतु अविरुद्ध-उचितज छे

"हवे तेनो विधि कहे छे."

३२ सविग्न एटले मोक्षार्थी अथवा भवभीत जने सावधान थइ तीव्र श्रद्धा वडे (ए मानसिक विधि कह्यो, हवे वाचिक कहे छे) मस्तकउपर बे हाथनी अंजली स्थापीने आ प्रणिधान आदरपूर्वक करवु

"तेनो पाठ क्रम बतावे छे"

३३ हे वीतराग ! (उपलक्षणथी हे वीतद्वेष ! अने हे वीतमोह !) आप जयवता वर्तो हे जगद्गुरु ! हे भगवान् ! आपना प्रभावथी मने प्राप्त थाओ ! भवमा निर्वेद (ससार उपरथी वैराग्य), मार्गानुसारीपणु (मोक्षमार्गमा प्रयाण) अने इच्छित फळनी प्राप्ति (जेथी चित्त स्वस्थ थाय अने धर्ममा सुखे प्रवृत्ति थाय एवी जोगवाइ मळो !)

३४ तेमज लोकविरुद्ध कार्यनो त्याग, माता पिता धर्माचार्यादि गुरजनोनी पूजा–भक्ति, परोपकार, शुभ गुरु महाराजनो सयोग, अने तेमनी आज्ञानु अखंड पालन जीवित पर्यंत मुजने हे भगवन्. आपना पसाये (सहाय) हो !

"आ प्रणिधान उचित भूमिका (अवस्था) पर्यंत करवु घटे छे एम शास्त्रकार बतावे छे"

३५ आ प्रार्थना–प्रणिधान, ते ते प्रार्थवायोग्य भव–निर्वेदादिकना अभावे करवानु छे (केमके अप्राप्त वस्तुनीज प्रार्थना कराय छे) अथवा अहीं मतांतर कहे छे के ते प्रार्थवा योग्य भव–निर्वेदनु जे अनतर (शीघ्र भावी) फल अप्रमत्तादिक गुणस्थानकनी श्रेणिरूप

अने परपर (अनुक्रमे थनारु) फळ मोक्षरुप तेना अभावे करवु उचित छे स्पष्टार्थ एवो छे के ज्या सुधी भव वैराग्यादिक प्राप्त थया न होय अथवा वैराग्यादिकना फळरुप अप्रमत्त गुणस्थानादिक प्राप्त न थाय त्या सुधी कुशळ अनुष्टान रुप प्रणिधान अवश्य करवु उचि-तज छे एटले अप्रमत्त (सप्तम गुणस्थानवर्ती) मुनिराजोथी आग-ळना जे प्रमत्त सयमी (छठा गुणस्थानवासी) मुनिराजो छे त्या सुधी तेमने सर्वने तो आ प्रणिधान करवु उचितज छे. परतु त्याग पछीना जे अप्रमत्त सयमी विगेरे छे तेमने ते करवु उचित नथी; केमके तेओ नीरागी–निस्पृही होवाथी कशी प्रार्थना करता ज नथी यत " मोक्षे भवे च सर्वत्र, नि स्पृहो मुनिसत्तम "

" पूर्वे कह्यु के प्रणिधान नियाणारुप नथी ते बाबतनु साधक प्रमाण दर्शावता कहे छे "

३६ आ 'जय वीयराय' रुप जे मोक्षांगो [निवृत्तिना कारणो] नी प्रार्थना अथवा मोक्षांग रुप प्रार्थना ते प्रणिधान करवा योग्य प्रमत्त गुणस्थान पर्यंतना जीवोने सूत्र–सिद्धांतनी अनुमति होवाथी नियाणारुप नथी. जेम बोधिलाभनी प्रार्थना शास्त्र अनुमत होवाथी प्रमाण छे तेम आ मोक्षाग प्रार्थना (प्रणिधान) पण शास्त्रानुमत होवाथी नियाणा रुप नथी पण प्रमाण छे अप्रमत्तादि गुणस्थान-वर्तीने माटे तो ते उचित नथी, एम पूर्वे प्रदर्शित करेलुज छे, तेथी प्रमत्त गुणस्थान पर्यंतज ते प्रार्थना–प्रणिधान करवु उचित छे

३७ एवी रीते मोक्षांग प्रार्थना नियाणारुप नथी, तो " दुक्ख-

श्रुतस्कंध, ध्यानशतक'' प्रमुख शास्त्रोमां 'आ धर्मथी हुं तीर्थंकर थाउं' एवी रीते प्रार्थनानो प्रतिषेध केम करेलो छे ? उत्तर–ते तीर्थंकरत्व प्रार्थन रागव्याप्त होवाथी भव प्रतिबद्ध छे, तेथी तत्प्रार्थन–प्रतिषेध युक्त छे.

३८ रागासक्तपणे तो ते प्रार्थना दूषित छे, परंतु राग रहित करेली तेज प्रार्थना अदूषित छे राग रहितपणे (नीरागी भावे) करवामां आवता जिनभक्ति प्रमुख कुशल अनुष्ठान थकी अनेक भव्य जनोने हितकारी अने अनुपम आनंद संपादक अपूर्व चिन्तामणि सदृश (अचिन्त्य सुखदायक) तीर्थंकरपणुं प्राप्त थाय छे

३९ तेथी सद्धर्म देशनादिक तीर्थंकरनी करणी हितकारी छे अने एवा प्रकारना उत्तम अध्यवसायवाळा आत्माने अप्रतिघाती छे माटे सद्धर्म देशनादिक धर्मकरणीमां प्रवृत्ति स्वरूप तीर्थंकरत्वनी प्रार्थना अर्थापत्ति न्यायथी दूषण रहित छे

४० आ स्थळे प्रणिधान संबंधी वधारे कथन करवाथी सर्यु। एवी रीते शास्त्र नीति मुजब निर्दोष जिनेश्वर भगवाननी पूजा मनुष्य भव प्रमुख उत्तम सामग्री पामीने अवश्य करवी उक्त विषयमां भव्य जनोए क्यारे प्रमाद न करवो.

४१ जिन पूजा करतां पृथ्वीकाय प्रमुख जीव निकायनी हिंसा थाय छे, ने हिंसानो जिनेश्वर भगवाने निषेध करेलो छे तेमज (तेम छतां) ते पूजा पूज्य–जिनोने (कइ) उपकारी नथी तो पछी एवी पूजा निर्दोष–दोष रहित शी रीते होइ शके ?

" उक्त शंकानु समाधान करे छे "

४२ जिन पूजामां कथचित्–कोइ प्रकारे जीववध थाय छे, तो पण 'कूप खनन' दृष्टांतथी गृहस्थोने ते जिनपूजा निर्दोष कही छे. बराबर जयणा पूर्वक प्रभु पूजामां प्रवृत्ति करे तो तेमां सर्वथा जीव हिंसा न लागे केवळ तेमां अध्यवसायनी विशुद्धिथी अनुबंध हिंसानी ज पुष्टि थाय. साधु–निग्रंथोने तो ते द्रव्यपुजानो निषेध रोगीने औषधनी पेरे कयेलोज छे

" बीजु समाधान आपे छे "

४३ गृहस्थो असद् आरंभमां प्रवृत्त थया होय छे एटले जेमां जीवहिंसा थया करे एवा कइक खेतीवाडी प्रमुख धंधा करता होय छे तेमने आ जिनपूजा ते असद् आरंभथी निवर्तावनवाळी थाय छे. एवी रीते के जिनपूजामां ज्यां सुधी गृहस्थ प्रवृत्त होय त्यां सुधी तेने असद् आरंभनो असंभव अने शुभ भावनो संभव होवाथी प्रभु पूजा ते पापारंभथी मुक्त करावनारी थाय छे ज एम कहेवाय छे ते बुद्धिशाळी जनोए सारी रीते आलोचवा–विचारवा योग्य छे

" हवे जे कह्यु के पूजा पूज्यने कइ उपगारी नथीज तेनु समाधान करवा कहे छे "

४४ जो के कृतकृत्य होवाथी पूज्य एवा जिनेश्वरोने पूजाथी उपगारनो असंभव छतां पण पूजा करनार भक्त जनोने तो पुण्यबंधादि रूप उपगार थाय ज छे, जेम मंत्रादिक स्मरण अने अग्नि प्रमुखनु सेवन करतां ते ते मंत्र अग्नि प्रमुखने उपकारक नहि

फने तो उपगार थाय ज छे तेम अहीं पण पूजा विषये भव्य पुरुष ने उपगार समजवो

" पूजामां जीव वध थाय छे एम मानता छतां ते जीव वधनी बीकथी जे मधुपूजामां प्रवृत्ति फरता नथी तेमने उत्तरको आपवा माटे कहे छे "

४५ जेओ स्वदेहादिक निमित्ते पुत्र परिवारादिकने अर्थे पण जीवहिंसामां प्रवृत्ति करे छे तेमने जिनपूजा अर्थे (देखाती) जीव हिंसामां न प्रवर्तवु—एसाती जीवहिंसाथी डरी जिनपूजा थकी दूर रहेवु ए मोह मूढता छे मोह मूढता वगर विशुद्ध भावने पेदा कर नारी अने बोधिलाभादिक अनेक गुण संपादन करी आपनारी, पर मार्थथी जीवरक्षाना निमित्तभूत होवाथी केवळ दया लक्षणवाळी अने स्वपरने मोक्षरूप अमोघ फळ आपनारी जिनपूजामां अप्रवृत्ति—प्रवृ त्तिनो त्याग थाय ज केम ? पाप आरंभमां आसक्त होवाथी विशिष्ट दया वर्जित गृहस्थने पवित्र जिनपूजानो त्याग करवो ए केवळ कल्याण अनुष्ठानथी अलगा रही आत्माने ज ठगवा जेवु छे.

४६ एटला माटे मोक्ष सुखने इच्छनार गृहस्थ जनोए सूत्र क थित विधि अनुसारे प्रमाद रहित श्री जिनेश्वर भगवाननी पूजा (अ वश्य अहर्निश) करवी जोइए

४७ जेम (स्वयंभूरमणादि) महासागरमां क्षेपवेल एक ए बिंदु (अनेक बिंदुओनी वात दूरज रहो !) अक्षय थइ रहे छे ते

गुणरत्नोना आधारभूत होवाथी समुद्र समान श्री जिनेश्वरोने करेली पूजा फळनी अपेक्षाये अक्षय थाय छे

४८ जिनेश्वरोनी पूजावडे वीतरागत्वादि उत्तम गुणो उपर तेमज उत्तम गुणधारक जिनो उपर बहुमान उपजे छे, उत्तम प्राणीओमां पोतानी गणना थाय छे, अने अनुक्रमे उत्तम धर्म (परमात्म स्वरूप) नी प्राप्ति थाय छे अथवा पूजा–अर्चावडे जिन शासननी प्रभावना थाय छे.

" प्रभु पूजा तो महा फळदायी छेज, परन्तु पूजा करवानो उत्कृष्ट भाव पण (हु परमात्मा प्रभुनी पूजा करु एवु एकाग्र चिन्तन पण) महा फळदायी छे, ते वात दृष्टान्तद्वारा दर्शावता छता शास्त्रकार कहे छे "

४९ जिनेंद्र–आगममां संभळाय छे के एक दुःखी स्त्री सिंदुवार जातना पुष्पोवडे हु जगद् गुरु जिनेश्वर भगवाननी पूजा करु एवा एकाग्र ध्यानथी मरण पामी स्वर्गलोकमां उपनी मतलब के प्रभुनी पूजा कर्या वगर केवळ प्रभुने पूजवा एकाग्र भावथी मार्गमां ज्यां आयुष्य क्षीण थवाथी ते मरण पामी, स्वर्गमां उपनी, तो जेओ अविहड भावथी प्रतिदिन स्ववैभव अनुसारे सार सामग्री मेळवी आदर पूर्वक जगद्गुरु श्री जिनेश्वरनी पूजा–अर्चा करी अमद आनद मेळवे छे, तेमज अनेक भव्य जनोने आकर्षी जिनशासन रसिक करे छे, ते भाग्यवंतोनु तो कहेवुज शु ?

" आ पूजा प्रकरण समाप्त करता छता श्रीमान् हरीभद्रसूरि कहे छे के–"

५० आ पूजा अनुष्ठान सम्यग् जाणीने तेनो शास्त्र अनुम निश्चय करी बुद्धिवंत मोक्षार्थी पुरुषोए उक्त अनुष्ठान केवळ म नीतिथीज अहर्निश करवु प्रथम सम्यग् जाणवु, केमके आत्म ज्ञान अज्ञानरूप होवाथी उपकारक थतु नथी. तत्त्वनी गवेषणा प सार तत्त्व आदरी लेवु एज बुद्धि पाम्यानुं उत्तम फळ छे जगद जिनेश्वर समान कोइ देव नथी एम मध्यस्थपणे निर्धारी मोक्ष जनोए ए देवनीज अहोनिश उपासना करवी उचित छे केमके मोक्षप्राप्तिनो अनन्य उपाय छे

इतिशम्

श्रीमन् हरिभद्रसूरिकृत

पचम षोडशक

लोकोत्तर तत्त्व संप्राप्ति अथवा परमार्थ पथनी प्राप्ति.

१ उपरना अधिकारमां लोक-लोकोत्तर धर्मनी वहेंचण कर्यु वगर सामान्य रीते समजाव्या प्रमाणे उक्त लक्षण युक्त धर्म; सिद्ध थये छते स्वशास्त्र व्यवहारमा कुशळ एवा अपुनर्बंधक अने सम्यग् दृष्टि सहु कोइ भव्य जनोने लोकोत्तर तत्त्वनी एटले "परमार्थ पथनी खरेखर प्राप्ति थइ शके छे

हवे ए लोकोत्तर तत्त्वनो लाभ केवा रूपमां अने क्यारे प्राप्त थाय छे तेनी वातने जणाववा शास्त्रकार कहे छे.

२ शरूआतमा सम्यक्त्वनी स्पर्शनारूप भावआरोग्यनी प्राप्ति

पछी ते शाश्वत धर्मरूप मोक्ष अथवा वीतरागत्वादिक परम भावआरोग्यनुं आम्र बीजे छे, अने ते " छेल्ला पुद्गल परावर्तनमा " क्षीण प्राय ससारवाळाने नियमा प्राप्त थाय छे

उक्त परमार्थ पथनी प्राप्ति छेल्ला पुद्गल परावर्तनमाज केम थाय छे ? तेनु कारण जणावे छे —

३ सुकृत कर्म, स्वभाव, पुरुषार्थ अने नियति रूप अन्य अपेक्षित कारणो विद्यमान सते ज्वर शमन–औषध समयवत् काळनी प्रधानता होवाथी छेल्ला पुद्गल परावर्तनमांज तेनी प्राप्ति थाय छे जेम चढता तावमां तावने शमाववा आपेलु औषध गुण करी शकतु नथी पण उलटो अवगुण करे छे, ज्यारे ताव पाकी जाय त्यारेज ते दीधेलुं औषध गुणकारी थाय छे तेम भव परिपाक समय प्राप्त थयेज आपवामा आवतु सद्धर्म औषध आत्माने अत्यत हितकारी थइ शके छे एवी रीते सिद्धान्तना जाण पुरुषो सारी रीते समजे छे

एज वातनु विशेष स्पष्टीकरण करी शास्त्रकार कहे छे.—

४ जेम चढता तावमा अकाळे आपेलुं औषध हितकारी थतु नथी तेम भवस्थिति परिपाक समय प्राप्त थया पहेला आपवामां आवेलु धर्म औषधनु सम्यग् परिणमन थइ शकतु नथी, पण विपरीत परिणमन थाय छे, ते वातनेज शास्त्रकार दृष्टान्तथी सिद्ध करे छे

५. जेम मद चक्षुवाळा लोको दीपकादिक प्रभामडळने गोरना पीळा जेवा लीला राता वर्णवाळा रगबेरगी आकारना जुए छे तेम मदबुद्धिवाळा लोको आगम–सिद्धात दीपकमा पण परमार्थथी अछतु " अध्यारोपमडळ जुए छे एटले जेना अपवादनो विषय होय

गहिं तेवा स्थानमां अपवाद विषय प्रधान आरोप करी बेसे छे. एवी रीते तेमने दृष्टिदापथी आगमनुं अवळुं परिणमन थाय छे. ए तनु कार्य लिंगवडे समर्थन करे छे.

६ उक्त "अध्यारोप" अथवा "भ्रान्तिबीज" वडे स्वर्गादिक प्रसिद्ध फळ माटे प्राणाळा दान शीलादिक धर्म विषे तेओ अविधिनुं सेवन करे छे जो एम न होय अर्थात् एवी भ्रान्ति न होय तो पछी तत्त्वदृष्टि जनो शामाटे दुष्ट अविधिनुं सेवन करे? न ज करे अर्थ-भ्रमवगर दुष्ट अविधिसेवा असंभवित छे एम शास्त्रकार स्फुट करी बतावे छे.

७ जे जनो आ रीते अविधिनुं सेवन करे छे तेमने आगम वचन के सर्वज्ञ वचन सम्यग् परिणमेलुं नथी, एम स्पष्ट जणाय छे, केमके अमृत रसना आस्वादने जाणनार कोण माणस विषसेवन करवा मथे? अपितु कोइ पण न मथे. अविधिसेवन विषनुं आगमी जरूर तेनो परिहार न करे इवे फलितार्थ जणावे छे

८ तेथी छेल्ला पुद्गल परावर्तमां आगम वचननुं खरेखर तत्त्वथी परिणमन थाय छे अने आगम वचननुं जेमने सम्यक् परिणमन थाय छे तेज आ लोकोत्तर तत्त्वप्राप्तिना खरेखर योग्य अधिकारी बने छे बाकीना तो अनधिकारी अयोग्यज गणाय छे आगम वचनना परिणामनी प्रशस्तता शा कारणथी छे? ते कहे छे

९. आगम वचननुं यथावत् परिणमन थयुं ए आ संसार भ्रमणरूप भाव रोगनुं निर्दोष औषध छे, तेथीज ते सत्य परिणति सद्अनुष्ठान सेवनना हेतुरूप होवाथी प्रधान सद्बोध छे एम शास्त्र

त्व वचननी परिणति थया वगर सद्अनुष्टाननु सेवन यथाविध थइ शकतु नथी अने ए आगम वचननी परिणति जाग्ये सते सद्अनुष्टान यथाविध सेवी शकाय छे माटे तेवी तत्त्व परिणिति थवी ए उत्तम सद्बोधरूप छे—एज श्रेष्ट सम्यग् ज्ञान छे. सद्बोध थकी अनुष्टान परिपूर्ण थी रीते थाय ते कहे छे.

१० क्रोध, लोभादिक दश संज्ञाओ मुद्रित थये छते परोपकार करवामां सदा तत्पर अने गभीरता तथा उदारताने सग सेवनार सद् अनुष्टानने अखड आराधी शके छे विधि रसिक जीवे लोक संज्ञादिकनो यथाशक्ति निरोध करवो जोइए अथवा निरोध करवा उत्साह अवश्य आरभवो जोइए. तेथी सदा परोपकाररसिक उदार अने गभीर एवा तेने सद् अनुष्ठाननो अखड लाभ मळे छे

११ सर्वज्ञ प्रभुना वचन कहो के आगम वचन कहो, तेनु सम्यग् परिणमन थये छते पूर्वोक्त " क्रियामळ अने भावमळनो " नाश थवाथी पुरुषोने ए दशे संज्ञानो निरोध करवो ए निश्चे दुर्लभ नहि पण सुलभ ज थाय छे

१२ श्री गुरुमहाराजने अनुयायी थइ रहेवाथी अने सर्वत्र समान-पणे यथासभव दीनादिक विषयमां उचित आचरण सेववाथी दाना-दिक सघळी सघळा धर्मानुष्ठान निश्चे आगमने अनुसारे ज थाय छे

१३ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र पैकी स्व स्व जातिनी मर्यादा मुजब करेला व्यापारथी उपार्जेलु थोडु पण द्रव्य, पोताना मातपितादिक वडीलोनी आज्ञा मेळवीने, नोकर चाकर के स्वजन

जेमां पोते करेलां पाप निवेदन करवामा आवेलां होय, जे उपयोग सहित एकाग्रपणे उच्चारवामा आवेलां होय, जेना अनेक उत्तम अर्थ थइ शकता होय, अस्खलितादिक गुणो वडे युक्त होय अने महा मतिवंत पुरुषोए गुथेला–रचेला–होय एवा स्तोत्रादिक वडे प्रभुनी स्तवना करवी जोइए वळी कहयु छे–" गभीर महुर सद, महथ्थ जुत्त हवइ थुत्त " एटले गभीर–उंडा आशयवाळु, मधुर शब्द घ्व निवाळु, अने अनेक उत्तम अर्थ गर्भित स्तोत्र–स्तवन प्रभु सन्मुख कहेवु जोइए

प्र०—कायादिक शुद्धिथी करवामां आवेली द्रव्यपूजानु केवु फळ सपजे छे ?

उ०—कायादिक शुद्धिथी करेली निर्दोष द्रव्यपूजा " विघ्नो पशामिनी अभ्युदयजननी अने निवृत्ति–निर्वाणपदप्रापिका " थाय छे

मतलब के प्रधान पुष्प गध माल्यादिक वस्तुओ जाते ज जिनेश्वर भगवाननें जयणापूर्वक आरोपवा वडे, अने तेवीज उत्तम सामग्री बीजा पासे अणाववा वडे, तेमज त्रिभुवनमां श्रेष्ठ एवां कल्पवृक्षनां फळ तथा नदनवन सबधी चदन प्रमुख दुर्लभ वस्तुओ अत करणवडे स पादन करवावडे, त्रिकरण शुद्धयोगे कीधेली प्रभुपूजा उपर जणावेला उत्तम लाभ नीपजावी शके छे

प्र०—मुग्धजनो कहे छे के जिनपूजा करतां जीववध थाय छे, तेम छतां ते पूजा वडे प्रभुने कशो लाभ नथी, प्रभु तो कृतकृत्य छे तेथी पूजा व्यर्थ–फोकट छे तेनु केम ?

उ०—पूजा प्रसंगे अवश्य परिहारे थतो कायवध पण कूप उदाहरण मुजब गृहस्थ जनोने गुणकारीज गणेलो छे तेमज मंत्रादिकनी पेरे तेथी (मंत्रने) लाभ नहि छता ते मंत्र गणनारने तो लाभ थायज छे वळी प्रभु पोते कृतकृत्य होवाथीज गुणोत्कर्ष थकी तेमनी पूजा गुणकारी थाय छे माटे शरीर, स्वजन अने गृहादिक आरंभवाळा गृहस्थ जनोने ते प्रभुपूजा सफळ–सारां शुभ फळ आपनारी थाय छे एम निर्मळ बुद्धिवाळा महात्माओ कहे छे फक्त सर्व सावद्य आरंभवर्जित मुनिजनोनी पेरे सामायिक पौषधादिक भावस्तवमां लीन थइ रहेला, सावद्य आरंभ रहित गृहस्थने तेटलो वखत द्रव्यपूजानो अधिकार नथी. बाकी तो ते रोगीने औषधनी पेरे अवश्य गुणकारी ज छे एम स्व स्व अधिकार मुजब अवसरे अवसरे उचित प्रभुपूजा नियमसर–निश्चय पूर्वक करनार, करावामां सहाय अर्पनार तेमज तेनी अनुमोदना करनार धन्य–कृतपुन्य भव्यात्मा सुकृत समुपार्जीने अनुक्रमे भवनो अंत करी शके छे

प्र०—सद् अनुष्ठान केटला प्रकारनुं होय छे ? अने ते दरेकनुं सामान्य रीते केवुं स्वरुप छे ?

उ—१ प्रीति अ० २ भक्ति अ० ३ वचन अ० अने ४ असंग अ० एम चार प्रकारनुं सद् " अनुष्ठान " होइ शके छे ते दरेकनुं संक्षेपथी स्वरुप नीचे मुजब छे. जे अनुष्ठान करवामां करनारने परम आदर होय, हितबुद्धिथी जेमां अधिक प्रीति होय अने बीजी बधी वात तजीने जे तत्काळ करवामां आवे ते " प्रीति अनुष्ठान जाणवुं

प्रियावडे प्रीति अनुष्ठान तुल्य छतां जे गौरव विशेषथी (अधिक पूज्यभावथी) बुद्धिवंत पुरुषो विशुद्धतर करे ते भक्ति अनुष्ठान जाणवुं

स्त्री अने माता प्रत्ये उचित आचरणनी पेरे प्रथममां "प्रीति" अनुष्ठान अने बीजामां भक्ति अनुष्ठान जाणवु सर्वत्र धर्म व्यापार मां देश, काळ, पुरुष, व्यवहारादि अनुकूळताए सद्वर्तनवंत " साधु जनोनी जे निश्चे आगम–वचनानुसारे प्रवृत्ति ते वचन अनुष्ठान जाणवु

व्यवहारथी तो मार्गानुसारी जनोनी प्रवृत्ति पण (अमुक अंशे) वचन अनुष्ठान रूप जाणवी अने जे अनुष्ठान आगम संस्कार थई अत्यंत अभ्यास योगे, सत्पुरुषो चंदनगंधना दृष्टान्ते अनायासे एक भावे आचरे ते " असंग अनुष्ठान कहेवाय छे

जेम प्रथम दंडवती चक्रभ्रमण करवामां आवे पछी ते चक्र अनायासे फर्या करे तेम जे प्रथम वचनानुष्ठान होय ते अभ्यासवशात् दृढ संस्कारथी " असंग अनुष्ठान रूप " थइ जाय छे तेमां प्रथमनां बे सद्अनुष्ठानथी अभ्युदय–स्वर्गादि सुखनी प्राप्ति थाय छे त्यारे पाछलनां बे सद्अनुष्ठानथी निःश्रेयस्–मोक्षनी प्राप्ति थइ शके छे.

प्र०—शास्त्रमां कहेली पांच प्रकारनी क्षमानो केवी रीते (विभागथी) उक्त चार प्रकारना सद्अनुष्ठान साथे संबंध घटी शके छे ?

उ०—" उपकारक्षमा, अपकारक्षमा अने विपाकक्षमानो " प्रथमना बे अनुष्ठान साथे अने " वचनक्षमा " अने " सहजक्षमा " नो पाछळना बे अनुष्ठान साथे संबंध घटे छे.

प्र०—ज्ञान त्रण प्रकारनु जे कह्यु छे ते केवा प्रकारना दृष्टांत थी कह्युं छे ते समजावो.

उ०—" श्रुतज्ञान, चिन्ताज्ञान " अने " भावनाज्ञान (अनुभव ज्ञान) ए त्रण प्रकारनु ज्ञान अनुक्रमे " मिष्टजळ, दुध " अने "अमृतनी पेरे भव-तृषाने शमावी शके छे, तेथी रत्नत्रय समान उक्त त्रिविध ज्ञानने विषे परम आदर करवो युक्त छे. तेमा " श्रुतज्ञान " ते विनय बहुमानपूर्वक गुरुना चरण सेवी प्राप्त करेल शास्त्रार्थ संबंधी ज्ञान, तेज मनन करेलु " चिन्ताज्ञान, अने तेने सम्यग परिणमावी रसरुप करेलु अमृत समान शान्तिकारक " अनुभवज्ञान" जाणवु

प्र०—श्रुतमयज्ञाननु शु विशिष्ट लक्षण जाणवु ?

उ०—सकळ शास्त्रगत वचन साथे अविरोधी एवु निर्णीत अर्थ वचन रुप सारी रीते साचवी राखेला बीजनी जेवु सजीवन अने असद् अभिनिवेशथी अत्यंत रहित होय ते " श्रुतमयज्ञान " जाणवु आमा श्रुतरागथी आज दर्शन सुंदर छे एवो फक्त दर्शन-आग्रह होय,

प्र०—चिन्तामय ज्ञाननु विशिष्ट लक्षण शु जाणवु ?

उ०—महा वाक्यार्थ जनित, अत्यंत सूक्ष्म बुद्धिगम्य, सर्व प्रमाण नयगर्भित अविरुद्ध युक्तिओनी आलोचना युक्त जळमा तेल पसरी जाय एवु जे ज्ञान ते " चिन्तात्मक ज्ञान जाणवु. " दर्शन आग्रह आमां मुद्दल होयज नहि

प्र०—" भावना ज्ञाननु " विशिष्ट लक्षण शु जाणवु ?

उ०—सर्व ज्ञेय क्रिया विषये सर्वज्ञ आज्ञाज प्रधान कारण छे एवा तात्पर्यवाळु अने तेथीन दानविधि तेमज बीजी विधिमां वित्त अने पात्रादिक मध्ये अत्यंत आदरवाळु " भावना ज्ञान, " अ शुद्ध एवा जातिवंत रत्ननी स्वाभाविक कान्ति समान जाणवुं. बीजा ज्ञान करतां ते अधिक प्रकाशकारी होय छे.

" आ भावना ज्ञानमां चारिसंजीवनी चारना दृष्टांते सर्व जीवनो अनुग्रह करवानी परिणतिवडे गंभीर आशयथी सर्व कोइनी उपर हित वृत्तिज होय छे.

प्र०—व्रत–महाव्रत ग्रहण करवा रूप दीक्षा आदरवा यथार्थ अधिकारी कोने जाणवो ?

उ०—आ उपर जणावेला श्रुत–चिन्ता–भावनाज्ञान प्राप्त थये सते भव्यात्मा दीक्षा ग्रहण करवा यथार्थ रीते लायक समजवो तथा प्रकारना ज्ञान वगरनी दीक्षा तो वसन्त नृप (इल्लाजी) समान विडंबना मात्र समजवी

प्र०—दीक्षा शब्दनो–अक्षरज अर्थ शो थाय छे ?

उ०—श्रेय–कल्याणनुं दान आपे अने अशिव–अश्रेय तेनो क्षय करे ते यथार्थ दीक्षा आ जिनशासनमां मुनिजनोने मान्य छे, तेथी ते यथोक्त ज्ञानी–अधिकारीनेज निश्चे होवी घटे छे.

प्र०—जो उक्त ज्ञानीनेज दीक्षा निर्दोष होवी घटे तो पछी माषतुष प्रमुख मुनिओने शास्त्रमां निर्दोष दीक्षा कहेली छे तेनुं केम ?

उ०—जे रागादिक दोष–अनुग्रहरहित होवाथी श्रद्धावान होय

अने केवळ सूक्ष्म बुद्धिगम्य ग्रन्थार्थादिकनी जेमने गम न होय एम छतां पाप भीरु, गुरु भक्त अने आग्रह (मीथ्या भिनिवेश) रहित होय ते पण ज्ञानवानज कहेवाय. ज्ञाननु पण एज फळ छे के संसारथी विरक्तपणु मात्र करवु श्रीमद् गुरुनी भक्तिमां एकनिष्ठ बनवु इत्यादिक, ते तो आ महाभावोमां होयज छे. तेथी तेमनी दीक्षा पण निर्दोष छे मतलब के जो एक निर्मळ चक्षुवाळो होय अने बीजो अंध छता निर्मळ चक्षुवाळाना मत प्रमाणे चालनारो होय तो ते बने मार्गमा चालनारा एक साथेज नियमित स्थळे पहोंची शके छे. तेवीज रीते निर्मळ ज्ञानी गुरुनी पवित्र आज्ञाने अनुसरी आत्मकल्याण साधवा उजमाळ बनेला तथा प्रकारना ज्ञानरहित छतां "मासतुषादिक" मुनिओ पण स्वनियामक ज्ञानी गुरुओनी पेरे निर्दोष दीक्षापात्र गणाय छे

प्र०—साधुजनोए स्वसाधुयोग्य धर्म करणीमा केवु सावधान रहेवु जोइए ?

उ०—जेम रोगथी कटाळेलो माणस नीरोगी थवा माटे ते रोगनी प्रतिक्रिया (पथ्य, औषध मात्रा प्रमुख) सावधानपणे करे छे तेम दीक्षित—साधुजनोए पण आ भयंकर भव रोगथी उद्विग्न बनी तेथी मुक्त थवा माटे साधुयोग्य सदाचरण सेववा सदाय सावधान रहेवु जोइए.

प्र०—केवा प्रकारना सदाचरणमा साधु-मुनिराज सावधान रह्या करे ?

उ०—१ गुरु विनय, २ स्वाध्याय (सझाय ध्यान), ३ योगाभ्यास, ४ परोपकार वृत्ति, अने ५ मयम अनुकूळ सपडी करणी वगरनो भवभीरु साधुजनो सदाय सावधान रह्या करे तेमां प्रमाद सेवन न ज करे

प्र०—गुरुमहाराजनो विनय शी रीते साचव्यो गणाय ?

उ०—गुरुजन प्रत्ये पुरुष भूमिकानी अपेक्षाए उचित मर्यादा पूर्वक वर्तन राखवु (तेमनु यथायोग्य वैयावच्च करवु), तेमना सद्गुणथी आकर्षाइ शुद्ध अत करणनो प्रेम बतावबो—बहुमान करवु, तेमणे करेला अतुल उपकारने लक्षमां राखी ते सभार्या करवो—भूली न जवो, दरेक कार्यमां तेमनी कल्याणकारी आज्ञाने आगळ करी चालवु, तेमज गुरु महाराज विद्यमान होय अथवा न होय तोपण तेमनी पवित्र आज्ञाने यथार्थ अनुसरी—सर्वथा ते मुजब वर्तीने तेने सत्य—सफळ करवी पण निष्फळ करी नांखवी नहि, ए सर्व रीते सावधानपणे वर्तता गुरुजननो विनय साचव्यो कहेवाय छे (विनयउद्देश बीजु वधु ऐसे थाय छे ते वगर बीजु वधु फोग थाय छे)

प्र०—पूर्वोक्त सदाचरणने सावधानपणे सेवनार साधुने के प्रकारनो लाभ थाय छे ?

उ०—ए रीते सदाचरणयुक्त साधुजनो अत्यत विशुद्ध परिणामने पामी, शीघ्र " मैत्री, मुदिता, करुणा अने उपेक्षा ए चार भावनाने निचे सिद्ध करी शके छे एज चार भावनाओ सर्वोत्कृष्ट थये

सते अंते तेमने अजरामर पदनी प्राप्ति थाय छे. पछी त्यां मोक्षमां तेमने ते भावनाओ (मैत्री प्रमुख) निष्प्रयोजन होवाथी समवर्ती नथी

प्र०–मोक्षमार्गमां योजनारूप योग–साधकने कया कया चित्त दोष वर्जवा जोइए ?

उ०–१ खेद=क्रियामां अप्रवृत्तिना हेतुरूप थाक, २ उद्वेग, ३ क्षेप=आंतरे आंतरे अन्यत्र चित्तनुं स्थापवुं–व्याक्षिप्तचित्तता, ४ उत्थान=चित्तनी अप्रशान्तवाहिता, ५ भ्रान्ति, ६ अन्यमुद्=अन्य स्थळे हर्ष, ७ रोग–पीडा–भग, अने ८ आसग=आज ठीक छे एवो राग=अभिष्वंग ए आठ चित्त दोषो साधकने खास वर्ज्य छे

प्र०—तत्त्वप्रवृत्ति करनारने शुं शुं कर्तव्य छे ?

उ०—१ अप्रीतिने परिहरवारूप अद्वेष, २ तत्त्व जाणवानी इच्छारूप जिज्ञासा, ३ बोध प्रवाहनी सिरा (सेर) जेवी शुश्रूषा, ४ तत्त्व श्रवण, ५ तत्त्व बोध, ६ तत्त्व विचारणा, ७ तत्पूर्वक परिशुद्ध निश्चयात्मक ज्ञानप्राप्ति अने ८ तत्पूर्वक तात्त्विक क्रियामां प्रवृत्ति. ए रीते तात्त्विक प्रवृत्ति उपर कहेला अद्वेषादिक आठ अंगोवडे निर्माण थयेली होवाथी तत्त्व प्रवृत्ति करनारे उक्त मर्यादा मुजब कर्तव्य परायण थवुंज जोइए मतलब के द्वेषादिक दोषो तजी समतादिक गुणोने अवश्य भजवा जोइए

प्र०—सदनुष्ठानने सेवनारा सद् पुरुषोनो कयो अविचलित मार्ग होय छे ?

रीते सूक्ष्म बुद्धिवळथी आलोची-विचारी सत्पुरुषोए कुशळ क ल्याणकारी अनुष्ठान करवा महाचि करवी ए तेमनो अचल मार्ग होय छे. इतिशम्.



उपदेश तरंगिणीमांथी उद्धवेला केटलाक प्रश्नोत्तरो.



प्रश्न-श्री जिन भवन करावथा अधिकारी (लायक) कोने जाणवो ?

उत्तर-न्याय नीतिवडे उपार्जित द्रव्यवाळो, मतिमान्, उदार दीलवाळो, सदाचारवत अने गुरुने तेमज राजादिकने मान्य होय के जिनभवन करावया लायक जाणवो.

प्र०—धर्मशाळा के पोषधशाळाथी शो लाभ थइ शके ?

उ०—मुनिजनोना निवासपूर्वक त्यां धर्मश्रवण, प्रतिक्रमणादिक उत्तम करणी थइ शके. कइ आत्मार्थी जनो गुरु समीपे आवी साधु श्रावक योग्य व्रतोने ग्रहण करी महा पुन्य उपार्जी शके वळी जेम कुरुक्षेत्रमां स्नेहीजनोने पण क्लेशबुद्धि प्रगटे छे तेम धर्मशाळामां के पौषधशाळामां अधमजनोने पण धर्मबुद्धि जागे छे आम अनेक रीते ते शाळा अनेक भव्यात्माओने बोधिबीज प्राप्ति माटे हेतुरुप थाय छे.

तेथी तेनु निर्माण करावनारा भव्यजनो ससारसागरने तरी परमपद रुप मोक्ष तेने पामे छे

प्र०—श्री संमतिराजाए सवा लाख जिनभवनो बनाव्या ते केम थयां नवाज ?

उ०—तेमा ३६००० नवीन जिनमंदिरो अने बाकीना ८९००० प्राचीन देरासरोनो जीर्णोधार कराव्यो जाणवो अने जिनप्रतिमाओ सर्व जातनी मळी सवा करोड भरावी

प्र०—' माडवगढनो राजियो, नामे देव सुपास, ' एमना आश्री कशी मूळ हकीकत छे ?

उ०—" सीता महासतीने पूजवा माटे, वनवासमां रहेतां " लक्ष्मण कुमारे करेली छाणमय श्री सुपार्श्व प्रभुनी प्रतिमा ते सतीना शीलना प्रभावे वज्रमयी थइ गयेली ते अत्यारे पण माडवगढमा विराजमान छे, महामहिमावाळी छे अने " सर्व उपसर्गोनो विनाश करनारी छे,

प्र०—श्री समराशाहे श्री शत्रुजय उपर केवा सयोगमां उद्धार कराव्यो ?

उ०—योगिनीपूरथी १ लाख ८० हजार फोज साथे आवेला म्लेच्छराजाए सुराष्ट्र देशमां आवी श्री शत्रुजय उपर चढी, जावडशाहे भरावेली प्रतिमानो भग कर्यो त्यारे सुरत्राणने महामान्य होवाथी तेना फरमानथी सवत् १३७१ वर्षे श्री समराशाहे महोत्सव

पूर्वक जीर्णोद्धार कराव्यो. तेमां पुष्कळ द्रव्यनो व्यय कर्यो ते माटे कहेलु छे के—

'सगर चक्रवर्ती करतां पण समराशाहने हुं कंइक अधिक लेखु छु केमके तेमणे म्लेच्छ लोकोना वखथी व्याप्त एवा आ कलियुगमां पण श्री शत्रुंजय तीर्थनो उद्धार कर्यो '

प्र०—धर्म शास्त्रनु श्रवण करवाथी शु फळ थाय ? अने कोनी पेरे ?

उ०—शास्त्रश्रवणथी धर्मकार्य करवामां उद्यम करी शकाय, सारी बुद्धि आवे, खरा खोटानो निर्णय थाय, त्याज्यात्याज्य, भक्ष्याभक्ष्यादिकनो विवेक जागे, सवेग—शाश्वत सुख मेळववा अभिलाषा जागे, अने उपशम—कषायनी शांति थाय आ प्रमाणे शास्त्र श्रवण करतां अनेक लाभ थाय छे, जेम रोहिणीया चोरे श्री वीर प्रभुना मुखथी एक गाथा सांभळी स्वकल्याण साध्यु हतु तेम अथवा " यवराजर्षिने अनायासे सांभळेली त्रण गाथा गुणकारी थइ हती. तेम भवसमुद्रमा बुडता माणसोने ज्ञान जहाज तुल्य छे तेमज मोह-अंधकारने टाळवा माटे ज्ञान सूर्य मंडळ समान उपकारी थाय छे

प्र०—गुरु समीपे कोइ पण प्रकारनां व्रतनियम ग्रहण करवाथी कोनी पेरे लाभ थाय ?

उ०—पूर्वे वंकचुल नामना राजपुत्रे अजाण्यां फळ, राजानी पटराणी, कागडानु मांस अने १० डगलां पाछा ओसरी पछी घा करवा संबंधी करेला नियमो तेना जीवित विगेरेनी रक्षा माटे थया

हता तेमज कुमारनी दाल जोया पछी भोजन करवाना नियमथी श्रेष्ठीपुत्र कमळने केटलाक काळे सोनाना घरनो लाभ थतां ते पछी परम श्रावक थयो हतो, ए रीते नियमथी घणाज लाभ छे.

म०—नवकार (नमस्कार) महामंत्रनुं स्मरण क्यारे क्यारे ने केवी रीते करवुं उचित छे ? अने तेनाथी शा शा लाभ संभवे छे ?

उ०—भोजन समये, शयन करतां, जागतां, प्रवेश करतां, भय अने कष्ट समये यावत् सर्वकाळे सदाय नवकार महामंत्रनुं निश्चे स्मरण कर्याज करवुं मरण वखते जे कोइ ए महामंत्रने धारी राखे छे तेनी सद्गति थाय छे ए महामंत्रनुं स्मरण करी करीने अनेक जनो संसार समुद्रनो पार पाम्या, पामे छे अने पामशे. "उत्साह सहित" प्रमाद रहित गणवामां आवतां नवकारना प्रभावथी सर्व उपद्रवो तत्काळ शमी जाय छे, सर्व पाप विलय पामे छे अने सर्व प्रकारनां भय नष्ट थइ जाय छे

श्री जिनेश्वरमां पोतानुं लक्ष स्थापी प्रसन्न चित्ते, सुस्पष्ट रीते, श्रद्धायुक्त अने विशेषे करीने जितेन्द्रिय सतो जे कोइ श्रावक " एक लाख नवकार मंत्र " जपे छे अने एक लाख श्वेत अने सुगंधी पुष्पोवडे यथाविध जिनेश्वर भगवानने पूजे छे ते जगत् पूज्य श्री तीर्थंकरनी पद्वी प्राप्त करे छे.

वळी ए महामंत्र दुःखने दूर करे छे, सुखोने पेदा करे छे, यश कीर्ति प्रसरावे छे, भवनो पार करे छे ए रीते आ लोकमां अने परलोकमां सर्व सुखना मूळरुप ए महामंत्र छे वधारे शुं ? पण

पूर्वक जीर्णोद्धार कराव्यो. तेमां पुष्कळ द्रव्यनो व्यय कर्यो ते आश्री कहेलु छे के—

'सगर चक्रवर्ती करतां पण समराशाहने हुं कंइक अधिक लेखु छु केमके तेमणे म्लेच्छ लोकोना वळथी व्याप्त एवा आ कलियुगमां पण श्री शत्रुंजय तीर्थनो उद्धार कर्यो '

प्र०—धर्म शास्त्रनु श्रवण करवाथी शु फळ थाय ? अने कोनी पेरे ?

उ०—शास्त्रश्रवणथी धर्मकार्य करवामां उद्यम करी शकाय, सारी बुद्धि आवे, खरा खोटानो निर्णय थाय, त्याज्यात्याज्य, भक्ष्याभक्ष्यादिकनो विवेक जागे, संवेग-शाश्वत सुख मेळववा अभिलाषा जागे, अने उपशम--कषायनी शांति थाय आ प्रमाणे शास्त्रश्रवण करतां अनेक लाभ थाय छे, जेम रोहिणीया चोरे श्री वीर प्रभुना मुखथी एक गाथा सांभळी स्वकल्याण साध्यु हतु तेम अथवा " यवराजर्षिने अनायासे सांभळेली त्रण गाथा गुणकारी थई हती तेम भवसमुद्रमां बुडता माणसोने ज्ञान जहाज तुल्य छे तेमज मोह अंधकारने टाळवा माटे ज्ञान सूर्य मंडळ समान उपकारी थाय छे

प्र०—गुरु समीपे कोइ पण प्रकारनां व्रतनियम ग्रहण करवाथी कोनी पेरे लाभ थाय ?

उ०—पूर्वे वंकचुल नामना राजपुत्रे अजाण्यां फळ, राजानी पटराणी, कागडानु मांस अने १० डगलां पाछा ओसरी पछी घा करवा संबंधी करेला नियमो तेना जीवित विगेरेनी रक्षा माटे थया

हता तेमज कुभारनी टाल जोया पछी भोजन करवाना नियमथी श्रेष्ठीपुत्र कमळने केटलाक काळे सोनाना चरुनो लाभ थतां ते पछी परम श्रावक थयो हतो, ए रीते नियमथी घणाज लाभ छे.

प्र०—नवकार (नमस्कार) महामन्त्रनु स्मरण क्यारे क्यारे ने केवी रीते करवु उचित छे ? अने तेनाथी शा शा लाभ सभवे छे ?

उ०—भोजन समये, शयन करतां, जागतां, प्रवेश करतां, भय अने कष्ट समये यावत् सर्वकाळे सदाय नवकार महामन्त्रनु निश्चे स्मरण कर्याज करवु मरण वखते जे कोइ ए महामन्त्रने धारी राखे छे तेनी सद्‌गति थाय छे ए महामन्त्रनु स्मरण करी करीने अनेक जनो ससार समुद्रनो पार पाम्या, पामे छे अने पामशे. "उत्साह सहित" प्रमाद रहित गणवामां आवता नवकारना प्रभावथी सर्व उपद्रवो तत्काळ शमी जाय छे, सर्व पाप विलय पामे छे अने सर्व प्रकारनां भय नष्ट थइ जाय छे

श्री जिनेश्वरमां पोतानुं लक्ष स्थापी प्रसन्न चित्ते, सुस्पष्ट रीते, श्रद्धायुक्त अने विशेषे करीने जितेन्द्रिय सतो जे कोइ श्रावक " एक लाख नवकार मन्त्र " जपे छे अने एक लाख श्वेत अने सुगधी पुष्पोवडे यथाविध जिनेश्वर भगवानने पूजे छे ते जगत् पूज्य श्री तीर्थंकरनी पद्वी प्राप्त करे छे.

वळी ए महामन्त्र दु:खने दूर करे छे, सुखोने पेदा करे छे, यश कीर्त्ति प्रसरावे छे, भवनो पार करे छे ए रीते आ लोकमां अने परलोकमां सर्व सुखना मूळरुप ए महामन्त्र छे. वधारे शु ? पण

तिर्यंच–पशु पखी पण अन्त वखते ए महामंत्रना स्मरणथी सद्-गति पामे छे.

प्र०—न्याय मार्गे चाल्वाथी आ लोकमा तेमज परलोकमा शा शा फायदा थाय छे ?

उ०—न्याय-नीतिना मार्गे एक निष्ठाथी चालतां आ लोकमां यश, कीर्त्ति, महत्व, प्रतिष्ठादिक बहु प्रकारना लाभ थाय छे अने परभवमा सद्गति, सुलभ बोधिपणु, उच्च कुळमां अवतार तथा छेवट शाश्वत सुख मळे छे कयु छे के " न्याय मार्गमां प्रवृत्त जनने तिर्यंचो पण सहायभूत थाय छे त्यारे अनीति अन्याय मार्गमां प्रवर्त्तनारने तेनो सगो भाइ पण तजी दे छे " (जेवी रीते अन्यायमां प्रवृत्त थयेला रावणने तजी तेनो बधु विभीषण चाल्यो गयो हतो अने तेणे न्याय मार्गमां प्रवृत्त एवा रामचंद्रजीनो पक्ष (आश्रय) लीधो हतो. कोइ पण राजा न्यायरत, धर्मात्मा होयछे त्यारे तेनु " रामराज्य " कहेवाय छे

प्र०—विषय इंद्रियने परवश पडेल प्राणीओना केवा हाल थाय छे ?

उ०—ज्यारे एक एक इंद्रियना विषयमां लुब्ध बनेला बापडा पतंगीया, भमरा, माछला, हाथीओ अने हरणीयां प्राणांत कष्ट पामे छे त्यारे जे मूढ जनो मोहथी अंध बनी एकी साथे ए पाचे इंद्रिओ ना विषयोमा लीन बन्या रहे छे तेमनु तो कहेवु ज शु ? आ भवमां परतंत्रतादिक प्रगट दुःखने पामे छे अने परलोकमां नीची गति पामेछे.

प्र०—श्री संघने रत्नाकरनी उपमा शी रीते घटे छे ?

उ०—चतुर्विध श्री संघ मध्ये बहु मूल्यवाळां " पंच परमेष्टि रत्नो " (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु समुदाय रुप) सदाय उत्पन्न थया करे छे तेथी ते रत्नाकर तुल्यज छे. वळी सर्व तीर्थकरोने पण नमस्कार करवा योग्य एवो श्री संघ ' पचवीसमो तीर्थंकर ' कहेवाय छे तेवा श्री संघनी उन्नति ' वज्रस्वामी नी पेरे जे कोइ महाशयो करे छे ते खरेखरा उत्तम पुरुषोनी कोटि मां गणावा योग्य छे. तेओ धन्य-कृतपुन्य छे एम जाणवुं

प्र०—आ दुनीयामां कया पांच सकार दुर्लभ कह्या छे ?

उ०—१ (न्यायोपार्जित) सद्द्रव्य, २ सत्कुळमां जन्म, ३ सिद्धक्षेत्र (शत्रुंजय तीर्थ)नी सेवा भक्ति, ४ समाधि अने ५ चतुर्विध श्री संघनो मेळो-मेळाप

प्र०—सीदाता साधर्मी जनोने समयोचित सहाय आपवा माटे कोणे कोनु लक्ष केवी रीते खेंच्यु हतु ? तेनु शु परिणाम आव्युं हतुं ?

उ०—श्रीमान् " हेमचंद्रसूरिजीए कुमारपाळ भूपाळनुं " लक्ष आवी रीते खेंच्युं हतु " एकदा श्री हेमसूरिजी शाकंभरीमां पधार्या हता त्यां निर्धन श्रेष्ठी धनाके पोताने पहेरवा-ओढवा माटे भार्याए कतिला जाडा सूतरथी वनावेलु वेचु वहोराव्यु पाटण शहेरमां प्रवेश करती वखते श्री कुमारपाळ प्रमुख ७२ नृपो अने श्रेष्ठी छाडा कुबेरदत्तादिक १८ हजार व्यवहारिया स्व स्वऋद्धिसहित सन्मुख आव्या त्यारे प्रभु गजीनो कपडो गुरुमहाराजे ओढयो ते जोइ राजाए

कर्यु के आप साहेब मारा गुरु छो, आवो जाडो खादीनो कपडो आपे ओढेलो छे तेथी अमने लाज आवे छे. गुरुमहाराजाए उत्तरमां जणाव्युं के त्हारा राज्यमां त्हारा साधर्मी भाइओ आवा निर्धन छे, तेओ महा मुशीबते पोतानो निर्वाह करी शके छे; ते बाबत तमने लज्जा केम आवती नथी ? अमने तो सामान्य वेष धारण करतां पण गुरुताज छे, केमके एम करवाथी तो श्री सर्वज्ञ कथित आचारनु पालन थाय छे कह्यु छे के—

" सर्वसंग–परिचय तजी जीर्ण (प्राय) वस्त्र धारी मळ (मेल) वडे मलीन गात्रयुक्त, मधुकरी वृत्तिने भजतो (आत्मा)–साधु–चर्याने क्यारे सेवशे ? आ प्रकारना अवसर उचित हित वचनने श्रवण करवाथी श्री कुमारपाळ भूपाळने श्री संघ उपर प्रेम बंधायो अने तेथी तेणे कोइ पण सीदाता साधर्मी भाइनो उद्धार करवा एक हजार सोनामहोरो मारे अर्पवी एवो अभिग्रह धारण कर्यो. ते एवी रीते एक वर्षमां साधर्मी जनोने ते एक क्रोड सोनामहोरो आपतो. एम १४ वर्षोमां तेणे १४ क्रोड सोनामहोरो साधर्मी जनोने आपी. निःस्पृह महात्माओना समयोचित सदुपदेशथी आवो अद्भूत लाभ थाय छे ! !

वळी श्री "वस्तुपाळ मंत्रीश्वर" दरेक वर्षमा त्रण वार श्री संघने अत्यंत आदरपूर्वक निमंत्री, विविध वस्त्र अलंकारादिवडे पोतानी सर्व शक्तिथी श्री संघनी पूजा भक्ति करता हता अने पूर्वे 'अनुरूपादानना अधिकारे' कहेवामां आव्युं छे तेम "जगडुशाह" प्रमुख

अनेक " उदाराशय सज्जन श्रेष्ठी " जनोए स्व सार्धमी भाइओनो बहु परे उद्धार कर्यो छे. ते वात विसरी जवी जोइती नथी.

प्र०—श्री सघना चरणनी रज पण पवित्र गणी छे, ते शी रीते?

उ०—चतुर्विध श्री संघने पवित्र जंगम तीर्थरुपज कहेलो छे. ज्यारे शत्रुंजयादिक स्थावर तीर्थनी रज मधुख पवित्र कहेली छे तो श्री तीर्थंकर भगवाननी पवित्र आज्ञाने शीर्ष उपर वहन करनार आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारुप श्री सघनो चरणरज पवित्र होय एमा तो कहेवुज शु? आवो श्री संघ वळी शत्रुंज्यादिक तीर्थे प्रत्ये यात्रार्थे गमन करतो होय त्यारे तो उज्वळ शखमा दुध भर्युं अथवा सुवर्ण साथे रत्न जडयुं जाणवुं ए तो विशेषे सत्कारपात्र छे कह्यु छे के " श्री तीर्थ प्रत्ये जता यात्रिकोना चरणनी रेजवडे भव्य जनो पाप कर्मरहित निर्मळ थाय छे, तीर्थो विषे परिभ्रमण करवाथी भवमा भ्रमण करवु पडतु नथी भव भ्रमणनी भीति दूर थाय छे. तीर्थभूमिमा द्रव्य खरचवाथी लक्ष्मी स्थिर थाय छे अने त्यां तीर्थपति श्री जिनेश्वर भगवतनी अर्चा—पूजा करवाथी भव्यजनो जगत्पूज्य थाय छे."

प्र०—सार्धमी वात्सल्य वर्तमान समये केवा दृष्टांतथी करवु जोइए?

उ०—जेम सुरगिरिमा रहेता सा० जासिह ३६० सार्धमी जनोने पोतानी सरीखा व्यापार करावबावडे तेमने पोतानी जेवा महा श्रेष्ठी बनाव्या हता तेम वर्तमान समये सार्धमी वात्सल्य करी रवा-

बहु जोइए अने पूर्वे थइ गयेला अनेक उदाराशय, श्रेष्ठी जावड, मंत्री उदयन बाहडदे, पेथड, झांझणदे, जगडुशा तेमज भीमाशाह प्रमुखना दृष्टांतो ग्रही भाग्यवंत जनोए अत्यारे समयोचित साधर्मी वात्सल्यवडे स्वजन्म सफळ करी लेवो जोइए केवळ गतानुगतिकता हवे तजी देवी जोइए वर्तमान द्रव्य, क्षेत्र, काळ भावने लक्षमां राखी खास पोषण करवा योग्य सीदाता क्षेत्रनु पोषण करनारा समयज्ञ सज्जनोज प्रशंसापात्र छे

प्र०—महा श्रवाक कोणे कहेवाय? तेनां केवां लक्षण कह्यां छे?

उ०—" श्रावक योग्य द्वादश व्रतोनु विधिवत् पालन करे, प्रसिद्ध सात क्षेत्रोमां स्वधन वावे अने अति दीन दु:खीजनो उपर खास करीने अनुकंपा राखे, तेमां पण सीदाता साधर्मी जनोनो हरेक रीते उद्धार करे ते " महाश्रावक " कहेवाय छे. " ए रीते श्री हेमचंद्र सूरिजीए 'योगशास्त्र' मां प्रकाशेलु छे

प्र०—श्री जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करवाथी शो लाभ थाय छे ?

उ०—श्री जिनेश्वर प्रभुनी पूजा—सेवा करवाथी चिन्तामणि रत्ननीपेरे सर्ववांछित पूर्ण थाय छे जगत्मां परम पूज्यभावने पामे छे, धनधान्यादिक ऋद्धि अने कुटुंब परिवार, मान, महत्व, प्रतिष्ठादिकनी वृद्धि पामे छे, तेमज वळी तेथी जय, अभ्युदय, रोगोपशान्ति, सन्तान प्रमुख मनोभीष्ट अर्थनी सिद्धि थइ शके छे, माटे भाग्यवंत भाइ बहेनोए प्रमाद दोष दूर करीने त्रिकाळ प्रभुपूजा—भक्ति यथाविध करवा तत्पर रहेवु युक्त छे

प्र०—" प्रभावना " कोने कहीए ? अने प्रभावनाथी केवा लाभ थइ शके ?

उ०—अट्ठाइ महोत्सव, स्नात्र उत्सव, श्री पर्युषणा कल्पचरित्र पुस्तकनु वांचवु, तथा सीदाता साधर्मी जनोने पुष्ट आलंबन आपी तेमनो उद्धार करवो ए विगेरे जेथी श्री जिनशासननी उन्नति थाय ते सर्व "प्रभावनाज" जाणवी भावना करता प्रभावना अधिक छे केमके भावना तो केवळ पोतानेज लाभकारी थाय छे. त्यारे प्रभावना ते स्वपर उभयने लाभकारी थाय छे

प्र०—श्री जिनमंदिरे दर्शनार्थे जतां अनुक्रमे केटलु फळ मळे छे ?

उ०—श्री जिनमंदिरे जवा मन करतां एक उपवासनुं फळ, जवा उठतां बे उपवासनु, जवानो प्रारंभ करतां त्रण उपवासनु, मार्गे गमन करतां चार उपवासनु, मार्गमां थोडुक गये छते पांच उपवासनु, अर्ध पथे आव्ये छते १५ उपवासनु, जिनभवन साक्षात् नजरे दीठे एक मास उपवासनु, जिनभवने आवी पहोंचता छ मास उपवासनु अने जिनमंदिरमां दाखल थये छते एक वर्ष उपवासनु फळ भाग्यशाळी आत्मा मेळवे छे, वळी श्री जिनालयमां आवी जयणापूर्वक 'प्रमार्जन' (भूमिशुद्धि) करता अथवा प्रभुप्रतिमाना अंगे जरुर पूरती शुद्धि करतां १०० वर्ष उपवासनु फळ, शीतल बावनाचंदनादिकवडे प्रभुना अंगे विलेपन करतां १००० वर्ष उपवासनुं फळ, सरस सुगंधी अने ताजा पुष्पोनो माळा प्रभुना कंठे आरोपतां लाख

प्र–जिनभवनमां निस्सिही पूर्वक प्रवेश करी प्रदक्षिणादिक देवाथी शुं फळ थाय छे ?

उ०—प्रदक्षिणा जयणापूर्वक करतां १०० उपवासनुं फळ, प्रभुनां प्रगट दर्शन करतां १००० उपवासनुं फळ अने परम मर्यादपूर्वक प्रभुने वंदन करतां तो अनंत पुन्य उपार्जी शकाय छे तेथी जिनदर्शनादिक यथाविध करवां जोइए

प्र०—श्रावकोनो मुख्य शृंगार कयो कह्यो छे ?

उ०—श्री जिनपूजा, विवेक, सत्य, शौच अने सुपात्रदान एज श्रावकपणानो खरो प्रभाविक शृंगार जाणवो.

प्र०–धर्मनुं संक्षिप्त लक्षण शुं छे ? अने तेनो केवो प्रभाव छे ?

उ०—अहिंसा, संयम अने तप लक्षणवाळो धर्म दुनियामां उत्कृष्ट मंगळरूप छे तेमां जेनुं चित्त सदाय रम्या करे छे तेने देवताओ पण नमस्कार करे छे तो पछी बीजाओनुं तो कहेवुं ज शुं ? धर्मना प्रभावथी धम्मिलादिकनी पेरे इच्छित सुखसंपदा सहेजे संप्राप्त थाय छे

प्र०—अहिंसा, संयम अने तपनुं संक्षिप्त स्वरूप समजावो.

उ०—विषय कषायादिक प्रमादने वश थइ मन, वचन, के कायाथी थता प्राणघातथी विरमवुं अने सहु जीव उपर समान भाव राखी आत्माना स्वाभाविक ज्ञानादिक गुणोनी रक्षा करवी ते "अहिंसा" पांचे इंद्रियोने दमवी, चारे कषायो जीतवा, हिंसादिक

पाचे अव्रतो तजवां अने मन, वचन, कायानी शुद्धि करवी ते संयम अने ज्वलंत अग्निवडे जेम सदोष सुवर्ण शुद्ध थइ शके छे तेम इच्छा निरोधपूर्वक समतासहित जे बाह्य अभ्यंतर अनुष्ठानवडे मलीन आत्माने निर्मळ करवामां आवे ते तप

इतिशम्

त्रिविध प्रश्नोत्तरो.

(वीशेषावश्यकमांथी)

प्रश्न—दृष्टिवाद (समस्त शास्त्रनां अवतारस्प पूर्व ज्ञान) भणवानो स्त्रीओ साध्वीओने शा माटे निषेध करेलो छे ?

उत्तर—तुच्छादिक स्वभाव होवाथी स्त्री जो दृष्टिवाद भणे तो ते गर्ववडे पुरुषनो पराभव करवा मतीने दुर्गतिपात्र थने तेथी परम कृपाळु परोपकारशील परमात्माए तेने पूर्व भणवानी आज्ञा आपी नथी परंतु तेमना पण हितनी खातर एकादश अंगादिकनी रचना करवामां आवे छे.

प्रश्न—बुद्धिना जे आठ गुणोवडे श्रुतज्ञान ग्रहण कराय ते गुणोनुं कंइक स्वरुप समजावो ।

उत्तर—१. सुश्रूषा–विनययुक्त थइ गुरुमुखथकी सांभळवानी इच्छा.

२. प्रतिपृच्छा—फरी पूछीने भणेलु शास्त्र निःशंकित-शंका वगरनु करवुं.

३ अर्थश्रवण—४ अर्थग्रहण—भणेला शास्त्रने अर्थथी सांभळवु अने तेनो अर्थ धारी लेवो.

५. इहा—पर्यालोचना-अर्थ धारी विचारवु के ए बराबर छे के नहि ? एम स्वबुद्धिवळथी सांभळेला-ग्रहण करेला अर्थनो निश्चय करवा विचारणा करवी

६ अपोह—गुरु महाराजे फरमाव्युं ते यथार्थ-प्रमाण छे एम निश्चयनिर्धार करवो

७. धारणा—निश्चित करेला अर्थने सदाय चित्तमां धारण करवो-विसरी जवा न देवो.

८ अने शास्त्रोक्त अनुष्ठानने सम्यग् रीते आचरवु-प्रमादशील न थावु एम करवाथी आपणां अंतराय तूटे छे अने गुरु महाराज पोताना प्रयत्ननी सफळता जोइ प्रसन्न थाय छे एथी ए पण श्रुतप्राप्तिनो अच्छो उपाय छे अथवा,

१. सुश्रूषा—गुरुमहाराज जे कइ हितकार्य करवा फरमावे ते सर्व अनुग्रहरुप मानीने सारी रीते-सावधानता पूर्वक सांभळवा इच्छा.

२. प्रतिपृच्छा—प्रथम अमुक कार्य करवा आज्ञा पाम्या छतां ते कार्य करतां वखते गुरु महाराजने तत्संबंधी फरी पृच्छा करवी, अने तेमनी फरमाश मुजब पूरतु लक्ष राखीने कार्य करवुं.

३. श्रवण—एवी रीते आराधित गुरु समीपे सूत्र अथवा ते

सूत्रना अर्थनु सम्यग् श्रवण करवु. बाकीनु बधु पूर्वनी पेरे जाणवु.

प्रश्न—गुरु महाराज केवा प्रकारे व्याख्यान करे तेनी मर्यादा बतावो !

उत्तर—प्रथम तो गुरु महाराज शिष्यवर्ग प्रत्ये सूत्रनो अर्थ मात्र समजावे पछी बीजीवार सूत्रस्पर्शक निर्युक्तिमिश्र अर्थनी समजण आपे अने छेवटे निरवशेष एटले संपूर्ण अर्थ बतावे ए सूत्र-अनुयोग विषये शास्त्रमां मर्यादा दर्शावेली छे

प्रश्न—कर्मनु अनादिपणुं शी रीते सिद्ध थइ शके छे ?

उत्तर—देह अने कर्मनो बीजाकुरनी पेरे परस्पर हेतु हेतुमद्भाव होवाथी जेम बीजवडे अकुर पेदा थाय छे, अने अकुरथकी क्रमे करीने बीज पेदा थाय छे तेम देहवडे कर्म उपजे छे अने कर्मवडे देह नीपजे छे. एवी रीते पुन. पुन परस्पर अनादिकाळनो हेतु हेतुमद्भाव रहेलो होवाथीज सभवे छे जेमने अन्योन्य हेतु हेतुमद्भाव सबध रहेलो होय छे तेओ बीज-अकुर वेमज पिता-पुत्रादिकनी पेरे अनादिज होवा घटे छे तेवी रीतेज देह कर्मनो सबध छे माटे ते पण अनादिज छे (इति विशेषावश्यके पृ० ७००).

प्र०—कर्मने बदले देहादिक निर्माण करनार (कर्ता) तरीके अकर्मा-कर्मरहित इश्वरनेज मानवामां शो दोष आवे छे ?

उत्तर—कर्मरहित एवो इश्वर उपकरणना अभावे दंडादिक उपकरण रहित कुंभारनी पेरे शरीरादिक कार्यनु निर्माण करी शके नहि. वळी कर्म वगर शरीरादिकनु निर्माण करवामां ओवादिकने

बीजु कइ उपकरण सभवतु नथी केमके गर्भादिक अवस्थामां अन्य उपकरणनो असभव छे अने कर्मरहितने शुक्र, शोणित (वीर्य, रुधिर) प्रमुखनु ग्रहण करवु पण अयुक्त छे अथवा बीजी रीते प्रयोग करी शकाय छे. कर्मरहित इश्वरादिक आत्मा आकाशनी पेरे निश्चेष्ट, होवाथी, अमूर्त होवाथी, अशरीरी होवाथी, निष्क्रिय होवाथी, तेमज सर्वगत एटले सर्वव्यापी होवाथी तथा एक परमाणुनी पेरे एकलो होवाथी शरीरादिकनु निर्माण करे ज नहि–करी शके ज नहि जो कदाच कहेवामा आवे के शरीरधारी इश्वर ज बधाय देहादिक कार्योनु निर्माण करे छे तो पछी इश्वर सबधी देहनु निर्माण थवामां पण एवोज प्रश्न समुपस्थित थाय छे. ते एवी रीते के कर्मरहित इश्वर निज शरीरनु निर्माण करी शके नहि केमके ते दडादिकरहित कुम्भारनी पेरे उपकरण रहित छे जो कोइ बीजो इश्वर तेना शरीरनु निर्माण करी आपतो होय तो ते पण शरीरधारी के शरीर रहित ? जो ते शरीर रहितज होय तो ते उपर कथा मुजब उपकरण रहित होवाथी शरीरनु निर्माण करी शकेज नहि अने जो ते शरीरवान होय तो तेना शरीरनु निर्माण करवामां पण ते ज दोष आवे छे एटले ते पण कर्मरहित होइने उपकरण रहित पोताना शरीरनु निर्माण करी शकतो नथी. अने जो तेनु शरीर बीजो शरीरधारी बनावी आपे तो पछी ते बीजानु शरीर पण बीजो बनावे अने तेनु पण बीजो बनावे एम करतां तो 'अनवस्थादोष' आवे छे. ए सर्व अनिष्ट छे तेथी इश्वर देहादिकनो कर्ता ठरतो नथी, परतु कर्म सहित जीवज स्वदेहादिक कार्य कलापनो कर्ता सिद्ध थाय छे. कर्म-

रहित-इन्द्रत्व इश्वर प्रयोजन रहित एम देहादिकनु निर्माण करतो होय के ते उन्मत्ततुल्य ज गनाय अने जो सप्रयोजन तेनु निर्माण करवा जाय तो अनीश्वरत्व प्रसंग प्राप्त थाय छे. केमके अनादि शुद्ध होय तेने देहादिक कार्य करवानी इच्छाज होवी घटे नहि कारण के तेवी इच्छाज राग विकल्परुप छे, इत्यादि अत्र बहु वक्तव्य छे. विशेष अधिकार प्रशानरीयकी जाणी लेवो अने मध्यस्थपणे विचार करी सत्य सबळ पक्षनो स्वीकार करी लेवो इति विशेषावश्यक पृ ७०१.

प्रश्न—संसारथीज सर्व कोइ भव्यात्मा मुक्त थइ सिद्ध थाय छे तो ते सर्व सिद्धोनी आदि होवाथी कोइ पण आदि सिद्ध होवो जोइए के केम ?

उत्तर-जेम सघळां शरीर अने सघळां अहोरात्र आदिवाळां छे पण काळनी अनादितायी आद्य शरीर के आद्य अहोरात्र जाणी शकातां नथी तेम काळनी अनादितायी कोइ एक आद्य सिद्ध पण जाणी-मानी शकाय नहि

प्रश्न—४५ लाख योजनप्रमाण परिमित सिद्धिक्षेत्र छे तो तेमां अनादि काळथी थता अनंता सिद्धो शी रीते समाइ शके ?

उत्तर—अमूर्त-अशरीरी होवाथी परिमित क्षेत्र
सिद्धो समाइ रहे छे. जेम प्रत्येक द्रव्यने सर्व्व मि
अनंता ज्ञान अने अनंता दर्शन विषय करे छे
उपर हजारो
अनेक

हिरप्रश्न तथा सेनप्रश्न उद्धरीतसार

१ श्रीजिन प्रतिमाओना चक्षु आदिकनु संयोजन उष्ण करेला राळना रसवडे न करवु आशातनानो संभव छे माटे, किंतु निपुण श्रावकोए राळने उर्ध्वा जातना तेलमा अगर घृतमां मेळवी,हयोडावती बुटी तेना वडे चक्षु, टीला, चाडला विगेरे चोडवा.

२ लिंबुना रसना पुटवाळो अजमो दुविहार पच्चखाणमां अने आयंबिलमां खावो कल्पे नहीं.

३ तीर्थंकर जे देवलोकादिथी च्यवीने मनुष्य गतिमां आवे ते देवलोकमां ते जीवने जेटलु अवधिज्ञान होय तेटलुं ते तीर्थंकरने गृहस्थपणामा होय अर्थात् गृहस्थ तीर्थंकरोमां अवधिज्ञान वधतु ओछु होय, सर्व तीर्थंकरने सरखु न होय.

४ वर्षाकाळमां साधु ज्या चतुर्मास रह्या होय त्यांथी पाच गाउ सुधीना सविझ क्षेत्रमा कारण शिवाय चतुर्मास पूर्ण थया पछी बे मास सुधी वस्त्रादिक लेवु कल्पे नहीं ए अधिकार "निशिथ चुर्णिमां छे

५ "कामिहर" एवा नामथी प्रसिद्ध थयेल "अजमो" वृद्ध (ज्ञानी) पुरुषोए अचित्त मान्यो छे

६ काळवेळाए (मध्यान्हे ने उभय सध्या समये) निर्युक्ति भाष्यादिक सर्वेनु पठन पाठन करवुं "आचार प्रदिपादि" प्रथमां निषेध्यु छे,

७ उपधानमां पहेराती माळा संबंधी सोनु, रुपु, रेशम के सूत्र विगेरे सर्व देवद्रव्य थाय एवो संप्रदाय छे.

८ शय्यातर तो जेनी निश्राना घरमां रहीए तेज कहेवाय एम श्री बृहत्कल्पादिकमां कह्यु छे. म्हाटे कारणे तो तेना घरनु लेवु (वहोरवु) पण कल्पे छे.

९ एक अने वेथी अतरित परपरा संघट्ट तजवा योग्य छे. त्रण वडे अतरित होय तो संघट्ट न लागे.

१० सांजनी पडिलेहण वखते तिविहारनु पञ्चखाण कर्यु होय तो पडिकमणा वखते पाणहारनु पचखाण करी शकाय पण जेणे तिविहार पचखाण कर्यु नथी तेणे चौविहारनु पचखाण करवु

११ विकलेंद्री मरण पामी मनुष्यपणुं पामे ते भवमां सर्व विरतिपणुं पामे पण मोक्षे न जाय एम संग्रहणीवृत्तिमा कह्यु छे.

१२ साधुनी जेम साध्वी चारण श्रमण लब्धी वाळी होती नथी

१३ शरीरने उजेहीनी वचे चंद्रनो उद्योत पडतो होय तो पण उजेही लागे पण जो शरीर उपर चंद्रनो उद्योत पडतो होय तो उजेही न लागे.

१४ प्रभाते मेळवेलु दहीं सोळ पहोर पछी अभक्ष्य थाय पण सोळ पहोरनो नियम नथी शाथी जे संध्या समये मेळवेलुं दहीं चार प्रहर पछी पण अभक्ष्य थाय छे.

१५ श्रीमंत तथा गरीबनी अपेक्षाए उच्च निच कुळमां (समवृत्ति) गोचरीए ... नां भिक्षा वहेराय

१६ मडग्नेन। आपवीलो उपस्थापना पछी (वडीदिक्षा आप्या पछी)ज करवा सूजे

१७ द्रव्य [illegible]नु द्रव्य जिनमंदिर तथा जिन पडिमाना उपयोगमा न आवे, जीव दयाने ज्ञान भंडारमां उपयोगी थाय

१८ नने चौविहार पच्चख्खाणवाळानेसी सेरनना ओष्ट चुम्बन करता छता पच्चख्खाण भंग थाय, अन्यथा न थाय एम श्राद्धविधिमा कह्यु छे

१९ देसावगासिकने विषे पोतानी धारणा मुजब पूजा स्नात्रादिक अने सामायिक करवाय, कोइ एकांत नथी

२० श्री आर्यरक्षित सूरिए पोताना पिता (मुनि) ने कंदोरो बंधाव्यानु श्री आवश्यक वृत्तिमां कह्यु छे ते आचरणाथी आजे पण बंधाय छे

२१ जिन मंदिरनी अंदरना गर्भगृह (गभारा) ना द्वारनी शाखाना आठ भाग कल्पी, एक भाग उपर पडयो मूकी, सातमा भागना आठ भाग कल्पी तेना सातमा भागे मूळनायक (प्रतिमा) जीनी दृष्टी मेळववी

२२ पोसहादि न करेल होय एवो श्रावक जिन मंदिर के उपाश्रयमा पेसता निसीही कहे पण निसरता आवस्सही न कहे

२३ बीज सहित श्रीफळने विषे एकज जीव होय छे

२४ [illegible] ने सुकां सिंगोडामां बे जीव कह्यां छे.

३५ वांदणां देवाने अवसरे विधि साचववा माटे उघाडे मोढे बोलतां छतां पण प्रमाद न होवाथी इर्यावही न आवे.

३६ जे साधु वस्त्रने थीगड्डु दे अथवा थीगड्डु देताने अनुमोदे तेने घणा दोषनी प्राप्ति थाय कारण के त्रण थीगडां उपरांत चोथु थीगड्डु देनार मुनिनेश्रीनिशीथसूत्रना पहेला उद्देसामां प्रायश्चित कहेलुछे

३७ निरंतर बहु जीवो मुक्तिए जाय तेथी मुक्ति सांकडी थइ जती नथी, अने संसार खाली थइ जतो नथी, जेम वर्षादना जळथी घसाएली पृथ्वीनी माटी पुष्कळ समुद्रमां जायछे पण तेथी समुद्र पुराइ जतो नथी अने पृथ्वीपर खाडा पडी जता नथी

३८ छ मासथी अधिक केवळज्ञानीपणे रहे ते अंते केवळीसमुद्घात करे तेथी ओ ी स्थितिवाळा करे अथवा न करे

३९ राइ प्रमुख उत्कट द्रव्य मिश्रित होवाथी कांजिक वटकादिक वस्तुओनु काळमान वृद्ध परंपराथी बेरात्री अथवा चार प्रहरादिनु कहेवाय छे

४० जे श्रावक मरण समय पर्यंत निरतिचार सम्यक्त्व पाळे ते तो वैमानीक देवज थाय ते शिवाय यथासंभव अन्यत्र (गतिमां) पण उपजे तेमज महाविदेह क्षेत्रादिकमां मनुष्यपणुं पण पामे

४१ आसो मासना अस्वाध्याय दिनत्रय (माय ८-९-१०) तथा त्रण चौमासीना अस्वाध्याय दहाडाने विषे उपदेशमाळादिक गणाय छे.

४२ स्थापनाचार्य सन्मुखे प्रतिक्रमण करतां पहेलां स्थापनाचा-

येने अने पछी वृद्धना अनुक्रमे चे चार के छ मुनिओने खामणा कराय बीजा मुनि न होय तो मात्र स्थापनाचार्यनेज खमावाय.

४३ मेथी आइंबीलमा कल्पे. मेथी द्विदळ छे, ने द्विदळ आइंबीलमां कल्पे छे.

४४ सामायिक लइ स्वाध्यायना आदेश मागया पछी खमासमण दइ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवान् मुहपत्ति पडिलेहु' एम करी आदेश मागी मुहपत्ति पडिलेहीने पच्चख्खाण करवु

४५ साध्वीओ उभी उची वाचना ले

४६ क्रुड (कोटि) १०८ पुरुषोवडे जाणवी.

४७ आ अवसर्पिणीमा ७ अभव्यो प्रसिद्धमा आव्या छे

४८ म्लेच्छ ने माच्छीमारादि श्रावक थया होय तो तेमने जिन प्रतिमा पूजवामां लाभज छे जो शरीर अने वस्त्रादिकनी शुद्धि होय तो प्रतिमा पूजवामा निषेध जाण्यो नथी

४९ शिष्य सारी रीते चारित्र न पाळे अने गुरु मोढे कहीने तेने न वारे तो गुरुने पाप लागे. अन्यथा न लागे

५० साध्वीने वदन करतां श्रावको 'अणुजाणह भगवतीपसाउ करी' एम कहे.

५१ जो एकासणा सहित उपवास करे तो सूरे उग्गए चउथ्थ भत्त अभत्तट्ठ पच्चक्खाइ एकासणा विना उपवास करे तो सूरे उग्गए अभत्तट्ठ पच्चक्खाइ एम कहेवानी अविच्छिन्न परपरा देखाय

छे, अने छट्ठ प्रमुख पच्चरखाणमां तो पारणे एकासणु करे के न करे तो पण सूरे उगए उट्ठ भत्त अट्ठम भत्त एम कहेवाय छे. एवा अक्षरो श्री कल्पसूत्र समाचारीमा छे

५२ श्रावक दिवस सबंधी पोसह कर्या बाद भावबृद्धि थतां रात्री पोसह ग्रहे त्यारे पोसह सामायिक कर्या बाद सज्झायकर ए आदेश मागवाथी सरे छे बहुवेळ संदिसाहु ? ए आदेश मागवानो, नियम नथी कारण के प्रभाते ते मागेल छे

५३ सो योजन उपरातथी आवेल सिंघालुण विगेरे अचित्त थाय, बीजु नहीं

५४ श्रद्धा रहितपणे योग वहन कर्या विना साधु के श्रावकोने नवकारादि गणवामा पण अनंत ससारी पणु कहेवाय छे [पण शक्ति आदिकना अभावे योग वहनादिकनी श्रद्धा पूर्वक नवकार मत्र गणता तो परित्त ससारीपणुज संभवे छे

५५ केवळ श्रावक प्रतिष्ठित तथा द्रव्यलिंगीना द्रव्यथी बनावेल तथा दिगंबर चैत्यने मुनीने वांदीना सर्व चैत्यो वांदवा तथा पूजवा योग्य छे अने उपरना कहेला चैत्यो पण सुविहित मुनिना वासक्षेपवडे वदन पूजन योग्य थाय छे.

५६ जळ मार्ग सो योजन अने स्थळ मार्गे साठ योजन उपरांतथी आवेली सचित्त वस्तु अचित्त थाय छे

५७ श्रावक पोसहमां घरना मनुष्योने पुछीने साधु प्रत्ये अन्नादिक वहोरावे.

५८ आलोयण संबंधी स्वाध्याय इरीयावही पूर्वक मूके यदि विसरी गया होय तो फरी उपयोग करवो

५९ छट्ठ करवानी इच्छावाळो जो पहेले दिवसे एक उपवासनुं पच्चक्खाण करे ने बीजे दिवसे पण एक उपवासनुं पचक्खाण करे तेने बदले जो छट्ठनुं करे तो तेने बीजे दिवसे पण उपवास करवो युक्त छे एवी समाचारी छे

६० केवळी समुद्घात कर्या पछी अंतर्मुहूर्त सुधी संसारमा रहे छे पीठ फलकादि गृहस्थने पाछा आपी दीक्षा पछी शैलेशीकरण करे छे केमके अंतर्मुहूर्त आयु शेष होय त्यारेज समुद्घात करवा माटे छे

६१ योगमां, रात्रीए अणाहारी वस्तु लेवी न कल्पे संनिधानो अभाव होवाथी।

६२ योग्य, उपधान तेमज व्रत उच्चरवा होय त्यारे दिन शुद्धि जोवी मास वर्षादि जोवानी जरुर नथी.

आ सार उक्त ग्रंथो वांचती वखते करी लीघेली नोंध अनुसार लखेलो छे तेमां संदेह पडे तो उक्त ग्रंथोथी तेनो निर्णय करी लेवो

यात्रिक बधुओ अने व्हेनोने खास

अगत्यनी सूचना

१ शत्रुंजय तीर्थनी सर्वोत्तमता जाणी तेनी कोइपण प्रकारनी आशातनाथी दूर रहेवा प्रयत्न करवो

२ क्यांय कोइपण प्रकारनी आशातना थती जणाय ते दूर करवा–कराववा सुज्ञ जनोए बनतु लक्ष राखवुं.

३ यात्रादि शुभ प्रसंगे अंगशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, मनशुद्धि, भूमिकाशुद्धि, पुजोपगरणशुद्धि, द्रव्यशुद्धि (न्यायद्रव्य) अने विधिशुद्धि ए साते शुद्धिनो अवश्य खप करवो. " साते शुद्धि समाचरी, करीए नित्य प्रणाम. "

४ एकाग्र मने बराबर लक्ष (उपयोग) राखी, विधि सहित, स्वशक्तिने गोपव्या वगर धर्मकरणी करवी

५ खास मांदगी के अशक्तिना कारण वगर ढीला बनी, परजीवने पीडा उपजे एवा डोळी विगेरे वाहनमां बेसवु नहि.

६ जयणा राखीने ज जवु आववु, वाटमां विकथा–नकामी कुथली नहिज करतां, शुभ ध्यानवडे वखतने लेखे करवो

७ अनंतानंत जीवो ज्यां मोक्षे गया छे, ते भूमिनी भव्यना–दिव्यता विचारी जड वस्तु उपरनी ममता उतारवी

८ उत्तम विचार, वाणी अने आचारवडे स्वपरनु अधिक हित सधाय तेवु ज शुभ लक्ष राख्या करवु.

९ तीर्थंकरादिक महापुरुषोनां उदार चरित्र सांभळी (वांची-विचारी) आपणे ते उपरथी जरुर धडो लेवो तेवा थवा प्रयत्न करवो

१० उत्तम भावनावडे ज उत्तमता आवे छे, ए सत्य समजी कोइ नबळी भावनाने मनमां स्थान न ज आपवु.

११ सहुने आत्मसमान लेखी, कोइने प्रतिकूळता उपजे एवुं कइपण करवु, करावु के अनुमोदवु नहि.

१२ सहु कोइ सुखी थाओ ! दुःखी न थाओ ! सहु सन्मार्गे ज चालो ! उन्मार्गे न ज चालो ! एम सदाय इच्छवु

१३ धर्मना ज अभ्यासथी सुखी थयेला भाग्यशाली भव्यजनोने जोइ राजी (आनंदित) थावु, दीलगीर न ज थावुं.

१४ कोइ दीन दुःखी निराश्रितने देखी के जाणी तेनु दुःख दूर करवा तन, मन धनथी बनती कोशीश करवी

१५ कोइपण नीच-नादान जीव सुधरी न ज शके तो तेने कर्मवश जाणी छेडवो नहि पण समभावे रही स्वहित साध्या करवु

१६ कइक भाग्यशाळी जनो संघपति थइ, संघनी भक्ति करता आवे छे तो आपणाथी बनी शके तेटली साधर्मी भक्ति अवश्य करवी तन मन धनथी अनेक प्रकारे भक्ति थइ शके छे.

१७ तीर्थ भेटवा आवता यात्रिक जनोनी हरेक प्रकारनी सगवड यथाशक्ति साचववा चीवट राखवी ए खरी भक्ति समजवी

१८ जो लोभ-लालच मूकी संतोषवृत्ति राखवामां आवे तो

दरेक धर्मशाळाना मुनीमो पण पुष्कळ भक्तिनो लाभ मेळवी शके.

१९ शत्रुंजयादिक स्थावर तीर्थने भेटवा जता जंगमतीर्थरूप साधु प्रमुखना समागमनो या सदुपदेशनो पण लाभ लेवा चुकवु नहि.

२० शुद्ध देव गुरु के तीर्थराजनां दर्शन, वंदन, पूजा, भक्ति विगेरे धर्मकरणी धसमसीने जयणा रहित करवा करतां स्थिर उपयोगथी करवी.

२१ शुभ-शुद्ध लक्षथी कराती सत्करणी अहींया क्षेत्र प्रभावथी अनंत लाभ आपे छे तेथी तेमां प्रमाद सेववो उचित नथी ज.

२२ यात्रानी संख्या तरफज लक्ष रोकवा करतां तेनी यथार्थता तरफ वधारे लक्ष राखी, सार्थकता करवा काळजी राखवी जोइए

२३ लोकोत्तर तीर्थोनी यात्रा यथाविधि करवामां आवे तो तेथी लोकोत्तर (अलौकिक) फळनी प्राप्ति थइ शके ए सत्यज छे

२४ गतानुगतिकता तजी, शास्त्र मर्यादाने अनुसरी, जे धर्मकरणी कराय तेनु फळ पण यथार्थ प्राप्त थइ शके छे

२५ प्रभुभक्ति प्रसंगे वपराता फूल के फूलहारने पण विराधना न थाय तेम सहु कोइ भक्तजनोए लक्ष राखवु जोइए.

२६ जिनमंदिरोमां दीपमाळाथी कुंदा विगेरे जीवोनी विराधना न थाय तेम विवेकथी गोठवण करवी जोइए

२७ दरेक धर्मकरणी करतां जयणा साचववा अने आत्मलक्ष सुधारवा भणी अधिकाधिक काळजी राखवी जोइए.

२८ राग, द्वेष, कषायादि दोषोने टाळी शुद्ध स्फटिक

रत्न जेवु आत्मानु स्वाभाविक रुप मगट करवानुज मुख्य लक्ष होवु जोइए.

२९ पचमकारी, अष्टमकारी, सत्तरप्रकारी, एकवीशमकारी विगेरे द्रव्यपूजा करतां प्रभु पासे एज आत्मलक्ष मार्थवानु छे

३० स्तुति, स्तोत्र, स्तवनादिक वडे देववन्दनरुपे भावपूजा करतां पण खास करीने एज आत्मलक्ष राखवानु छे

३१ प्रभुनी द्रव्यपूजा विधियुक्त कराय तो ते विघ्ननाशिनी, अभ्युदय जननी अने निर्वाणदाता थाय छे.

३२ शुद्ध अंत करणथी भावपूजा (प्रार्थनादिक) करवामां आवे तो ते शीघ्र अक्षयपद—मोक्षफळ आपे छे.

३३ आ लोक के परलोक संबंधी कइपण तुच्छ सुखेच्छा राख्या वगर कराती करणी अलौकीक (अक्षय) फळ आपे छे

३४ उत्तम धर्म—रत्ननी प्राप्ति करवा माटे अक्षुद्रादिक २१ गुण मेळवी लेवा भव्यजनोए जरुर खप करवो जोइए.

३५ न्याय—नीतिथी द्रव्योपार्जन प्रमुख मार्गानुसारीपणाना पात्रीश गुणोनु आसेवन पण अवश्य करवु जोइए

३६ शास्त्रोक्त छरी पाळवा, यात्रिक महाशयोए, उत्तम तीर्थ राजनी यात्रा प्रसगे तो अवश्य लक्ष राखवु जोइए.

३७ आपमते सारी बुद्धिथी पण करेलु सघळु सारु फळ नथी आपतु; तेथी नम्रपणे जरुर शिष्टाचार सेववो जोइए.

३८ ज्यांसुधी सदाचार अस्खलितपणे पाळवामा यत्नता

रहे, अने ते दूर करवा बाह्य प्रेरणानी जरर पडे त्यांसुधी तो सद्गुरुना चरणकमळनी समीपता उपासना मूकी देवी अनुचित ज छे तथा-प्रकारनी योग्यता योगे गुरु आज्ञाज प्रमाण करवी.

३९ शुद्ध देव-गुरुनी आज्ञानु यथाशक्ति पालन करवामांज स्वहित समायेलुं छे

४० जंगम तीर्थरूप ज्ञानी गुरु आपणने सदाय सन्मार्गमांज योजवा इच्छता होय छे तेथी तेओ आपणी योग्यता मुजब जे हित-मार्ग बतावे ते निःशंकपणे अने निर्भयपणे अनुसरवोज युक्त छे

४१ सद्भाग्ये प्राप्त थयेल बुद्धि, धन, यौवन अने जीवितने सफळ करी लेवां, तेनो सदुपयोग करवा प्रमाद करवो नज जोइए. भाग्यवगर सद्सामग्री फरी फरी मळवी दुर्लभज छे

४२ आतो परभवनी कमाणी खवाय छे अगमचेतीपणे आवता भव माटे खरी कमाणी अवश्य करी लेवी जोइए.

४३ जागताने भय नथी, उंघताने ज भय छे एम समजी दुष्ट प्रमाद तजीने आत्मसाधन करी लेवा सदुर सावधानता राखवी जरुरनी छे.

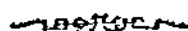
४४ हाथमां बाजी छे त्यांसुधी साधी शकाशे, दव बळे त्यारे कूवो खोदवो नकामो छे-अशक्य छे

४५ खरी भक्ति कल्पवेली, कामधेनु, कामकुंभ के चिन्तामणि रत्न जेवी छे ते मुक्तिने पण खेंची लावे छे. एम समजी शुद्ध देव, गुरु अने स्वधर्म प्रत्ये अंतःकरणनो खरो प्रेम जगाडवो एज सार छे.

इतिशम्

भक्तिप्रसंगे धार्मिक बंधुओ अने व्हेनोने नि.स्वार्थभावे नम्रनिवेदनरूपे

अति अगत्यनी सूचनाओ



१ भवसागर तरवा माटेज भव्यजनोए तीर्थसेवन करवानुं छे. तेमां शत्रुंजय, गिरनार प्रमुख 'स्थावर तीर्थ' अने उत्तम साधु,साध्वी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विध, संघ ए ' जंगम तीर्थ ' रूप छे. तेनी सेवा–भक्ति यथाविधि करवाथी जरुर कल्याण थाय छे.

२ शरीर शुद्धि, वस्त्र शुद्धि, मन शुद्धि, भूमिका शुद्धि, उपगरण शुद्धि, द्रव्य शुद्धि, अने विधि शुद्धि, ए सात प्रकारनी शुद्धि सहुए यथायोग्य साचवी, अति आदरपूर्वक देवगुरु तेमज तीर्थनी सेवा–भक्ति करवानी छे.

३ ते पण दग्ध दोष (अन्य अन्य वायत लक्ष), शून्य दोष (उपयोग राख्या वगर) अविधिदोष(अस्त व्यस्त न्यूनाधिक)अने अति प्रवृत्ति दोष (हद मर्यादा मूकी गजा उपरांत करवु ते) तजीनेज करवा योग्य छे दोष रहित–निर्दोष करणी त्यारेज बनी शके छे.

४ देवगुरुना के तीर्थराजना दर्शनादि प्रसंगे जतां आवतां कोइ पण प्रकारनी विकथाओ (कुथलीओ) करवी केवळ अनुचितज छे. विकथा करवाथी स्वपरने (पोताने तथा सामाने) लाभने बदले नुकशानज थाय छे एम करवाथी लेवाने बदले देवु थाय ए विचारवानुं छे इच्छित कार्यमांज पोतानुं मन परोवी देवु

५ जे काइ करवु ते धीजाने कीलामना ऊपजाव्या वगरज धरवानु शास्त्र फरमान लक्षमा राखीनेज देवगुरु के तीर्थ भक्तिनो लाभ लेवानो छे तेथी तेवा दरेक प्रसगे नीचे जणावेली हकीकत जरर लक्षमा राखवी.

(१) भाव–उल्लासनी वृद्धि थवा माटे देवगुरुके तीर्थना दर्शनादि करवा जता वाटमां जयणा सचवाय, जीवविराधना न थाय अने शास्त्र आम्नाय पळे तेवी रीते ठीक सूर्य–प्रकाश, थये छते, नीचे दृष्टि राखीनेज चालवु खास कारण वगर गाडीमा के डोळीमां वेसवु नहि

(२) उपर जणाव्या मुजब शरीरनी अने वस्त्रनी शुद्धि साचवी मनने एकाग्र करवु मनने ज्यां त्यां दोडवा देवु नहि तेने शुभ ध्यानमाज जोडीने रोकी देवु

(३) मार्गमा जता जे कोइ आत्मार्थी साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका मळे तेमने गुणना बहु मानपूर्वक उचित प्रणामादिक करवा चूकवु नहि

(४) बाळ, ग्लान, वृद्ध, तपस्वी साधु प्रमुखनु योग्य सन्मान करवु,अने तेमने शाता उपजे एवी विश्रामणा–वैयावच्च पण करवी.

(५) जिन चैत्य, चरण पादुका प्रमुखनो यथोचित विनय करवा चूकवु नहि

(६) देव, गुरु, तीर्थ प्रमुखनी कोइ पण प्रकारे आशातना नथाय

तेनु लक्ष राखवुं, अने कोई आशातना थयेली दीसे तो ते तरत दूर करवी-कराववी

(७) राग द्वेष-कषाय दूर करवा जता तेवा पवित्र स्थाने अविवेक आचरणथी तेज रागद्वेषादिक दोष पेदा थाय अने वधे एमतो नज करवुं. केमके पवित्र (तीर्थ) स्थाने सेवेला दोष वज्र लेप तुल्य थाय छे

(८) जेम आपणा विचार वाणी अने आचार सुधरे-पवित्र थाय तेम लक्ष राखी प्रवर्तवुं पण-स्वच्छंदपणुं आदरवुं नहि

(९) जेम बने तेम इन्द्रियोने लगाममां राखी स्वउचित हित कार्य करवुं तेमनें सार मोकली तो नज मूकवी

(१०) सहु कोइने निज आत्मा समान लेखी निर्मळ परिणाम राखवो

(११) निर्मळ श्रद्धा (समकित) सहित तप जप व्रत नियम करवामां अधिक आदरवत थावुं सुखशीलपणुं कायरपणुं तजी शूरवीर बनवुं छती शक्ति गोपववी नहि केमके फरी फरी सुयोग मळवो दुर्लभज छे

(१२) हरेक धर्म करणी करवाना हेतु मुमुक्षु गुरु गम्य समजी, तेनो आदर करवा पोतानी योग्यता सबधी समति मेळवी, आज्ञानुसारे प्रवृत्ति कराय तेनुं लक्ष राखवुं स्व योग्यता मुजब यथाविधि करेली करणीज लेखे थइ शके छे.

(१३) अरिहत प्रभुनो अनत उपकार विचारीने तेमनी द्रव्य भावथी पूजा-भक्ति स्वशक्ति अनुसारे करवी, कराववी अने तेने अनुमोदवी

(१४) पच प्रकारी, अष्टप्रकारी, सत्तर प्रकारी, एकवीस प्रकारी, अष्ट शत प्रकारी (अष्टोत्तरी) प्रमुख द्रव्यपूजा पैकी पोतानाथी बनी शके ते प्रभु पूजा आदरथी करवी. स्व न्याय द्रव्यनी सफळता करवी ए विहित मार्ग छे.

(१५) पवित्र (तीर्थ) जळ, शीतल चंदन अने साचां ताजां सुगंधी पुष्पोवडे प्रभुनी अंगपूजा तथा सुगंधीदार धूप, दीपक, अक्षत, नैवेद्य अने सरस फळवडे अग्रपूजा करवाथी ते अष्ट प्रकारी पूजा कहेवाय छे अने ए भाव सहित करनार सुगुण भाइओ अने व्हेनो पणी अनुपम लाभ मेळवी शके छे

(१६) अरिहत प्रभुना उत्तम आलंबन योगे उक्त अष्ट प्रकारी पूजावडे अनुक्रमे स्वदोष शुद्धि, कषाय शान्ति, चित्त प्रसन्नता, सुवासना, सम्यग्ज्ञान-प्रकाश, निर्मळ श्रद्धा, मन इन्द्रियजय अने अक्षयपद-मोक्षनी प्राप्ति थइ शके छे आवा पवित्र हेतुथीज प्रभु पूजा करवानी छे.

(१७) द्रव्यपूजा थइ रह्या बाद, एक प्रभुसन्मुखज दृष्टि राखीने, गंभीर अने मधुर शब्द ध्वनि युक्त उदार अर्थवाळां चैत्यवदन, स्तुति स्तवनादिक करवारूप भावपूजा करी छेवटे 'जयवीयराय'ना प्रभु प्रार्थना करवी आ बधी करणी मनवचन कायानी

एकाग्रता राखीनेज करवानी छे. एम करवाथी लोकोत्तर–प्रधानपद प्राप्त थइ शके छे.

(१८) प्रभुना गुणमां लीनता थवा माटे प्रमाद रहित, यथोचित योगमुद्रादिकमां आदर राखी, आपणाथी गुणाधिक (गुरु प्रमुख) ने आगळ करी, विनय बहुमान साचवी, शान्तचित्तथी, चैत्यवन्दनादि करवु. मनमां कोइपण प्रकारे व्यग्रता थवा देवी नहि.

(१९) उपर कहेलो आशय समज्या वगर, जेम आवे तेम, विवेक रहित, गुरु प्रमुख वडीलनी आगळ बेसी, मोटा घांटा पाडी, बीजाना ध्यानमां अंतराय पडे एम, बेताल अने अशुद्ध बोलवानी टेव पडी होय ते तजवी जोइए धीमा रागे शुद्ध बोलतां शीखवु जोइए

(२०) द्रव्य–भावपूजा करीने पण पोताना आत्मानेज जगाडवानो छे भय, विषय, कषाय, निद्रा (आळस) अने विकथादि प्रमाद दोषथी पोतानेज मुक्त करवानो छे तेम करवाना पवित्र लक्षथीज कल्याण थइ शके छे. अन्यथा कल्याण थवु मुश्केल छे

(२१) स्व परने भाव उल्लास प्रगटे तेटला पूरतो समय द्रव्य पूजामां लक्ष सहितज वीतावबो योग्य छे लक्ष वगर व्यतीत करेलो वखत नकामो जाय छे अविधि दोष तो जेम बने तेम तजवा अने विधिनो आदर करवा जरुर खपी थवु सुज्ञ जनोने उचित छे.

(२२) अंग रचना (आंगी) करतां, फूलनी काची कळी, वासी, घगडेलां, नीचे पडी गयेलां मलीन वस्त्रादिक वडे आणेला अने जीवातथी भरेलां फूलने तेवा फूलनो माळा प्रभु भक्तिमा नहि

वापरता, उत्तम प्रकारनां शुद्ध फूल तेमज तेवांज फूलनी माळा वपराय, ते पण सोयवती पोंच्या वगरज काचा सूत्रवती ढीली गांठ दइनेज तैयार करेली होय तेवी जयणाथी गुथेली फुलनी माला प्र भुना कंठे स्थापी शकाय. सोयवती पोंचेला फूलना हार प्रभु उपर चढाववानो रीवाज आजकाल अणसमजथी वधी गयेलो दीसे छे ते वीलकुल पसंद करवा जेवो नथी आपणा करतां वधारे सुकुमाल एवा पुष्पना जीवोने एथी केटली बधी कीलामना थती हशे ? तेनो ख्याल करवामां आवशे तो ए रीवाज सहेजे दूर थइ शकशे. पोताना प्राणनी जेवा अन्यना प्राण समजनारने वधारे कहेवु पडे नहि.

(२३) फूलनी पाखडीओ पण छुटी करी नाखवी नहि, तेनेज पगतळे कचरवी नहि तो पछी सोयनी तीक्ष्ण अणीवती तेनु छेदन भेदन तो केमज कराय ? छेदन भेदन करेला फुलहार चढाववा ते करता शुद्ध अने सरस फूलो छुटा छुटा जेम शोभानिक लागे तेम प्रभुना अंग उपर गोठवी देवा वधारे उत्तम, लाभकारक अने आनंद दायक होवाथी हितकारी समजाय छे ते सहुए विचारीने लक्षमां राखवु विधि सहित करेली भक्तिज लेखे थाय छे.

(२४) बीजा दीवसे निर्माल्यरुप थयेला ते फूल केफूलमाळ जेम तेम ज्या त्या फेंकी देवा न जोइए ते वधाय जाळवीने मोर पींछीवती उतारी लइ एवा स्थळे राखवा के ज्या ते कचराय नहि तेमज तेमां चोंटी रहेला कोइपण त्रसजीवने ताप-तडकादिकथी व्यथा थाय नहि न्हवणनी कुंडीमां तो ते नाखवा नज जोइए जूदाज 'राखवां जोइए' स्नात्र पूजा प्रसंगे पण ए वात लक्षगत राखवानीछे'

(२५) जेम जेम जयणा अधिक पळे तेम तेम ते पाळवा दरेक भक्ति प्रसंगे खुब लक्ष राखवु, अने भक्ति रसिक भाइ व्हेनोनु दील दुःखाय एवु कइपण नहि करतां तेमनु मन प्रसन्न थाय एवुज पवित्र आचरण करवु दर्शन, वदन के पूजा करता एक बीजा उपर धक्का धक्की करवी नहि पण अनुकूळ समय (तक) मळतां सुधी कोइएक एकान्त स्थळमा ध्यान धरवु.

(२६) भक्तिमाथी निवृत्त थताज ससारिक काममा रगाइ जवु नहि जो भक्तिनो रस-आस्वाद (अनुभव) बराबर कर्योज होय तो तेनी खुमारी एकाएक उतरी जती नथी. ते पछी पण केटलोक वखत सुधी टकी रहे छे ते (अनुभव)नु सुखतो खरेखर अनुभवीज जाणी शके छे शुद्ध-सरल हृदयवाळा श्रद्धावत प्रेमाळने ज प्रमाद रहित भक्ति मार्गमां प्रवर्ततां एवो अनुभव [रस आस्वाद] प्राप्त थइ शके छे हृदय शुद्धि करवानी तो खास जरुर रहे छे

(२७) जेम मोर मेघने देखी, चकोर चद्रने देखी, अने सती निज पतिने देखी राजी-आनंदित थाय छे तेम भक्ति रसिक अने शुद्ध श्रध्धावत भव्यजनो पण शुध्धदेव, गुरु अने सघ साधर्मिक जनोने निरखी आनदित थाय अने छे निजनेत्र युगलने सफळ-सार्थक करे छे इति शम्

बोध वचन

१ दिवसे एवु कार्य करवु के रात्रीए निराते सुइ रहेवाय.
२ आठ मास एवु कार्य करवु के चोमासामा करवु न पडे.

३ युवावस्थामां एवु कार्य करवु के वृद्धावस्थामां सुखे दिवसो निर्गमन थाय.

४ जन्म पर्यंत एवु कार्य करवु के आवतां भवमां दु खो वेठवा न पडे

५ अधम पुरुषो विघ्नना भयथी कोइपण कार्यनो आरभ करतां नथी.

६ मध्यम पुरुषो आरभ करेलो कार्यने विघ्न आववाथी छोडी दे छे

७ उत्तम पुरुषो विघ्न आव्यां छतां पण, आरभेला कार्यने सपूर्ण पार पाडे छे.

८ वाचनार, जेणे तने उपकार कर्यो होय, तेनो अपकार करवा कदी इच्छीश नहि

९ जो तु आबाद थवाने इच्छतो होतो न्याय मार्गथी द्रव्य उपार्जन करता शीख

१० विद्या खरच करता खूटे नहि, तेवु एक अपूर्व धन छे, माटे पैसानो सग्रह करवो तजी दइ विद्यानो सग्रह (सचय) कर

११ साथे एटलु याद राखजे के विद्यानो गर्व कदी करवो नही, केमके ताराथी वधारे विद्याने धारण करनारा पण दुनियामा घणा छे

१२ शुक पाठ जेवु ज्ञान मेळव्या करता अनुभव ज्ञान मेळववु श्रेष्ठ छे

१३ वांचनार ! तने मोक्ष सुखनी वाछा होय तो सम्यग् ज्ञाननी प्राप्ति करजे.

१४ सद्गुरुनी उपासना करी विनय गुण वदे अने तारा सतत उद्यम वदे तु सद्बोधनी प्राप्ति करी शकीश

१५ तारु श्रेय वांछतो हो तो सत् पुरुषोनो संग कर, गुणीजन उपर प्रीति राख, अने उत्तम पुरुषोना कार्यनु अनुकरण कर.

१६ सदाचारथी तारी आबादी थशे तेम धारी सदाचारनु सेवन कर

१७ आ लोक अने परलोक विरुद्ध यार्य माणाने पग न करीश.

१८ वाचनार तु विश्वासघातने महापापनु मूळ जाणी तेनो त्याग कर.

१९ मत्र, तत्र, मत्र विगेरे कोइपण धर्मथी अधिक नथी, यत्रादि आ भवमा सुख आपे छे, अने धर्म भवोभवमा सुख आपे छे, माटे धर्मनोज आदर करवो.

२० गंध विना फुलनी शोभा नथी, दात विना मुखनी शोभा नथी, सत्यता विना वचननी शोभा नथी, तेम पुण्य विना पुरुष शोभाने पामतो नथी.

२१ मन जीत्यु तेणे सर्व जीत्यु एम समजी मननेज वश करवु

२२ मुर्खने शिखामण आपवी, कदाग्रहीने धर्म समजाववो, अने कुपुत्र अगर कुशिष्यने बोध आपवो ते निष्फळ छे

२३ अजळीमा रहेला जळनी जेम योवन दिन दिन गळे छे

२४ पुण्यथी पुन्य वधे छे, अने पापथी पाप वधे छे, माटे निरतर पुन्यज कर्या करवु.

२५ पून्य करवाथी रुप लावण्यता, यश, मान, प्रतिष्ठा, वगेरे प्राप्त थइ ठेकाणे ठेकाणे सुख मळे छे, अने पाप करवाथी ठेकाणे ठेकाणे दु खज मळे छे

२६ व्रतमां शील (ब्रह्म) व्रत उत्तम, दानमां अभयदान उत्तम, गुणमां विनय गुण उत्तम, तेमज रुपमां भगवतनु रुप अने वचनमां सिद्धात वचन उत्तम जाणवु

२७ संतोषथी सुख मळे छे. सुखथी धर्म साधि शकाय छे अने धर्मथी मोक्ष मळे छे, माटे सत्पूरुषोए अत्यत संतोष धारवो योग्य छे.

२८ जेवी मति तेवी गति, जेवी क्रिया तेवु कर्म, जेवो तप तेवु फळ, तेम जेवो संतोष तेवुज सुख समजवुं.

२९ व्रत भग करनार जेवो कोइ पापी अने व्रत पाळनार जेवो कोइ धर्मी नथी

३० धर्मनी परीक्षा घडु दोहीली छे.

३१ उपाधिवाळाने तत्वथी सुख होतु नथी

३२ पर्वतमा मेरु मोटो, देवमां इंद्र मोटो, केवळीमां तीर्थंकर मोटा, ग्रहमा चद्र मोटो, सर्व व्रतमा ब्रह्मचर्य व्रत मोटुं तथा पर्वमां पर्युषण पर्व मोटु छे, तेम मत्रमा नवकार मंत्र मोटो छे

३३ सूर्य तरफ नजर करवाथी आंखना तेजनो क्षय थाय छे. तेम परस्त्री तरफ नजर करवाथी मनुष्योनु पुण्य रुप तेज क्षय पामे छे, माटे परस्त्री तरफ खोटी दृष्टिए करवी नहि

३४ मांस, मदिरा, शिकार, चोरी, जुगार, वेश्या तथा परस्त्री-गमन, ए सात व्यसनो घोर नरकमां लइ जनार छे, माटे शाणा जनोए ते साते अवश्य तजवा.

३५ रे जीव ! विविध प्रकारना उपद्रवो वडे अति भयानक एवा संसार रूपी कारागृहमां रहेवु, भूमि उपर शयन करवु, मनुष्योना हीन अने अनादरना वचनो सांभळवा, ताप तथा टाढ सहन करवां, भूखतृषानु दुःख भोगववु, शरीर तथा द्रव्यनो क्षय थवो, विगेरे सर्व पूर्वजन्ममा जे जे कर्म बांध्या होय तेना उदय आववाथी भोगववु पडे छे. परंतु हे मुर्ख ! जरा पण मनमां वैराग्य लावतो नथी, अने मोहमां फसाइ तत्वने पण जाणतो नथी.

३६ हे जीव ! तु उपदेश दुःखनो करे छे अने वांछा सुखनी करे छे, पण तत्वने जाणीश तोज तारी सर्व वांछा फळीभूत थशे

३७ हे जीव ! पूर्वे जे शुभ वा अशुभ कर्म तें बांध्या छे ते आ भवमा उदय आववाथी तारे भोगववां पडे छे, तेमां बीजा उपर कोप शा माटे करे छे ! केमके कोइ कोइने सुख के दुःख आपतु नथी. कर्या कर्म प्रमाणे फळ मळे छे, भावीभाव बन्या करे छे, ते माटे कष्ट पडे त्यारे शोच नहि करतां धीरज अंगीकार करवी, दैव प्रतिकूल होय त्यारे कोइ रक्षण करी शकतु नथी, बीजातो निमित्त मात्र छे.

३८ कोइ पासे खुशामतना वचन बोलवाथी काइ लाभ नथी, पून्यना उदयथीज सर्व अभिलाषा फळे छे

३९ रे जीव ! मोटा देव दानवने पण कष्ट पडे छे, तो कष्टमा

आ सार विषाद करे छे. आ संसारमां तो कोइना मनोरथ पूर्ण थाय छे, कोइना भग थाय छे, कोइने नित्य दुःख थाय छे, तो कोइने नित्य सुख थाय छे, तेथी सत्पुरुषतो तेनेज कहेवो के जे निर्मळ स्वभावने धारण करी परोपकारमां तत्पर थइ धर्ममा रक्त होय, अने संपदा छतां अहंकार करे नहि, अने कष्ट आवे शोच करे नहि

४० हे जीव ! रडवाथी चित्तमां संताप थाय छे, पण रडवाथी के दीन वचन बोलवाथी कर्म छूटता नथी, भोगववाज पडे छे.

४१ तु विकट वनमा भ्रमण कर, पर्वतो उपर चड, समुद्रमा अगर गुफामा प्रवेश कर, पण भाग्यथी अधिक मळवानु नथी, केमके पुन्य हीन पुरुषनो उद्यम निष्फळ थाय छे, तथापि उद्यम करवानी जरुर छे

४२ हे अविवेकी ! जे कुटुंबने माटे तु मोह करे छे, अने सदा पाप करे छे ते कुटुंब तने नरकादिना दुःखोथी छोडावी शकवानुं नथी लक्ष्मी जलकल्लोलवत चपल छे, मनुष्यनु लावण्य संध्याना रंग सरखु छे, वळी कमलपत्र उपर रहेला जलबिंदु पेठे अस्थिर छे, आयुष्य विजळीना चमकारा तुल्य छे, तेना माटे तारे विषाद करवो नहि

४३ रे जीव ! दुर्लभ मनुष्य जन्म पामीने जेणे आत्म हित कर्युं नहि तेनो जन्म निष्फळ जाणवो

४४ रे जीव ! पर स्त्रि अने पर द्रव्यनी तु वांछा कर नहि.

अने प्राणातिपातादि पाप स्थानकोने सेव नहि, ते महा अनर्थना मुळ छे, अने नर्कमा लइ जनारा छे

४५ लोभी पुरुष अन्यायथी बीजानु धन लेवाने इच्छे छे, पण तेनु धन अने यौवन अस्थिर जाणवु

४६ दु ख सर्वने अनिष्ट छे, ने सुख सर्वने इष्ट छे, तेम मनमां विचारी सर्वने पोतानी तुल्य मानी कोइने पण दु:ख दइश नहि.

४७ मन, वचन अने कायानो उपयोग एवो करवो के जेथी वैराग्य थाय अने पाप दुर जाय, पण पाप नजीक आवे तेवो उपयोग करवो नहि

४८ जे पोताना स्वामी, गुरु, शेठ अगर मित्रने विश्वास आपी तेनो घात करे, तेने बने लोकमा सुख थतु नथी

४९ पुण्यवान पुरुषोनो वखत तत्व चिंता करवामा, हित वचन बोलवामां, अने मुनि जननु सन्मान करवामा जाय छे अने पापीओनो वखत सदा कुकर्ममा जाय छे

५० हे जीव ! आर्य क्षेत्र, मनुष्य जन्म, उत्तम कुळ, सदाचार, शरीर आरोग्य, देव गुरु धर्मनी सामग्री, ए सर्व पामवु अत्यत दुर्लभ छे, माटे सावधान पणे रही बोधी बीजनी प्राप्ति माटे उद्यम करवो, जेथी फरी दु ख भोगववु पडे नहि.

५१ पडित पुरुष तो तेनेज जाणवो के जे सर्व सामग्री पामी आत्म हितमा तत्पर थाय के जेथी फरी जन्म मरण करवा पडे नहि राज्यादिक पौद्गलिक सुख पामवु मुश्केल नथी, परतु सर्वज्ञ कथित धर्म रहस्य पामवु बहु कठण छे.

५२ हजारो हळथी खेडेला उखर भूमिवाला क्षेत्रमा जेम धान्य पेदा थतु नथी तेम धर्म हीन पुरुषोने घणा प्रयासे पण बोध थतो नथी धर्म करवाथीज सर्व सुखनी प्राप्ति थाय छे

५३ रे जीव ! तु आ भवमा धर्म नहि करे तो तारे परलोकमां दहन, छेदन, भेदन आदि अनेक दु खो सहन करवां पडसे, माटे धर्मने सर्वथी उत्तम जाणीने तेनोज आदर कर.

हित वचन माळा.

१ समजु लोको निंदा करे तेवु करवु नहि
२ जूठु बोलवु नहि
३ कुसग करवो नहि
४ पाछळथी पस्तावो थाय तेवु काम करवु नहि
५ उपरीने अप्रिय थवाय तेम वर्तवु नहि
६ बोल्या पछी फरवु पडे तेवु बोलवु नहि
७ घडसा घडसी करवी नहि
८ जुगट रमवु नहि
९ परदारा सेववी नहि
१० वहेमी थवु नहि
११ निर्बळ मनना थवु नहि.
१२ अध श्रद्धालु थवु नहि.
१३ भोळा थवु नहि.
१४ कपटी थवु नहि
१५ चाडी खावी नहि
१६ कोइनु दील दुखाववु नहि
१७ वहाला साथे विरोध करवो नहि
१८ सज्जनोमा शरमावु पडे तेवु काम करवु नहि
१९ मनमा मुझावु पडे तेवु काम करवु नहि
२० पोताना पगपर कुहाडो मारवो नहि.
२१ वेसवानी डाळ कापवी नहिं

२२ कजीओ उठीनो ऐवो नहि
२३ कजीआना आगेवान थवु नहि.
२४ स्त्री, अगरक्षक अने रसोइया साथे विरोध करवो नहि.
२५ स्त्रीनो विश्वास करवो नहि
२६ चाकरो तथा स्त्रीओने झाझी छूट आपवी नहि
२७ अति विश्वासु थवु नहि
२८ पोतानी आवरनाकाकरा थाय तेवु काम करवु नहि
२९ नीच माणसोनी साथे प्रसंग पाडवो नहि
३० कृपणनु मों बोलावबु नहि.
३१ देश काळथी प्रतिकूळ कार्य करवु नहि
३२ विश्वासघात करवो नहि.
३३ विकथा करवी नहि.
३४ वखत व्यर्थ गुमाववो नहि
३५ देशना द्रोही थवु नहि
३६ नातमा कजीओ पाडवो नहि
३७ कोइने विना कारण हेरान करवो नहि
३८ कुमार्गे दोरी जनार पुस्तको वाचवा नहि
३९ कदाग्रह करवो नहि
४० कुविद्या शीखवी नहि
४१ केफी वस्तु पीवी नहि.
४२ निर्दय थवु नहि
४३ खराब वचन बोलवा नहि
४४ कोइनी आजीविका भांगवी नहि.
४५ द्वेष करवो नहि
४६ उडाउ थवु नहि
४७ लोभी थवु नहि.
४८ कोइना भुंडाथी राजी थवु नहि
४९ नास्तिक थवु नहि
५० ढोंगी थवु नहि
५१ पारकी निंदा करवी नहि
५२ बेवकूफ थवु नहि
५३ विषयी थवु नहि
५४ प्रमादी थवु नहि
५५ गुणीजननो अविनय करवो नहि
५६ भक्ति हीन थवु नहि

५७ छास्टा थवु नहि
५८ क्रोध करवो नहि
५९ गर्व करवो नहि
६० अभण रहेवु नहि
६१ अस्वच्छ रहेवु नहि
६२ अनियमीत थवु नहि
६३ मोह राखवो नहि
६४ मननी वात हितेश्वरी शीवाय
बीजाने कहेवी नहि
६५ पोतानी वडाइ करवी नहि
६६ अवळे मार्ग चडवु नहि
६७ रहेती नीक तोडवी नहि
६८ सार्वजनिक तथा धर्मादाना
कार्यमा विघ्न करवु नहि
६९ जीर्राहंसा करवी नहि
७० आफत आवे डरवु नहि
७१ असार ससारमा आशक्त थवु
नहि
७२ ममत्वभाव राखवो नहि
७३ कुळ मर्यादा छोडवी नहि
७४ शिष्टाचारनु उल्लंघन करवु नहि
सत्य वस्तुनो अनादर करवोनहि

७६ हितवचननो अनादर करवोनहि
७७ सज्जनोनु अपमान करवु नहि.
७८ दुष्टोने उत्तेजन आपवु नहि.
७९ देशनु दारिद्र वधे तेवा साध-
नोने उत्तेजन आपवु नहि
८० शक्ति उपरांत खर्च करवु नहि
८१ कुदेवने नमवु नहि
८२ कुधर्मनु सेवन करवु नहि
८३ नीतिमा शिथील थवु नहि
८४ कुगुरुनी उपासना करवी नहि
८५ वीतराग भापीत वचननी अ-
श्रद्धा करवी नहि
८६ कोइनी हासी करवी नहि
८७ बहु बोलो थवु नहि
८८ सहसा काम करवु नहि
८९ वेश्यामा आसक्त थवुं नहि.
९० लांच खावी नहि
९१ विद्यानो गर्व करवो नहि
९२ आर्तध्यान करवु नहि.
९३ अन्यायथी द्रव्य उपार्जन क-
रवु नहि
९४ दुर्जननी सोबत करवी नहि.

९७ स्वस्वप्पने भृत्यु नहि.
९६ शिकार करवो नहि.
९७ रौद्र ध्यान करवु नहि.
९८ हल्की परतन्त्रनास्वीकारवीनहि
९९ दुरो सुपी जयो नहि
१०० मनुष्यभवव्यर्थगुमाववो नहि
१०१ पुन्यनी कमाइ कर्या विना.
रहेवु नहि
१०२ अशुभ कर्म करवा नहि
१०३ पारके पैसे वेपार करवो नहि
१०४ करज करीने वरो करवो नहि
१०५ अधर्म करवो नहि
१०६ धर्मनो क्षय कर्या वगर र-
हेवु नहि
१०७ मिथ्यात्व सेववु नहि
१०८ थोडु ज्ञान मेळववु नहि
समकित सहित धर्म करवो

मार्गानुसारीना ३५ बोल

१ न्याय संपन्न विभव—न्यायथी धन मेळववु एटले स्वामिद्रोह, मित्रद्रोह, विश्वासीने ठगवु, चोरी करवी, थापण ओळववी वीगेरे निंदवा योग्य काम त्याग करीने धन उपार्जन करवु

शिष्टाचार प्रशंसा—उत्तम पुरुषोना आचरणना वखाण करवा.

३ सरखा कुळाचार वाळा पण अन्य गोत्री साथे विवाह करवो.

४ पापना कामथी डरवु.

५ प्रसिद्ध देशाचार प्रमाणे वर्तवु

६ कोइनो अवर्णवाद बोलवो नहीं.

७ जे घरमा पेसवा निकळवाना अनेक रस्ता नथी तथा जे घर अति गुप्त अने अति प्रगट न होय अने पाडोशी सारा होय तेवा घरमा रहेवु

८ सारा आचरणवाळा पुरुषोनी सेवन करवी

३५ वशीकृतेंद्रियग्राम एटले इंद्रियोना समुहने वश करवा एटले सर्वे इंद्रियोने वश करवानो अभ्यास करवो

बाळ जीवोने मोढे करवा सुगम पडे माटे उपरना मार्गानुसारीना पांत्रीस बोल सक्षेपथी लख्या छे विवरण ग्रंथांतरोमाथी जोइ लेवु

"जैन कोमना हितनी खातर खास निर्माण करेली समयानुसारी बहु उपयोगी सूचनाओ"

१. विदेशी भ्रष्ट वस्तुओथी आपणे सदतर दुर रहेवु अने स्वदेशी पवित्र वस्तुओनोज उपयोग निश्चयपुर्वक करवो अने करावबो

२ आपणा पवित्र तीर्थोनी रक्षा माटे आपणे विशेष सावधान रहेवु

३ कोइ पण प्रकारना खोटा व्यसनथी सावधानपणे दुर रहेवु, अने अन्य भाइ व्हेनोने दुर रहेवा प्रेरणा कर्या करवी

४. शांत रसथी भरपुर जिन-प्रतिमाने जिनवत् लेखी तेवी शांत दशा प्रगटाववा प्रतिदिन पुजा अर्चादिक करवा करावबा पुरतु लक्ष्य राखवु तथा रखाववु

५ परम सुख शांतिने आपनारी श्री जिन वाणीनो स्वाद मेळववा दिवस रात्रीमां थोडो वखत पण जरूर श्रम लेवो, अभ्यास करवो

६. जैन तरीके आपणु शुं शुं कर्तव्य छे ते पुरा तोरथी जाणी लेवा अने जाणीने ते प्रमाणे सदा पुरो ख्याल राखवो

।चोवीश तीर्थंकरोना चैत्यवंदनो

॥ श्री पंच परमेष्ठी नमस्कार स्तुति ॥

॥ शार्दूल विक्रिडित ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिता, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता
आचार्या जिन शासनोन्नति करा, पूज्या उपाध्यायका॥
श्री सिद्धांत सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रया राधका ॥
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिन, कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥१॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमल सूरीकृत ॥

॥ १ ॥ श्री ऋषभदेवजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम जिणेसर ऋषभदेव, सवट्ठथी चविया ॥ वदि चउथ आषाढनी, शके संस्तविया ॥१॥ अठमी चैत्रह वदि तणी, दीवसे प्रभु जाया ॥ दीक्षा पण तिणहीज दीने, चउनाणी थाया ॥२॥ फागुण वदी इग्यारशे ए, ज्ञानवहे शुभ ध्यान ॥ महा वदि तेरशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥३॥ इति ॥

---

१ सर्वार्थ सिद्धथी

॥ २ ॥ श्री अजितनाथजीनु चैत्यवंदन ॥

॥ सुदि वैशाखनी तेरशे, चविया विजयत ॥
महा सुदि आठमे जनमिया, बीजा श्री अजित ॥१॥
माहा सुदी नौमे मुनि थया, पोस उज्जल इग्यारस ॥
उज्वल केवली थया, अक्षय कृपारस ॥२॥ चैत्र शुक्ल
पचमी दिनेए, पंचम गति लहा जेह ॥ धीर विमल
कवि राजनो, नय प्रणमे धरीनेह ॥३॥ इति

॥ ३ ॥ श्री संभवनाथजीनु चैत्यवदन ॥

॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री संभव ॥
फाल्गुण सुदि आठम दिने, सुदि चौदस अभिनव
॥१॥ मागशिर मासे जनमीया, तिणि पुनम सजम
॥ कार्तिक वदि पाचम दिने, लहे केवल निरुपम ॥
॥२॥ पचमी चैत्रनी उजलीए, शिव पहोंच्या जिनराज
॥ ज्ञान विमल प्रभु प्रणमतां, सिझे सघला काज॥३॥

॥ ४ ॥ श्री अभिनदन स्वामीनु चैत्यवदन ॥

॥ जयत विमान थकी चव्या, अभिनदन राया
॥ वैशाख सुदि चोथि माघ, शुदि बीजे जाया ॥१॥
महासुदि बारशे ग्रहीय दीक्षा, पोश सुदि चउदश ॥

केवळ शुदि वैशाखनी, आठमे शिवसुख रस ॥ २ ॥ त्राया जिनवरने नमीए, चउगति भ्रमण निवार ॥ ज्ञान विमल गणपति कहे, जिनगुणनो नहीं पार ॥३॥

॥ ५ ॥ श्री सुमतिनाथजीनु चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण शुद बीजे चव्या, मेहेलीने जयंत ॥ पचमी गति दायक नमु, पचम जिन सुमति ॥ १ ॥ शुदि वैशाखनी आठमे, जनम्या तेम सयम ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ २ ॥ चैत्र इग्यारसं उजलीए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिण नवमीए, नय कहे करो तस सेव ॥३॥ इति ॥

॥ ६ ॥ श्री पद्मप्रभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ नवम ग्रैवेयकथी चवी, महावदि छठी दिवसे ॥ कारतक वदि वारसे जनम, सुरनर सवि हरखे ॥ ॥१॥ वदि तेरश संयम ग्रहे, पद्मप्रभ स्वामी ॥ चैत्री पुनम केवली, वळी शिवगति पामी ॥ २ ॥ मागशर वदि इग्यारशेए, रक्त कमल समवान ॥ नय विमल जिनरायेनु, धरीये निरमल ध्यान ॥३॥ इति ॥

॥ ७ ॥ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ छठा ग्रैवेयकथी च्व्या, जिनराज सुपास ॥ भादरवा वदी आठमे, अवतरिया खास ॥ १ ॥ जेठ शुक्ल बारशे जनम्या, तस तेरशे संयम ॥ फागुण वदी छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥२॥ सत्तम जिनवर नामथीए, साते इति शमंत ॥ ज्ञानविमल सूरि नित्य लहे, तेज प्रताप महंत ॥३॥ इति ॥

॥ ८ ॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ चन्द्रप्रभ जिन आठमा, चन्द्रप्रभ समदेह ॥ अवतरिया विजयतथी, वदि पंचमी चैत्रेह ॥ १ ॥ पोस वदि बारशे जनमिया, तस तेरशे साध ॥ फागुण वदिनी सातमे, केवल निराबाध ॥ २ ॥ भाद्रव सत्तमि शिव लह्याए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अष्टमहा सिद्धि संपजे, नय कहे जिन अभिधान ॥३॥ इति ॥

॥ ए ॥ श्री सुवधिनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ गोरा सुविधि [illegible] पुष्पदंत ॥ फागुण वदि [illegible]

र्तिक शुदि त्रीजे केवली, दिए बहुपरे शिक्षा ॥ २ ॥
शुदि नवमी भाद्रवा तणीए, अजर अमर पद होय
धीर विमल सेवक कहे, ए नमता सुख होय ॥३॥इति॥

॥ १० ॥ श्री शीतलनाथ चैत्यवदन ॥

॥ प्राणत कल्प थकी चव्या, शीतल जिन द-
शमा ॥ वदि वैशाखनी छठे, जाणी दाघज्वर प्रश-
म्या ॥१॥ महा वदि बारसे जन्म दीक्षा, तस बारसें
लीध ॥ वदि पोष चउदश दिने, केवली परसिद्ध॥२॥
वदि बीजे वैशाखनीए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञान
विमल जिनराजथी, सीझे सघलां काज ॥३॥ इति॥

॥ ११ ॥ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवदन ॥

॥ अच्युत कल्पथकी चव्या, श्री श्रेयांस जि-
णंद ॥ जेठ अधारी दिवस छठे, करत बहु आणंद॥
॥१॥ फागुण वदि बारसें जनम, दीक्षा तस तेरस ॥
केवली माहा अमावसि, देसना चदन रस ॥ २ ॥
वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसुख अक्षय अनत
॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहे ए भगवंत ॥३॥

॥ १२ ॥ श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणतथी इहां आविया, जेट्ठ शुदि नवमी ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावसी संजम ॥ १ ॥ माहा शुदि बीजे केवली, चौदशी आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरें काढी ॥ २ ॥ वासु पूज्य जिन बारमाए, विद्रुमरगें काय ॥ श्री नयविमल कहे इस्यु, जिन नमता सुख थाय ॥३॥ इति॥

॥ १३ ॥ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माधव[1] शुदि बारस ॥ शुदि महा त्रीजें जण्या, तस चोथे व्रत रस ॥१॥ शुदि पोष छठे लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातम अषाढनी, पाम्या पद अविचल ॥२॥ विमल जिनेसर वदियेंए, ज्ञान विमल करि चित्त ॥ तेरसमो जिन नितुदिये, पुण्य परिघल वित्त[2] ॥३॥ इति ॥

॥ १४ ॥ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥प्राणत थकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरशे, जनम्या चउदशें व्रत ॥

१ वैशाख २ लक्ष्मी.

॥ १ ॥ वदि वैशाखे चौदशे, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पचमी दिने, शिव वनिता काम्या ॥ २ ॥ अनंत जिनेश्वर चौदमा ए, कीधा दुशमन अंत ॥ ज्ञान विमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥३॥

॥ १५ ॥ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ वैशाख सुदि सातमे, चविया श्री धर्म ॥ विजय थकी माह मासनी, शुदि त्रीजें जन्म ॥ १ ॥ तेरस माहि उजली, लीये सजम न्नार ॥ पोषी पुनमे केवली, गुणना न्नार ॥ २ ॥ जेठी पाचम उजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमता, वाधे धर्म सनेह ॥३॥ इति ॥

॥१६॥ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ न्नाद्रवा वदि सातम दिने, सवठथी चविया ॥ वदि तेरश जेठें जण्या, दुःख दोहग समीया॥१॥ जेठ चौदश वदि दिने, लीये सजम प्रेम ॥ केवल उज्वल पोसनी, नवमी दिन खेम ॥२॥ पंचम चक्री परवमाए, शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नयं कहे सारो काज ॥३॥ इति ॥

॥ १७ ॥ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण वदि नवमी दिनें, सर्वार्थथी चविया ॥ वदि चौदश वैशाखनी, जिनकुंथु जणिया ॥ १ ॥ वदि पचमी वैशाखनी, लीये संजम भार ॥ शुदि त्रीजें चैत्रह तणी, लहे केवल सार ॥२॥ पडवा दिन वैशाखनीए, पाम्या अविचल ठाम ॥ छठा चक्री जय करु, ज्ञान विमल सुखखाण ॥३॥ इति ॥

॥ १८ ॥ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सरवारथथी आविया, फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जण्या, अरदेव नमीजे ॥ १ ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, संजम आदरीयो ॥ कार्तिक उज्वल बारशे, केवल गुण वरियो ॥ २ ॥ शुदि दशमी मृगशिर तणीए, शिवपद लहे जिननाथ ॥ सत्तम चक्रीने नमुं, नय कहे जोडी हाथ ॥३॥

॥ १९ ॥ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥चव्या जयंत विमानथी, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर शुदि इग्यारसें, जनम्या निर्ग्रंथें ॥ १ ॥ ---- लह्या एकण दिनें, कल्याणक तीन ॥ फागुण

शुदि बारसे लहें, शिव सदन अदीन ॥ २ ॥ मल्लि जिनेसर नीलमा ए, ळंगणीशमा जिनराज ॥ अण परणया अण नूप पद, नवजल तरण जहाज ॥ ३ ॥

॥ २० ॥ श्री मुनिसुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आविया, श्रावण शुदि पुनम ॥ आठम जेठ अंधारनी, थयो सुव्रत जनम ॥ १ ॥ फागुण शुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥ फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णें निर्वाण ॥२॥ वर्ण श्याम गुण उज्वलाए, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञान विमल जिनराजना, सुरनर नायक दास ॥३॥ इति ॥

॥ २१ ॥ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ आसो शुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया॥ श्रावण वदि आठम दिनें, नमी जिनवर जाया ॥१॥ व्रदि नवमी आषाढनी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर शुदि इग्यारसें, वर केवल धार ॥ २ ॥ वदि दशमी वैशाखनीए, अक्षय अनंता सुख ॥ नय कहे श्री जिन नामथी, नासे दोहग दुःख ॥३॥ इति ॥

॥ २२ ॥ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आविया, कार्तिक वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पाचमे जण्या, यादव अवतंस[1] ॥१॥ श्रावण शुदि छठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि अषाढनी आठमें, शिवसुख लहे रसाल ॥२॥ अरिठनेमी अण परणीयाए, राजिमतीना कंत ॥ ज्ञान विमल गुण एहना, लोकोत्तर वृतंत ॥३॥ इति ॥

॥ २३ ॥ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवदन ॥

॥ कृष्ण चोथ चैत्रह तणी, प्राणतथी आया ॥ पोस वदि दशमी जनम, त्रिभुवन सुख पाया ॥१॥ पोष वदि इग्यारसें, लहे मुनिवर पंथ ॥ कमठा सुर उपसर्गनो, टाल्यो पर्लीमंथ[2] ॥२॥ चैत्र कृष्ण चोथह दिनेंए, ज्ञान विमल गुणनूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्यां, अविचल सुख भरपूर ॥३॥ इति ॥

॥ २४ ॥ श्री वर्द्धमान जिन चैत्यवदन ॥

॥ शुदि अषाढ छठ दिवसें, प्राणतथी चवीया ॥ तेरश चैत्रह शुदि दिने, त्रिशलायें जणीया ॥१॥

१ मुकुट समान, २ उपद्रव.

मागशिर वदि दशमी दिनें, आपे संजम आराधे ॥ शुदि दशमी वेशाखनी, वर केवल साधे ॥ २ ॥ कार्तिक कृष्ण अमावसीए, शिवगति करे उद्योत॥ ज्ञान विमल गोतम लहे, पर्व दीपोत्सव होत ॥३॥ इति॥

॥ इतिश्री ज्ञान विमल सूरीकृत चोवीस तीर्थंकरोना चैत्यवदन सपूर्ण ॥

॥ श्री ऋषभदेव जिन चैत्यवदन ॥

॥ अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेश्वर जिनराज नमो ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिधा सघला काज नमो ॥ अरि० ॥ १ ॥ प्रभु पारगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशय निधि, प्रवचन जलधि मयक नमो ॥ अरि० ॥ २ ॥ तिहुयण भवियण जणमण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पाय नमु हु भावे, करजोमीनें त्रिकाल नमो ॥ अरि० ॥३॥ सिद्ध बुद्ध तू जग जन सज्जन, नयना नदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अरि० ॥४॥ तू तीर्थंकर सुखकर साहिब, तू

नि कारण वधु नमो ॥ शरणागत न्नविने हितवत्सल, तुही कृपारस सिंधु नमो ॥ अरि० ॥ ५ ॥ केवल ज्ञाना दर्शं दर्शित, लोकालोक स्वन्नाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण, डुरित उपद्रव न्नाव नमो ॥ अरि० ॥ ६ ॥ जग चिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजन नाथ नमो ॥ घोर अपार न्नवोदधि तारण, तू शिवपुरनो साथ नमो ॥ अरि० ॥ ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ वोधि दीउ अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अरि० ॥८॥ इति ॥

॥ श्री सिमंधर जिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सिमंधर जिनवरा, विचरे जंबुद्दीपे ॥ पुखलवइ विजयें जयो, पुरुरगणी दीपे ॥ १ ॥ सुत श्रेयांस राजा तणो, सोवन वरणी काय ॥ पुर्व चोराशी लाखनु, आयु जास सुहाय ॥२॥ पांचसे धनुषनु शरीर ठे, वृषन्न लंछन पाय ॥ रुखमणी राणी नाहलो, सत्यकी जेहनी माय ॥३॥ दश लाख केवली सो कोमी मुनी स्वामि, साधवी सो कोमी

श्राविका, श्रावक सख्या न पामी ॥४॥ प्रातिहारज
श्राठ ने, वाणी गुण पांत्रीस ॥ पुरव विदेहे जाणीये,
नमता लहीये जगीस ॥५॥ श्रा नरतें प्रज्ञु कुंथुजिन,
सिद्धीपुर पोहते ॥ श्ररजिन जनम थयो नही, ए श्र-
तर सोहते ॥ ६ ॥ सिमंधर जिन उपना, सूरपती
महोछव कीधो ॥ सुव्रत नमी जिन श्रंतरे, दीक्षा
कल्याणक सीधो ॥७॥ उदय पेढाल नावे प्रज्ञु, तस
श्रतर कहेवाय ॥ सीमंधर जिन पामस्ये, श्रविनाशी
पुर गय ॥८॥ श्रो नरते पण कोइ जीव, सुलन बोधी
जेह ॥ जाप जपे तुज मत्रनो, लाख सव्याए तेह
॥९॥ नव स्थीती निर्णय तस होये, श्रथवा ध्यान
पसाय ॥ उपजी विदेह केवळ लहे, नवमें वर्ष उछाह
॥१०॥ सासन सुरी पचागुंली, सेवक सानिध सारे ॥
सिमधर जिन सेवता, नवी डुःख दोहग टाळे ॥
॥११॥ प्रह उठीने नित नमोए, श्राणी मन श्राणद
॥ लक्ष्मीसुरी प्रज्ञु नामथी, प्रगटे परमानद ॥ १२ ॥
इति ॥ सपूर्ण ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनु चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमला ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धाचळ तीर्थ नायक, विश्वतारक जाणीये ॥ अकलंक शक्ति अनंत सुरगिर, विश्वनंद वखाणीये ॥ मेरु महीधर हस्त गिरिवर, चरच गिरीभर चिन्हहे ॥ सासमां सोवार वंदु, नमो गिरिगुणवंत ए ॥१॥ हसित वदने हेम गिरिनें, पूजीयें पावन थई ॥ पुंडरीक पर्वत-राज सतकुट, नमत अग आवे नही ॥ प्रीती मंडण कर्म वरुण, शास्वतो सुरकंद ए ॥ सासमां० ॥२॥ आनंद घर पुन कंद सुंदर, मुक्ति राजे मन मस्यो ॥ विजय भद्र सोभद्र, अचल देवत दिल वस्यो ॥ पाताळ मुलने ढंक पर्वत, पुष्पदंत जेहत हे ॥ सासमां० ॥३॥ बाहुबल मरुदेवी भगीरथ, सिद्धक्षेत्र कंचन गिरि ॥ लोहिताक्ष कुलिनी वासमां जस, रेवता चल मालगिरी ॥ सेत्रुंजा मणि पुन्य रासि, कुंवर केतु कहेत हे ॥ सासमा० ॥ ४ ॥ गुणकंद कामुक दृढ शक्ति, सहजानंद सेवा करे ॥ जगत तारण ज्योति रूप, माळवतने मनोहरे ॥

इत्यादिक वहु कीरति मांणक, करत सुर सुख अनंत हे ॥ सासमां० ॥५॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धचक्रजीनु चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सिध्चक्र आराधतां, सुख सपत्ति लहीये ॥ सुरतरु सुर रमणी थकी, अधिकज महिमा कहीये ॥ १ ॥ अष्ट कर्म हांणी करी, शिव मदीर रहीये ॥ त्रिधिशु नवपद ध्यानथी, पातीक सवी दहीये ॥ २॥ सिध्चक्र जे सेवश, एकमना नरनार ॥ मन वाछित फल पामशे, ते सवि त्रिभोवन मोजार ॥३॥ अगदेश चंपा पुरी, तस केरो भूपाल ॥ मयणा साथे तप तपे, ते कुवर श्रीपाल ॥ ४ ॥ सिध्चक्रजीना नमन थकी, जस नाठा रोग ॥ ततक्षण त्याथी ते लहे, शिवसुख सजोग ॥ ५ ॥ सातसें कोढी होता, हुवा निरोगी जेह ॥ सोवन वाने जल हुवे, जेहनी नीरुपम देह ॥६॥ तेणे कारण तमे भवीजनो, प्रह उठी भक्ते ॥ आसो मास चैत्र थकी, आराधो जुगते ॥७॥ सिध्चक त्रण काळना, वदो वली देव ॥ पडिकमणु करी उभयकाल, जिनवर मुनि सेव ॥ ८ ॥ नवपद

हृदये धरो, प्रतिपालो भवि गियल ॥ नवपद आंबिल तप तपो, जेम होय लीलम लील ॥९॥ पहेलो पद अरिहंतनो, नित्य कीजे ध्यान ॥ बीजो पद वली सिद्धनो, करीए गुण ग्राम ॥ १० ॥ आचारज त्रीजे पदे, जपता जय जय कार ॥ चोथो पद उवझायनो, गुण गाउ उदार ॥११॥ सरव साधु वंदु सही, अढी द्वीपमा जेह ॥ पंचम पदमा ते सही, धरजो धरी सनेह ॥१२॥ छठे पदे दसण नमु, दरसण अजवालु ॥ ज्ञान पद नमु सातमे, तेम पाप पखालुं ॥ १३ ॥ आठमें पद रूडे जपु, चारित्र सुसंग ॥ नवमे पद बहु तप तपो, जिम फळ लहो अभंग ॥ १४ ॥ एही नवपद ध्यानथी, जपतां नासे कोड ॥ पंडित धीरविमल तणो, नय वदे कर जोड ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ जिन पुजानु चैत्यवंदन ॥

॥ प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिन मंदिर केरो ॥ पून्य भणी करशुं सफल, जिन वचन भलेरो ॥ १ ॥ देहरे जावा मन करे, चोथ तणु फळ पावे ॥ जिन जुहारवा उठतां, छठ पोते आवे ॥२॥ जइशु, जिनवर

ज्ञणीए, मारग चालंता ॥ होवे द्वादश तणु पुन्य, ज्ञक्ति मालता ॥३॥ अर्ध पंथ जिनवर तणोए, पदर उपवास ॥ दीठे स्वामी तणो ज्ञुवन, लहीए एक मास ॥ ४ ॥ जिनवर पासे आवता, ठ मासी फळ सिद्ध ॥ आव्या जिनवर बारणे, वर्षी तप फळ लीध ॥५॥ सो वरस उपवास पून्य, प्रदक्षिणा देतां ॥ सहस वर्ष उपवास पुन्य, जे नजरे जोता ॥ ६ ॥ फल घणो फुलनी माल, प्रज्ञु कंठे ठवता ॥ पार न आवे गीतनाद, केरा फल श्रुणता ॥ ७ ॥ शिर पूजी पूजा करोए, सूर धुप तणो धुप ॥ अक्षतसार ते अक्षय सुख, दीप तनु रुप ॥८॥ निर्मल तन मने करीए, स्थुणता इन्द्र जगीश ॥ नाटयक ज्ञावना ज्ञावता, पामे पदवी जगीश ॥ ए ॥ जिनवर ज्ञक्ति वलीए, प्रेमे प्रकाशी ॥ सुणी श्री गुरु वयण सार, पूर्व रुषि ज्ञाखी ॥ १० ॥ अष्ट कर्मने टाळवा, जिन मंदिर जइशु ॥ ज्ञेटी चरण ज्ञगवतना, हवे निर्मल थइशु ॥ ११ ॥ किर्ति विजय उवज्ञायनो, विनय कहे करजोम ॥ सफल होजो मुज विनति, जिनसेवान कोम ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ रोहीणी तपनु चैत्यवंदन ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिन वंदीये, जगदीपक जिनराज ॥ रोहीणी तप फल वर्णवुं, भवजल तारण जहाज ॥१॥ सुदि वैशाखे रोहीणी, तीज तणे दिन जाण ॥ श्री आदिसर जिनवर, वरसी पारणो जाण ॥२॥ रोहीणी नक्षत्रनें दिने, चउविहार उपवास ॥ पोसो पडिक्रमणो करी, तोडे करमनो पास ॥३॥ ते दिनथी तप मांडीए, सात वरस लग सीम ॥ सात मास उपर वली, धरिये एहिज नीम ॥४॥ जिम रोहीणी कुवरी, अशोक नाम भूपाल ॥ ए तप पूरण ध्याईयो, पाम्या सुरगति विशाल ॥५॥ जिम भविजन तप कीजीए, शास्त्र तणे अनुसार ॥ जन्म मरणना भव थकी, टाले ए तप सार ॥ ६ ॥ तप पूरण तेहज समे, करो उजमणो सार ॥ यथा शक्ति होये नेहनी, जिम करीये धरी प्यार ॥७॥ वासुपूज्य जिन बिंबनी, पूजा करो त्रिण काल ॥ देव वंदो वली भावसु, स्वस्तिक पर्व विशाल ॥ ८ ॥ ए तप जे सहि आदरे, पोहचे मननी कोड ॥ मन वांछित फले ते-

ना, हस कहे करजोम ॥ए॥ इति ॥

॥ बीजनु चैत्यवदन ॥

॥श्री जिन पद पकज नमी, सेवो बहु प्यार॥ बीज तणे दिन जिन तणा, कल्याणक सार ॥ १ ॥ महा सुद बीजे जनमीया, अभिनंदन स्वामी॥वासु पूज्य केवल लह्यो, नमीये शिरनामी ॥ २ ॥ फागुण सुदि द्वितीया वली, चविया श्री अरनाथ ॥ चद वै शाखे बीजनी, शीतल शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ श्रावण सुदिने बीज तीथ, सुमती चवन जिणद ॥ ते जिन-वरने प्रणमता, पामे अति आणद ॥ ४ ॥ अतित अनागत वर्तमान, जिन कल्याणक जेह॥बीज दीने चित्त धारीये, हियमे हरख धरेह ॥५॥ डुविध धर्म जगवतजी, जाग्यो सुत्र मऊार ॥ तेह जणी बीज आराधता, शिवपथ साधन हार ॥ ६ ॥ प्रह उठीने नित नमोए, आणी प्रेम अपार ॥ हसविजय प्रज्ञु नामथी, पामे सुख श्रीकार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पचमीनु चैत्यवंदन ॥

। पचमी तिथि जग परवडो, पालो जन वहु प्रेम
॥१॥ जिन कल्यांणक ए तिथे, सजन केवल ज्ञान ॥
सुवधि जिनेश्वर जनमिया, सेवो थइ सावधान॥२॥
चवन चडप्रभु जाणीये, अजित सुमती अनत ॥ पं
चमी दिन मोक्षे गया, भेटो भविजन सत ॥ ३ ॥
कुंथु जिन संजम ग्रह्यो, पंचमी गति जिन धर्म ॥
नेमी जनम वखाणीयें, पंचमी तिथि जगचर्म ॥४॥
पचमीना आराधने, पामे पचम ज्ञान ॥ गुणमजरी
वरदत्त जे, पोहता मोक्ष सुथान ॥५॥ कार्तिक सुदि
पचमी थकी, तप माडी जे खास ॥ पच वरस आ-
राधीये, उपर वली पच मास ॥ ६ ॥ दश खेत्रे नेउ-
जिननां, पचमी दिन कल्याण॥ एह तिथें आराधता,
पामे शिवपद ठाण ॥ ७ ॥ पडिकमणा दोय टकना,
करिये शुद्ध आचार ॥ देव वदो त्रिहु कालना, पो-
हचाडे भवपार ॥ ८ ॥ नमो नाणस्स गुणणो गुणो,
नोकारवाली वीस ॥ सामायक सुधे मने, धरीये शि-
यल जगीस ॥९॥ इणीपरे पंचमी पालज्यो, भविजन
.ी जेह ॥ अजरामर सुख पामस्यो, हम कहे

गुण गेह ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक समरीयें, वर्द्धमान जिनचंद ॥ अष्टमी तिथिनो फल कहुं, ध्यावो मन आणंद ॥ ॥१॥ ऋषभ जनम दिक्षा प्रभु, सुवधी चवन जिणंद ॥ अजित सुमति नमिनाथजी, जनम्या तिथी आणंद ॥२॥ संभवने सुपासजी, चवन कल्याणक जाण ॥ अभिनंदन श्री पास प्रभु, पाम्या पद निर्वाण ॥ ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत अष्टमि तिथे, जनम्या जिनवर स्यांम ॥ इत्यादिक द्वादश कह्या, कल्याणक सुभ काम ॥४॥ पर्व तिथे पोसह करो, आणी मन एक तार ॥ अष्ट कर्म मद मोरूवा, सेवो ए तिथी सार ॥ ५ ॥ सुजश राजानी परे, सेवो धरी बहु प्यार ॥ रिद्धि सिद्धि घर पामस्यो, सेवो सहु नरनार ॥ ६ ॥ शियल संतोषे धारीयें, तजीये क्रुड अभिमान॥ मन वच काया सेवता, पामे अमर विमान ॥७॥ इणीपरे अष्टमी तिथि, पामे भवनो पार ॥ हंस कहे प्रभु सेवतां, नित्य पामे जयकार ॥८॥ इति ॥

॥ श्री मौन एकादशीनु चैत्यवंदन ॥

॥ नेमी जिनेश्वर गुणनिलो, ब्रह्मचारी शिरदार ॥ सहस पुरुष शु आदरे, दिक्षा जिनवर सार ॥१॥ पंचावनमे दिन लहु, निर्मळ केवळनाण ॥ भविक जीव पडिबोहतां, विचरे महियल जाण ॥२॥ विहार करता आविया, बावीशमा जिनराय ॥ द्वारिका नगरी समो सरया, समवसरण तिहा थाय ॥३॥ बार पर्खदा जिहा मली, भाखे जिनवर धर्म ॥ सर्व पर्व तिथी साचवो, जिम पामो शिव शर्म ॥४॥ तव पुछे हरी नेमिने, दाखो दिन मुज एक ॥ थोडो धर्म कर्या थकी, शुभ फल पामु अनेक ॥५॥ नेमि कहे केशव सुणो, वर्ष दिवसमा जोय ॥ मृगशिर सुदी एकादशी, ए सम अवर न कोय ॥ ६ ॥ एणे दिन कल्याणक हुआ, नेवु जिनना सार ॥ ए तिथी विधि आराधता, सुव्रत लहो भवपार ॥७॥ ते माटे मोटी तिथी, आराधो मन शुद्ध ॥ अहोरत्तो पोसह करी, मन धरि आतम बुद्ध ॥८॥ दोढसो कल्याणक तणु, गुणणु गुणो मनरंग ॥ ए तिथी विधि आराधिये, जिम

पामो शिवसग ॥ ए ॥ उजमणु पण कीजीये, चित्त धरी उल्लास ॥ पुगने विटांगणा, इत्यादिक करो खास ॥१०॥ एम एकादशी ज्ञावज्ञु, आराधे नरराय ॥ क्षायक समकितनो धणी, जिन वढी घर जाय ॥ ॥११॥ एकादशी ज्ञवियण करोए, उज्वल गुण जिम थाय ॥ खिमाविजय जस ध्यानथी, शुज्ञ सुरपति गुणगाय ॥१२॥ इति ॥

॥ श्री पर्यूषणनु चैत्यवंदन ॥

॥ सकल पर्व शृंगार हार, पर्यूषण कहीए ॥ मंत्र माहि नवकार मंत्र, महिमा जग लहीए ॥१॥ आठ दिवस अमार सार, अठाई पालो ॥ आरंज्ञादिक परिहरी, नरज्ञव अजुआलो ॥ २ ॥ चैत्य परिपाटी शुद्ध साधु, विधि वंदन जावे ॥ अठम तप संवछरी, पडिक्कमणु ज्ञावे ॥३॥ साधर्मिक जन खामणाए, त्रिविधिशु कीजे ॥ साधु मुख सिद्धांत कांत, वचनामृत रस पीजे ॥ ४ ॥ नव व्याख्याने कल्पसूत्र, विधि पूर्वक सुणीए ॥ पूजा नव प्रज्ञावना, निज पातिक हणीए ॥५॥ प्रथम वीर चरित्र बीज, पार्श्व-

शुद्ध परिणामें, सेवो शांति जिणंदजी ॥ १ ॥ सयल जिनेसर, भुवन दिणेसर, अलवेसर अरिहंताजी ॥ भविजन कुमुद, संबोधन शशिसम, जय भजन भगवताजी ॥ अष्ट करम अरि, दल अति गजन, रंजन मुनिजन चित्ताजी ॥ मन शुद्धे जे, जिननें आराधे, तेहने शिवसुख दित्ताजी ॥ २ ॥ सुविहित मुनिजन, मान सरोवर, सेवित राज मरालोजी ॥ कलिमल सकल, निवारण जलधर, निर्मलसूत्र रसालोजी ॥ आगम अकल, सुपद पदें शोभित, भंगा अर्थ अगाधो जी ॥ प्रवचन वचना, तणी जे रचना, भविजन भावें आराधोजी ॥ ३ ॥ विमल कमल दल, निर्मल लोयण, उल्लसित अंगें ललितागीजी ॥ ब्रह्माणी, देवी निरवाणी, विघ्न हरण कणयगीजी ॥ मुनिवर मेघ, रत्नपद अनुचर, अमर रत्न अनुभावेंजी ॥ निरवाणी, देवी प्रभावें, उदय सदा सुख पावेंजी ४

॥ श्री नेमनाथजीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदी दीन पंचमीए ॥ ए देशी ॥

॥ जादव कुल श्री नद समाए, नेमीसर ए

देवतो ॥ कृष्ण आदेशे चालीया ए, परवा राजुल नारतो ॥ अनुक्रमे त्या आवीया ए, उग्रसेन दरबार तो ॥ इंद्र इंद्राणी नाचता ए, नाटक थाय तेणी वार तो ॥१॥ तोरण पासे आवीया ए, पशुर्उनो पोकार तो ॥ सांजली मुख मरोडीयु ए, राजुल मन उचाटतो ॥ आदीनाथ आदी तीर्थंकर ए, परण्या छे बहु नार तो ॥ तेणे कारण तुमे काड करो ए, परणो राजुल नारतो ॥२॥ रथ फेरी सजम लीयो ए, चढीया गढ गीरनार तो ॥ नेमीश्वर काउसग रह्या ए, पाम्या केवळसार तो ॥ सोळ पहोर दीये देशना ए, आपी अरसंका धारतो ॥ जविक जीव प्रतिबोधीया ए, बुझी राजुल नार तो ॥३॥ अथीर जाणी सयम लीयो ए, थया जय जयकार तो ॥ पाये जाकर कर्म कमेए, नाचे नेम दरवार तो ॥ श्याम वर्णना नेमजीए, शख लछन श्रीकार तो ॥ कवी नमी कहे रायने ए, परण्या शिव सुंदरी नार तो ॥४॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीनी स्तुति.

पास जिनेसर, पुजा करु त्रण काल ॥ मुज

मुख, त्रिगरु जोवा, हु अलजायो वाणीजी ॥ आंका रुगर, आवी न शकु, वाट विषम अरु पाणीजी॥ रग न्नरि राग, धरी पाय लागु, सूत्र अर्थ मन सारोजी॥ अमृत रसथी, अधिक वखाणी, जीवदया चित धारोजी ॥३॥ पचांगुलीमें, प्रत्यक्ष दीठी, हु जाणु जग माताजी॥पेहेरण चरणा, चोली पटोली, अधर विराजे रानाजी ॥ स्वर्ग भुवन, सिंघासण बेठी, तुहिज देवी विख्याताजी॥सीमधर, शासन रखवाली, शांतिकुशल सुख दाताजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

॥ आगें पूरव, वार नवाणु, आदि जिनेसर आयाजी ॥ शत्रुजय लाभ, अनतो जाणी, वडु तेहना पायाजी॥ जगवधन जग, तारण ए गिरि, दीठां दुर्गति वारे जी ॥ यात्रा करता, उहरी पाले, काज पोताना सारे जी ॥१॥ शत्रुजय, अष्टापद नदीसर, उज्जवल अर्बुद आदे जी॥ सयल तीरथने, समेत शिखर गिरि, सफल जन्म जे वादे जी॥ अतीत अनागत, ने वर्त्तमानइ, जिनवर हुआ न होसेजी ॥ जे जन ती

एणीपेरे वांदे, तेहने शिवपद थासेजी ॥२॥ सीमधर जिन, सुरपति आगें, शत्रुंजय महिमा दाख्योजी ॥ वांछु आगम, गणधर गूंथ्यु, जेणें ए तीरथ जाण्योजी ॥ सिद्ध अनंता, एणे गिरि हुआ, धन आगम एम बोलेजी ॥ सकल तीरथमां राजा कहियें, नहीं कोइ शत्रुंजय तोलेजी ॥ ३ ॥ कवडयक्ष, गौमुख चक्केसरी शत्रुंजय सान्निध्य-कारीजी ॥ सकल मनोरथ,सघला पूरे, अचित समकित धारीजी ॥ श्री विमलाचल, जग जयवता, सबल शक्ति तुमारीजी, देजो देवा, शत्रुंजय सेवा, कार्य सिद्धि अमारीजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ दीवाळीनी स्तुति ॥

॥ शासननायक श्री महावीर, सात हाथ हेम-वरण शरीर,हरि लछन जिनधीर॥जेहनो गोतम स्वामी वजीर, मदन सुभट गजन वडवीर, सायर परें गंभीर ॥कार्तिक अमावास्याए निर्वाण,ऊच्य उद्योत करड नृप जाण,दीपकश्रेणि मंडाण॥ दीवाली प्रगटयु अभिधान, पढिम रजनीए गोतम ज्ञान, वर्द्धमान धरु ध्यान ॥१॥ चउवीस ए जिनवर सुखकार, पर्व दीवाली अति मनो

वली दोय चंदने सूर रे॥ दोय करजोमी उन्ना रहा, तुम सुत ऋषन्न हजुर रे॥ ऋष० ॥७॥ चामर ढोमी चोवीश छे, न्नामरुल ऊलकतरे ॥ गाजे गगनेरे डुडुन्नी, फुलपगर वरसत रे॥ ऋष० ॥७॥ वारगुणो प्रज्ञु देहथी, अशोक वृक्ष श्रीकार रे ॥ मेघ समा-णीरे देशना, अमृतवाणी जयकार रे ॥ ऋष० ॥ए॥ प्रातिहारज आठथी, तुम सुत दीपे देदार रे॥ न्नालो जोगाने मावमी, गयवर खधे असवाररे ॥ ऋष० ॥ ॥ १० ॥ दूरथी वाजारे सान्नली, जोवा हर्ष न माय रे ॥ हर्षनां आंसुथी फाटीया, पम्ल ते दूर पलायरे ॥ ऋष० ॥ ११ ॥ गयवर खधथी देखीयां, निरुपम पुत्र देदार रे ॥ आदर दीधो नही मायने, माय मन खेद अपार रे ॥ ऋष० ॥ १२ ॥ केहनां छोरु ने मा-वमी, एलो छे वीतराग रे॥ इणीपेरे न्नावना न्नावता, केवल पाम्या महा न्नागरे ॥ ऋष० ॥ १३ ॥ गजवर खंधे मुक्ति गयां, अतगम केवली एहरे ॥ वदो पुत्रने मावमी, आणी अधिक स्नेहरे ॥ ऋष० ॥ १४ ॥ ऋषन्ननी शोन्नाने वरणवी, समकित पुर मोझाररे

॥ सिद्धगिरि महात्म्य सांभळो, सघने जय जयकार रे ॥ ऋष० ॥ १५ ॥ सवत अढार ऐंशीये, मागशर मास सोहाय रे॥ दीपविजय कविरायने, मगलमाळ सवाय रे ॥ ऋष० ॥१६॥ इति सपुर्ण ॥

श्री अजितनाथ स्वामीनु स्तवन.

राग आशावरी

॥ मारु मन मोह्युरे श्री विमलाचलेरे—ए देशी

पथमो निहाळुरे बीजा जिनतणोरे, अजित अजित गुण धाम, जे तें जीत्यारे तेणे हु जीतियोर, पुरुष किश्यु मुज नाम ॥ पथमो० ॥ १ ॥ चरम नयण-करी मारग जोवतारे, भूल्यो सयल ससार, जेणे नयणे करी मारग जोइएरे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पथमो० ॥ २ ॥ पुरुप परपर अनुभव जोवतारे, अधो अध पुलाय, वस्तु विचारेरे जो आगमे करीरे, ×च-रण धरण नहीं ठाय ॥ पथमो० ॥ ३ ॥ तर्कविचारेरे वाद परपरारे, पार न पहोंचे कोय, अभिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पथमो० ४ ॥

× पग मकवा जेटली पण जग्या देखाती नथी

वस्तु विचारेरे दिव्य नयणतणोरे, विरह पडयो निर॰ धार, तरतम जोगेरे तरतम वासनारे, वासित बोध आधार ॥ पंथडो॰ ॥ ५ ॥ काळलब्धि लही पंथ निहाळशुं रे, ए आशा अविलंब, ए जन जीवेरे जिनजी जाणजोरे, आनदघन मत अंब ॥ पंथडो ॥६॥

श्री संभवनाथनु स्तवन.

॥ साहिब सांभळो रे, संभव अरज हमारी ॥ भवोभव हु भम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरक नीगोदमां रे, तिहां हु बहु भव भमीयो ॥ तुम विना दु ख सह्यां रे, अहर्निश क्रोधे धमधमियो ॥ सा॰ ॥१॥ इंद्रिय वश पडयो रे, पाल्यां व्रत नवि सुसें ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, थावर हणीआ हुशे ॥ व्रत चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचु न बोल्यु ॥ पापनी गोठडी रे, तिहां में हडडडु खोल्यु ॥ सा॰ ॥ २ ॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाळ्युं ॥ श्री जिनआणशु रे, में नवि संजम पाल्यु ॥ मधुकर तणी परे रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे,

---

* भव स्थिति परिपाक

निरस पिण जवेल्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरजव दोहिलो रे, पामी मोह वश पमियो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुऊ मन तिहां जइ श्रमियो ॥ काम न को सर्यां रे, पापे पिण में जरियो ॥ शुद्ध बुद्धि नवि रही रे, तेणे नवि श्रातम तरियो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मळी रे, मळी तो नवि रही राखी ॥ जे जन श्रजिलखेरे, ते तो तेहथी नासे ॥ तृणसम जे गणेरे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ सा० ॥५॥ धन्य धन्य ते नरारे, एहनो मोह विछोमी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममा जोमी॥ श्रजक्ष्य ते में जख्या रे, रात्रिजोजन कीधा ॥ व्रत नवि पालिया रे, जेहवा मूळथी लीधा ॥ सा० ॥६॥ श्रनत जव हु जम्यो रे, जमता साहिब मलियो ॥ तुम विना कोण दियेरे, बोधि रयण मुऊ बळियो ॥ संजव श्रापजो रे, चरण कमळ तुम सेवा ॥ नय एम विनवे रे, सुणजो देवाधिदेवा. ॥ सा० ॥७॥

श्री अभिनंदन स्वामीनुं स्तवन

राग धन्याश्री–सिंधुओ

आज निहेजोरे दीसे नाहलो–ए देशी

अभिनंदन जिन दरिसण तरसीए, दरिसण दुर्लभ देव, मत मत भेदेरे जो जइ पूछीए, सहु स्थापे अहमेव ॥ अभिनंदन० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलु, निर्णय सकल विशेष, मदमे घेर्योरे अधो केम करे, रविशशिरूप विलेख ॥ अभि० ॥२॥ हेतु विवादे हो चित धरी जोइए, अति दुर्गम नयवाद, आगमवादे हो गुरु गम को नहीं, ए सबलो विखवाद ॥ अभि० ॥३॥ घाति डुंगर आडा अति घणा, तुज दरिसण जगनाथ, धीठाइ करी मारग संचरु, सेंगू[1] कोइ न साथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥ दरिसण दरिसण रटतो जो फरु, तो रणरोझ समान, जेहने पीपासा हो अमृत पाननी, किम भाजे विषपान ॥ अभि० ॥५॥ तरस[2] न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरिसण काज, दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपाथकी, आनंदघन महाराज ॥ अभि० ॥ ६ ॥

१ मार्गदर्शक भोमियो २ त्रास.

श्री सुमतिनाथ स्तवन

राग वसंत तथा केदारो

सुमति चरण कज आतम अरपणो, दरपण जिम अविकार, सुग्यानी, मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परिसरपण सुविचार, सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनुधर गत आतमा, बहिरातम धुरि भेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, परमातम अविछेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥२॥ आतम बुद्धे काया-दिके ग्रह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥सु०॥ कायादिकनो हो साखीधर रह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वर्जित सकल उपाधि ॥ सु० ॥ अतींद्रिय गुण गण मणि आगरु, एम परमातम साध ॥ सु० ॥ सुमति० ॥४॥ बहिरातम तजी अंतर आतमा, रूप थइ थिर भाव ॥ सु० ॥ परमातमनु हो आतम भाववु, आतम अर्पण दाव ॥ सु० ॥ सुमति० ॥५॥ आतम अर्पण वस्तु विचारता, भरम टळे मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपत्ति संपजे. आनंदघन रस पोष ॥सु०॥ सुमति०॥६॥

श्री पद्मप्रभुजिन स्तवन

हु तुज आगल शी कहु केशरीयालाल–ए देशी

श्रीपद्मप्रभ जिन गुण निधिरे लाल, जग तारक जगदीशरे, वाल्हेसर, जिन उपगारथकी लहेरे लाल, भविजन सिद्धि जगीशरे ॥ वाल्हेसर ॥ १ ॥ तुझ दरिसण मुझ वालहुरे लाल, दरिसण शुद्ध पवित्तरे ॥ वा० ॥ दरिसन शब्दनये करेरे लाल, सग्रह एव भूतरे ॥ वा० ॥ तु०॥२॥ बीजे वृक्ष अनंततारे लाल, पसरे भू जल योगरे ॥ वा० तिम मुझ आतम सपदारे लाल, प्रगटे प्रभु सयोगरे ॥ वा० ॥ तु० ॥ ३ ॥ जगत जतु कारज रुचिरे लाल, साधे उदये भाणरे ॥ वा० ॥ चिदानद सुविलासतारे लाल, वाधे जिनवर झाणरे ॥ वा० ॥ तु० ॥ ४ ॥ लब्धि सिद्धि मत्राक्षरे रे लाल, उपजे साधन सगरे ॥ वा० ॥ सहज अध्यातम तत्त्वतारे लाल, प्रगटे तत्त्वी रगरे ॥ वा० ॥ तु० ॥ ५ ॥ लोह धातु कचन हुवेरे लाल, पारस फरसन पामिरे ॥वा०॥ प्रगटे अध्यातम दशारे लाल, व्यक्त गुणी गुण ग्रामरे ॥ वा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ आतम

सिद्दि कारज जणीरे लाल, सहज नियामक हेतुरे ॥ वा०॥ नामादिक जिनराजनारे लाल, जवसागरमाहे सेतुरे ॥ वा० ॥ तु० ॥ ७ ॥ स्थजन इंद्रिय योगनेरे लाल, रक्त वरण गुण रायरे ॥ वा० ॥ देवचंद्र वृंदे स्तव्योरे लाल, आप अवर्ण अकायरे ॥वा०॥तु०॥८॥

अथ श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीनु स्तवन.

राग सारग तथा मल्हार ललनानी–ए देशी.

श्री सुपास जिन वंदिये, सुख संपत्तिनो हेतु, ललना, ॥ शांत सुधारस जलनिधि, जवसागर माहे सेतु ॥ ललना ॥ श्री सुपास० ॥१॥ सात महा जय टालतो, सप्तम जिनवर देव, ल० ॥ सावधान मनसा करी, धारो जिनपद सेव ॥ ल० श्री सु० ॥२॥ शिव-शंकर जगदीश्वरु, चिदानंद जगवान, ल० ॥ जिन अरिहा तीर्थंकरु, ज्योति सरुप असमान ॥ ल० श्री सु० ॥३॥ अलख निरंजन वच्छलु, सकल जंतु विश-राम, ल० ॥ अजयदान दाता सदा, पूरण आतम-राम ॥ ल० श्री सु० ॥ ४ ॥ वीतराग मद कल्पना, रति अरति जय शोग, ल० ॥ निंद्रा तंद्रा डुरदशा,

रहित अबाधित योग ॥ ल० श्री सु० ॥ ५ ॥ परम पुरुष परमातमा, परमेश्वर परधान, ल० ॥ परम पदारथ परमेष्ठि, परमदेव परमान्न ॥ ल० श्री सु० ॥ ॥ ६ ॥ विधि विरंचि विश्वम्भरु, ऋषिकेश जगनाथ, ल० ॥ अघहर अघमोचन धणी, मुक्ति परमपद साथ ॥ ल० श्री सु० ॥७॥ एम अनेक अभिधा[1] धरे, अनुभव गम्य विचार, ल० ॥ जेह जाणे तेहने करे, आनंदघन अवतार ॥ ल० श्री सु० ॥८॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन ॥

॥ हारे मारे जोबनीयानो लटको दाहडा च्यार जो ॥ ए देशी ॥ हारे मारे चंद्रवदन जिन चंद्रप्रभु जगनाहजो ॥ दीठो मीठो ईठो जिनवर आठमो रे लो० ॥ हारे० मनमानो मानीतो प्राण आधार जो ॥ जग सुखदायक जगम सुर साखी समोरे लो० ॥ १ ॥ हा० शुभ आशय उदयाचल समकित सुरजो ॥ विमल दशा पूर्वदिशे उग्यो दीपतोरे लो० ॥ हा० मैत्री मुदीता करुणाने माध्यस्थ जो ॥ विनय विवेक सुल-

१ नामो.

वन कमल विकासतोरे लो०॥२॥ हां० सद्दहणा अ-
नुमोद परिमल पूरजो ॥ पसर्यो मन मानस सर
अनुभव वायरोरे लो०॥ हां० चेतन चकवा उपशम
सरवर नीरजो ॥ शुभमती चकवी संगे रंग रमल
करे रे लो०॥३॥ हां० ज्ञानप्रकासे नयण मल्या मुक
दोयजो ॥ जाणेरे खट द्रव्य स्वभावे थापणेरे लो०॥
हां० जड़ चेतन भिन्नाभिन्न नित्यानित्यजो ॥ रूपी
अरूपी आदि स्वरूप आपापणेरे लो ॥४॥ हां० लख-
गुण दायक लखमणा राणी नंदजो ॥ चरण सरोरुह
सेवा मेवा सारिखीरे लो ॥ हां० पंडित श्रीगुरु क्षमा
विजय सुपसाय जो ॥ मुनी जिन जपे जगमा जोतां
पारखीरे लो ॥५॥ इति संपुर्ण ॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवन ॥

॥ नारे प्रभु नहीं मानु ॥ ए देशी ॥

॥ लाग्यो लाग्योरे प्रभुशु नेह, वसीयो हडकामां
॥ म्हारो साहिबो अतिहि सनेह ॥ वसीयो हड-
कामां ॥ दर्शन प्रभुजीनु देखतारे, जोता मुखनी
ज्योति रे ॥ दुरित पंकल दूरें कर्यारे वारी, प्रगट्यो

ज्ञान उद्योत ॥ वसी० ॥१॥ सूरत मनमामा वसी रे, कागल जिम चित्राम रे ॥ रात दिवस सुता जागता रे हुतो, नित समरु प्रभुनाम ॥ वसी० ॥२॥ जेहना मनमा जे वस्यारे, तेहने तेहशु नेहरे ॥ मधुकरने मन मालतीरे जिम, मोर तणे मनमेह ॥ वसी० ॥ ॥३॥ देव अवर देखी घणारे, किहा न माने मन्न रे ॥ प्रभुगुण सांकलें साकल्यो रे तेतो, आलोचे नही अन्न ॥ वसी० ॥४॥ साहेब सुविधि जिणंदनी रे हुं, चाहु ज्नवोज्नव सेवरे ॥ हसरतन कहे माहरे रे काइ, लागी एहजटेव ॥ वसी० ॥५॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री शितलजिन स्तवन ॥

॥ घोमी तो आइ थारा देशमा मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल जिनवर सेवना साहेबजी, शीतल जिम शशिबिंब हो ॥ ससनेही मूरत माहरे मन वसी साहेबजी॥ शाहपुरुषाशु गोठमी ॥ साहे०॥ मोहोटो ते आशा लूबहो ॥ सस० ॥ १ ॥ दाण एक मुजने न वीसरे ॥ साहे० ॥ तुज गुण परम अनंत ॥ सस० ॥ देव अवरने शु करु ॥ साहे० ॥ ज्नेट

थइ भगवंत हो ॥ सस० ॥२॥ तुमें गो मुक्ते त्रिहु लोकना ॥ सा० ॥ हु तुम पगनी खेह हो ॥ सस० ॥ तुमें गो सघन ऋतु मेहूला ॥ साहे०॥ हु पश्चिम दिशि भेद हो ॥ सस० ॥३॥ निरागी प्रभु रीझवु ॥ साहे० ॥ ते गुण नहि मुझ माहि हो ॥ सस० गुरु गुरुता साहामु जूई ॥ साहे० ॥ गुरुता ते मूके नांहि हो ॥ सस० ॥४॥ मोहोटासेंती बरोबरी ॥ साहे० ॥ सेवकें किणविध थाय हो ॥ सस० ॥ आसगो किम कीजियें ॥ साहे० ॥ जिहा रह्या आलुजाय हो ॥सस० ॥ ५ ॥ जगगुरु करुणा कीजियें ॥ साहे० ॥ न लहो आचार विचार हो ॥ सस० ॥ मुजने जो राज निवाजशो ॥ साहे० ॥ तो कुण वारण हार हो ॥ सस० ॥६॥ उलग अनुभव भावथी ॥ साहे० ॥ जाणो जाण सुजाण हो ॥ सस० ॥ मोहन कहे कविरुपनो ॥ साहे०॥ जिनजी जीवन प्राण हो ॥ सस० ॥७॥ इति सपूर्ण॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तवन ॥

॥ निंद्रडली वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

...यांस जिनेसरु, सेवकनी हो

सम्भालतो ॥ रखे वीसारी मुकता, होय मोटा हो जगे दिनदयाल तो ॥ श्रीश्रेयांस० ॥२॥ मुज सरिखा छे ताहरे, सेवकनी हो वहु कोमा कोमतो ॥ पण जे सुनजरे निरखीउं, किम दीजे हो प्रभु तेहने ठोमतो ॥श्रीश्रे०॥३॥ मुजने हेज छे अति घणु, प्रभु तुमथी हो जाणु निरधार तो ॥ तूंतो निपट निरागीउं, हु रागी हो ए वचन-विचारतो ॥ श्रीश्रेयां० ॥३॥ वली न्हानु मनमाहरु, हुतो राखु हो तुमने ते माहिलो ॥ हु रागी प्रभु ताहरो, एकागी हो ग्रहीयें प्रभु वाहितो॥ श्रीश्रेयां०॥४॥ निगुणो नवि उवेखीए, पोतानट हो इम न होयें स्वामितो ॥ ज्ञानविमल प्रभुशु करो, विणु अतरहो सेवक एक तानतो ॥ श्री०॥५॥इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

॥ गीरुआ गुण वीरजी, गायशुं ॥ ए देशी ॥

॥ श्री वासुपूज्य-नरिंदनोजी, नदनगुण-मणी धाम ॥ वासुपूज्य जिनराजीयोजी, अतिशय रत्न निधान ॥ प्रभु-चित्त धरीनें अवधारो मुज वात॥१॥ ···कणी॥ दोष सयल मुज सासहोजी, स्वामी

-करी सुपसाय. ॥ तुम चरणे हुं आवीयोजी, महेर करो महाराय ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ कुमति कुसंगति सग्रहीजी, अविधिने असदाचार ॥ ते मुजने आवी मिल्याजी, अनत अनतीवार ॥ प्रभु० ॥३॥ जबमें तुमनें निरखीयाजी, तब ते नाठा दूर ॥ पुण्ये प्रगटे शुभ दिशाजी, आव्यो तुम हजुर ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल प्रभु जाणनेजी, शुं कहेवु वहूवार ॥ दास आश पूरण करोजी, आपो समकित सार ॥ प्रभु० ॥ ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

अथ श्री विमलनाथ स्वामीनु स्तवन

राग मल्हार इम्मर आवा आवलीर–ए देशी

दुःख दोहग दूरे टळ्यारे, सुख संपदशुं भेट, धींग धणी माथे कियारे, कुण गंजे नर खेट, विमल जिन, दीठा लोयण आज, महारा सीघ्या वांछित काज ॥ विमल जिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥ चरण कमल कमला वसेरे, निर्मल थिर पद देख ॥ समल अथिर पद परिहरी पामर पेख ॥ वि० ॥

मुझ मन तुझ पद पंकजेरे, लीनो गुण मकरंद ॥ रंक गणे मंदिरधरारे,[२] इंद चंद नागिंद ॥ वि० ॥ दी० ॥३॥ साहिब समरथ तु धणीरे, पाम्यो परम उदार॥ मन विशरामी वालहोरे, आतमचो[३] आधार ॥ वि० ॥ दी० ॥ ४ ॥ दरिसण दीठे जिन तणुरे, संशय न रहे वेध ॥ दिनकर करभर पसरतारे, अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥५॥ अमिय भरी मूरति रचीरे, उपमा न घटे कोय ॥ शांत सुधारस झीलतीरे, निरखत तृप्ति न होय ॥ वि० ॥ दी० ॥६॥ एक अरज सेवक तणीरे, अवधारो जिनदेव ॥ कृपा करी मुझ दीजीयेरे, आनंदघन पद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥७॥

अथ श्री अनंतनाथ स्वामीनु स्तवन

धार तरवारनी सोहली दोहली, चउदमा जिनतणी चरण सेवा, धार पर नाचता देख वाजीगरा, सेवना धारपर रहे न देवा ॥ धार० ॥१॥ ए आकणी ॥ एक कहे सेवीए विविध किरिया करी, फल अनेकांत लोचन न देखे, फल अनेकांत किरिया करी

२ मेरु–सुवर्णाचल–भूमि ३ आत्मानो.

घापका, रुकवके चार गतिमाहे लेखे ॥ धार० ॥ २ ॥ गछना नेद वहु नयण निहालतां, तत्त्वनी वात करता न लाजे, उदरन्नरणादि निज काज करतां थका, मोह नमिया कलिकाल राजे ॥ धार० ॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो, वचन निरपेक्ष व्यवहार ससार फल, सांन्नळी आदरी काइ राचो ॥ धार० ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो किम रहे, किम रहे शुद्धश्रद्धा न आणो, शुद्ध श्रद्धान विणु सर्व किरिया करी, छार पर लीपणु तेह जाणो ॥ धा० ॥ ५ ॥ पाप नहीं कोइ उत्सूत्र न्नापण जिस्यो, धर्म नहीं कोइ जग सूत्र सरिखो, सूत्र अनुसार जे न्नविक किरिया करे, तेहनु शुद्ध चारित्र परखो ॥ धा० ॥६॥ एह उपदेशनो सार सक्षेपथी, जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे, ते नरा दिव्य वहु काळ सुख अनुन्नवी, नियत आनंदघन राज पावे ॥ धार० ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथ स्वामीनु स्तवन ॥
राग गोडी सारग, देशी रशीयानी

धर्म जिनेसर गाउ रगशु, भग म पडशो हो प्रीत ॥ जिनेसर ॥ बीजो मन मदिर आणुं नहीं, ए अम कुलवट रीत ॥ जि० ॥ धर्म० ॥१॥ धरम धरम करतो जग सहु फिरे, धरम न जाणे हो मर्म ॥ जि० ॥ धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पछी, कोइ न बांधे हो कर्म ॥ जि० ॥ धर्म० ॥२॥ प्रवचन अजन जो सद्-गुरु करे, देखे परम निधान ॥ जि० ॥ हृदय नयण निहाले जग धणी, महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म० ॥३॥ दोडत दोडत दोडत दोडीयो, जेती मन-नी रे दोड ॥ जि० ॥ प्रेम पतित विचारो ढुकडी, गुरु गम लेजो रे जोड ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ एकपखी केम प्रीति वरे पडे, उभय मिल्या हुए सधि ॥ जि० ॥ हु रागी हु मोहे फदियो, तु निरागी निर्बन्ध ॥ ॥ जि० ॥ धर्म० ॥५॥ परम निधान प्रगट मुख आ-गळे, जगत उल्लघी हो जाय ॥ जि० ॥ ज्योति विना जगदीशनी, अधोअध पलाय ॥ जि० ॥ धर्म०॥

॥६॥ निर्मल गुण मणि रोहण भूधरा, मुनिजन मानस हस ॥ जि० ॥ धन ते नगरी धन वेळा घमी, मात पिता कुलवश ॥ जि० ॥ धर्म०॥७॥ मन मधुकर वर कर जोमी कहे, पदकज[1] निकट निवास ॥ जि० ॥ घननामी आनदघन सांभळो, ए सेवक अरदास ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ८ ॥

॥ श्री शातिजिन विनति रूपे स्तवन ॥

सुणो शाति जिणद सोभागी, हु तो थयो छु तुम गुण रागी, तुमे निरागी भगवत, जोता कीम मळशे तत ॥ सुणो० ॥ १ ॥ हु तो क्रोध कषायनो भरीउं, तु तो उपशम रसनो दरिउं, हु तो अज्ञाने आवरीउं, तुं तो केवल कमला वरीउं ॥ सुणो० ॥२॥ हु तो विषया रसनो आशी, तें तो विषया कीधी निराशी, हु तो करमने भारे भार्यो, तें तो प्रभु भार उतार्यो ॥ सुणो० ॥३॥ हु तो मोहतणे वश पमीउं, तें तो सघळा मोहने हणीउं, हु तो भव समुद्रमा खुच्यो, तु तो शिवमदिरमा पहोंच्यो ॥ सुणो०

१ चरण कमल.

मारे जन्म मरणनो जोरो, ते तोड्यो तेहथी दोरो; मारो पासो न मेले राग, तमे प्रभुजी थया वीतराग ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ मुने मायाए मूक्यो पासी, तु तो निर्बन्धन अविनाशी, हु तो समकितथी अधूरो, तु तो सकल पदारथ पूरो ॥ सुणो० ॥६॥ मारे छो प्रभु तुंही एक, तारे मुज सरीखा अनेक, हु तो मनथी न मुकु मान, तु तो मान रहित भगवान ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ मारु कीधु कशु नवि थाय, तुं तो रंकने करे राय, एक करो मुज महेरबानी, मारो मुजरो लेजो मानी ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ एक वार जो नजरे नीरखो, तो करो मुजने तुम सरीखो, जो सेवक सरीखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे ॥ सुणो० ॥ ९ ॥ भवोभव तुम चरणनी सेवा, हु तो मागु देवाधिदेवा, सामु जुओने सेवक जाणी, एवी उदयरत्ननी वाणी ॥ सुणो० १०

॥ श्री कुंथुनाथ स्वामीनु स्तवन ॥

राग गुर्जरी

अंबर देहो मोरारी, हमारो—ए देशी.

कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे, हो कुं०,

जिम जिम जतन करीने राखु, तिम तिम अळगु न्हाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती उजरु, गयण पायाले जाय, साप खायने मुखरु थोथु[1], एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥२॥ मुक्ति तणा अभिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अभ्यासें, वयरीरु काइ एहवु चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगम-धरने हाथे, नावे किणविध आंकु, किहांकणे जो हठ करी हटकु तो, व्याल तणीपरे वांकु हो ॥ कुं० ॥४॥ जो ठग कहु तो ठगतु न देखु, शाहुकार पण नाही, सर्व माहेने सहुथी अलगु, ए अचरिज मन माही हो ॥ कुं० ॥५॥ जे जे कहु ते कान न धारे, आप मते रहे कालो, सुरनर पण्डितजन समजावे, समजे न माहरो सालो[2] हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाण्यु ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले, बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोइ न जेले हो ॥ कुं० ॥७॥ मन साध्यु तेणे सघलु साध्यु, एह वात नहि खोटी; एम कहे साध्युं ते नवि मानु, ए कही वात

१ साली २ कुपात्ति धीनो भाइ.

मारे जन्म मरणनो जोरो, तें तोड्यो तेहथी दोरो; मारो पासो न मेले राग, तमे प्रभुजी थया वीतराग ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ मुने मायाए मूस्यो पासी, तु तो निर्बन्धन अविनाशी, हु तो समकितथी अधूरो, तु तो सकल पदारथ पूरो ॥ सुणो० ॥६॥ मारे छो प्रभु तुही एक, तारे मुज सरीखा अनेक, हु तो मनथी न मुकु मान, तु तो मान रहित भगवान ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ मारु कीधु कशु नवि थाय, तुं तो रंकने करे राय, एक करो मुज महेरबानी, मारो मुजरो लेजो मानी ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ एक वार जो नजरे नीरखो, तो करो मुजने तुम सरीखो, जो सेवक सरीखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे ॥ सुणो० ॥९॥ भवोभव तुम चरणनी सेवा, हुं तो मागु देवाधिदेवा, सामु जुओने सेवक जाणी, एवी उदयरत्ननी वाणी ॥ सुणो० १०

॥ श्री कुंथुनाथ स्वामीनु स्तवन ॥

राग गुर्जरी

अंबर देहो मोरारी, हमारो–ए देशी.

कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे, हो कुं०,

जिम जिम जतन करीने राखु, तिम तिम अळगु जाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती उजड, गयण पायाळे जाय, साप खायने मुखडु थोथु[1], एह उखाणो न्याय हो ॥ कु० ॥२॥ मुक्ति तणा अभिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अभ्यासें, वयरीडु काइ एहवु चिंते, नाखे अवळे पासे हो ॥ कु० ॥ ३ ॥ आगम आगम-धरने हाथे, नावे किणविध आंकु, किहांकणे जो हठ करी हटकु तो, व्याल तणीपरे वांकु हो ॥ कु० ॥४॥ जो ठग कहु तो ठगतु न देखु, शाहुकार पण नांही, सर्व मांहेने सहुथी अलगु, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कु० ॥५॥ जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो, सुरनर पंडितजन समजावे, समजे न माहरो सालो[2] हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाण्यु ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले, बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोइ न जेले हो ॥ कु० ॥७॥ मन साध्यु तेणे सघळु साध्यु, एह वात नहि खोटी, एम कहे साध्यु ते नवि मानु, ए कही वात

[1] खाली [2] कुमति स्त्रीनो भाइ.

बे मोहाटी हो ॥ कुं० ॥८॥ मनकु दुराराध्य तें वश आएयु ते आगमथी मति आणु, आनदघन प्रभु माहरु आणो, तो साचु करी जाणु हो ॥ कुं० ॥९॥

॥ अथ श्री अरनाथजिन स्तवन ॥

॥ में तो न्यारा रहिस्याजी ॥ ए देशी ॥

॥ म्हेंतो आण वहेस्याजी, म्हारारे साहिबरी म्हेंतो आण वहेस्याजी ॥ ए आकणी ॥ आण वहेस्या नक्ति करेस्या, रहेस्या नयण हजूर ॥ अरजिन आगल अरज करता, लहस्या सुख भरपूर ॥ म्हेंतो० ॥१॥ एकने दमी बेने खमी, तिनस्यु तोमी नेह ॥ च्यार जणा शिर चोट करे स्यु, पचनो आणिछेह ॥ म्हेतो० ॥२॥ छ सत अठ नव दशने टाली, अनुआली अगीयार ॥ वार जणाने आदर करिस्यु, तेरनो करी परिहार ॥ म्हें० ॥३॥ पच अठ नव दश मत्तर पाली, सत्तावीश धरी साथ ॥ पचवीस जणस्यु प्रीति करेस्यु, च्यार चतुर करी हाथ ॥ म्हें० ॥ ॥४॥ बत्रीस तेत्रीसने चोराशी, ओगणीस दूर नीवारी अमृतालीसनो सग तजेस्यु, एकावन दील धारी॥

म्हेंतो० ॥५॥ वीस आराधी बावीस बांधी, त्रेवीसनो करी त्याग ॥ चोवीस जिनना चरण नमीने, पामस्यु भवजल ताग ॥ म्हेंतो० ॥६॥ ध्याता ध्येयें ध्यान सरुपें, तन मन तान लगाय ॥ क्षमाविजय कवि पदकज मधुकर, सेवक जिन गुण गाय ॥ म्हेंतो० ॥ ॥ ७ ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथजिन स्तवन ॥

॥ प्रथम गोवाल तणे भवेजी ॥ ए देशी ॥

॥ मीथिला नयरी अवतर्योजी, कुंभ नृपति कुल भाण ॥ राणी प्रभावति उर धर्योजी, पचवीस धनुष प्रमाण ॥ भविक जन ॥ वदो मल्लिजिणद ॥ जिम होये परम आनद ॥ भविक जन वदो० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लंछन कलश विराजतोजी, नीलवरण तनु काति ॥ सयम लीयें शत त्रणस्युजी, भाजें भवनी भ्राति ॥ भवि० ॥ २ ॥ वरस पचावन सहसनुजी, पाली ए पूरण आय ॥ समेतशिखर शिवपद लह्यु जी, सुर किनर गुणगाय ॥ भवि० ॥३॥ सहस पचावन साहूणीजी, मुनि च्यालिस हजार ॥ वैरोट्या

सेवा करेंजी, यक्ष कुवेर उदार ॥ नवि० ॥ ४ ॥ मूर्त्ति मोहनवेलमीजी, मोहें जग जन जाण ॥ श्री नयविजय सुशीसनेंजी, दिये प्रज्ञु कोमि कल्याण ॥ नवि० ॥ ५ ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥
॥ देशी रसीयानी ॥

॥ पद्माटेवी नदन गुण निलो, राय सुमित्र कुल चद ॥ कृपानिधि ॥ नयरी राजग्रही प्रज्ञुजी अवतर्यो प्रणमें सुरनर वृद ॥ कृपानिधि मुनिसुव्रत जिनन्नावे नदीयें ॥ ए आकणी ॥ कठप लठन साहिव सामलो, वीस धनुप तनुमान ॥ कृपा० ॥ त्रीस सहस सवठर आउखू, वहु गुण रयण निधान ॥ कृपा० ॥ २ ॥ एक सहसस्यु प्रज्ञुजी व्रत ग्रहि, समेतशिखर लहि सिद्धि ॥ कृ० ॥ सहस पचास विराजे साहुणी, त्रीस सहस मुनि प्रसिद्ध ॥ कृ० ॥ ३ ॥ नरदत्ता प्रज्ञु शासन देवता, वरुण यक्ष करे सेव ॥ कृपा० ॥ जे प्रज्ञु नक्ति राती तेहना, विघन हरे नित मेव ॥ कृपा० ॥ ॥ ४ ॥ नावट नजन जन मनरजनो, मूर्त्ति मोहन-

गार ॥ कृपा० ॥ कवि जसविजय पयपे जन जवे, ए मुज एक आधार ॥ कृपा० ॥५॥ इति सपूर्ण

॥ अथ श्री नमिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ काज सीधा सकल हवे सार ॥ ए देशी ॥

॥ मिथिला पुर विजय नरेंद, वप्रा सुत नमि जिनचद ॥ नीलुप्पल लठन राजे, प्रभु सेव्यो भावट भाजे ॥१॥ धनुष पन्नर उच शरीर, सोवन वन साहस धीर ॥ एक सहसस्यु लिये निरमाय, व्रत वरस सहस दस आय ॥२॥ समेतशिखर आरोहि, पुहता शिवपुर निर्मोही ॥ मुनि विस सहस शुभनाणी, प्रभुना उत्तम गुण खाणी ॥३॥ वली साध्वीनो परीवार, एकतालीस सहस उदार ॥ सुर भ्रकुटी देवी गधारी, प्रभु शासन सानिध्य कारी ॥४॥ तुज कीर्ति जगमा व्यापी, तप तपे प्रबल प्रतापी ॥ बुध श्री नयविजय सुसीस, एम दीये निल नित आशीस ॥५॥

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

पद्मप्रभ जिन अलगा वस्या—ए देशी

नेमि जिणेसर निज कारज कर्यु, छांड्यो सर्व

निन्नावोजी, आत्मशक्ति सकल प्रगटी करी, आस्वा द्यो निज ज्ञानोजी ॥ ने० ॥१॥ राजुल नारीरे सारी मति धरी, अवलब्या अरिहतोजी, उत्तम संगेरे उत्तमता वधे, सधे आनद अनतोजी ॥ ने० ॥ २ ॥ धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजाति अग्राह्योजी, पुद्गल ग्रहवेर कर्म कलकता, वाधे बाधक बाह्योजी ॥ ने० ॥३॥ रागी सगे रे राग दशा वधे, थाये तिणे ससारोजी, निरागीथीरे रागनु जोडवु, लहीए भवनो पारोजी ॥ ने० ॥ ४ ॥ अप्रशस्ता रे टालि प्रशस्तता, करता आश्रव नासेजी, सवर वाधे रे साधे निर्ज्जरा, आतमभाव प्रकाशेजी ॥ ने० ॥५॥ नेमि प्रभु ध्याने रे एकत्वता, निज तत्त्वे एक तानोजी, शुकल ध्याने रे साधी सुसिद्धता, लहिये मुक्ति निदानोजी ॥ ने० ॥ ६ ॥ अगम अरूपीरे अलख अगोचरु, परमातम परमीशोजी, देवचद्र जिनवरनी सेवना, करता वाधे जगीशोजी ॥ ने० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजिन स्तवन ॥

॥ घोडीजी आइ थारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ परम पुरुष परमातमा, साहेबजी ॥ पुरीसा
राणी पास हो ॥ शिव सुखरा नमर थासु वीनती
साहेबजी ॥ अवसर पामी उंजगु ॥ साहे० ॥ सफल
करो अरदास हो ॥ शिव० ॥१॥ दोय नटन मोह
तुपरा ॥ सा० ॥ तिणे कर्यो जग धंधोल हो ॥ शि०
। द्वेष करी राग केसरी ॥ सा० ॥ तेहना राणा सोल
हो ॥ शिव० ॥२॥ मिथ्या मुहतो आगले ॥ सा० ॥
काम कटक सिरदार हो ॥ शिव० ॥ त्रण रूप धरी
तेह रमे ॥ सा० ॥ हास्यादिक परिवार हो ॥ शिव०
॥३॥ मोह महीपरा जोरथी ॥ सा० ॥ जग सघलो
थयो जेर हो ॥ शिव० ॥ हरिहर सुरनर सहु नम्या
॥ सा० ॥ जकमी कर्मनी घेर हो ॥ शिव० ॥४॥ नर
स्थिति चउगति चोकमां ॥ सा० ॥ लोक करे पो-
कार हो ॥ शिव० ॥ आप उदासी थइ रह्या ॥ सा०
॥ इम कीम रहस्ये कार हो ॥ शिव० ॥५॥ क्षपक
श्रेणीरी गजघटा ॥ सा० ॥ हलकारो अरिहंत हो
॥ शिव० ॥ नाण खड्ग मुझ कर दियो ॥ सा० ।
दुशमन करु अरिहंत हो ॥ शिव०॥६॥ करुणा नयण

कटाक्षथी ॥ सा० ॥ रिपुदल होए वीतराख हो ॥ शिव० ॥ क्षमाविजय जिन सपदा ॥ सा० ॥ प्रगटे ऊाक ऊमाल हो ॥ शिव० ॥७॥ इति सपुर्ण ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

॥ जीरे माहरे श्री जिनवर जगवान ॥ ए देशी ॥

॥ आज माहरे सुरतरु फलीउं सार, घर आंगणे शोजा करु ॥ जीरेजी ॥ आजमें त्रीशला नदन देव, दीठो देव दयाकरु, जीरेजी० ॥ १ ॥ जिनजी ताहरा गुण अवदात, गग तरग परे निरमला ॥ जी० ॥ जिनजी सजारु दिनरात, मुकी मनना आवला ॥ जी० ॥२॥ जिनजी उत्तम जनस्यु रग, चोल मजीठ तणी परे ॥ जी० ॥ जिनजी तुमस्यु अविहरु नेह, निरवहजो रुमीपरे ॥ जी० ॥३॥ जीनजी ताहरा गुण मणिमाल, कठे जे जवि धारस्ये ॥ जी० ॥ जिनजी धन्य धन्य तस अवतार, जे ताहारु नाम सजारस्ये ॥ जी० ॥४॥ जिनजी मेरु विजय गुरु सीस, विनीत विजयना वयणमा ॥ जीरे० ॥ जिनजी जे चित धरस्ये नित, तस घर रंग वधामणा ॥ जीरेजी ॥ ५ ॥ इति सपुर्ण ॥

(२) ॥ स्तवन बीजुं ॥

॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिनेश्वर परमेश्वर जयो, जगजीवन जिनभूप ॥ अनुभव मित्ते चित्ते हित करी, दाख्यो जास सरुप ॥ वीर० ॥ १ ॥ जेह अगोचर माणस वचनने, जेह अतीन्द्रिय रूप ॥अनुभव मित्ते वीगते शक्तिस्युं, भाख्यो तास स्वरुप ॥ वीर० ॥ २ ॥ नय निक्षेपे जेह न जाणीए, नवी जीहां प्रसरे प्रमान ॥ शुद्ध स्वरुप ब्रह्म ते दाखवे, केवल अनुभव भाण ॥ वीर० ॥ ३ ॥ अलख अगोचर अनुपम अर्थनो, कुण कही जाणे भेद ॥ सहज विशुद्धशु अनुभव वयण जे, शास्त्र ते सघळा खेद ॥ वीर०॥४॥दीसी देखामी शास्त्र सवे रहे, न लहे अगोचर वात ॥ कारज साधक बाधक रहीत ए,अनुभव मित्त विख्यात ॥वीर० ॥५॥ अहो चतुराइ अनुभव मित्तनी,अहो तस मित्त प्रतीत ॥ अंतरजामी स्वामी समीपते, राखी मित्त शु रीत ॥ वीर० ॥६॥ अनुभव संगे रंगे प्रभु मीळ्या, सकल फळ्या सवीकाज ॥ निजपद संपद जे ते अ-

नुन्नवे, श्रानद घन महाराज ॥ वीर० ॥७॥ इति सं

॥ श्री सीमधर जिन स्तवन ॥

॥ साहिया श्रजित जिणद जुहारियें ॥ ए देशी ॥

साहिवा श्री सीमधर साहेवा, तुम प्रज्ञु देवाधि देव ॥ सनमुख जूर्डने महारा साहिया, साहेव मन शुद्धे करु तुम सेव ॥ एकवार मळोने महारा साहिवा ॥ ए श्राकणी ॥ १ ॥ साहिव सुख ऊःख वातो महारे श्रति घणी, साहिव कोण श्रागळ कहुं नाथ ॥ साहेव केवळ ज्ञानी प्रज्ञु जो मळे, साहिव तो थाऊ हुरे सनाथ ॥ एकवार० ॥२॥ साहिव नरत क्षेत्रमा हु श्रवतर्यो, साहिव र्हवु एटलु पुन्य ॥ साहिव ज्ञानी विरह पम्यो श्राकरो, साहिव ज्ञान रह्यो श्रति न्यून ॥ एकवार० ॥ ३ ॥ साहेव दश दृष्टाते दोहिलो, साहेव उत्तम कुल सोन्नाग ॥ साहिव पाम्यो पण हारी गयो, जेम रत्ने उमाम्यो काग ॥ एकवार० ॥ ४ ॥ साहेव षम्रस नोजन वहु कर्या, साहेव तृप्ति न पाम्यो लगार ॥ साहेव हुरे श्रनादि ., साहेव रझळयो घणो ससार ॥ एकवार० ॥

॥ ५ ॥ साहेब सज्जन कुटुंब मेळा घणा, साहेब तेहने दुःखे दुःखी थाय ॥ साहेब जीव एकने कर्म जूजूआ, साहेब तेहथी दुर्गति जाय ॥ एकवार० ॥ ॥ ६ ॥ साहेब धन मेळववा हुं धसमस्यो, साहिब तृष्णानो नाव्यो पार ॥ साहेब लोभे लटपट बहु करी, न जोयो पुण्य ने पाप व्यापार ॥ एकवार० ॥ ॥ ७ ॥ साहेब जेम शुभाशुभ वस्तु छे, साहेब रवि करे तेह प्रकाश ॥ साहेब तेमरे ज्ञानी मळे थके, ते तो आपे समकित वास ॥ एकवार० ॥ ८ ॥ साहेब मेघ वरसे छे वाटमां, साहेब वरसे छे गामो गाम ॥ साहिब ठाम कुठाम जुए नहीं, साहिब एहवा मटोटाना काम ॥ एकवार० ॥ ९ ॥ साहिब हुं वस्यो भरतने छेमले, साहिब तुमे वस्या महाविदेह मोझार ॥ साहेब दूर रही करु वंदना, साहिब भवसमुद्र उतारो पार ॥ एकवार० ॥ १० ॥ साहिब तुम पासे देव घणा वसे, एक मोकलजो महाराज ॥ साहेब मुखनो संदेशो सांभळो, तो सहेजे सरे मुज काज ॥ एकवार० ॥ ११ ॥ साहेब हुं तुम पगनी मोजडी,

साहिब हु तुम दासनोदास ॥ साहिब ज्ञानविमळ सूरि एम भणे, मने राखो तमारी पास ॥ एकवार०

॥ स्तवन बीजुं ॥

॥नदी यमुनाके तीर उडे दोय पखीया ॥ ए देशी॥

॥ परम पुरुष जिनराज, छो त्रिभुवन पति ॥ श्री सीमधर स्वामी, सुणो अम बीनति ॥ तुमे छो सर्व सुजाण, जाणो छो जे छती ॥ तो पण निज मन वात, कहु हु तुम प्रति ॥१॥ आ मुज आतम साथ, चोराशी योनीमा ॥ रुडवडीयो बहु वार, निगोदना भवनमा ॥ जनम मरणनां दु ख, अनादी में सह्या ॥ कीणविध कृपा निधानजी, जाये ते कह्या ॥ २ ॥ इम भमतां कोइ काळ, सुकृत सयोगथी ॥ पाम्यो मणुज पण निज, अशुभ वियोगथी ॥ तिहा पण दुर्लभ आर्य, देश कुळमे लह्यो ॥ जिहा किण सफल सुधर्मनु, साधन न कह्यो ॥३॥ रागे इडीय पच, तणे रातो रह्यो ॥ रामा धन रस रग, हीयडे गहगह्यो ॥ प्रेमे निज गुण छमी, रम्यो पर पुदगले ॥ भीदयो अनंत, विषय तृष्णाजळे ॥४॥ नाच्यो नव नव

वेश, आश्रवना नाचमा ॥ मोह्यो मुज नवी मन, सवरना साचमां ॥ श्रीगुरु मुखथी वचनामृत, धारा जशी ॥ श्री जिनवाणी सुणी, पण हीयमे नव वशी ॥५॥ जगतारक जे देव, नम्यो जग रीतथी ॥ रागी द्वेषी देव, सेवन करी प्रीतथी ॥ कुत्सित धर्मप्रकाशक, कुगुरु मती नज्या ॥ तेहना नापित वाक्य, साचां करी पमीवज्या ॥ ६ ॥ आराधन श्री सयम, रयणनु नवी कर्युं ॥ नीपट क्रीया करी कपटे, पापे तनु नर्युं ॥ लोक मुखे निज श्री, जशवाद गवाड्यो ॥ धन्य धन्य जगे एम, प्रतीष्ठा पाड्यो ॥७॥ इम ब्रमे नूल्यो नमर, ससारनी वासमा ॥ भ्रमण कर्या नव, नव ग्रहस्थावासमां ॥ अव्याबाध अनतनी, प्राप्ती तुम तणी ॥ चरणार्थे नमे इम आधीन, साधन ए वीनति ॥८॥ करता कारण शुद्ध लब्धीताए करी ॥ कर्तव्यनी करे सिद्ध, नियामक आदरी ॥ जो कार्यनी मुख्यता, प्रनु ताहरे निपे ॥ तोही गोणनी उष्टता, कुण मन विषे ॥९॥ नोजन नव्य पामीने, कटुकने कुण नखे ॥ कुण मुरख पीतळने, कनक पणे लळखे

॥ स्वप्नातर पण स्वामी, अवर सुर नवी गमे॥ तुम मुख चड़ देखीने, मुज मन तु रमे ॥१०॥ वचने श्री वीतराग, घणु शु दाखीये ॥ दासनी सुणी अरदास सेवक करी राखीये ॥ अतरयामी शुद्ध, रयण त्रिक आपज्यो ॥ नव नव एहीज तरजनी रुचि स्थिर स्थापज्यो ॥११॥ युगप्रधान श्री जयचड, सूरिपद्दे वमा ॥ जयवता बुध स्वामीजी, मुनी गुण परवमा ॥ तमु सेवक श्री गुलाल–चड कवीरायनो ॥ बोले मुनि गुणचड, स्तवन जिनरायनो ॥ १२ ॥ कलश ॥ इम जिन पुरदर, महिमा सुदर, श्रीसीमधर जिनवरो ॥ विनव्यो नक्ते, नाव युक्ते, परम देव दया करो ॥ सवत सनरसें, त्राणु वरसे, पोष सातम उजळी ॥ विनती करता, शुन्न महोदय, गुण अधीक आशा फळी ॥१३॥ इति सपूर्ण ॥

॥ स्तवन त्रीजुं ॥

॥ जीरे मारे श्री जिनवर नगवान ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिमधर स्वामी नगवत, वात सुणो मोरा मन तणी ॥ जीरेजी ॥ जिनजी जगमा लागीहे चोप,

वंदना मोरी अवधारजो ॥ जीरेजी ॥ १ ॥ जिनजी महाविदेह खेत्र मझार, डुगर दरीया वन घणा ॥ जी० ॥ जिनजी देवे न दीधी मुजने पख, विधाबरे विधा नहो दीधी ॥ जी० ॥ २ ॥ जिनजी केम करी आवु हजुर, वदना मारी अवधारजो ॥ जी० ॥ जिनजी धन्य तेह नगरीना लोक, दीन ऊगे दरीसण करे ॥ जी० ॥३॥ जिनजी धन्य तेह नरने नार, प्रह ऊठे मुखनी वाणी सुणे ॥ जी० ॥ जिनजी जीणे खाधा दाख्म द्राख, निव निंवोरी कीम रुचे ॥ जी० ॥४॥ जिनजी जेणे पीधा साकर दुध, अमीयो रुडते कीम रुचे ॥ जी० ॥ जिनजी जेणे कीधा झवेरी व्यापार, तेने मणीयारो कीम गमे ॥ जी० ॥५॥ जिनजी जेणे कीधां हाल हुकुम, तेने तुकारो नवी गमे ॥ जी० ॥ जिनजी जेणे पूज्या अरिहत देव, हरि हरादीने कुण नमे ॥ जी० ॥ ६ ॥ जिनजी रत्नचितामणी जेहने हाथ, काच खमीत नवी गमे ॥ जी० ॥ जिनजी कनक सोभागी गुरुजीनु नाम, सोभागी नमे सुर भावसु ॥ जीरेजी ॥७॥ इति सपूर्ण ॥

॥ स्तवन चोथु ॥

॥ क्यु जाणु क्यु बनी आवशे ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सीमधर साहिबा, हु किम आवु तुम पास हो ॥ मुणिंद ॥ दूर विचे अंतर घणो, मुने मिलवानी घणी आस हो ॥ मुणिंद ॥ श्रीसीम० ॥ ॥१॥ हुं आ भरतने छेहडे, काइ प्रभुजी विदेह मझार हो ॥ मु० ॥ डुंगर विचे नदीयो घणी, काइ कोस ते केइ हजार हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रभु देता हस्यो देशना, काइ सांभले तिहांना लोक हो ॥ मु० ॥ धन्य ते गाम नगर पुरी, जिहां वरते पुन्यसि लोक हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥३॥ धन्य ते श्रावक श्राविका, जे निरखे तुम मुख, चंद हो ॥ मु० ॥ पण ते मनोरथ अम तणो, कांइ फलस्ये भाग्य अमद हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वरतारो वरती जुई, काइ जोसी मांडी लगन हो ॥ मु० ॥ क्यारे सीमधर भेटस्यु, मुने लागी एह लगन हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥५॥ पण कोइ जोसी न एहवो, जे भाजे मननी भ्रात हो ॥ मु० ॥ अनुभव मित्र कृपा करी,

तेणे मेळव्यो तुम एकांत हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ वीतराग न्नावें सही, तुमे वरतो गो जगनाथ हो ॥ मु० ॥ मे जाणुं तस केहेवाथी, हवे हु थयो स्वामी सनाथ हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पुष्करवइ विजये जयो, कांड नयरी पुम्रीगिणी सार हो मु० ॥ सत्य की नदन वदना, अवधारज्यो गुणना धाम हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ श्रेयांस नृप कुल चदलो, राणी रुखमणि केरा कत हो ॥ मु० ॥ वाचक रामविजय कहे, तुम्ह ध्याने होज्यो मुऊ चित्त हो ॥ मु० ॥ श्री० ॥ ए ॥ इति

॥ स्तवन पांचमु ॥

॥ जगजीवन जग वाल हो ॥ ए देशी॥

॥ श्री सीमधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुप परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्रीसी० ॥१॥ केवलज्ञान दिवाकरु, न्नागे सादि अनत लाल रे ॥ न्नासक लोकालोकके, ज्ञायक ज्ञेय अनत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इड चड चक्कीसरू, सुरनर रहे कर जोम लाल रे

सेवे सदा, आण हु तें एक कोरू लाल रे ॥ श्री० ॥
॥ ३ ॥ चरण कमल पिंजर वसें, शुन्न मन हंस नित
मेन लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, नवन्नव
देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उद्धारण
गो तुम्हे, दूर हरो नन ड़ुख लाल रे ॥ कहे जिन
हर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥
श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनु स्तवन ॥

॥ जीरे मारे श्री सिद्धाचल तीर्थ, शास्वतु प्राये
जाणीए ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे नान्नी नरेसर नंद,
ऋषन्न जिणंद वखाणिए ॥ जीरेजी ॥ जी० पूर्व नवाणु
वार, गिरी दरिसणने आविया ॥ जी० ॥ जीरेमारे
आद्य आठमथी जाण्य, फागुण सुदी मन न्नावीया
॥ जी० ॥१॥ जीरेमारे रायण रूख मनोहार, ते चरण
कमल पावन करी ॥ जी० ॥ जीरे मारे हु वंदु त्रिण
काल, न्नाव घणो मनमा धरी ॥ जी० ॥ जीरे मारे
न्नरतेसर निजनंद, पूछे प्रन्नु बहु मानथी ॥ जी० ॥
जीरे मारे तुम सरिखा, जगनाथ, पूज्य कहो कुण

कामयी ॥ जी० ॥ २ ॥ जीरे मारे कृपावत जगवंत, तीर्थ महिमा अति दाखीउं ॥ जी० ॥ जीरे मारे आठ उपर सो नाम, रस स्वाद करी चाखियो ॥ जी० ॥ जीरे मारे सांजली जिनवर वाण, रुषजसेन प्रमुख वली ॥ जी० ॥ जीरे मारे चोरासी गणधार, तीर्थ स्थापे मन रुली ॥ जी० ॥ ३ ॥ जीरे मारे रुषजसेन पुंमरिक, पूछे प्रजु चरण नमी ॥ जी० ॥ जीरे मारे कीहा होसे मुजे सिद्धि, जाख्यो पूज्य केवलगामी ॥ जी० ॥ जीरे मारे कहे केवली जिनराज, नाण निर्वाण साधशो जी० ॥ जीरे मारे ए तीर्थे महाजाग्य, गुण अतिशय वाधस्यो ॥ जी० ॥४॥ जीरे मारे पच कोमी अणगार, फागुण सुदि पूनम जली ॥ जी० ॥ जीरे मारे करी सलेखण सार, चैत्र सुदि पुनम वली ॥जी०॥ जीरे मारे पामी केवल नांण, अजरामर सुख पामीआ ॥ जी० ॥ जीरे मारे सादि अनत निवास, जनम जरा दुःख वामीया ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीरे मारे डावोरुने वारिपेण, दश कोमी परिवारस्यु ॥ जी० ॥ जीरे मारे [illegible], हुं वहु जले

॥ जी० ॥ जीरे मारे विद्याधर मुनी दोय, नमी विनेमी वखाणिए ॥ जी० ॥ जीरे मारे वे कोमी मुनि सजुत्त, अव्याबाध सुख पांमिया ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे मारे सागरचंद मुनिराय, त्रण कोड परिवारशुं ॥ जी० ॥ जीरे मारे सोमजय अणगार, तेर कोड ज्ञले ज्ञावस्यु ॥ जी० ॥ जीरे मारे दमीतारीनी सह्न, चउद सहसशु सिद्ध थया ॥जी० ॥ जीरे मारे बाहुबली बलवंत, एक सहस आठशु शिवगया ॥ जी० ॥७॥ जीरे मारे प्रति पाम्व पाच कुमार, विशकोम परिवारसु ॥ जी० ॥ जीरे मारे इत्यादिक अनेक, काकरे काकरे सिद्ध थया ॥ जी० ॥ जीरे मारे ए तीरथने आधार, कर्म खपावी मोक्षे गया ॥ जी० ॥ जीरे मारे जिन उत्तम महाराज, पाद पद्म तस नांमीए ॥जी०॥ जीरे मारे रूप विजय कविराय, शिवसुख लक्ष्मी पामीए॥ जी० ॥८॥ इति॥

॥ स्तवन बीजु ॥

॥ उमह्या मुजने घणी, जीहो ज्ञेटु विमलगिरि राय ॥ दोश्तरा मूल पाखमी, जीहो लळी लळी लागु ... के ॥ मोहनगारा हो राज रुमा, मारा साजळ

सुगुणा सुजा ॥१॥ शेत्रुंजय शिखर सोहामणो, जीहो धन्य धन्य रायण रूख ॥ धन्य पगलां प्रभुजी तणा, जीहो दीठडे जागे सुखके ॥ मोहन० ॥ २ ॥ इणी गिरि आवी समोसर्या, जीहो नाभिनंद मल्हार ॥ पावन कीधी वसुधरा, जीहो पूरव नवाणु वारके ॥ ॥ मोह०॥३॥ पुंडरिक मुनि मुक्तिए गया, जीहो साथे मुनि पंच कोड॥पुंडरिक गिरिवर ए थया, जीहो नमो नमो बेकर जोडके ॥ मोह० ॥४॥ एणे तिर्थे सिध्या घणा,जीहो साधु अनंती कोड ॥ त्रण भुवनमां जोयतां, जीहो नहीं कोइ एहनी जोडके ॥ मोह० ॥५॥ मन वांछित सुख मेळवे,जीहो जपतां ए गिरिराज ॥ [illegible] भाव वैरी तणो, जीहो भय जाय सवी भांजके [illegible] ॥६॥ वाचक रामविजय कहे, जीहो [illegible] थिरथ एह ॥ शिव मंदिरनी श्रेण छे, जीहो [illegible] नहि संदेहके ॥ मोहन० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ स्तवन त्रीजुं ॥ [illegible]

॥ ए देशी ॥ अवतां पाद [illegible]

[illegible] दरस करो रे ॥

जिन महेर करी अव, पाप पटल सब दूर भयो रे ॥ तन मन पावन भविजन केरो, निरखी जिनद चद सुख थयोरे ॥ अव० ॥१॥ पुंडरीक पमुहा मुनि बहु सिधा, सिद्ध क्षेत्र हम जाच लह्योरे ॥ पशु पखी जिह छिनकमे तरीया, तो हम दृढ विसवास थयोरे ॥अ०॥ ॥ २ ॥ जिन गणधर अवधि मुनी नाही, किस आगे हु पूकार करु रे ॥ जिम तिम करी विमलाचल भेटयो, भव सागरथी नाही डरु रे ॥ अव० ॥३॥ दूर देशां तरमे हम उपने, कुगुरु कुपंथको जाल पर्यो रे ॥ श्री जिन आगम हम मन मान्यो, तबही कुपथको जाल जर्यो रे ॥ अव० ॥४॥ तो तुम सरण विचारी आयो दीन अनाथको सरण दियोरे ॥ जयो विमलाचल पूरण स्वामी, जनम जनमको पाप गयो रे ॥ अव० ॥५॥ दूरभवी अभव्य न देखे, सूरि धनेश्वर एम कह्यो रे ॥ विमलाचल फरसे जो प्राणी, मोक्ष, महेल तिण वेग लह्यो रे॥ अव० ॥६॥ जयो जगदीसर तु परमेसर, पूर्व नवाणु वार थयो रे ॥ समवसरण रायण तले तेरो, नीरखी मम अघ दूर गयोरे ॥ अव० ॥७॥ श्री निम-

लाचल मुक्रमन वसीयो, मानु ससारनो अत कर्यो रे ॥ यात्रा करी मन तोष भयो अब, जनम मरण दुःख दूर गयोरे ॥ अब० ॥ ८ ॥ निर्मल मुनिजन जो ते तार्या, ते तो प्रसिद्ध सिद्धांत कह्योरे ॥ मुज सरीखा निंदक जो तारो, तारकबिरुद ए साच लह्यो रे ॥ अब० ॥९॥ ज्ञान हीन गुणरहित विरोधी, लपट धीठ कषाय खरो रे ॥ तु विन तारक कोइ न दीसे, जयो जगदीसर सिद्ध गिरो रे ॥ अब० ॥१०॥ तिर्यग नरक गति दूर निवारी, भवसागरकी पीर हरो रे ॥ आतमराम अनघपद पामी, मोक्ष वधू तिन वेग वरी रे ॥ अब० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ स्तवन चोथु ॥

॥ चालो सोरठ देश देसावो रसीआ ॥ चालो सोरठ ॥ सोरठ देशमा दोय मोटा तीरथ, गढ गीरनार शत्रुजय गीरीया ॥ चालो० ॥१॥ रैवत गिरिपर जदुपती केरा, दीक्षा केवलज्ञान रमीआ ॥ चा० ॥ २ ॥ राजुलनार नेमीश्वर साथे, सजम लेइ भवोदधी तरीया ॥ चालो० ॥ ३ ॥ शेत्रुंजय उपर ऋषभ

जिनेश्वर, पूर्व नवाणु वार समोसरीया ॥ चालो० ॥
॥४॥ निहा अणगार अनत अपारा, अणसण ग्रही
शिवसुख वरीया ॥ चालो० ॥५॥ नाभी रायाने करु
जुहार, पावन करु सव मोह परीया ॥ चालो० ॥६॥
हीणा अवतार न होत लीगारा, ज्ञान विमल प्रभु
सीर धरीया ॥ चालो० ॥७॥ इति ॥

॥ स्तवन पांचमु ॥

॥ शत्रुजयनो वासी प्यारो लागे, मोरा राजींदा
॥ इणि डुगरीयारी झीणी झीणी कोरणी, उपर शि
खर विराजे ॥ मोरा राजींदा ॥ शत्रु० ॥१॥ चउमुख
बिंब अनोपम छाजे, अद्भुत दीठा दुख भाजे ।
मोरा० ॥ शत्रु० ॥२॥ कानेजी कुडल मुगट विराजे
बाहे बाजुबध छाजे ॥ मोरा० ॥ शत्रु० ॥ ३ ॥ चुव
चुवा चदन और अरगजा, केशर तिलक विराजे ॥
मो० ॥ शत्रु० ॥ ४ ॥ इण गिरि साधु अनता सीधा,
कहेता पार न आवे ॥ मो० ॥ शत्रु० ॥ ५ ॥ ज्ञान
विमल प्रभु इणीपरे बोले, आ भवपार उतारो ॥
मोरा राजींदा शत्रु० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवपद महिमा वर्णन श्री सिद्ध चक्रजीनु स्तवन.

॥ सांजलरे तु सजनी मोरी, रजनी क्या रमीआवीजी ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धचक्र वर सेवा कीजे, नरजव लाहो लीजेजी ॥ विधी पूर्वक आराधन करता, जव जव पातिक छीजे ॥ जवीयण जजीयेजी ॥ अवर अनादीनी चाल, नित्य नित्य तजीयेजी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ देवना देव दयाकर ठाकर, चाकर सुरनर इंदाजी ॥ त्रिगडे त्रिजुवन नायक बेठा, प्रणमो श्री जिनचंदा ॥ जवी० ॥ २ ॥ अज अविनाशी अकल अजरामर, केवल दंसण नाणीजी ॥ अव्याबाध अनंतु वीरज, सिद्ध प्रणमो जवी प्राणी ॥ जवी० ॥३॥ विद्या सौजाग्य लक्ष्मी पीठ, मंत्र जोगराज पीठजी ॥ सुमेरु पीठ पंच प्रस्थानें, नमो आचारज इठ ॥ जवी० ॥ ॥ ४ ॥ अंग उपांग नंदि अनुयोगा, छ छेदने मूल चारजी ॥ दस पयन्ना एम पणयालीस, पाठक तेहना धार ॥ जव ... ॥ वेद भणनें हास्यादिक षट,

मिथ्यात्व चार कषायजी ॥ चउद अभ्यंतर नवविध बाह्यनी, ग्रंथी त्यजे मुनिराज ॥ भवी० ॥६॥ उपशम क्षय उपशमने क्षायिक, दरशण त्रण प्रकारजी ॥ श्रद्धा परणति आतम केरी, नमिये वारवार ॥ भवी० ॥७॥ अठावीस चौदने खट दुग एक, मत्यादिकना जाणजी ॥ एम एकावन भेदे प्रणमो, सातमु पद वरनाण ॥ भवी० ॥ ८ ॥ निर्वर्ति अपवर्ति भेदें, चारित्र छे व्यवहारेंजी ॥ निज गुण थिरता चरण ते प्रणमो, निश्चय शुद्ध प्रकार ॥ भवी० ॥ ९ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप ते सवर, सुमता निर्ज्जरा हेतुजी ॥ ते तप नमिए भाव धरिने, भव सायरमां सेतु ॥ भवी० ॥१०॥ ए नवपदमां पण छे धर्मी, धर्म ते वरते चारजी ॥ देवगुरुने धर्म ते एहमां, दो तीन चार प्रकार ॥ भवी० ॥ ११ ॥ मारग देशक अवीनाशी पणो, आचार विनय सकेतजी ॥ साह्यपणु धरता साधुजी, प्रणमो एहीज हेतु ॥ भवी० ॥१२॥ विमलेश्वर यक्ष सेवा सारे, उत्तम जे आराधेजी ॥ पद्मविजय कहे ते प्राणी, निज आतमहित साधे ॥ भवी० ॥१३॥

॥ स्तवन बीजु ॥

॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ नवपद महिमा सार, सांभलजो नरनार ॥ आछे लाल ॥ हेज धरी आराधीयेंजी ॥ तो पामो भवपार, पुत्र कलत्र परिवार ॥ आ० ॥ नवपद मंत्र आराधीयेंजी ॥१॥ आसो मास विचार, नव आंबिल निरधार ॥ आ० ॥ विधिशु जिनवर पूजीयेजी ॥ अरिहंत सिद्धपद सार, गणणुजी तेर हजार ॥ आ० ॥ नव पदनु ईम कीजीयेंजी ॥ २ ॥ मयणा-सुंदरी श्री पाल, आराध्यो ततकाल ॥ आ० ॥ फलदायक तेहने थयोजी ॥ कंचन वरणी काय, देही तेहनी थाय ॥ आ० ॥ श्री सिद्धचक्र महिमा कह्योजी ॥३॥ सांभलि सहु नरनार, आराध्यो नवकार ॥ आ० ॥ हेज धरी हियमें घणुजी ॥ चैत्र मासें वली एह, नवपद शु धरो नेह ॥ आ०॥ पूज्यो द्ये शिवसुख घणुजी॥४॥इणिपरें गोतम स्वाम, नवनिधि जेहने नाम॥आ०॥नवपद महिमा वखाणीयोजी॥ उत्तम सागर शिष्य, प्रणमे ते निशदीस ॥ आ० ॥ नवपद महिमा जाणीयोजी॥ इति संपूर्ण॥

॥ स्तवन त्रीजु ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधीयें, शिवसुख फल सद्कार लालरे ॥ ज्ञानादिक त्रण रत्ननु, तेज चढावण द्दार लालरे ॥ श्री सिद्ध० ॥ १ ॥ गौतमें पूछता कह्यो, वीर जिणंद विचार लालरे ॥ नवपद मंत्र आराधता, फल लहे ज्ञविक अपार लालरे ॥ श्री सि० ॥ २ ॥ धर्मरचना चार चक्र छे, उपशमनें सुविवेक लालरे ॥ संवर त्रीजु जाणीयें, चोथु सिद्धचक्र छेक लालरे ॥ श्री०॥३॥ चक्री चक्र रयण बलें, साधे सयल छ खंम लालरे॥ तिम सिद्धचक्र प्रज्ञावथी, तेज प्रताप अखंम लालरे ॥ श्री सि०॥४॥ मयणाने श्रीपालजी,जपतां बहु फल लीध लालरे ॥ गुण जसवंत जिनेंद्रनो, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लालरे ॥ श्री सि०॥५॥ इति संपूर्ण ॥

॥ स्तवन चोथु ॥

॥ निंद्रमी वेरण हुइ रही–ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधियें, जिम पामो हो ज्ञवि कल्याण के ॥ श्री श्रीपाल तणी परें, सुख पा-

मोटो लहो निर्मल नाण के ॥१॥ नवपद ध्यान धरो सदा ॥ चोखे चित्त हो आणी बहु भावके ॥ विधि आराधन साचवो, जिम जगमाहे होये जसनो ज-मावके ॥ नव० ॥ २ ॥ केशर चदन कुसुमशु, पूजी-ने हो उवेखीये धूपके ॥ कुदरु अगरने अरगजा, तप दीनता हो कीजे घृतदीपके ॥ नव० ॥ ३ ॥ आशो चैत्र शुक्लपक्षें, नवदिनसहो तपकीजें एहके ॥ सहज सोभाग सुसपदा, सोवन सम हो झलके तस देहके ॥ नव० ॥ ४ ॥ जाव जीव शक्तें करो, जिम पामो हो नित्य नवला भोगके ॥ चार वरस साढा तथा, जिनशासन हो ए मोहोटो योगके ॥ नव० ॥ ॥ ५ ॥ श्री विमलदेव सान्निध्य करे, चक्केसरी हो होये तास सहाय के ॥ श्री जिनशासन सोहिये, एह करता हो अविचल सुख थायके ॥ नव० ॥६॥ मत्र तत्र मणि उंषधि, वश करवा हो शिवमणी का-जके ॥ त्रिभुवन तिलक समो वळी, होये ते नर हो कहे नय कविराज के ॥ नव० ॥७॥ इति सपूर्ण ॥

॥ स्तवन पाचमु ॥

॥ कुमर गंभारो नजरे देखताजी–ए देशी ॥

॥ सेवो भविया सिद्धचक्रनेजी, चित्त चचळता निवारी रे ॥ गुणीने सेव्या गुणसपजेजी, एम मनमांहे विचारी रे ॥ सेवो० ॥ १ ॥ त्रिजग पूज्य अरिहत प्रभुजी, चोशठ वसु जेहना दास रे ॥ नाथ ने पच कल्याणकेजी, सकल जीवने होये उल्लास रे ॥ सेवो० ॥२॥ कर्मक्षयें सिद्धपद लह्युजी, विशेष सामान्यें उपयोगी रे॥ रूपी अरूपी षटद्रव्यनोजी, खेल देखे जे अजोगी रे ॥ सेवो० ॥३॥ पच प्रस्थाने आचारज भलाजी, मुनि मन विश्राम ठाम रे ॥ छत्रीश छत्रीशीए शोभताजी, गछपति श्रीपूज्य नाम रे ॥ सेवो० ॥४॥ गुण पचवीश उवज्झायनाजी, सूत्र दानी उपमा शोळ रे ॥ जुवराज परें गछचिताकरेजी, मीठा इक्षुसम बोलरे ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ साध्यु मनते साधु भलाजी, चरण करण गुणखाण रे ॥ नव कल्पी विहार जे आदरीजी, भविनु टाळ्यु अनाण रे ॥ सेवो० ॥६॥ मल उपशम क्षय उपशमेजी, क्षयथी

त्रिविधें होये जेह रे ॥ शक्रशठ बोले सोहामणोजी, प्रणमुं दर्शन तेह रे ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ पांच भेदें ज्ञानीए ज्ञान कह्युजी, प्रत्यक्ष परोक्ष भेद सहित रे ॥ अनार्पित अर्पित नय वळीजी, जे विसवाद रहित रे ॥ सेवो० ॥ ८ ॥ सजम सत्तर भेदे हुवेजी, जेह आदरे दुःख जाय रे ॥ दिशा जागरण कहा कहीजी, सुरवधू नमे वळी पाय रे ॥ सेवो० ॥ ए ॥ द्वादश भेदें जे तप भणयोजी, ते बाह्य अभ्यंतरथी होय रे ॥ क्षमा सहित आराधताजी, पातिक न रहे कोय रे ॥ सेवो० ॥१०॥ एम नवपद गुण रत्ननोजी, पार न लहे मति मत रे ॥ धर्मचंद्र करजोमीनेजी, करे तारजो भगवंतरे ॥ सेवो० ॥११॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ दीवाळीनुं स्तवन ॥

॥ सांभळ रे तुं सजनी मारी, रजनी क्यां रमी आवीजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुर सुख भोगवी त्रिशला कुखे रहीने जन्म लहीनेजी रे ॥ अनुक्रमें लखना संग ठामी, त्रिवर्ष दीक्षा ग्रहीने ॥ प्रगटी दीवाळीजी रे ॥ पाम्या के

वलज्ञान, कर्म पजालीजो रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चार निकायना देव मळीने, समवसरण करे सारो जीरे ॥ तिहां सिंहासने बेसी प्रभुजी, धर्म कहे बहु प्यारो ॥ प्रगटी० ॥ २ ॥ अनादि मिथ्याती जीवभव्य, करण त्रण करीने जीरे ॥ अतर करणें आदि समयें, सुख लहे समकित धरीने ॥ प्रगटी० ॥ ३ ॥ ते शुद्ध दरशन आत्मा कहीयें, शेष बीजा हवे सुणीयें जीरे ॥ कपाय योग द्रव्य उपयोग, वीर्यज्ञान चारित्र जाणीये ॥ प्रग० ॥४॥ एहवे इंद्रभूति जस सुणीने, आव्या प्रभुनी पासेजीरे ॥ वेदना अर्थ सुणीने साचा, सजम लीधो उल्लासें ॥ प्रगटी० ॥ ५ ॥ वीरने गणधर थया अग्यारह, साधु चौदहजारजीरे ॥ त्रीश सहस साधवी जाणे, चरण करण विचार ॥ प्रगटी० ॥ ६ ॥ लाख नेवु गुणसाठ हजार, श्रावक बहु श्रीकारजीरे ॥ सहस अढारने त्रण लाख, श्राविकानो परिवार ॥ प्रगटी० ॥ ७ ॥ एम सघनी थापना करता, आव्या अपापा गामजीरे ॥ हस्तीपाळ हरखें एम बोले, मुज घर आव्या स्वाम ॥ प्रगटी०

॥ ८ ॥ अल्प आयु पोतानुं जाणी, अनुकंपा आणी नाथजीरे ॥ शोल प्रहरनी देशना दीधी, मळिया अढार नरनाथ ॥ प्रगटी० ॥९॥ कारतक वद अमावसनी राते, वर्धमान मोक्षे पोहोत्याजीरे ॥ नारी अपछरा सुरनर मळिया, पण गौतम तिहां नहोता ॥ ॥ प्रगटी० ॥ १० ॥ वीरनिर्वाण सुर मुखथी जाणी, मोह करयो चकचूरजीरे ॥ केवळज्ञानने दर्शन प्रगटयो, गौतमने उगते सूर ॥ प्रगटी० ॥ ११ ॥ वीर गौतम निरवाण केवळ, कल्याणक दिन जाणीजीरे ॥ ॥ भाव द्रव्य दोय भेदें कीजें, दीवाळी भवि प्राणी ॥ प्रगटी० ॥१२॥ पोसा पडिक्कमणा जिनभक्ति, सुंदर वेशे करीयेंजीरे ॥ धर्मचंद्र प्रभु गुण गाता, जस कमळा नित्य वरीयें ॥ प्रगटी० ॥१३॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणनुं स्तवन ॥

॥ आंखमीयें अमें आज शेत्रुंजो दीठो रे ॥ ए देशी ॥ सुणजो साजन संत, पजूसण आव्या रे ॥ तुमें पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्या रे ॥ वीर जिणेसर अतिअलवेसर ॥ वाला मारा ॥ परमेश्वर

एम बोले रे ॥ पर्वमांहे पजूसण मोहोटां, अवर न आवे तस तोलें रे ॥ पजू० ॥ तुमें० ॥ न० ॥१॥ चौपगमाहे जेम केशरी मोहोटो ॥ वा० ॥ [1]खगमा गरुड ते कहियें रे ॥ नदीमाहे जेम गंगा मोहोटी, [2]नगमा मेरु लहिये रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ न० ॥२॥ [3]भूपतिमा भरतेसर भारयो ॥ वा० ॥ देवमाहे [4]सुरेंद्र रे ॥ तीरथमा शेत्रुंजो दारयो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे ॥ पजू० ॥तु०॥न०॥३॥ दसरा दीवाळीने वळी होळी ॥ वा० ॥ अखात्रीज दीवासो रे ॥ बलेव प्रमुख [5]बहुला छे [6]बीजा, पण नहि मुक्तिनो वासो रे ॥पजु०॥तु०॥ न०॥४॥ ते माटे तमे अमार पळावो ॥वा०॥ अठाइ महोछव कीजें रे ॥ अठम तप अधिकाइयें करीने नरभव लाहो लीजें रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ न० ॥ ५ ॥ ढोल ददामा भेरी नफेरी ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने जगावो रे ॥ झाझरना झमकार करीने, गोरीनी टोळी मळी आवो रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ न० ॥६॥ सोनारू-

१ आकाशमां उडता पक्षी २ पर्वत ३ राजा ४ देवताओनो राजा-इन्द्र ५ वोहोळा-घणां. ६ पर्वो (लौकीक)

पाने फुलने वधावो ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने पूजो रे ॥ नव वखाण विधियें सांभलता, पापमेवासी धूजो रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ भ० ॥७॥ एम अठाइनो मेहोत्सव करता ॥ वा० ॥ बहु जीव जगउद्धरया रे ॥ विबुध विमळ वर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धि सिद्धि वरया रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ भ० ॥८॥ इति ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवन ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पखीया ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी रे प्रभुजी नाम जपु मन माहरे, पण सेवकनी चित्त नही को ताहरे ॥ नीरागी जिनराज निरागीशु मले, तुमसेंती एक वार थाये भवदुख टले ॥ १ ॥ रूपरहित जिनराज कहो किहां देखीए, विण देखे दोय नेत्र सफल केम लेखिए ॥ जेहने रे नेत्र हजार ते नर पण ताहरो, देखे नही देदार किस्यो बल माहरो ॥ २ ॥ पचम ज्ञान प्रकाश शुद्ध होय जेहने, अरिगजन अरिहंत प्रगट छे तेहने ॥ तेहनो तो लव लेश नही को इण समे, एहवो को न उपाय जे जिन तुमथी मले ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव

कुधर्म तणे वश हू पम्यो, जग गुरु तादृशे धर्म मद्दा रे कर नवि चढयो ॥ आपणपे अहंकार तणे वश या हियो, तेणे करी तुम दरिसण, उदय नवि आवियो ॥४॥ तरण तारण जिहाज समो जिनजी मळ्यो, भागी मननी भ्राति सहु संशय टल्यो ॥ किया छुटर कार न थाए आजने, सद्गति लहीए ताम प्रसादें राजने ॥ ५ ॥ अमची विनति एह तमे अवधारजो, कठिन ते आठे कर्मने दूरें वारजो ॥ वीनति वाचक भक्ति सागरनी जाणजी, तिम करो त्रिभुवन स्वामी, सेवा तारी पामजी ॥६॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ दान, शील तप अने भावनु प्रभातियु ॥

॥ रे जीव जैन धर्म कीजीयें, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप भावना, जगमां एटलु सार ॥ रे जी० ॥ १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीसर सुखकार ॥ शेलडी रस वोहोरावियो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे जी०॥२॥ चंपापोल उघाडवा, चारिणीये काढया नीर ॥ सतीय सुभद्रा जश थयो, शियलें सुर नर धीर ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ तप करे काया शोषवी, सरस

नीरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ अनित्य भावना भावता, धरतां निर्मल ध्यान ॥ भरत आरीसा भुवनमां, पाम्या केवल ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ जैनधर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छाया ॥ समय सुंदर कहे सेवतां, वंछित फल पाया ॥ रे जी० ॥६॥

॥ अथ श्री जिन प्रतिमां उपर स्तवन ॥

॥ चोपाइनी देशीमा ॥

॥ जेहने जिनवरनो नहीं जाप, तेहनु पासु न मेले पाप ॥ जेहने जिनवरशु नहीं रंग, तेहनो कदी न कीजें संग ॥ १ ॥ जेहने नहीं वाहाला वीतराग, ते मुक्तिनो न लहे ताग ॥ जेहने भगवतशुं नहीं भाव, तेहनी कुण सांभलशे राव ॥ २ ॥ जेहने प्रतिमाशु नहीं प्रेम, तेहनु मुखडुं जोइयें केम ॥ जेहने प्रतिमाशुं नहीं प्रीत, तेतो पामे नहि समकित ॥३॥ जेहने प्रतिमाशु छे वेर, तेहनी कहो शी थाशे पेर ॥ जेहने जिनप्रतिमा नहीं पूज्य, आगम बोले तेह अपूज्य ॥४॥ नाम [illegible] ५ ने भाव, प्रभुने

सही प्रस्ताव ॥ जे नर पूजे जिननां बिंब, ते लहे अविचल पद अविलंब ॥५॥ पूजा छे मुक्तिनो पंथ, नित नित भाखे इम जगनंत ॥ ४ ॥ सहि एक नर कविना निरधार, प्रतिमा छे त्रिभुवनमां सार ॥ ६ ॥ सतर अठाणु आषाढी बीज, उज्वल कीधु छे बोध बीज ॥ इम कहे उदयरतन उवज्झाय, प्रेमें पूजो प्रभुना पाय ॥७॥ इति जिनप्रतिमा स्तवन ॥

॥ अथ समवसरणनु स्तवन ॥

॥ एक वार गोकुल आवजो गोविंदजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक वार वछ देश आवजो, जिणंद जी, एक वार वछदेश आवजो ॥ दरिसण नयन ठेरावजो ॥ जिणंद जी, एकवार वछदेशआवजो ॥ जयंतीने पाय नमावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वली समोवसरण देखावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ए आकणी ॥ समोवसरण शोभा जे दीठी, क्षण क्षण सांभरी आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ भूतल सुगंधी जल वरसावे, फूलना पगर भरावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ १ ॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडानी शोभा रचावशे ॥

जि० ॥ एक० ॥ रूपानो गढने कनक कोशीशां, वच्चे रतन जडावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥२॥ रतनगढे मणिना कोशीशा, झगमग ज्योति दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चारे दुवारें एंशी हजारा, शिव सोपान चढावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ३ ॥ देव चार कर आयुद धारी, द्वारे खडा करे चाकरी ॥ जि० ॥ एक० ॥ दूर पासथी एक समे वदे, जरतीने लघु ठोकरी ॥ जि० ॥ एक० ॥४॥ सहस्स योजन ध्वज चार ते उचा, तोरण चउ अह वावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ मगल आठने धूप घटाली, फुलमाल कर पूतली ॥ जि० ॥ एक० ॥५॥ आठ सुरी बीजे गढद्वारें, रत्न गढे चउ देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ जाति वैर ठंडी पशु पखी, तुज पद कमलने सेवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ ६ ॥ पचवरणमयी जल थल केरा, फूल अमर वरसावता ॥ जि० ॥ एक० ॥ परखदा सात ते ऊपर वेसे, मुनि नरनारी देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ ७ ॥ आवश्यक टीकायें पण उत्तर, थाये न कुसुम किलामणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ साधवी वैमानिकनी देवी, ऊभी सुणे दोय चूरणी

॥ जि० ॥ एक० ॥७॥ बत्रीश धनुष अशोक ते उचो, चामर छत्र धरावजो ॥ जि० एक० ॥ चउमुख रयण सिंहासन बेसी, अमृत वयण सुणावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥९॥ धर्मचक्र भामंडल तेजें, मिथ्या तिमिर हरावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जव अमें सुणीयें, तब देवछंदे सुहावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥१०॥ देवतासुरि कवि साचु बोले, जिहां जाशो तिहां आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रत्नादिक अपछरनी टोली, वंदी नमी गुण गावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ ११ ॥ अंतरयामी दूरें विचरो, मुजचित्त भीनु ज्ञानशु ॥ जि० ॥ एक० ॥ हृदयथकी जो दूरें जाउं, तो अमें कौतुक मानशु ॥ जि० ॥ एक० ॥१२॥ सुलसादिक नव जिनपद दीधु, अमशु अंतर एवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वीतराग जो नाम धरावो, सहुने सरिखा तेवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥१३॥ ज्ञाननजरथी वात विचारो, रागदशा अम रूअडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ सेवक रागें साहेब रीजो, धन धन त्रिशला मावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति सघला तूसे, पण

अमें आमण दूमणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीगुनवीर हजूरें रहेता, उछव रंग वधामणा ॥ जि० ॥ एक०॥ ॥१५॥ इति श्री समवसरण स्तवन ॥ सपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥

॥श्रीगौतम पूछा करे, विनय करी शीश नमाय प्रभुजी ॥ अविचल स्थानक मे सुण्युं, कृपा करी मोय बताय प्रभुजी ॥ शिवपुर नगर सोहामणु ॥१॥ ए आंकणी ॥ आठ कर्म अलगा करी, सारया आतम काम हो ॥ प्र० ॥ छूटया ससारनां दु खथकी, तेणे रहेवानु किहां ठाम हो ॥ प्र० ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे ऊर्ध्व लोकमा, सिद्द शिलातणु ठाम हो गौतम ॥ स्वर्ग छवीशनी उपरें, तेहनां बारे नाम हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ३ ॥ लाख पिस्तालीश जोजना, लावी पोहोली जाण हो॥ गौ०॥ आठ जोजन जाडी विचें, छेके मख पख ज्यु जाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ॥४ ॥ उज्वल हार मोती तणो, गोदुग्धशख वखाण हो ॥ गौ० ॥ ते थकी ऊजली अति घणी, उजट छत्र सठाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन स्वर्णसम

दीपती, गठारी मठारी जाण हो ॥ गौ० ॥ फटक रत्न थकी निर्मली, सुआली अत्यंत वखाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ६ ॥ सिद्धशिला उलवी गया, अधर रह्या सिद्ध राज हो ॥ गौ० ॥ अलोकसु जाई अरुया, सारया आतम काज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥७॥ जन्म नहीं मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो ॥ गौ०॥ वैरी नहीं मित्रज नहीं, नहीं सजोग विजोग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ८ ॥ भूख नहीं तरषा नहीं, नहीं हर्ष नहीं सोग हो ॥ गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषया रस योग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ९ ॥ शब्द रूप रस गध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो ॥ गौ० ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मोनपणु नहीं खेद हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर तिहा कोइ नहीं, नहीं वसती न उजाम हो ॥ गौ० ॥ काल सुगाल वर्त्ते नहीं, रात दिवस तिथि वार हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो ॥ गौ० ॥ मुक्तिम। गुरु चेला नहीं, नहीं लघु वडाई ताम हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १२ ॥

अनंता सुखमां झीली रह्या, अरूपो ज्योति प्रकाश हो ॥ गौ० ॥ सहु कोईनें सुख सारीखां, सघजानें अविचल वास हो ॥ गौ० ॥ शि०॥१३॥ अनत सिद्ध मुगतें गया, वली अनता जाय हो ॥ गौ० ॥ अवर जग्या रूधे नही, ज्योतिमा ज्योति समाय हो ॥गौ० ॥ शि० ॥१४॥ केवल ज्ञान सहित छे, केवल दर्शन खास हो ॥ गौ० ॥ खायक समकित दीपतु, कदीय न होवे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १५ ॥ सिद्ध स्वरूप जे ओलखे आणी मन वैराग हो ॥ गौ० ॥ शिवसुंदरी वेगें वरे, नय कहे सुख अथाग हो ॥ गौ० ॥ शिव० ॥१६॥ इति श्री सिद्धस्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सिद्ध भगवाननु स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोभा रे शी कहु ॥ ए आकणी ॥

सिद्ध जगत शिर शोभता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी लीलानी लेहेरमा, सुखिया छे शिव गाम ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ महानंद अमृतपद नमो, सिद्धि कैवल्य नाम ॥ अपुनर्भव ब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥ ॥ सि० ॥ २ ॥ सश्रेय नि.श्रेय अक्षरा, ...मम

स्तनोहाण ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष मुक्ति निरवाण ॥ सि० ॥३॥ अचल महोदय पद लह्यु, जोता जगतना ठाठ ॥ निज निजरूपें रे जुजुआ, वीर्यां कर्म ते आठ ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु अवगाहना, नामे निकसे वदन्न ॥ श्री शुभवीरने वदतां, रहियें सुखमा मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गौतम प्रभातिस्तवन ॥ प्रारभ ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात उठी नमो, गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्याता सदा, चढती कला होय वशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुभूति नंदन विश्वजन वंदन, दुरित निकंदन नाम जेहनु ॥ अभेदबुद्धें करी भविजन जे भजे, पूर्ण पोहोंचे सही भाग्य तेहनु ॥ मा० ॥२॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एहज गौतमतणु ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नहीं माहात्म्य केहेनु ॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बल तेज ने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखरू प्रचरू प्रताप होय अवनिमा, सुर नर जेह

नें शीश नामे ॥ मा० ॥ ४ ॥ प्रणव आदें धरी माया बीजे करी, स्वमुखें गौतमनाम ध्याये॥ कोमि मनका मना सफल वेगें फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥५॥ दुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधि ने व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर न्नांजे वली, गौतमनाम जपता उल्लासें ॥ मा० ॥६॥ तीर्थ अष्टापदें आपलब्धें जइ, पन्नरशें त्रण ने दिरक दीधी ॥ अठम पारणे तापस कारणें, क्षीरलब्धें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस पच्चास लगें गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसा लगें केवल न्नोगव्यु, न्नक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल गौतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि ऋद्धिने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस सौन्नाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ ए ॥ इति गौतम प्रन्नातिस्तवन ॥

॥ अथ एकादस गणधरनु प्रन्नातीयु ॥

॥ चालोने प्रीतमजी प्यारा शेत्रुंजे जइए —

॥ प्रन्नाते, ...का गणधर

धर वदोरे भविका गणधर वंदो ॥ प्रभा० ॥ इन्द्रभूति नामे पहेलारे गणधर, जीवनो संदेह ॥ अग्निभूतिने कर्मनो संदेह, नमिये गुण गेह ॥ प्रभा० ॥१॥ जीव शरीर बे एकज माने, वायुभूति नामे ॥ गौतम गोत्र सहोदर त्रण, प्रणमु पुन्य कामे ॥ प्रभा० ॥२॥ चोथा गणधर व्यक्तजी वदो, सर्व सून्य माने ॥ आ भव परभव सरखो थावे, सोहम अभिधाने॥प्र०॥३॥मन्डिक गणपति छठारे जिनना, बध मोक्ष टाले ॥ मौरीय पुत्रने देवनो संदेह, हैयमामे साले ॥ प्रभा० ॥४॥ नारकी जगमां नजरे न देखे, अकपित बोले ॥ अचल भ्राताजी पून्य पाप दोय, संशयमां झोले ॥ प्रभा० ॥५॥ मेता-रजने पर भव शका, गणपति परभासे ॥ मोक्ष घटे नहि युक्ति करता, आव्या प्रभु पासे ॥ प्रभा० ॥ ६ ॥ संदेह भागीने मुक्ति देखाडे, जिनवर माहावीर ॥ केवळनांणी प्रभुने वांदी, बुज्या माहा धीर ॥प्रभा०॥ ॥ ७ ॥ चुमालीसेय ब्राह्मण साथे, लेइ श्रमण दीक्षा ॥पामे एकादश प्रभुनी पासे, त्रिपदीनी शिक्षा ॥प्रभा०॥ ॥ ८ ॥ द्वादशांगी रचे सघलारे गणधर, करे जिनवर

सेवा ॥ उत्तमें गुरु पद पाये नमतां, लहीये शिव मेवा ॥ प्रज्ञाते० ॥ ए ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीनु पालणुं आरभ ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रतन जाइर्ठ, चोशठ इंद्र ना आसन कपे सार ॥ अवधिज्ञानें जोइ ध्यायो श्री जिन वीरने, आवे क्षत्रियकुंड नयर मझार ॥ माता० ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी माता कने, अवसर्पिणी निद्रा दीए सार ॥ एम मेरुशिखरे जिनने लावे न्नक्तिशुं, हरि पच रूप करी मनोहार ॥ माता० ॥ २ ॥ एम असख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रभुने उछव मल्हाणे लइ जाय ॥ पांडुक वन शिलायें जिनने लावे न्नक्तिशु, हरि उछगे थापे इंद्र घणु उछाय ॥माता०॥ ॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशे करी, वीरनो स्नात्र महोत्सव करे सार ॥ अनुक्रमें वीर कुमरने लावे जननी मदिरें, दासी प्रियवदा जई तेणी वार ॥ माता० ॥ ४ ॥ राजा सिद्धारथने दीधी वधामणी, दासीने दान अने बहु मान दिए मनोहार ॥ क्षत्रिय ...कावियो, प्रजा लोकने हरख ...

॥माता०॥५॥ घर घर श्रीफल तोरण आटज बांधियां, गोरी गावे मगल गीत रसाल ॥ राजा सिद्धारथे जनम महोत्सव करयो, माता त्रिशला थई उजमाल ॥ माता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला झूलावे पुत्र पारणे ॥ ए आकणी ॥ झूले लाडकमा प्रभुजी आनंद भेर ॥ हरखी निरखिने इन्द्राणीयो जाए वारणें, आज आनद श्रीवीरकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुखडा उपर वारु कोटी चंद्रमा, पकज लोचन सुदर विशाल कपोल ॥ शुकचचू सरिखी दीसे निर्मल नासिका, कोमल अधर अरुण रगरोल ॥ माता० ॥ ८ ॥ औषधि सोवनमढी रे शोभे हालरे, नाजुक आभरण सघला कचन मोतीहार ॥ कर अगुठो धावे वीरकुमर हर्ष करी, काइ बोलावता करे किलकार ॥ माता० ॥ ए ॥ वीरने लिलाडे कीधो छे कुंकुम चादलो, शोभे जडित मर्कत मणिमा दीसे लाल ॥ त्रिशलायें जुगतें आजी अणियाली वेहु आखडी, सुदर कस्तूरीनु टबकु कीधु गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कचन शोले जातना रत्नें जडियु पालणु, झुलावती वेला थाए

घूघरनो घमकार ॥ त्रिशला विविध वचने हरखी गा ये हालरु, खेंचे फूमतिआली कचन दोरी सार ॥ माता० ॥ ११ ॥ मारो लाडकवायो सरखा सगें रमवा जशे, मनोहर सुखडली हु आपिश एहने हाथ ॥ भोजन वेलां रम झम रम झम करतो आवशे, हुं तो धाइने भीडावीश हृदया साथ ॥ माता० ॥ १२ ॥ हस कारडव कोकिल पोपट पारेवडा, माहीं वप्पैया ने सारस चकोर ॥ मेनां मोर मेल्या छे रमकडा रमवा तणा, घम घम घुघरा वजावे त्रिशला किशोर ॥ माता० ॥ १३ ॥ मारो वीरकुमर निशाले भणवा जायशे, साथे सज्जन कुटुंब परिवार ॥ हाथी रथ घोडा पालायें भलु शोभतु, करी निशालगरणु अति मनोहार ॥ माता० ॥१४॥ मारा वीर समाणी कन्या सारी लावशु, मारा कुमरने परणावीश मोहोटे घेर॥ मारो लाडको वर राजा घोडे वेसशे, मारो वीर करशे सदाय लीला लहेर ॥ माता० ॥ १५ ॥ माता त्रिशला गावे वीर कुमरनु हालरु, मारो नदन जीवजो कोडी वरीस ॥ - थाशे भलो

मारा मनना मनोरथ पूरशे जगीश॥माता०॥१६॥धन्य धन्य क्षत्रीकुन्ड गाम मनोहरु, जिहां वीरकुमरनो जनम गवाय ॥ राजा सिद्धारथना कुलमांहे दिन-मणि, धन्य धन्य त्रिशला राणी जेहनी माय ॥माता०॥ ॥१७॥ एम सहीयर टोली न्नोली गावे हालरु, थाशे मनना मनोरथ तेहने घेर ॥ अनुक्रमें महोदय पदवी रूपविजय पद पामशे, गाए अमिय विजय कहे थाशे लीला लहेर ॥ माता० ॥ १८ ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनु हालरीयु प्रारम्भ ॥

॥ माता त्रिशला फुलावे पुत्र पालणे, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपाने वली रत्नें जडियु पालणु, रेशम दोरी घूघरी वागे घुम घुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नदने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीशें अतरे, होशे चोवीशमो तीर्थंकर जितपरिमाण ॥ केशी स्वामी मुख थी एवी वाणी साम्नली, साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण ॥ हा० ॥२॥ चौद स्वपनें होवे चक्री के जिनराज, वीता वारे चक्री नहिं हवे चक्री राज, जि

नजी पास प्रभुना श्री केशी गण धार, तेहने वचनें जाएया चोवीशमा जिन राज, मारी कूखें आव्या ता रण तरण ऋहाज, मारी कूखें आव्या त्रएय भुवन शिरताज, मारी कूखें आव्या सब तीरथनी लाज, हुतो पुएय पनोति इद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुऊने दोहोलो उपन्यो जे वेसु गज अंबा मीयें, सिंहासनपर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ सहु लक्षण मुऊने नदन ताहारा तेजनां, ते दिन संभारुं ने आनद अग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारने आठ छे, तेहथी निश्चय जाएया जिनवर श्री जगदीश ॥ नदन जमणी जघें लछन सिंह विराजतो, में पहेले सुपनें दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नदन नवला बधव नदीवर्धनना तमें, नदन भोजाइयोना देयर छो सुकुमाल ॥ हसशे भो जाइयो कही दीयर महारा लाडका, हसशे रमशे ने वली चूटी खणशे गाल, हसशे रमशे ने वली ठु सा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नदन नवला चेडा रा जाना भाणेज छो, नदन नवला पांचशे मामीना

न्नाणेज हो, नदन मामलीयाना न्नाणेजा सुकुमाल ॥ हसशे हाथे उछाली कहीने नाहाना न्नाणेजा, आरयो आजी ने वली टवकु करशे गाल ॥ हा० ॥ ॥७॥ नदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां, रत ने जमीया फालर मोती कशवी कोर ॥ नीलां पीलां ने वली राता सरवे जातिनां, पहेरावशे मामी महारा न दकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नदन मामा मामी सूखरू ली सहु लावशे, नदन गजुवे न्नरशे लाडु मोतीचूर ॥ नदन मुखरा जोइने लेशे मामी न्नामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख न्नरपूर ॥ हा० ॥ ए ॥ नद न नवला वेरा मामानी साते सती, मारी न्नत्रीजी ने वेन नमारी नद ॥ ते पण गुंजे न्नरवा लाखणसाई लावशे, तुमने जोड जोड होशे अधिको परमानद ॥ ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावशे लाख टकानो घूघरो, वली शूमा मेना पोपट ने गजराज ॥ सारस हस कोयल तीतरने वली मोर जी, मामी लावशे रमवा नद तमारे काज ॥ हो० ॥११॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावियां, नदन तमने अमने

केलीघरनी माहे ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन ए
कनें मम्ले, बहु चिरजीवो आशीष दीधी तुमने त्याहे
॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरुगिरि पर सुरपतियें नवरा
विया, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥
मुखमा उपर वारु कोटि कोटि चन्द्रमा, वली तन पर
वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ नंदन नव
ला भणवा निशाले पण मूकशु, गजपर अंबाडी बे
सारी मोहोटे साज ॥ पसली भरशु श्रीफल फोफल
नागरवेलशु, सुखमली लेशु नीशालीयाने काज ॥
हा० ॥ १४ ॥ नदन नवला मोहोटा थाशो ने परणा
वशुं, वहूवर सरखी जोडी लावशु राजकुमार ॥ स
रखा वेवाई वेवाणने पधरावशु, वरवहु पोंखी लेशु
जोइ जोइने देदार ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीअर सासर
माहारा बेहु पख नदन ऊजला, महारी कूखें आव्या
तात पनोता नद ॥ महारे आगण वूठा अमृत दूधे
मेहुला, महारे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कद
॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गायु गुणता त्रिशला सु
पालणु, जे कोइ सा।

बीलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरु, जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥हा०॥१७॥ इति॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ पारणानी देशी ॥

॥ माता वामादे बोलावे जमवा पासने, जमवा वेला थइछे रमवाने चित जाय॥ चालो तात तुमारा बहु थाये उतावला, व्हेला हालोने भोजनीया टाढा थाय ॥ माता० ॥१॥ मातनु वचन सुणीने जमवाने बहु प्रेमशुं, बुद्धी बाजोठ ढाली बेठा थइ हुशीयार॥ विनय थाल अजुआली लालन आगल मूकीयो, विवेक वाटकीयो सोभावे थाल मझार ॥ माता० ॥ ॥ २ ॥ समकित सेलडीना छोलीने गट्टा मूकीया, दानना दाडम दाणा फोली आप्या खास ॥ समता सिताफलनो रस पीज्यो बहु राजीया, जुक्ती जामफल प्यारा आरोगोने पास ॥ माता० ॥ ३ ॥ मारा नानकीयाने चोखा चित्तनां चूरमा, सुमती साकर उपर भावसु भेलु घरत ॥ भक्ती भजीया पिरस्या पास कुमरने प्रेमशुं, अनुभव अथाणा चाखोने राखो

सरत ॥ माता० ॥४॥ प्रभुने गुण गुजाने ज्ञान गुद-
वना पीरस्या, प्रेमना पेंना जमज्यो मान वधारण
काज ॥ जाण पणानी जलेबी जमता भागे भूखनी,
दया डुधपाक अमीरस आरोगोने आज ॥ माता०
॥५॥ सतोष सीरोने वली पून्यनी पूरी पीरसी, सवेग
साक भला छे दातार ढीली दाल ॥ मोटाइ माल-
पुवाने प्रभावनानां पूनला, विचार वनी वघारी जम-
ज्यो मारा वाल ॥ माता० ॥ ६ ॥ रुची रायता रुमां
पवित्र पापन पीरस्या,चतुराइ चोखा उंशावी आएया
भरपूर ॥ उपर इडी दमन डुध तप तापे तातुकरी,
प्रीत्ये पीरस्यु जमजो जगजीवन सहनूर ॥ माता०
॥ ७ ॥ प्रीती पाणी पीधां प्रभावतीना हाथथी, तत्त्व
तबोल लीधा शियल सोपारी साथ ॥ अकज एला-
यची आपीने माता मुख वदे, त्रिभूवन तारी तरज्यो
जगजीवन जगनाथ ॥ माता० ॥ ८ ॥ प्रभुना थाल
तणा जे गुण गावेने सांभले, भेद भेदांतर समजे
ज्ञानी ते कहेवाय ॥ गुरु गुमान विजयनो शिष्य
कहे शिर नामीने, सदा सोभाग्यविजय थावे भीत

गाय सदाय ॥ माता० ॥९॥ इति ॥

॥ अथ श्री ज्ञान पंचमीनु स्तवन ॥

॥ढाल पहेली ॥ देशी रसीयानी॥

॥ प्रणमी हो पास जिणेसर प्रेमस्यु, आणी आणद अग ॥ चतुरनर ॥ पचमी तपनो महिमा अति घणो, केहेस्यु सुणज्योरे तेह ॥ चतुरनर॥ नाव नवें पचमी तप कीजीये ॥१॥ एम उपदेशें हो श्री नेमीसरु, पचमी करजोरे तेम ॥ चतु० ॥ गुणमजरी वरदत्त तणी परें, आराधें फल जेम ॥ च० ॥ नाव० ॥ २ ॥ जबुद्वीपे हो नरत मनोहरु, नयर पदम पुर खास ॥ च० ॥ राजा अजित सेन तिहां कणें, राणी यशोमती नांम ॥ च० ॥ नाव० ॥ ३ ॥ वरदत्त नामें कुवर तेहनो, कोढे व्यापीरे देह ॥ च० ॥ ज्ञान विराधन कर्म जे बाधीयु, उदये आव्युरे तेह ॥ च० ॥ ना० ॥४॥ तेणें नयरे सिहदास गृहवसें, कपुर तिलका तस नारि ॥ च० ॥ तस बेटी गुण मजरी रोगणी, वचने मुगी अमार ॥ च० ॥ ना० ॥५॥ चउ- नी विजयसेन सूरीसरु, आव्या तिण पुरजाम ॥

च० ॥ राजा शेव प्रमुख वंदन गया, सान्नली देशना ताम ॥ च० ॥ न्ना० ॥६॥ पुछे तिहां सिंहदास गुरु प्रत्ये, उपन्यो पुत्रीने रोग ॥च०॥ यह मुगी वली प-रणें को नही, एह स्या कर्मना न्नोग ॥ च० ॥ न्ना० ॥७॥ गुरु कहें पुरव न्नव तुमें सान्नलो, खेटक नयर वसत ॥ च० ॥ साहु जिनदेव अछे व्यवहारियो, सुंदरी घरणीनो कंत ॥ च० ॥ न्ना० ॥८॥ बेटा पांच थया छे तेहने, पुत्री अतीन्नलीच्यार ॥ च० ॥ न्नणवा मुक्यारे पांचे पुत्रने, पण ते चपल अपार ॥ च०॥न्ना०॥९॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ सीरोहीनो सेलोहो के उपर योधपूरी ॥ए देशी॥

॥ ते सुत पाचेहो के पठन करे नहीं, रामत करताहो के दीन जाये वही ॥ सीखावे पंमितहो के गन्नने रीस करी, आवी मातानेंहो के कहे सुत रुदन करी ॥ १ ॥ मात अध्यारु हो के अमनें मारे घणु, काम अमारे हो के नहि न्नणवा तणु ॥ सुखणी माता हो के सुतने शिख दीये, न्नणवा मत जाज्योहो के शु कठ सोस कीये ॥ २ ॥ तेरूवा तुमनें हो अध्यारु

आवें, तो तस हणज्यो हो के पुनरपि जिम नावें ॥ शिस देइ एम हो के सुदरी तेह तिहां, पाटी पोथीहो कें अगनीमां नाखी दीया ॥ ३ ॥ ते वात सुणीनेहो जिनदेव बोलें इस्यु, फिटरे सुदरीहो के काम कस्यु कीस्यु ॥ मुरख राख्या होके ए सर्वे पुत्र तमें, नारी बोली होके नवी जाणुं अमे ॥ ४ ॥ मुरख मोटाहो के पुत्र थया ज्यारें, न दीये कन्याहो कें कोइ तेहने त्यारे ॥ कत कहे सुणज्योहोके ए करणी तुमची, वचणन मान्याहो कें ते पहेला अमची ॥ ५ ॥ एम सुणीने हो के सुदरी क्रोधें चढी, प्रीतम सार्थे हो के प्रेमदा अतीसे वढी ॥ कतें मारी हो कें तिहाथी काल करी, ए तुझ बेटी हो कें थइ गुण मंजरी ॥ ६ ॥ पुरव भव एणे हो कें ज्ञान विराधियुं, पुस्तक बालीहो कें जे करम बाधीयु ॥ उदयें आव्युं हो के देहे रोग थयो, वचने मुगी हो के ए फल तास लह्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ललनानी देशी ॥

॥ निज पुरव भव सांभली, गुण मजरीने त्यार

॥ ललना ॥ जाति स्मरण उपन्यु, गुरुनें कह्यो उछांहि ॥ ललना ॥ भविका ज्ञान अभ्यासीये ॥१॥ ए आकणी ॥ ज्ञान भलो गुरुजी तणो, गुणमजरी कहे एम ॥ ल० ॥ शेठ पुछे गुरुने तिहां, रोग जाये कहो केम ॥ ल० ॥ भ० ॥२॥ गुरु कहें एह विधि सांभलो, जे कह्यो शास्त्र मझार ॥ ल० ॥ कार्तिक शुदि पचमी दीने, पुस्तक आगल सार ॥ ल० ॥ भ० ॥३॥ दीवो पच दीवट तणो, कीजीयें स्वस्तीक खास ॥ ल० ॥ नमो नाणस्स गणणु गणो, चोवीहार उपवास ॥ ल० ॥ भ० ॥४॥ पडिकमणां दोय कीजीये, देववदन त्रण वार ॥ ल० ॥ पच वरस पच मासनी, कीजीयें पचमी सार ॥ ल० ॥ भ० ॥५॥ हवे उजमणु पारणे, सांभलो विधिनो प्रपच ॥ ल० ॥ पुस्तक आगल मुकवां, सघला वाना पच ॥ ल० ॥ भ० ॥६॥ पुस्तक ठवणी पुजणी, नवकार वाली प्रत्य ॥ ल० ॥ लेखण खडीया झावला, पाठी कवली युगत्य ॥ ल० ॥ भ० ॥ ७ ॥ धान्य फलादिक ढोइए, कीजीयें ज्ञाननी भक्ति ॥ ल० ॥ उजमणा एम कीजीये, भावश जेहवी शक्ति

॥ ल० ॥ न० ॥८॥ गुरु वाणी एम सांजली, पचमो कीधी तेह ॥ ल० ॥ गुणमजरी मुगी टली, निरोगी थइ देह ॥ ल० ॥ न० ॥ए॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कपुर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा पुछे साधुने रे, वरदत्त कुवरने अग ॥ कोढ रोग ए कीम थयो रे, मुज नाखो नगवत ॥ सद्गुरुजी धन्य तुमारु ज्ञान ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ गुरु कहे जबुद्वीपमा रे, नरते श्रीपुर गाम ॥ वसु-नामा व्यवहारीयो रे, दोय पुत्र तस नाम ॥ सद्० ॥२॥ वसुसारने वसुदेव जीरे, दीक्षा लीये गुरु पास ॥ लघुबधव वसुदेवनेरे, पदवी दीये गुरु तास॥सद्० ॥ ३ ॥ पचसया अणगारनेरे, आचारज वासुदेव ॥ शास्त्र नणावे खातशुरे, नहीं आलस नित्यमेव॥सद्० ॥४॥ एक दिनसूरि सथारीयारे पुछे पद एक साध ॥ अरथ कहे गुरु तेहनेरे, वली आव्यो बीजो साध ॥ सद्० ॥ ५ ॥ एम बहु मुनि पद पुछवा रे, एक आवे एक जाय ॥ आचारजने उघमारे, थाये अति

अंतराय ॥ सह० ॥ ६ ॥ सूरि तिहां एम चिंतवेरे, किहां मुज लाग्युं पाप ॥ जो ए शास्त्रमां अभ्यासी-यारे, तो एटलो संताप ॥सह०॥७॥ पद न कछु हवे केहने रे, सघलु मुक्त विसार ॥ ज्ञान उपर इम आ-णीयोरे, त्रिकरण क्रोध अपार ॥ सह०॥८॥ बार दिवस अण बोलीयारे, अक्षर न कह्यो एक ॥ अशुभ ध्याने ते मरी रे, ए तुज सुत अविवेक ॥सह०॥९॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ वाणी सुणी वरदत्तजी, जाती स्मरण लह्यु ॥ निज पुरव भवदीठोजी, जेम गुरुए कह्यो ॥ वरदत्त कहे तव गुरुनेजी, रोग ए किम जावे ॥ सुदर काया होवेजी, विद्या किम आवे ॥ १ ॥ भाखे गुरु भला भावेजी, पचमी तप करो ॥ ज्ञान आराधो रंगेजी, उज-मणु करो ॥ वरदत्ते ते विधि कीधोजी, रोग दुरे गयो ॥ भुक्त भोगी राज पालीजी, अंते साधु थयो ॥२॥ गुणमजरी परणावीजी, साह जिनचंदने॥सुख भोगवी पछी लीधुजी, ...शुभ मने ॥ गुणमजरी ...तेजी, चा... ॥ विजय विमान ...

पाप प्रजालीने ॥३॥ भोगवी सुरसुख त्यांथीजी, च
विया दोय सुरा ॥ पाम्या जबु विदेहेंजी, मानव अ-
वतारा ॥ भोगवी राज्य उदाराजी, चारित्र लेसारा॥
हुवा केवलज्ञानीजी, पाम्या भवपारा ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ कोइलो पर्वत धुधलोरे लो ॥ए देशी॥

॥ जगदीसर नेमीसरेरे लो, भाख्यो एह सबंध
रे ॥ सोभागी लाल ॥ वारें परखदा आगलेरे लो, ए
सघलो प्रबध रे॥सोभा० ॥ नेमीसर जिन जय करु
रे लो ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ पचमी तप करवा भणीरे
लो, उत्सुक थया बहु लोक रे ॥ सो० ॥ महा पुरुषनी
देशना रे लो, तो केम होवें फोक रे ॥सो०॥नेमी०॥२॥
कार्तिक सुदि जे पचमी रे लो, सोभाग्य पचमी ना-
मरे ॥ सो० ॥ सौभाग्य लहीये एहथीरे लो, फलें मन
वठित कामरे ॥ सो० ॥ नेमी० ॥ ३ ॥ समुद्रविजय
कुल सेहरो रे लो, ब्रह्मचारी सीरदाररे ॥ सो० ॥ मो-
हनगारी माननी रे लो, रुडी राजुल नारी रे ॥सो०॥
॥नेमी०॥४॥ ते नवी परणी सुदरीरे लो, तो पण राख्यो
रग रे ॥ सो० ॥ मुगति महेलमां बेहु मलपारे

लो, अविचल जोरू अजग रे ॥ सो० ॥नेमी०॥ ५ ॥ तेणे ए माहातम जाणीयो रे लो, पांचमनो परगट रे ॥ सो० ॥ जे शांत लतां जावशु रे लो, श्री सघनें गहिगट्टरे ॥ सो० ॥नेमी०॥ ६ ॥ कलश ॥ एम सयल सुखकर, सकल दु खहर, गाइयो नेमीसरो ॥ तप-गच्छ राजा, वन दिवाजा, विजयाणद सूरीसरो ॥ तस चरण पदम, पराग मधुकर, कोविंद कुवरविजय गणी॥ तस शिष्य पचमी, स्तवन जाखे, गुणविजयज रगे मुणी ॥ ७ ॥ इति श्री ज्ञान पचमीनु व ढालनु स्तवन सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनु स्तवन ॥

॥ ढाल पहेली ॥

। तुने गोकुल बोलावे कान, गोविंद गोरीरे ॥ए देशी।

॥ श्री राजगृही शुज्ञ गाम, अधिक दिवाजे रे॥ विचरता वीर जिणद, अतिशय गाजेरे॥१॥चोत्रीश अने पात्रीश, वाणी गुण लाजेरे॥पाउधारया वधामणी जाय, श्रेणीक आवे रे ॥२॥ तिहा चोशठ सुरपति आवीने, त्रिगड वनावेरे ॥ तेमां वेसीने उपदेश, प्रजुजी सणावे

रे ॥३॥ सुरनरने तिर्यंच, निज निज जापारे ॥ तिहां समजीने जवतीर, पामे सुख खासारे ॥ ४ ॥ तिहां इन्द्रजूति गणधार, श्री गुरु वीरनेरे ॥ पूछे अष्टमीनो महीमाय, कहो प्रजु अमने रे ॥५॥ तव जाखे वीर जिणंद, सुणो सहु प्राणी रे ॥ आठम दिन जिनना कल्याण, धरो चित आणीरे ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ वालाजीनी वाटमी अमे जोतां रे ॥ एदेशी ॥

॥ श्री ऋषजनु जन्म कल्याणरे, वली चारित्र लह्यु जले वानरे, त्रीजा सजव निरवाण ॥ जविजन अष्टमी तिथि सेवोरे ॥ ए छे शिवबधू नारीनो मेवो॥ जविजन अष्ट० ॥१॥ ए आकणी ॥ श्री अजित सुमति जिन जनम्यारे, अजिनंदन शिवपद पाम्यारे, जिन सातमा शिव विसराम्या ॥ जवि० ॥२॥ वीशमा मुनिसुव्रत स्वामीरे, तेहनो जन्म मोक्ष गुण धामी रे, एकवीशमां शिव विसरामी ॥ जवि० ॥३॥ पार्श्वजिन मोक्ष महतारे, इत्यादिक जिन गुणवता रे, कल्याणक मोक्ष महता ॥ जवि० ॥४॥ श्री वीर जिणंदनी वाणी

रे, निसुणी समेज्या नवि प्राणी रे, आठम दिन अति गुण खाणी ॥ नवि० ॥५॥ आठ कर्म ते दुर पलाय रे, एथी अरु सिद्धि अरूद्धि थाय रे, ते कारण सीचो चित्त लाय ॥नवि०॥६॥ श्री उदयसागर सूरी रायारे, गुरु शिष्य विवेके ध्यायारे, तस न्यायसागर जय पाया ॥ नवि० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री एकादशीनु स्तवन ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चडावलानी देशी ॥

॥ द्वारिका नगरी समोसर्या रे, बावीशमा जिणचद ॥ वेकर जोडी नावशुरे, पूछे कृष्ण नरिंद ॥त्रुटक॥ पूछे कृष्ण नरिंद विवेके, स्वामी अग्यारश मानी अनेके ॥ एह तणो कारण मुज नाखो, महिमा तिथिनो यथारथ दाखो ॥ जी जिणदजी जीरे ॥१॥ (महिमा सुणवा तास नविक मन उल्लसेरे, अगीयारश दिन सार सदा हइयडे वसेरे) ए आकणी ॥ नेम कहे केशव सुणो रे, पर्व वडु छे तेण ॥ कल्याणक जिनना कह्यांरे, दोढशो एणे दिन जेण ॥ त्रुटक ॥ दोढशो एणे दिन सूत्र प्रसिद्ध, कल्याणक दश खेत्रना लीध॥

वपार ॥ त्र० ॥ जेहथी होये जवपार ते दाखो, गुरु कहे मौन एकादशी राखो ॥ तहत्ति करी विधिशु आराधे, मागशिर शुदि एकादशी साधे ॥ जी० ॥ ॥१०॥ शेठने सुखीयो देखीनेरे, जन कहे ए धर्मसार ॥ प्रेम सहित आराधता रे, कातिविजय जयकार ॥ त्रु० ॥ कातिविजय जयकार सदाइ, नित नित संपदा होये सवाइ ॥ एह तिथी सकल तणे मन जाइ, पहेली ढाल कही सुखदाइ ॥ जी० ॥११॥

॥ ढाल वीजी ॥ एकवीसानी देशी ॥

॥ एके दिवसेरे, शेठ सुव्रत पोसह धरे॥ सहकुटुंवेरे, रयणी समय काउसग करे ॥ तव आव्यारे, चोर लेवा धन आगणे ॥ कशी वाधेरे, गाठडी धननी ततक्षणे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ ततक्षणे वाधे द्रव्य वहुलु, शिर उपाडी सचरे ॥ तव देवशासन तीहा थन्या, चित्त अति चिता करे॥ दीठा प्रभाते कोटवाले, वाधी सोंप्या रायने ॥ वध हुकम दीधो राय तव तिहा, शेठ आव्या धायने ॥ २ ॥ नृप आगेरे, शेठे मूकी वहु भेटणु ॥ छोडाव्युरे, चोर सहुनु वधणु ॥ जग

वाध्योरे, महिमा श्री जिनधर्मनो ॥ केइ तजेरे, मारग मिथ्या भरमनो ॥३॥ त्रुटक ॥ मिथ्यात्व मारग तजीय पुरीजन, जैन धर्म अंगी करे ॥ एक दीवसें धग धग करती जदभट, अग्नी लाग्यो तिण पुरें ॥ बाले ते सुंदर हाट मंदिर, लोक नाठा धसमसी ॥ सहकुटुंब पौषध सहित तिणे दिन, शेठ बेठा समर सी ॥ ४ ॥ जन बोलेरे, शेठ सलूणा सांभलो ॥ हठ न करोरे, नासो अग्निमा कां बलो ॥ शेठ चिंतेरे, परीसह एह सहशुं सही ॥ व्रत खमणरे, एणे अवसर करशुं नहीं ॥५॥ त्रु० ॥ नही युक्त मुजने व्रत विलोपन, रह्यो एम दृढता ग्रही ॥ पुर बल्युं सघलुं शेठना घर, हाट त्यां उगरया सही ॥ पुरलोक अचरिज देखी सघलुं, अति प्रशंसे दृढपणुं ॥ हवे शेठ संग्रह करे रूडो, उजमणुं करवा तणुं ॥६॥ मुगता फलरे, मणि माणिकने हीरला ॥ पीरोजारे, विद्रुक गोमक अति भला ॥ स्वर्णादिकरे, सत धातु मेले रली ॥ खीरोदकरे, प्रमुख विविध अवर वली ॥७॥ त्र० ॥ वली धानने [illegible] विध फल फल मन [illegible]

अग्यार सख्या एक एकनी, ठवे श्री जिन आगळे ॥
जिन भक्ति भखे डुरीत खखे, टाळ लहे नरभव तणो
॥ महिमा वधारे सुविधि धारे, तप सुधारे आपणु
॥ ७ ॥ साते खेत्रेरे, खरचे धन मन उल्लसी ॥ सघ
पूजारे, साहमी भक्ति करे हसी ॥ दीये मुनिने रे,
ज्ञानोपकरण शुभमति ॥ अगीयारसीरे, एम उजवी
तेणे सुव्रते ॥ए॥ त्रु० ॥ तेणे सुव्रते एक दिवस वया,
सूरी जयशेखर गुरु ॥ सुणी धर्म अनुमति मागी
सुतनी, लीये सजम सुख करू ॥ अग्यार तरुणी ग्र-
ह्रिय सयम, तप तपी अति निर्मलु ॥ लही नाण
केवल मुक्ति पोहोता, लह्यु सुख घन उजळु ॥ १० ॥
दोय सय छठरे, एकशो अठम साररे ॥ खटमासीरे
एक चोमासी चाररे ॥ इत्यादिकरे, सुव्रत मुनिवर
तप करे ॥ अग्यारशीरे, तिथि सेवे मुनि मन खरे ॥
॥११॥ त्र० ॥ मन खरे पाळे शुद्द सयम, एक दिन
एक ऋषि तणे ॥ थइ उदर पीडा तेणे दीवसें, अछे
सुव्रत व्रत पणे ॥ एक देव वयरी पूर्व भवनो, चला-
ववा आव्यो तिहां ॥ मुनिराय सुव्रत तणे अगें, वे-

दना कीधी जिहां ॥ १२ ॥ समता धररे, निश्चल मेरु परें रह्यो ॥ सुर परिसहरे, निश्चल यइने सासह्यो ॥ नवी लोपेरे, मौन सुव्रत मुनिराजियो ॥ औषध पण रे, सुरें दाख्यो पण नवि कियो ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ नवि कियो औषध रोग हेने, असुर अति कोपें चढयो ॥ पाटु प्रहारें हणे त्यारे, मिथ्या मनि पापें मढयो ॥ रूपी क्षपक श्रेणी चढिय केवल, नाण लही मुगति गयो ॥ एम ढाल बीजी कांति भणतां, सकल सुख मंगल थयो ॥ १४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सीता हो प्रीया सीतारा परभात ॥ एदेशी ॥

॥ भाखी हो जिन भाखी नेमि जिणंद, एणीपरे हो जिन एणीपरे सुव्रतनी कथाजी ॥ सद्दहे हो जिन सद्दहे कृष्ण नरिंद, ठेदन हो जिन ठेदन भव भयनी व्यथाजी ॥१॥ पर्खदा हो जिन पर्खदा लोक तिवार, भावें हो तिहां भावें अगीयारस उच्चरेजी ॥ एहथी हो एम एहथी भविक अपार, सहेजे हो भव सहेजें सायर [illegible] ॥२॥ तारक हो जिन तारक [illegible]

तार, मुजनेहो प्रजु मुज निर्गुणने हित करी जी ॥ साची हो जिन साची चित्त अवधार, कीधी हो मैं कीधी ताहरी चाकरीजी ॥३॥ तरशु हो जिन तरशु जो तपसाधि, तुमची हो प्रजु तुमची तिहां मोटिम कीसीजी॥देश्स हो जिनदेश्स लुहिं समाधि, एवमी हो प्रजु एवमी कांइ गाढिम इसीजी ॥ ४ ॥ ठेहेमो हा जिन ठेहेमो साह्यो आज, मोहोटी हो प्रजु मोहोटी मेंआशा करीजी॥दीधा हो निण दीधा विण माहाराज, तूटीस हो किम तूटीस किम त्रिण डु ख हरीजी ॥५॥ज्व ज्वहो जिन ज्व ज्वें सरण, तुज्ऊ, होजो हो जिन होजो कलु केतु वलीजी॥ देजो हो जिन देजो सेवा मुज्ऊ, रगे हो जिन रगे प्रणमु लली ललीजी ॥६॥ त्रीजी हो एह त्रीजी पुरी ढाल, प्रेमें हो जिन प्रेमें कांतिविजय कहेजी॥नमतां हो जिन नमतां नेमिदयाल, मंगल हो घर मंगल माला महमहेजी ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ एम सकलसुखकर, डुरित डु खहर, ज्विक तरु नवजल धरु ॥ ज्व ताप वारक, जगत

तारक, जयो जिनपति जगगुरु ॥१॥ सत्तर सय छंगणोत्तेरे, रहि रुनोई चोमास ए ॥ सुदि मास मृगसिर, तिथि इग्यारश, रच्या गुण सुविखास ए ॥२॥ थय थुइ मंगल, कोमी त्नवना, पापरज दूरें हरे ॥ जयवाद आपे, कीर्त्ति थापे, सुजस दिसो दिसी विस्तरे ॥ ३ ॥ तपगछ नायक, विजय प्रन्न गुरु, शिष्य प्रेमविजय तणो ॥ कहे काति सुणतां, त्नविक त्नणता, लहो मंगल अति घणो ॥(पामीये मंगल अति घणो) ॥ ४ ॥ इति मौन एकादशी स्तवन संपूर्ण ॥

श्री महावीर स्वामिना पंच कल्याणकनुं बार ढालनुं स्तवन*

॥ ढाल पेहेली ॥

॥प्रनु चित धरीने अवधारो मुज वात ॥ ए देशी ॥

---

* आ स्तवन हंसराज नामना कोइ सुनिपुण मतिभावंत गृहस्थ श्रावके रच्युं छे तेमणे स्तवनने अंते गुरुवर्य श्री हीरसूरीश्वरजीनुं नाम जणाव्युं छे तेथी तेओ उक्त महात्माना समयमां थया होय एम निर्णय थाय छे. उक्त श्रावकवर्य श्रीऋषभदासजीना अगाउ थयेला होय एम जणाय छे, तेथी आ स्तवननी रचना प्राचीन छे तेमज भाषा घणी-मृदुपेशल, मीठी-मधुरी अने हृदयगम छे तेथी कंठाग्र करतां [illegible] हुज मजा आपे तेवु छे.

॥ सरसती भगवती[1] द्योउ मति चंगी, सरस सुरंगी वाण ॥ तुज पसाय माय चित्त धरीने, जिन गुण रयणनी खाण ॥१॥ गिरुवा गुण वीरजी, गायशु त्रिभुवनराय ॥ जसनामे घर मंगल माला, तस घर बहु सुख थाय ॥गि०॥२॥ जंबुद्वीप भरत क्षेत्रमाहे, नयर माहणकुंड ग्राम ॥ ऋषभदत्त वरविप्र वसे तिहां, देवानंदा तस प्रियानाम ॥गि०॥३॥ सुरविमान वर पुष्फोत्तर[2]थी, चवि प्रभु लीये अवतार ॥ तव ते माहणी रयणी[3] मध्ये, सुपन लहे दसचार[4] ॥ गि० ॥४॥ धुरे मयगल मलपतो देखे, बीजे वृषभ विशाल ॥ त्रीजे केशरी चोथे लक्ष्मी, पांचमे कुसुमनी माल ॥गि०॥५॥ चंद सूरज ध्वज कलश पदमसर, देखे ए देवविमान ॥ रयणरेल रयणायर राजे, चौदमे अग्नि प्रधान ॥गि०॥ ॥६॥ आनंद भर जागी सा सुंदरी, कंतने कहे परभात ॥ सुणीय विप्र कहे तुम सुत होशे, त्रिभुवनमांहे विख्यात ॥ गि० ॥ ७ ॥ अति अभिमान कियो मरीचभवे, भवि जुओ कर्म विचार ॥ तात सुता-

१ देवी २ पुष्पोत्तर, ३ रात्रि, ४ चौद

वर[1] तिहां थया कुन्नर, वली नीच कुले अवतार ॥ गि० ॥ ८ ॥ इणे अवसर इन्द्रासन मोले, नाणे करी हरि[2] जोय ॥ माहणी[3] कुखे जग गुरु पेखे, नमी कहे अघटतु होय ॥ गि० ॥ ए ॥ ततक्षण हरिणगमेषी तेडावी, मोकलीउं तेणे ठाय ॥ माहणी गर्भ अने त्रिशलानो, विहु वदली सुर जाय ॥ गि० ॥१०॥ वळी निशिभर ते देवानंदा, देखे ए सुपन असार ॥ जाणे ए सुपन त्रिशलाकर चढिया, जइ कहे निज भरतार ॥ गि० ॥ ११ ॥ कत कहे तु दुःख हर सुदरी, मुज मन अचिरज एह ॥ मरुथलमांहे कल्पद्रुम दीठो, आज संशय[4] टळ्यो तेह ॥ गि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नयर क्षत्रिय कुन्ड नरपति, सिद्धारथ भलोए ॥ आण न खन्डे तस कोयके, जग जस निरमलोए ॥ तस पटराणी त्रिशला सती, कुखे जगपति ए ॥ परम

---

१ स्वपुनी मृगावतीनो पति जे प्रजापति राजा तेना घरे पुत्र पणे त्रिपृष्ट वासुदेव पणे उत्पन्न थया. २ इन्द्र. ३ ब्राह्मणी ४ रांक (भीखारी … हेवा संबंध

हर्षे हियके धरी, ठविया सुरपति ए ॥ १ ॥ सुख सज्झाये पोढी देवी तो, चउद सुपन लहे ए ॥ जागती जिन गुण समरती, हरखती गह गहे ए ॥ राजहंस गति चालती, पीउ कने आवती ए ॥ प्रह उगमते सूरके, वीनवे निजपति ए ॥ २ ॥ सुणीय वात राय रजीउं, पंन्मित तेमीया ए॥ तेणे शुज्ञ सुपन विचारवा पुस्तक ठोमीयां ए ॥ बोले मधुरी वाणके, गुणनिधि सुत होसे ए ॥ सुख सपति धरे वाधशे, सकट जांजशे ए ॥३॥ पन्मितने रायतुसीया,[१] लछी[२] दीए घणीए ॥ कहे एह वाणी सफल होजो, अमने तुम तणी ए ॥ निजपद पन्मित सचर्या, राय सुखे रहेए ॥ ठेवी उदर गर्ज्ञ वाधतो, शुज्ञ ठोहला[३] लहेए ॥ ॥४॥ मातज्ञक्ति जिनपति करे, गर्ज्ञ हाले नहि ए ॥ सात मास वोली[४] गया, माय चिंता लही ए ॥ सहीयरने कहे साजलो, कोणे मारो गर्ज्ञ हर्यो ए ॥ हुं ज्ञोळी जाणु नही, फोगट प्रगट कर्यो ए ॥ ५ ॥

---

१ तुष्टमानथया. २ लक्ष्मी. ३ मनोरथ. ४ वीती

॥ चव्युरे सिंघासन इन्द्र, ज्ञाने निरखतां ए ॥ जाणी जनम जिणंद, इन्द्र तब हरखता ए ॥ १ ॥ आसनथी रे उठेय, भक्ति ए शुले ए ॥ वाजे सुघोषा घंट, सघळे रणझणे ए ॥ २ ॥ इन्द्र भुवनपति वीश, व्यंतरतणा ए ॥ बत्रीश रवि शशि दोय, दश हरि कल्पना ए ॥ ३ ॥ चोसठ इन्द्र आणंद, प्रणमी कहे ए ॥ रत्न गर्भा जिन मात, दुजी एसी नहीं ए ॥ ॥ ४ ॥ जन्म महोछवे देव, सविहु[1] आविया ए ॥ माय देइ निंद्रा मंत्र, सुत लेइ मेरु गया ए ॥ ५ ॥ कंचन मणि भृंगार[2], गंधोदके भर्या ए ॥ किम स-हशे लघुवीर, हरि संशय धर्यो ए ॥ ६ ॥ वेहेशे नीर प्रवाह, केम ते नामिये ए ॥ न करे नमण सनात[3], जाण्यु स्वामीये ए ॥७॥ चरण अंगुठे मेरु, चांपी ना-चीयो ए ॥ मुज शिर पग भगवंत, एम कही माची-यो ए ॥८॥ उलट्या सायर सात, सरवे जळहल्या ए ॥ पायाळे नागेंद्र, सघळा सळसळ्या ए ॥ ए ॥ गिरिवर त्रुटे टुंक, गड गडी पडे ए ॥ तीन भुवनना

1 सर्वे 2 विशाळ कळश, 3 स्नात्र

लोक, सघळे लरुयके ए ॥१०॥ अनत वल अरिहृत, सुरपतिए कह्यु ए ॥ हु मूरख सहि मूढ, एटलु नवि लह्यु ए ॥११॥ प्रदक्षिणा देइ खामेय, उंछव करे ए॥ नाचे सुर गाये गीत, पुण्य पोते भरे ए ॥१२॥ इणे सुखे स्वर्गनी लील, तृण सरखी गणे ए॥ जिन मुकी मायने पास, पद गया[1] आपणे ए॥१३॥ माय जागी जूए पुत्र, सुरवरे पूजीउं ए ॥ कुमल दोय देवडुष्य, अमीय[2] अगुठे दीयो ए ॥१४॥ जन्म महोछव राय, ऋद्धिये वाधियो ए ॥ सज्जन सतोपी नाम, वर्द्धमान थापीयो ए ॥ १५ ॥

॥ढाल पांचमी॥ प्रभु पासनु मुखडु जोवा ॥ए देशी॥

॥ प्रभु कल्पतरु सम वाधे, गुण महिमा पार न लाधे ॥ रूपे अद्भुत अनुपम अकल, अगे लक्षण रिद्या सकल ॥१॥ मुख चंद कमल दल नयण, सास सुरभि गंध[3] मीठां वयण ॥ हेम वरणे प्रभु तनु शोभावे अति निर्मल विण नवरावे[4] ॥२॥ तप तेजे सूरज सोहे,

१ स्वस्थाने २ ... वगर धोइ पण ... ३ सुगंधी श्वासोश्वास ४ मधुर्न ... स्नान-विना.

जोता सुर नरना मन मोहे ॥ प्रभु रमे राजकुंवर शु वनमा, मायतायने आनंद मनमां ॥३॥ बल अतुल वृषभगति वीर, इन्द्रे सभामां कह्यो जिनधीर ॥ एक सुर मूढ वात न माने, आव्यो परखवा वन रमवाने ॥ ४ ॥ अहि थइ वृक्ष आमलीये राख्यो, प्रभु हाथे झाली दूरे नाख्यो ॥ वळीबालक थइ आवी रमिउं, हारी वीरने खांधे लइ गमिउं ॥५॥ मायताय दुःख धरी कहे मित्र, कोइ वर्द्धमानने लइ गयो शत्रु ॥जा तो सुर वाध्यो गगने मिथ्याती, वीरे मुष्टीये हण्यो पड्यो धरती ॥ ६ ॥ पाय नमी नाम दीधु महावीर, जेहवो इन्द्रे कह्यो तेवो धीर ॥ सुर वळिउं प्रभु आव्या रंगे, माय तायने उलट अंगे ॥७॥

॥ ढाल छठी ॥

वस्तु–राय उछव राय उछव करे मनरंग, लेखकशाळाए सुत ठवे ॥ वीर ज्ञान राजा न जाणे, तब सौधर्म इन्द्र आविया, पूछे ग्रंथ स्वामी वखाणे॥ व्याकरण जैन तिहां कीउं, आनंद्यो सुरराय ॥ वचन प्रभु भारती, पड्यो निरमय थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

यौवन वय जब आविया ए, राय कन्या जशोदा परणाविया ए ॥ विवाह महोछव शुभ किया ए, सर्वे सुख ससारना विलसियाए ॥ १ ॥ अनुक्रमे हुइ एक कुअरी ए, त्रीश वर्ष जिनराज लीला करी ए ॥ मात पिता सदगति गया ए, पछे वीर वैरागे पूरिया ए ॥२॥ मयणरायसेन जीतीउंए, वीरे असार ससार मन चिंतियोए ॥ राजरमणी ऋद्धि परिहरीए, कहे कुटुंबने लेशु सयम सिरीए ॥३॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ पितरीउं सुपासरे, भाइ नंदि वर्धन ॥ कहे वछ एम न कीजीये ए ॥१॥ आगे माय ताय विछोहरे, तु वळी व्रत लीये ॥ चादे खार न दीजीए॥२॥ नीर विना जीम मछरे, वीर विना तिम ॥ टळवळतु इम सहु कहे ए ॥३॥ कृपावंत भगवतरे, एह विना वळी ॥ वरस बे जाजेरा रह्या ए ॥ ४ ॥ फासु लीए

घर नवि जमे ॥ चित्त चा

रमे न करे राजनी चिंतरे,

त्रिभुवन धणी ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एक दिन ध्यान पुरु करी, प्रभु नयरिये पोहोता गोचरी ॥ तिहा वैद्ये, श्रवणे खीला जाणीयाए ॥ पारणु करी काउस्सग्गे रहा, तिहा वैद्ये सच[1] भेळा कीआ ॥ बाधीया, वृक्षे दोर खीला ताणिया ए ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ ताणी काढया दोर खीला, वीर वेदन थइ घणी ॥ थ्याक्रंद करता गिरि थयो शत[2] खंड, जुओ गति कर्मह तणी[3] ॥ बांधेरे जीवडो कर्म हसता, रोवतां छूटे नहि ॥ धन्य धन्य मुनिवर रहे समचित्त,कर्म एम त्रूटे सहि ।६।

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ जूओ जूओ करमे शु कीधु रे,अन्न वर्ष ऋषभे न लीधु रे ॥ कर्म वश म करो कोइ खेद रे, मल्ली नाथ पाम्या स्त्री वेद रे ॥ १ ॥ कर्मे चक्री ब्रह्मदत्त नडियो रे, सुभूम नरकमाहे पडियो रे ॥ भरत बाहु-बल शु [4]भडीयो रे, चक्री हार्यो रायजस चडीयो रे ॥२॥ सनतकुमारे सह्या रोग रे, नल दमयती वियो-गरे ॥ वासुदेव जरा कुमरे मार्यो रे, बलदेव मोह-

---

[1] ओजार (सांग्सी वि) [2] सो [3] कर्मनी [4] लडयो

नीए [1]धार्यो रे ॥ ३ ॥ ज्ञाड शब मस्तके वहीयो रे, प्रतिबोध सुर मुखे लहीयो रे ॥ श्रेणिक नरके ए पोहोतो रे, वन गया दशरथ [2]पुत्तो रे ॥ ४ ॥ सत्यवत हरिचंद धीर रे, कुंब घरे शिर वह्यु नीर रे ॥ कुबेर दत्तने कुयोग रे, बेहेन वली माता शु ज्ञोग रे[3]॥५॥ पर हथ्थे [4]चंदन बाल रे, चटिर्ढ मुज्जडाने आल रे ॥ मयण रेहा मृगांकलेखा रे, दु ख ज्ञोगविया ते अनेका रे ॥६॥ करमे चंड कलंमयो रे, राय रंक कोइ न मुकयो रे ॥ इंद्र अहल्या शु लुब्धो रे, रयणादेवी रवि माल कीधो रे ॥७॥ [5]ईश्वर नारीये नचाव्यो रे, ब्रह्मा ध्यानथी चूकाव्यो रे ॥ आठ आठ करम प्रधान रे, जीत्या जीत्या श्री वर्द्धमान रे ॥८॥

॥ ढाल बारमी ॥ दीन सफळ मनोहर ॥ ए देशी ॥

॥ इम कर्म हएया सवि, धन्य पुरुष महावीर॥ बार वर्ष तप्यो तप, ते सघलो [6]निरनीर ॥ शालि वृक्ष तळे प्रभु, पाम्या केवल ज्ञान ॥ समोसरण रचे

---

१ घेरायो २ पुत्रो ३ अढारनाता पैकी. ४ चन्नबाळा ५ महादेव ६ पाणी विना–निर्जल

सुर, देशना दे जिन जाण ॥१॥ अपापा नयरी, यज्ञ करे विप्र जेह ॥ सर्वे बूजवी दिख्या[१], वीरने वंदे तेह ॥ गौतम ऋपि आदे, चारशें चार हजार ॥ सहस्स चौद मुनीसर, गणधर वर इग्यार ॥२॥ चंदन वाला मुख, साधवी सहस छत्रीश ॥ दोढ लाख सहस नव, श्रावक दे आशिष ॥ त्रण लाख श्राविका, अधिकी सहस अढार ॥ संघ चतुर्विध थाप्यो, धन्य धन्य जिन परिवार ॥ ३ ॥ प्रज्ञु अशोक तरु तळे, त्रिगमे करे वखाण ॥ सुणे चारे परखदा, योजन वाणी प्रमाण ॥ त्रण छत्र सोहे शिर, चामर ढाळे इंद्र ॥ नाटक वद वत्रीश, चोत्रीश अतिशय जिणंद ॥४॥ फूल पगर जरे सुर, वाजे डुंडुन्नि नाद ॥ नमे सकळ सुरासुर, ठामी सवि परमाद ॥ चिहु रुपे सोहे, धर्म प्रकाशे चार ॥ चोवीशमो जिनवर, आपे जवनो पार ॥५॥ प्रज्ञु वर्ष बोहोंतेर, पाली निर्मल आय ॥ त्रिज्ञुवन उपगारी, तरण तारण जिनराय ॥ कार्तिक मासे दिन, दीवाली निरवाण ॥ प्रज्ञु मुक्ते पोहोता, पामे नित्य कल्याण ॥ ६ ॥

---

१ दीक्षित कर्या

॥कलश॥ इम वीर जिनवर, सयल सुखकर, नामे नव निधि संपजे ॥ घर ऋद्धि वृद्धि, सुसिद्धि पामे, एकमना जे नर भजे ॥ तपगछ ठाकुर, गुण वैरागर, हीरविजय सूरीश्वरो ॥ हंसराज वंदे, मन आणदे, कहे धन्य मुज ए गुरो ॥ १ ॥

॥ अथ दीवाली कल्पनु स्तवन ॥

॥ श्री श्रमण सघ तिलकोपम गौतम, सुगति प्रणिपत्य पादारविंद ॥ इन्द्रभूति प्रभवमहसो मोचक, कृत कुशल कोटि कल्याण कद ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग रामगिरि ॥

॥ मुनि मन रजणो, सयल दु ख भजणो, वीर वर्धमानो जीणदो ॥ सुगति गति जीम लही, तिम कहु सुण सही, जीम होए हर्ष हइमे आणदो ॥मु०॥१॥ करीय उद्घोषणा देश पुर पाटणे, मेघ जीम दान जल बहूल वरसी ॥ धण कणग मोतिया झगमगे जोतिया, जीन देइ दान इम एक वरसी ॥मु०॥२॥ दोय तिण तोय[1] उपवास आदे करी, मागसिर कृष्ण दशमी

ढिहाके ॥ सिद्धि साम्हा थइ वीर दीक्षा लेइ, पाप सताप मल दूर काढे ॥ मु० ॥३॥ बहूल ब्रह्मण घरे पारणु सामिए पुण्य परमान्न[1] मध्यान्ह किधु ॥ त्रुवन गुरु पारणा पुन्यथी ब्रह्मणे, आप अवतार फल सयल लिधु ॥ मु० ॥४॥ कर्मचंडाल गोसाल सगम सुरो, जीणे जीन उपरे घात मंड्यो ॥ एहमो वयर तें पापिया सें कर्यो, कर्म कोमि तुहिज सवल दंड्यो ॥ मु० ॥ ५ ॥ सहज गुण रोपिर्ड नामे चंडकोपिर्ड, जीनपदे ध्यान जिम जेह विलगो ॥ तेहने बुझवि उध्धर्यो जगपति, किधलो पापथी अतिहें अलगो ॥ मु० ॥ ६ ॥ वेदयामा त्रियाम लगें खेदियो, त्नेदियो तुऊ नवि ध्यान कुन्तो ॥ शूलपाणि अन्नाणि अहो बुझव्यो, तुऊ कृपा पार पामे न सन्तो ॥ मु० ॥७॥ सगमे पिम्कीर्ड प्रन्नु सजल लोयणे, चिंतवे बुटश्ये किम एहो ॥ तास उपरें दया एहकि शी करी, सापराधे जने सबल नेहो ॥ मु० ॥ ८ ॥ इम उपसर्ग सहेना तरणि[2] मित वरस, सार्द्ध उपर अधिक पक्ष एके ॥

---

१ खीर २ बार.

चोर केवल लह्युं कर्म दुःख सवि दह्यु, गहगह्यु सुर निकर[1] नर अनेके ॥ मु० ॥ ए ॥ इन्द्रभूति प्रमुख सहस चउदश मुनि, साहुणी सहस छत्रीस विहसी ॥ उगणसठ सहस एक लाख श्रावकाञ्चा, श्राविका त्रिलख अढार सहसी ॥ मु० ॥ १० ॥ इम अखिल साधु परिवारशु परवर्यो, जलधि[2] जगम जीश्यो गुहिर[3] गाजे ॥ विचरता देश परदेश नित्य देशना, उपदिशे सयल संदेह भाजे ॥ मु० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ विवाहलानी देशी ॥

॥ हवे निय आय अतीम समे, जाणिय श्री जिनरायरे ॥ नयरी अपापाए आवीया ॥ राय समाजने वायरे ॥ हस्तिपालगराये दीठला, आनियका अगण वाररे ॥ नयण कमल दोय विहसीआ, हरसीआ हइडा मझाररे ॥ १ ॥ भले भले प्रभुजी पधारीया, पावस पावन किधारे ॥ जनम सफल आज अम तणो अम्ह घरे पा[illegible] दीधारे ॥ राणी राय जिन प्रणमीया, भ[illegible] यरे वधाविरे ॥ जिन सनमुख [illegible]

जोमीय, वेगला आगले आविरे ॥ २॥ धन अवतार अमारमो, धन दिन आजुनो एहोरे॥ सुरतरु आगणे मोरिडं, मोतियमे वूठलो मेहोरे ॥ आ शुं अमारमे एवमो, पूरव पुन्यनो नेहोरे ॥ हैमलो हेजे हरसिडं, जो जिन मलिडं सजोगोरे ॥३॥ अति आदर अवधारिए, चरम चोमासलु रहियारे ॥ राय राणि सुरनर सवे, हियमला माहे गहगहियारे ॥ अमृतथी अति मीठमी, साजली देशना जिननीरे ॥ पाप संताप परो थयो, शाता थइ तन मननीरे ॥ ४ ॥ इन्द्र आवे आवे चन्द्रमा, आवे नरनारीना वृंदरे ॥ त्रिण प्रदक्षणा देइ करी, नाटिक नव नवे ठदोरे ॥ जिन मुख वयणनी गोठमी, तिहा होये अति घणी मीठीरे ॥ ते नर तेहज वरणवे, जीणे निज नयणले दीठीरे ॥५॥ इम आणंदे अतिक्रम्या, श्रावण भाद्रवो आसोर॥ कौतिक कोमिलो अनुक्रमे, आवियमो कार्तिक मासोरे ॥ पाखि पर्व पन्होतलु, पोहतलु पुन्य प्रवाहिरे ॥ राय अढार तिहा मिल्या, पोसह लेवा उच्छा-
. ॥ त्रिभोवन जन सवि तिहा मिल्या, श्री

जिन वंदन कामोरे ॥ सहेज सकिरण तिहा थयो, तिज पगला नहि गामोरे॥ गोयम स्वामि समोवसी, स्वामि सुधर्मा तिहां वेठारे॥ धन धन ते जिणे आपणे, लोयणे जिनवर दिठारे ॥७॥ पूरण पुन्यना ऊपध, पोषध व्रत वेगे लिधारे ॥ कार्तिक काली चउदशे, जिन मुखे पचखाण किधारे॥ राय अढार प्रमुख घणे, जिन पगे वादणा दिधारे॥जिन वचनामृत तिहा घणे, ज्ञनियणे घट घट पीधारे ॥८॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ राग मारु ॥

॥ श्री जगदीश दयालु दुःख दूरे करेरे, कृपा कोरि तुज जोमी॥ जगमारे जगमारे कहिए केहने वीरजीरे ॥१॥ जग जनने कुण देशे एहवी देशनारे, जाणि निज निरवाण॥ नवरसरे नवरसरे सोल पहोर दिये देशनारे ॥२॥ प्रवल पुन्य फल संसुचक सोहामणारे, [1]अझायणां पणपन्न ॥ कहियारे कहियारे महियां सुख सांजलि होएरे ॥ ३ ॥ प्रवल पाप फल अझ्यणां तिम तेटलारे, अण पुठयां छत्रीस ॥ सुण-

---

१ पचाँवन अध्ययन.

नीरे सुणतां रे जणता सनि मुख सपजेरे ॥४॥ पुण्य पाल राजा तिहां धर्म कथातेरेरे, कहो प्रभु प्रत्यक्ष देव ॥ मुजनेरे मुजनेरे सुपन अर्थ सनि साचलोरे ॥ ५॥ गज १ वानर २ खीर ३ द्रुम ४ वायस ५ सिंह ६ घमेरि, ७ कमलबीज ८ इम आठ ॥ देखिरे देखिरे सुपन सजनय मुक मन हुवेरे ॥६॥ ऊखर बिज कमल अस्थानके सिंहनुरे, जीन रहित शरीर ॥ सोवनरे सोवनरे कुंभ मलिन ए शु घटेरे ॥७॥ वीर जणे भुपाल सुणो मन थीर करीरे, सुमिण[1] अर्थ सुविचार ॥ हेमेरे हेमे रे धरज्यो धर्म धुरधरो ॥८॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ श्रावक सिंधुर सारिखा, जीनमतना रागी, त्यागी सह गुरु देवधर्म, तत्वे मति जागि ॥ विनय विवेक विचारवंत, प्रवचन गुण पूरा, एहवा श्रावक होयसे, मतिमत सनुरा ॥१॥ लालचे लागा थोकिजें, सुखें राचि रहिया, घरवासे आशा भ्रमर, परमारथ रहिया ॥ व्रत वैराग थकि नहि, कोइ लेशे प्राये,

१ स्वप्न

गज[1] सुपने फल एह, नेह नवि माहोमांहे ॥२॥ वानर चचल चपल जाति, सरखा मुनि मोटा ॥ आगल होस्ये लालचि, लोभी मन खोटा ॥ आचारज ते आचारहिण, प्रायें परमादि ॥ धर्म भेद करस्ये घणा, सहजे स्वारथ वादी ॥ ३ ॥ को गुणवत महत सत, मोहन मुनि रुमा ॥ मुख मीठा मायाविया, मनमाहे कुमा ॥ करस्ये माहोमांहे वाद, पर वादें नासे ॥ बीजा सुपन तणो विचार, इम वीर प्रकाशे ॥४॥ कल्पवृक्ष सरिखा होस्ये, दातार भलेरा ॥ देव धर्म गुरु वासना वरि वारिना वेरा ॥ सरल वृक्ष सविने दीऐं, मनमा गहगहता ॥ दाता दुर्लभ वृक्ष राज, फल फुले अहृता ॥५॥ कपटी जिनमत लिंगिया, वळी वबूल सरिखा ॥ खीर वृक्ष आभा थया, जीम कटक तिखा ॥ दान देयतां वारसी, अन्य पावन पात्री ॥ त्रिजा सुपन विचार कह्यो, जिनधर्म विधात्री ॥६॥ सिंह कलेवर सारिखो, जिन शासन सवलो ॥ अति दुर्दांत अगाह निय, जिनवायक जमलो ॥ परशासन सावज अज,

---

१ हाथी

ते देखी कपे ॥ चउथा सुपन विचार इम, जिनमुखथी जपे ॥७॥ गछ गगाजल सारीखो, मूकी मति हिणा ॥ मुनि मन राचे छिल्लरे, जीम वायस दीणा ॥ वञ्चक आचारज अनेक, तिणे भुलविया ॥ ते धर्मांतर आदरे, जडमति बहु भविया ॥८॥ पचम सुपन विचार एह, सुणीयो राजाने ॥ छठे सोवन कुंभ दीठ, मइलो सुणि काने ॥ को को मुनि दरसण चारित्र, ग्यान पूरण देहा ॥ पाले पचाचार चारु, छमि निज गेहा ॥ ए ॥ को कपटी चारित्र वेष, लेइ विप्रतारे[1] ॥ मइलो सोवन कुम्भ जीम, पिंम पापे भारे ॥ छठा सुपन विचार एह, सातमे इहिवर ॥ उकरडे उतपति थइ, ते शु कहो जिणवर ॥१०॥ पुण्यवत प्राणि हुस्ये, प्राहिं मध्यम जाति ॥ दाता भोक्ता ऋदिवत, निर्मल अवदात ॥ साधु असाधु जति वदे, तव सरीखा किजे ॥ ते बहु भड्क भवियणे, स्यो उलभो दीजे ॥११॥ राजा मंत्रिपरे सु साधु, आपोपु गोपी ॥ चारित्र सुधु राखस्ये, सनि पाप विलोपी ॥ सतम सुपन विचार वीर, जि-

१ छेतरे

नवरे इम कहियो ॥ अठम सुपन तणो विचार, सुणि-
मन गहगहिउं ॥ १२ ॥ न लहे जिनमतमात्र जेह,
तेह पात्र न कहिए ॥ दिधानु परन्नव पुण्य फल, काइ
न लहिये ॥ पात्र अपात्र विचार न्नेद, न्नोला नवि
लहेस्ये ॥ पुण्य अर्थे ते अर्थ आय, कुपात्रे देहस्ये ॥
॥ १३ ॥ ऊखर न्नूमि दृष्ट त्रिज, तेहनो फल कहिएं ॥
अष्टम सुपन विचार इम, राजा मन ग्रहियें ॥ एह
अनागत सवि सरुप, जाणि तिणे काले ॥ दीक्षा लीधी
वीर पास, राजा पुन्यपाले ॥१४॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग गोडि ॥

॥ इन्द्रन्नूति अवसर लहि रे, पुछे कहे जिनराय
॥ इशु आगल हवे होयस्येर, तारण तरण जीहाजोरे
॥ कहे जीन वीरजी ॥ १ ॥ मुज निर्वाण समय थ-
कीरे, त्रिहू वरसे नव मास ॥ माठेरो तिहां वेसइयेरे,
पचम काल निरासोरे॥कहे०॥२॥बारे वरसे मुज थकिरे,
गोतम मुज निरवाण ॥ सोहम वीशे पामशेर, वरसे
अखय सुख ठाणोरे ॥ कहे० ॥३॥ चउसठ वरसे मुज

थकीरे, जबूने निरवाण ॥ आथमसे आदित्य थकिरे, अधिक केवलनाणो रे ॥ कहे० ॥ ४ ॥ मन पज्जव परमावधिरे, क्षपकोपशम मन आंण ॥ सयम त्रिण जिन कल्पनीरे, [1]पुलागाहारग हाणरे ॥ कहे०॥ ५ ॥ सिज्जंभव अगणवेरे, करस्ये दस वैआलिय ॥ चउद पूर्वि जड थाइथीरे, थास्ये सयल विलिर्ज्जर ॥ कहे० ॥६॥ दोयशत पन्नरे मुक्त थकिरे, प्रथम सघयण संठाण ॥ पूवणु जगते नवि हूस्येरे, महाप्राण नवि ध्यांणोरे ॥ कहे० ॥७॥ चउत्रयपने[2] मुक्त थकिरे, होस्ये कालिक सूर ॥ करस्ये चउथी पजुसणेरे, वरगुण रयणनो पूरोरे ॥ कहे० ॥८॥ मुक्तथी पण चोराशियेरे,[3] होस्ये वयर कुमार ॥ दस पूर्वि अधिकालिर्ज्जरे, रहस्ये तिहा निरधारोरे ॥ कहे० ॥९॥ मुक्त निर्वाण थकि उर्सेरे,[4] विस पठी वनवास ॥ मुकी करसे नगरमारे, आर्य रक्षित मुनि वासोरे ॥ कहे० ॥ १० ॥ सहसें वरसें मुक्त थकिरे, चउद पूरव विछेद ॥ जोतिप आण

---

१ पुलाक लब्धि अने आहारक लब्धिनी हानी थशे. २ (४५३ ३ (५८४ वर्ष वित्ये) ४ (६२०)

मिलतां हूसेरे, बहूल मतातर नेडोरे ॥ कहे० ॥११॥ विक्रमथी पंच पच्याशिएरे, होस्ये हरिभद्र सूरि ॥ जिन शासन अजुवालसेरे, जेहथी टूरिया सवि दू रोरे ॥ कहे० ॥१२॥ द्वादश सत्त सत्तर समेरे, मु ऊथी मुनि सुर हिर ॥ वप्पभट्ट सुरि होयसेरे, ते जिन शासन वीररे ॥ कहे० ॥ १३ ॥ मुऊ प्रतिबिंब भरावस्येरे, आमराय भूपाल ॥ सार्द्ध त्रिकोटी सोवन तणोरे, तास वयणथी विशालोरे ॥ कहे० ॥१४॥ पो ऊस शत उगणोतरेरे, वरसे मुऊथी मुणिंद ॥ हेम सूरि गुरु होयस्ये रे, शासन गयण दिणंदोरे ॥ कहे० ॥१५॥ हेमसूरि पडिबोहीसे रे, कुमारपाल भूपाल ॥ जीन भक्ति करस्ये महोरे, जिन शासन प्रतिपालोरे ॥ कहे० ॥१६॥ गोतम नवळा समयथीरे, मुऊ शासन मन मेल ॥ माहोमाहे नवि होस्येरे, मल्ल गला गल केलोरे ॥ कहे० ॥१७॥ मुनि मोटा मायाविघारे, वेढीगारा विशेष ॥ आप सवारथ वसी थयारे, ए विटवस्ये वेषोरे ॥ कहे० ॥१८॥ लोभि लखपति हो·

१ (५८५ वर्षे) २ (१२१७ वर्षे) ३ (१६६९ वर्षे)

यस्येरे, जम सरिखा नूपाल ॥ सजन विरोधि जन हूसेरे, नवि लज्जालु दयालो रे ॥ कहे० ॥१ए॥ निर्लोज्नि निरमाइयारे, सुधा चारित्रवंत ॥ थोका मुनि महियले हूसेरे, सुण गौतम गुणवंतरे ॥ कहे० ॥२०॥ गुरु न्नगति शिष्य थोमलारे, श्रावक न्नगति विहीण ॥ मात पिताना सुत नहीरे, तें महिलाना आधिनोरे ॥ कहे० ॥२१॥ डुपसह सूरि फलगुसिरीरे, नायल श्रावक जाण ॥ सच्चसिरि निम श्राविकारे श्रतिम संघ वखाणयेरे ॥ कहे० ॥ २२ ॥ वरस सहस एकवीसतेरे, जिन शासन विख्यात ॥ अविचल धर्म चलावशेरे, गौतम आगम वातोरे ॥ कहे० ॥ २३ ॥ डूषमे डूषमा कालनीरे, ते कहिये शी वात ॥ कायर कंपे हैमजोरे, जे सुणता अनदातोर ॥ कहे० ॥२४॥

॥ ढाल ६ ॥ पिउमो घरे आवे—ए देशी ॥

॥ मुफसु अविहम नेह वाध्यो, हेज हैमा रंगे ॥ दृढ मोह बंधण सबल बांध्यो, वज्र जिम अन्नग ॥ अलगा थया मुज थकि एहने, उपजसेरे केवल निय

---

[1] स्नेहे वश पडेला

अगके ॥ गौतमरे गुणवंता ॥१॥ अवसर जाणि जिनवरे, पुछिया गोयम स्वाम ॥ दोहग डुखिया जीवने, आवियें आपण काम ॥ देव समा वन्नणो, जइ बुझवोरे ठेणे ढुकडे गामके ॥ गौ० ॥ २ ॥ सांन्नली वयण जिणदनु, आणद अग न माय॥ गौतम वे कर जोडि, प्रणम्या वीर जिनना पाय ॥ पागरया पूरव प्रीतथी, चउनांणिरे मनमां निरमायके ॥ गौ० ॥३॥ गौतम गुरु तिहा आवियां, वदाविउ ते विप्र ॥ उपदेश अमृत दीधलो, पीधलो तिणे क्षिप्र॥ धसमस करतां वन्नणे, वारि वागीरे थइ वेदन विप्रके ॥गौ० ॥४॥ गौतम गुरुनां वयणलां, नवि धर्यां तिणे कान॥ ते मरी तस शिर कृमि थयो, कामनीने एक तान॥ उछिया गोयम जाणिउं, तस चरीयोरे पोताने ज्ञान के ॥ गौ० ॥५॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग रामगिरि ॥

॥चोसठ मणनां ते मोति झगमगेरे, गाजे गुहिर गन्निर सिरेरे॥पुरा तेत्रीस सागर पूरवे रे,नादे लिणा लवसत्तमिया सूर रे ॥ वीरजी वखाणेरे जग

जन मोहियोरे ॥१॥ अमृतथी अधिकि मीठी वाणी रे, सुणतां सुखमो जे मनमे सपजेरे ॥ ते लहेस्ये जे पोहोचस्ये निर्वाणरे ॥ वी० ॥२॥ वाणि पमठदे सुर पम्बिवोहीयारे, सुणतां पामे सुख सपत्तिनी कोमरे ॥ विजा अमल उलटथी घणारे, आवी घेठा आगल वे करजोम रे ॥ वी० ॥३॥ सोहम इदो शासन मोही योरे, पूठे परमेश्वरने तुम आयरे ॥ वे घमि वधारो स्वाति थकी परहु रे, तो ञस्मग्रह सघलो दूरे जाय रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ शासन शोञा अधिकि वाधउये रे, सुखीआ होशे मुनिवरना वृदरे ॥ सघ सयलने सवि सुख सपदारे, होशे दिन दिनथी परमानदरे ॥ वी० ॥५॥ इदा न कदा रे कहिए केहनु रे, केणे साध्यु नवि जाए आयरे ॥ ञावि पदारथ ञावे निपजे रे, जे जिम सरज्यो ते तिम थायरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ सोल पहोरनी देता देशनारे, परधानकनामा[1] रुअमो अ-ज्ञयणरे ॥ कहेता काति वदि कहु परगमिरे, वीरजी पोहोता पचमी गति रयणरे[2] ॥ वी० ॥ ७ ॥ ज्ञान

१ प्रधान २ रात्री

दीवोरे जब दूरे थयो रे, तब किधि देवे दीवानी श्रेणिरे ॥ तिमरे चिहु वरणे दीवा किनवारे, दिवाळी कहियें ठे कारण तेणरे ॥ वी० ॥ए॥ आंसू परिपूरण नयण आखरूलो रे, मूकि चंदननी चेहमां अंगरे ॥ दिधो देवे दहन सघले मिळिजी रे, हा धिग धिग ससार विरंगरे[1] ॥ वी० ॥ए॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग विराग ॥

॥ वदेसु वेगे जइ वीरो, इम गौतम गहगहता ॥ मारगे आवतां सांजलिउ, वीर मुगति माहे पोहतारे ॥ जिनजी तु निसनेही मोटो, अविहड प्रेम हतो तुज उपरे, ते तें किधो खोटोरे ॥ जीनजी० ॥ ॥ १ ॥ हे हे वीर कर्यो अणघटतो, मुज मोकलिउ गामे ॥ अतकाले वेगा तुज पासे, हु स्ये नावत काम रे ॥ जी० ॥२॥ चौद सहस मुज सरिखा ताहरे, तुज सरिखो मुज तुहि ॥ विश्वासी वीरे ठेतरीउं, ते श्या अवगुण मुहिरे[2] ॥ जी० ॥३॥ को केहने ठेहमे नवि वलगे, जो मिलतो होए सबलो ॥ मिलतास्युं जेणे

१ असार, २ मारामां

चित्त चोर्यो, ते तिणे कर्यो निवलो रे ॥ जी० ॥ ४ ॥
निठुर हैमा नेह न किजे, निसनेही नर निरखी ॥
हैमा हेजे मिले जिहां हरखी, ते प्रीतलकि सरीखिरे
॥ जी० ॥५॥ तें मुझने मनको नवि दीधो, मुज म-
नको तें लीधो ॥ आप सवारथ सघलो किधो, मुगति
जइने सिधेरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ आज लगे तुज मुजसु
अतर, सुपनतर नवि हुतो ॥ हैमा हेजे हियालि ठगी,
मुजने मुक्यो रोवतो रे ॥ जी० ॥७॥ को केहशुं वहु
प्रेम म करस्यो, प्रेम विटवण विरुइ ॥ प्रेमे परवश
जे दुःख पामे, ते कथा घणु गिरुइरे ॥ जी० ॥ ८ ॥
निसनेही सुखिया रहे सघले, स सनेही दुःख देखे
॥ तेल दुग्ध परे परनो पीमा, पामे नेह विशेषेरे ॥
जी० ॥९॥ समवसरण कहिए हवे होसे, कहो कुण
नयणें जोशे ॥ दया धेनु पुरी कुण दोहस्ये, वृप दधि
कुण विलोसेरे ॥ जी० ॥ १० ॥ इण मारग जे वाल्हा
जावे, ते पाछा नवि आवे ॥ मुज हैमो दुःखमे न
समाए, ते कहो कुण समावेरे ॥ जी० ॥११॥ यो द-
ः वीरा वा'लाने, जे दरिसणना तरस्या ॥ जो

सुहणे केवारे देखसु, तो दुःख दूरे करेशु रे ॥ जी० ॥ १२ ॥ पुण्य कथा हवे कुण केलवशे, कुण व्हाल्हा मेलवशे ॥ मुज मनडो हवे कुण खेलवशे, कुमति जिम तिम खवशेरे ॥ जी० ॥१३॥ कुण पुछयानो उत्तर देशे, कुण संदेह भाजशे ॥ संघ कमळ वन किम विकससे, हु छद्मस्था वेसेरे ॥ जी० ॥ १४ ॥ हुं परापुर वसु अजाण, में जिन वात न जाणि ॥ मोह करे सवि जग अनाणी, एहवी जीनजीनी वाणीरे ॥ जी० ॥१५॥ एहवे जिन वयणे मन वाप्यो, मोह सबल बल काप्यो ॥ इण भावे केवल सुख आप्यो, इंद्रे जिनपद थाप्योरे ॥ जी० ॥१६॥ इंद्रे जुहारया भट्टारक, जुहार भट्टारक तेणे ॥ पर्व पन्होतु जगमा वाप्यु, ते किजे सवि केणरे ॥ जी० ॥१७॥ राजा नदिवर्द्धन नुतरीउं, भाइ बहिनर वीजे ॥ ते भावरू वीज हुइ जग सघले, वेहेन बहुपरे किजेरे ॥ जी० ॥१८॥

॥ ढाल नवमी ॥ विवाहलानी ॥

परिहरीए नवरंग फालफीए, मांकि मृगमद[1]

केसर नालमीए ॥ ऊव ऊवके श्रवणे ऊालमीए, कंठे कठे मुगताफल मालमीए ॥१॥ घर घर मंगल मालमीए, जपे गोयम गुण जपमालमीए॥ पह्नेतलो पात्र दीवालमीए, रमे रस नर रामत वालमीए ॥२॥ शोक संताप सवि कापीउंए, इछे गोयम वीरपदे ॥ नारी कहे सानल कतमाए, जपो गोयम नाम एकलमाए ॥ ३ ॥ ब्यो लख लान्न लखेशरी ए, थो मंगल कोमी कोमेशरी ए ॥ जाप जपो श्रइ सुतपेसरी ए, जीम पामीए ऋद्धि परमेसरीए ॥४॥ लहिए दिवालमी दामलो ए, एतो पुएयनो टवको टालुडंए । सुकृत सिरि दृढ करो पालमीए, जिम घर होय नित्य दिवालमीए ॥ ५ ॥

॥ ढाल दसमी ॥

हवे मुनि सुव्रत सीसोरे, जेहनी सयल जगीसो ॥ ते गुरु गजपुरे आव्यारे, वादी सवि हार मनाव्या ॥१॥ पावस चउमासु रहियारे, नवियण हइमे गहगहीआरे ॥ नमुचि चक्रवर्त्ति पद्मरे, जसु हियमे नहि छद्म ॥२॥ नमुचि तस नामे प्रधानरे, राजा दिये बहु

मान ॥ तिणे तिहां रिझवी रायरे, मागि मोटो पसाय ॥ ३ ॥ लिधो षट खंड राजरे, सात दिवस मांहि आज ॥ पूर्वे मुनिसु विरोध्योरे, ते किणे नवि प्रतिबोध्यो ॥४॥ ते मुनि सुं कहे यमोरे, मुझ धरति सवि छमो ॥ विनयिउं मुनि मोटो रे, नवि माने कर्मि खोटो ॥५॥ साठसया वर्ष तप तपिउंरे, जे जिन किरीयानो खपीउं ॥ नामे विष्णु कुमाररे, सयल लब्धिनो भंडार ॥६॥ त्रण क्रम भूमि लेवारे, जोवा भाइनी सेवा ॥ द्यू त्रिपदि भूमि दानरे, भले भले थाव्या भगवान ॥ ७ ॥ इणे वयणे धमहरीउंरे, ते मुनि वहु कोपे चढिउं ॥ किधो अदभूत रुपरे, जोयण लाख सरुप ॥८॥ प्रथम चरण पूर्वे दीधोरे, बिजो पश्चिमे किधो ॥ त्रिजो तस पुठे थाप्योरे, नमुचि पाताले चांप्यो॥ ॥ ९ ॥ थरहरीउं त्रिभूवनरे, खलभलिउं सवि जन ॥ सलसलिउं सुर दिन्नरे, पभयो नवि सांभलिए कन्न ॥ १० ॥ ए उत्पात अरयंतरे, दूरि करो भगवंत ॥ हैहै इसु हवे थाशे रे, बोले वहु एक सासे ॥११॥ करणे किंनर देवा रे, कडुया क्रोध समेवा ॥ मधुर भ-

धुर गाए गीतरे, बे कर जोमी विनीत ॥१२॥ विनय
थकी वेगे वलिउरे, ए जिन शासन वलिउं ॥ दानव
देवे खमाव्यो रे, नर नारीए वधाव्यो ॥ १३ ॥ गात्र
लमी जेस जमकी रे, जे देखी डुरे तमकी ॥ ते
जतने ग्रहि ठे रे, आरति उतारी मेरङ्ये ॥ १४ ॥
नवले अवतारे आव्या रे, जीवित फल लहि फाव्या
॥ शेव सुहालि कसार रे, फल ल्यूं नवे अवतार
॥१५॥ ठगण तणो घरवार रे, नमुचि लख्नु घर नारे
॥ ते जीम जीम खेरु थाय रे, तिम तिम डूख डूरे
जाय ॥ १६ ॥ मंदिर मकाण मामया रे, टालिड
डु ख डुरे ठामया ॥ काति वदि पमवे परवेरे, इम ए
आदरीउं सर्वे ॥१७॥ पुण्ये नरजव पामि रे, धर्म पु-
न्य करो निरधामी॥ पुन्ये ऋद्धि रसालि रे, नित नित
पुन्ये दिवाली ॥१८॥

॥कलश॥ जिन तु निरजण सजलरजण, डुख जजण
देवता॥ थो सुख सामि मुगति गामि, वीर तुऊ पाय
सेवता, तपगछ गयण दिणंद दहदिसे, दीपतो जग
श्री हीरविजय सुरिंद सहगुरु, तास पाट

वखाणीये ॥ १ ॥ श्री विजयसेन सुरीस सद्गुरु, विजयदेव सूरिसरु ॥ जे जपे अहनिश नाम जेहनो, वर्द्धमान जिणेश्वरू ॥ निर्वाण स्तवन महिमा नवन, वीर जिननो जे नणे ॥ ते लहे लिलालब्धि लछी, श्री गुण हर्ष वधामणे ॥श॥ इति श्री वीर निर्वाण महिमा दीपालिका स्तवन सपूर्ण ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

॥ रहो रहो रे यादवराय दो घमीया ॥ ए देशी ॥

॥ वीर हमणे आवे ले मारे मदिरीए, मदिरीए रे वीर मदिरीए॥ वी० पाये पमीने मेंतो गोद विछाउ, नित नित वीनतमी करीए ॥ वी० ॥१॥ सजन कुटुंव पुत्रादीकने, हरखे इणि पेरे उचरिए ॥ वी० ॥ २ ॥ जव प्रनु आगणे वीर पधारे, तव वछ सनमुख रुग नरीए ॥ वी० ॥३॥ सयणा गुणोने नवियण पमिला निजे, तो नवसायर तरीए ॥ वी० ॥४॥ अप्रतिबंध पणे महावीरजी, घर घर नीक्षाने फरीए॥ वी० ॥५॥ अनिनव शेठ तणे घेर पारणु, किधु फरता गोचरीए ॥ वी० ॥ ६ ॥ इम नावना करता श्रवणे सुणी, देव

छूट्नीर चित्त न्नरीए ॥ वी० ॥ ७ ॥ बारमा कल्पे जिरण आयु बांध्यु, वीर जिनने उत्तम चित धरीए ॥वी०॥ ८ ॥ तसपद पद्मनी सेवा करता, सेहेजे शिव सुंदरी वरीएरे ॥ वी० ॥९॥ इति वीरस्तवनम् ॥

॥ श्री आलोयण गर्भित स्तवन ॥

॥ बेकर जोमी वीनवुजी, सुण स्वामी सुविदीत ॥ कुरू कपट मूकी करीजी, वात कहु आप वीत ॥ कृपानाथ मुज वीनतो अवधार ॥ तुं समरथ त्रिभूवन धणीजी, तुज शेवकने तार कृपानाथ ॥मु०॥१॥ न्नवसायर न्नमतां थकांजी, दीठा छूख अनत ॥ न्नाग्य सयोग न्नेटीयोजी, न्नयन्नजण न्नगवत ॥ कृपानाथ ॥मु०॥ ॥२॥ जे डुख न्नाजे आपणोजी, तेने कहीये छूख ॥ ते छूख न्नजण तुने शुण्योजी, शेवकने द्यो सूख ॥कृ० ॥३॥ आलोयण लीधा विनाजी, जीव रुलेरे ससार; रुपी लक्ष्मणा महा सतीजी, एह सुण्यो अधिकार ॥कृ०॥४॥ छूसमें काले दोहीलोजी, सुधो सुगुरु सयोग ॥ परमार्थ प्रीछे नहींजी, गकुरी प्रवाहे लोग ॥ कृ०॥५॥ तुज आगल मुज पापनीजी, आलोयण लेउ आज ॥

मावाप आगल बोलतांजी, बालकने शी लाज॥ कु०
॥६॥ जैनधर्म सहुको कहेजी, थापे गच्छ गच्छ वात ॥
सामाचारी जूइ जूइजी, संसय पड्यो मिथ्यात ॥ कु०
॥७॥ जाण अजाणपणे करीजी, बोल्या उत्सूत्र बोल॥
रत्ने काग उडावता जी, हार्यो जन्म निटोल॥कु०॥
॥ ८ ॥ भगवत भारयो ते किहांजी, किहांमुज क-
रणी एह ॥ गज पाखर खर किम सहेजी, सबल
विमासण तेह ॥ कु० ॥ ए ॥ आपे परुप्यु आकरुजी,
जाणे लोक महन ॥ पिण न करु परमादीयोजी, मा
साहस ड्रष्टत॥ कु० ॥१०॥ काल अनंते में लह्याजी,
त्रणे रत्न श्रीकार ॥ पिण प्रमादे पामीयाजी, वथा
जइ करु पोकार ॥ कु० ॥११॥ जाणु उत्कृष्टी करुजी,
उद्यत करु विहार ॥ धीरज जीव धरे नहीजी, पोते
बहु ससार ॥ कु० ॥१२॥ स्वज्ञान पड्यो कोइ आप-
णोजी, नगसे सुणीरे वात ॥ परनिंद्या करतां थकांजी,
जावे दिनने रात॥कु० ॥१३॥ किरिया करता दोही-
लीजी, आलस आणेरे जीव ॥ धर्म-पखे धधे पड्यो-
जी, नर्के क.शे रीव ॥ कु० ॥१४॥ आण ला रण

कहेजी, तो हरखु निशदीस ॥ को हित शिख जली कहेजी, तो मन आणुं रीस ॥ कु० ॥१५॥ वाद जितण विद्या जणीजी, पर रंजण उपदेश ॥ मन संवेग धर्यो नहींजी, किम संसार तरेश ॥ कु० ॥१६॥ सूत्र सिद्धान्त व्याख्यानमांजी, शुणता कर्म विपाग ॥ क्षण एक मनमा ऊपजेजी, मुज मरकट वैराग ॥ कु० ॥१७॥ त्रिविध त्रिविध करी उचरुजी, अर्हत् आप हजूर ॥ वारवार भाखु वलीजी, जन्म जरा करदूर ॥ कु० ॥१८॥ सुख माटे सीथिल वनीजी, कीधा आरम्भ कोरू ॥ जयणा न करी जीवनीजी, देव दया करी ठोर ॥ कु० ॥१९॥ वचन दोष व्यापक कह्याजी, दाख्या अनरथ दण्ड ॥ कुरू कछु वहु केलवीजी, व्रत कीधा सतखण्ड ॥ कु० ॥ ॥२०॥ अण दीधो लीजे तृणोजी, तोही अदत्ता दान ॥ ते दुषण लाग्या घणाजी, गणता नावे ज्ञान ॥ कु० ॥ २१ ॥ चंचल चेतन चेते नहीजी, राचे रमणीरे रुप ॥ काम विटंबना शी कहुजी, तुं जाणे ते स्वरुप ॥ कु० ॥ २२ ॥ माया ममतामे पड्योजी, कीधो अधिको लोभ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमोजी, न चढी संजम

शोग्नाकु० ॥२३॥ लाग्या मुजने लालचेजी, रात्री न्नोजन दोप ॥ में मन मूक्यो मोकलोजी, न धर्यो धर सतोप ॥ कु० ॥२४॥ इणन्नव परन्नव दूहव्याजी, जीव चौरासी लाख ॥ ते मुज मिढामी डुकडुंजी, न्नगवत तोरी माख ॥ कु० ॥२५॥ कर्मादान पन्नरे कह्याजी, प्रगट अढारह पाप ॥ जे मे शेव्या तेहनीजी, वक्सिस द्यो मावाप ॥ कु० ॥२६॥ मुज आधार ठे एटलोजी, सद्दहणा ठे शुद्ध ॥ जैन धर्म मुज मन गमेजी, जिम साकरशु दूध ॥ कु० ॥२७॥ ऋषन्नदेव तु राजियोजी, शत्रुजय शिणगार ॥ पाप आलोया आपणाजी, कर प्रजु मोरी सार ॥ कु० ॥२८॥ मर्म एह जिन धर्मनोजी, पाप आलोया जाय ॥ मनशु मिढामी डुकडुंजी, देता डुरित पुलाय ॥ कु० ॥२९॥ तुं गती तु मती तु धणीजी, तु साहिब तु देव ॥ आण धरु शिर ताहरीजी, न्नवन्नव तोरी शेव ॥ कु० ॥३०॥ कलश ॥ इम चढी शत्रुजय चरण नेटया, नान्नी नदन जिन तणा ॥ कर जोडी आदी जिणद आगे, पाप आलोइ आपणा ॥ ... सूरिश सद्गुरु, प्रथम शिष्य

सुजश घणे, गणी सकलचंदजी विनय वाचक, समय सुंदर गुण गणे ॥ ३१ ॥

॥ श्री नेमनाथजीनु स्तवन ॥

॥ श्रवल गोखने श्रजव झरोखे, उग्रसेन रायनी बेटी ॥ राजुल कहे पीया नेम म जाज्यो, नव नव नेहज नेटी ॥ पीया रथवालो, श्रव मानीजे माहाराज ॥ पिंजर मत परजालो, स्यु कहीये वारोवार ॥ ए श्रांकणी ॥१॥ वेगें वलीया विलव न कीधी, स्यो श्रवगुण मुझ दीठो ॥ प्रेम तणो रस चाखी न जाणो मिसरीथी श्रति मीठो ॥ पीया० ॥२॥ घुंघरीना घम कार सुणाया, दरूक दरूक दमकमीया ॥ झल्लरी नेरी फेर वजाइ, नोबतमी गमगमीया ॥ पीया० ॥३॥ तोरण श्रावीजान बनावी, रुप देखामी रुडु ॥ वदी ठोम ण विरुद तुमारो, किम करस्यो हवे कुडु ॥ पीया० ॥४॥ ठेहन दीजे ठेल ठबीला, ठोकरवाद न कीजे ॥ मंदिर श्रावो मोहनगारा, श्रासुमे तन जीजें ॥ पीया० ॥ ५ ॥ कत कहुं कठिण कठिणमां, श्रतीहें कठन ॥ श्रबलानो श्रवतार श्रमारो, कहो कुण रीते

कहीये ॥ पीया० ॥ ६ ॥ संजम धारी नेमकुमारे, राजुल नारी तारी ॥ दीपविबुधनो सेवक पत्नणे, देव विजय जयकारी ॥ पीया० ॥७॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसखेश्वरजीने विनती रुपे स्तवन ॥

॥ मुज पापीने तार–ए देशी ॥

॥ सुण सुण श्री सखेश्वराजी, पुरिसादानी रे पास ॥ नवमा नटकी आवीयोजी, तुम पासे करी आस ॥ जिनेसर हु पापी सिरताज, राखो हवे मुज लाज ॥ जिने० ॥ तारण तरण तु जाज ॥ जिने० ॥ सारो वछित काज ॥ जिनेसर हु पापी सिरताज ॥१॥ ए आकणी॥ कवण कर्मथी माहाराजी, निर्दय अति परीणाम ॥ जीवनी वे नेद करीजी, हीसा डुःखनी धाम ॥ जिने० ॥ २ ॥ सत्य शौच तजी साहिबाजी, सेव्या अदत्तादान ॥ अब्रह्मचारी परीग्रहीजी, आरत्नी डुर्ध्यान ॥ जिने० ॥ ३ ॥ रौद्र प्रणामे रहु सदाजी, अतिशय ममतावत ॥ निर्लज थइ कपटे अतीजी, उदरनरुं नगवत ॥ जिने० ॥४॥ गुरुद्रोह आदी घणाजी, कीधा ... अन्याय ॥ विश्वास घात कर्या

वलीजी, रागद्वेष दुख दाय ॥ जिने० ॥५॥ त्रण स-
ध्य न तज्या कदीजी, विरम्यो न त्रएये दक्र ॥ सत्ता-
वन हेतु थकीजी, वाध्या पाप प्रचक्र ॥ जिने० ॥६॥
धर्म धूर्त्तराजा त्रिपेजी, शिरोमणि तु दृष्ट ॥ पथ्थरथी
अति कठोरताजी, पापे करी थयो पुष्ट ॥ जिने ॥७॥
इत्यादिक अवगुण घणाजी कहेता नावेपार ॥ जाणो
केवलज्ञानथीजी, गानु नथी लगार ॥ जिने० ॥ ८ ॥
घोर कर्म कीधा घणाजी, शु करु वात विस्तार ॥ जा-
णनी आगल वोलवुजी, ते दर्शीये जलधार ॥ जिने०
॥९॥ तुऊ सम दाता धुरधरुजी, मुऊ सम करुणानु
पात्र ॥ खोल्यु न मले खलकमाजी, ढील नकरो पल
मात्र ॥ जिने० ॥ १० ॥ पुढगला नदीपणु म्हनेजी,
डु खदायक ते निवार ॥ सहज स्वन्नावी सुख आ-
पीनेजी, वरसो सुयस श्रीकार ॥ जिने० ॥ ११ ॥ न्नव
न्नव तुमपद शेवनाजी, होजो त्रिकरण शुद्ध ॥ धन्य
कृतारथ तो थउजी, निजपद लहु अविरुद्ध॥ जिने०
॥१२॥ ते माटे हे कृपानिधीजो, करुणा करी दियो
दान ॥ शुद्ध श्रद्दा सद्दनिरतीनेजी, जिम वाधे मुऊ-

वान ॥ जिने० ॥ १३॥ बोधिबीज देइ सुखी करोजी, मानीस बहु उपगार ॥ रत्नविजय पन्यासनांजी, मोहनविजय जयकार ॥ जिने० ॥१४॥ इति ॥

॥ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

॥ माता मारुदेवीना नंद ॥ ए देशी ॥

॥ मेतो हजुर रेहेशुजी, माहारारे साहेबजी मेतो नजीक रेहेशुजी ॥ ए आंकणी ॥ साहेबनी सेवामां रहीशु, करशु सुख दुःख वात ॥ आण वहीने शिरसुख लइशु, देइशु दुरगती वार ॥ मेतो० ॥ १ ॥ सिद्धारथ राजानो नंदन, त्रिशला देवी माय ॥ चोवीशमां जिनना गुण गाता, करशुं निर्मल गात्र ॥ मेतो० ॥२॥ च्यार[1] पांच[2] सात[3] आठ[4] हणीने, नवशु[5]

---

१ ोध, मान, माया, अने लोभ ए चार कपाय २ स्पर्शइंद्री, रसइंद्री, घ्राणइंद्री, चक्षुइंद्री, अने श्रोतइंद्री ए पांचइंद्रीय ३ सातभय तेना नाम (१) आलोकभय (२) परलोक भय (३) आदानभय (४) अकस्मात भय (५) वेदनाभय (६) मरणभय (७) अपजशभय ४ आठ कर्म ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुकर्म, नाम अंतराय कर्म ५ शियलनी नववाडो

धरशु नेह ॥ दश[6] पोताना दोस्त करीने, एकने[7] देश्शु छेह ॥ मेतो० ॥ ३ ॥ छने[8] छमी दोने[9] मसी, वोलावीशु वार[10]॥ पधर[11]जणाना पाशमा न पडशु, तेरने[12] देश्शु मार ॥ मेतो० ॥४॥ त्रण[13] पाच[14] सत्तावीश[15] धरशु, चेतालीश[16] मुनिशेष ॥ तेत्रीशने[17] चोराशी[18] टाली, करशु आतम शुद्ध ॥ मेतो० ॥५॥ सत्तर[19] पाळी अढार[20] अजुवाली, जीतीशु बावीश[21] ॥ तेवीसे[22] ने दुर करीने, चित्त धरशु चोवीश[23] ॥

---

६ दश भेदे जती धर्म आदरीशुं ७ मिथ्यात्वने छोडी दईशुं ८ पृथ्वी काय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतीकाय अने त्रसकाय ए छने छडीशुं. ९ राग अने द्वेष १० बार व्रत उचरीशुं, ११ परमाधामी पनर जनानां पाशमां नही पडशु. १२ तेर काठीयाने मार देइशुं १३ ज्ञान, दर्शन अने चारित्र. १४ पाच माहाव्रत. १५ सतावीश साधुनागुण. १६ बेतालीश दोप रहीत आहार लेइशु १७गुरु मत्ये तेत्रीश आशातना १८जीनभुवननी चोराशी आशातना १९ सत्तर भेदे संजम पालीशु २० अग्गार दोप टालीशुं २१ बावीस परिसह जीतीशुं. २२ त्रेवीश विषय पांच इद्रीयोना छे तेने दुर करीशु २३ चोवीश तीर्थंकरोने चित्तमा धरशुं

मेतो० ॥६॥ च्यारमाथी[२४] बे परीहरशु, बेनो श्राद र करशुं ॥ ए साहेबनी श्राणवहीने, नव सायरथी तरशु ॥ मेतो० ॥७॥ श्रग[२] विनानो सगज करीये, तरीये नवजळ तीर ॥ उदयरत्न कहे त्रिशला नदन, जय जय श्रीमहावीर ॥ मेतो हजुर० ॥८॥ इति ॥

॥ जिनपूजा स्तवन—देशी नविकानी ॥

॥ श्रीजिनबिंब जुहारो, श्रातम परम श्राधारो रे नविकाश्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सरखी जाणो, नकरो शका काइ॥ श्रागम वाणीने श्रनुसारे, राखो प्रीत सवाइरे ॥न० श्री०॥१॥ जे जिन बींब स्वरुप न जाणे, ते कहीये किम जाण॥ जूल्या तेह श्रज्ञाने नरीया, नहीं तिहां तत्व पिछाणरे ॥ न० श्री० ॥ २ ॥ श्रवर श्रावक श्रेणीकराजा, रावण प्रमुख श्रनेक ॥ विविध परे जिन नक्ती करतां, पाम्या धर्म विवेकरे

२४ आर्त्तध्यान अने रौद्रध्यान ए बे परीहरशुं, धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बेनो आदर करशु. २५ सीद्ध भगवानने अग नथी, कर्म नथी, माटे [illegible] करशुं

॥ ज० ॥३॥ जिन प्रतिमा जिन जक्ती करता, दोय निश्चे उपकार ॥ परमार्थ गुण प्रगटे पूरण, जुन्रो आ-इकुमाररे ॥ज०॥४॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर, ठे बहु जलधी मऊार ॥ ते देखी बहुला मछादिक, पाम्या प्रीते जव पाररे ॥ ज० ॥५॥ पचमें अगे जिन पूजानो, प्रगटपणे अधिकार ॥ सुरीयाजे सुर जिन पूज्या ते, रायपसेणी मऊाररे ॥ज० श्री० ॥६॥ दशमें अगे हिंसा दाखी, यज्ञ पूजा जिनराज ॥ एहवा आगम अर्थ मरोमी, करे तेह अकाजरे ॥ज०॥७॥ सम कितधारी सतीय ड्रुपदी, जिन पूज्या मनरगे ॥ जुन्रो एहनो अर्थ विचारी, ठठे ज्ञाता अगेरे ॥ ज० ॥८॥ विजयदेवे जिनपूजा कीधी, मन वच काया वस राखी ॥ इव्य जाव बेहु जेदे जाणो, जीवाजीगम ठे साखीरे ॥ ज० ॥९॥ इत्यादिक बहु आगम साखे, कोइ सकामत करज्यो ॥ जिन प्रतिमा देखी नित्य नवलो, प्रेम घणो चित्त धरज्योरे ॥ज० ॥१०॥ श्रीचिंतामणी पार्श्व पसाये, श्रद्धा होज्यो सदाइ ॥ श्रीजिनलाज गुरु उ-पदेशे श्रीजिन चंद्र सवाइरे ॥ जवि० ॥११॥ इति ॥

॥ अथ श्री पीस्तालीस आगमनु स्तवन ॥

॥ जवी तुमे वदोरे सुरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

॥ जवि तुमे वदोरे, ए आगम सुखकारी ॥ पाप निकंदोरे, प्रजू वांणि दिलधारि ॥ ए आकणी ॥ शासन नायक वीर जिणेसर, आसन जे उपगारी ॥ प्रजु मुख त्रिपदी पामी गणधर, गौतमनी बलिहारी ॥ जवि० ॥१॥ प्रथम अंग श्री आचारंगे, मुनि आचार वखाण्यो ॥ सहस अढार ते पदनी सख्या, गण वसणा सहू जाणो ॥ जवि० ॥२॥ सुगडांग ठाणगने समवायंग, पचमोजगवति अग ॥ लाख विहुने सहस अठयासी, पद रुडा अति चग ॥ जवि० ॥३॥ ज्ञाता धर्म कथा अग ठनु, कथा उठ कोड ते जाणो ॥ पचमे आरे डुपमां कालमां, कथा उंगणीस वखाणो ॥ जवि० ॥४॥ उपासग ते सातमो जांणो, दश श्रावक अधिकार ॥ ते साजलता कुमति बूज्या, जिनपडिमां जयकार ॥ जवि० ॥५॥ अतगड दशागनें अनुत्तर प्रश्न व्याकरण वखाणो ॥ ७ज

फल कर्म विपाक ए, अंग इग्यार प्रमांणो ॥ जवि० ॥ ६ ॥ उवाइ उपागने रायपसेणी, जीवाभिगम मन आणो ॥ पन्नवणानें जंबु पन्नति, चंदपन्नति एम जांणो ॥ जवि० ॥७॥ सूर्यपन्नती निरयावलि तिम, कप्पिया कप्प वृत्तिक ॥ बार उपांग एणीपरें बोल्या, पुप्फिया पुप्फवर्तिक जवि० ॥ ८ ॥ चउसरण पयन्नो पहेलो, आउर पचरकाण ते बीजो ॥ महापच्चक्खाणने जत्तपरिज्ञा, तंदुलवियालि मन रीजो ॥ जवि० ॥९॥ चंदा विजयने गणि विज्ञातिम, मरण समाधि वखाणो ॥ सथारा पयन्नो नवमो, गछाचार दस जाणो ॥ जवि० ॥ १० ॥ दश वैकालिक मुल सूत्र ए, आवश्यक ओघ निर्युक्ति ॥ उत्तराध्ययने ते चोथो जाणो, श्री वीर प्रभुनी उंक्ति ॥ जवि० ॥ ११ ॥ निशिथ छेद ते पेहलो जाणो, बृहत कल्प निवहार ॥ पच कल्पनें जितकल्प तिम, महानिशिथ मनोहार ॥ जवि० ॥ १२ ॥ नदी अनुयोग आगम पिस्तालीस, सप्रती कालें जाणो ॥ जिन उत्तम पदरुप निहाली, शिवलक्ष्मी घरआणो वि तुमे वदोरे आगम सुखकारी ॥१३॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धचक्रनी थोयो ॥

॥ सिद्धचक्र सेवो सुविचार[1], आणी हैडे हर्ष अपार, जेम लहो सुख श्रीकार ॥ मन शुद्धे नव ओळी कीजे, अहोनिश[2] नवपद ध्यान धरीजे, जिनवर पूजा कीजे ॥ पडिक्कमणां दोय टकनां कीजे, आठ थोये देव वांदीजे, भूमि संथारो कीजे ॥ मृषा[3] तणो कीजे परिहार,[4] अंगे शील धरीजे सार, दीजे दान अपार ॥१॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य नमीजे, वाचक[5] सर्व साधु वंदीजे, दर्शन ज्ञान सुणीजे ॥ चारित्र तपनुं ध्यान धरीजे, अहोनिश नवपद गुणणु गणीजे, [6]नव आयंबिल पण कीजे ॥ निश्चळ राखीने मन इश, जपो पद एक एकने इश, नवकारवाळी वीश ॥ छेल्ले आयंबिले पण कीजे, सत्तरभेदी[7] जिनपूजा रचीजे, मानव भवफळ लीजे ॥ २ ॥

---

१ सारी समज मेळवी २ दिनरात (सदाय) ३ जूठ बोलवानो नियम करवो ४ शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळवु ५ उपाध्यायजी. ६ नव [illegible] वगरनु शुष्क भोजन एक वखते करवु ७

॥ सातर्शे कुष्टीना रोग, नाठा न्हवण लइ संयोग, दूर हुवा कर्मना जोग ॥ कुष्ठ अढारे दूरे जाय, दुःख दारिद्र सवी दूर पलाय, मनवछित फळ थाय ॥ निर्धनीयाने दे बहु धन, अपुत्रीयाने पुत्र रतन, जो सेवे शुद्धमन ॥ नवकार समो नहि कोइ मंत्र, सिद्धचक्र समो नहि कोइ जंत्र, सेवो भवीयण एकमन[9] ॥३॥

जे सेव्यो मयणा श्रीपाळ, उंबर रोग गयो तत्काल, पाम्या मंगळमाळ ॥ श्रीपाळ पेरे जे आराधे, तस घर दिन दिन दोलत वाधे, अंते शिवसुख साधे ॥ विमलेश्वर जक्ष सेवा (सांनिध्य) सारे, आपदा कष्ट सवी दुर निवारे, दोलत लक्ष्मी वधारे ॥ मेघविजय कवि रायनो शीश[11], हैये भाव धरी जगीश, विनय विजय निशदिश[12] ॥ ४ ॥

॥ श्री पर्यूषणनी थोय ॥

॥ वरस दिवसमां अषाड चोमासु, तेहमा वली भादरवो मास, आठ दिवस अति खास ॥ पर्व पज्जुसण करो उल्लास, अठाइधरनो करवो उपवास, पो

कोढीया ९ न्हवण (आत्माथी)१० निर्व.११ शिष्य १२ रात दिन

सह लीजे गुरु पास॥ वका कल्पनो ठछ करीजे, तेह तणो वखाण सुणीजे, चौद सुपन वांचीजे ॥ पम्जेने दिन जन्म वचाय, उंछव महोछव मगल गवाय, वीर जिणेसर राय ॥१॥ बीज दिने दीक्षा अधिकार, सा ज संघ निरवाण विचार, वीर तणो परिवार॥ त्रीज दिने श्रीपार्श्व निरयात, वली नेमीसरनो अवदात, वली नवनवनी वात ॥ चोविशे जिन अंतर तेवीश आदि जिनेश्वर श्रीजगदीश, तास वखाण सुणीश ॥ धवल मगल गीत गहूंली करीए, वली प्रज्ञावना नित अनुसरीए, अठम तप जय वरीए ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमर पळावो, तेह तणो पम्हो वजमावो, ध्यान धरम मन न्नावो॥ सवत्सरी दिन सार कहेवाय, सघ चतुर्विध न्नेलो थाय, बारसें सूत्र सुणाय॥ थिगवली ने समाचारी, पटावली प्रमाद निवारी, सान्नलजो नरनारी ॥ आगम सूत्रने प्रणमीश, कल्पसूत्रशु प्रेम धरीश, शास्त्र सर्वे सुणीश ॥ ३ ॥ सत्तर न्नेदी जिन पूजा रचावो, नाटक केरा खेल मचावो ॥ वि स्नात्र ... कवरणां देहरे जइए संवत्स

क्किमणु करीए, सघ सर्वने खमीए ॥ पारणे साह्-
मिवछल कीजे, यथाशक्तिए दानज दीजे, पुन्य ज-
भार जरीजे ॥ श्री विजयक्षेम सुरि गणधार, जसव-
न्तसागर गुरु उदार, जिणछसागर जयकार ॥ ४ ॥

॥ अथ रोहीणी तपनी स्तुति ॥

॥ वासुपूज्य जिणेसर, पुजो मनने रग ॥ रोही-
णी नक्षत्रे, उपवास करो अतिचग ॥ सात वरस ए
उपर, सात मास परीमाण ॥ एतप रोहिणीनो, आपे
मानज गम ॥१॥ श्रीवासुपूज जिनराज, नरपति म-
घवा नाम ॥ तस पत्नि लक्ष्मी, तस तनया अभि-
राम ॥ रोहणी जोबनवति, परणी राय अशोक ॥ एम
सयल जिणेसर, भाखे बुझया लोक ॥२॥ सुदरी एक
रुदति, देखी पुछे नारी ॥ कुण नाटिक होवे, नृप कहे
तुझ मद भारी ॥ राये नाख्यो धरति, अगज
प्रसन्न ॥ एम आगम वांणि, निसुणो रे
॥३॥ तप शासन देवी, धरय
जाने राणी, मन हुवो ६९
दम दाहो चित्त

शिष्य, धीरने सुख-सजोग ॥४॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तुति ॥

॥ गजपुर अवतारा, विश्वसेन कुमारा ॥ अवनितलें उदारा, चक्री लछी धारा ॥ प्रति दिवस स वाया, सेवियें शांति सारा ॥ भवजलधि अपारा, पामीये जेम पारा ॥१॥ जिनगुण जस मल्लि, वासना विश्व वल्लि ॥ मन सदन च सल्लि, मानवन्ती तिसल्लि ॥ सकल कुशल वल्लि, फूलके वेग फूली ॥ दुरगति तस छूल्लि, तासदा श्री वहूली ॥ २ ॥ जिन कथित विशाला, सूत्रश्रेणी रसाला ॥ सकल सुख सुखाला, मेलवा मुक्ति वाला ॥ प्रवचन पदमाला, दूतिकाए दयाला ॥ उरधरी सुकमाला, मूकीयें मोह-जाला ॥३॥ अति चपल वखाणी, सूत्रमा जे प्रमाणी ॥ भगवति ब्रह्माणी, निघ्नहृता निर्वाणी ॥ जिनपद लपटाणी, कोमी कल्याण खाणी ॥ उदयरत्नें जाणी, सुखदाता सयाणी ॥४॥ इति ॥

॥ श्री [illegible] स्तुति ॥ द्रुत विलंबित

[illegible] सुराधु सुरेसुरा, नमी

खेचर भूचरा ॥ गणि विराजित जेह जिनेश्वरा, उजोग किन्नर सेवित भूधरा ॥१॥ दोष अष्टादश दलित जे दुर्धरा, जगत पावन सर्व तीर्थंकरा ॥ मदन भंजन गंजन जे जरा, अनंत तेह नमो अजरामरा ॥ २ ॥ विश्व प्रकाशक केवल भाविता, दुर्गति पथ पक्षे तस राखिता ॥ तेह पीस्तालीश सूत्र सज्झारियें, दुरित पंकज दूरें जिम वारीये ॥ ३ ॥ पीन पयोधर धारनी धारणी, विघ्नशामन चार निवारिणी ॥ परम उदय पद न्पद कारणी, मंगल वेल जे सिंचन सारणी ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथ जिन स्तुति ॥

॥ श्री गिरनारें जे गुण नीलो, ते तरण तारण त्रिभोवन तिलो ॥ नेमीशर नमिये ते सदा, सेव्यो आपे सुख संपदा ॥ १ ॥ इंद्रादिक देव जेहने नमे, दर्शन दीठे दुःख उपशमे ॥ जे अतीत अनागत व- ., ते जिनवर वडु वर परधान ॥ २ ॥ अरिहंतें ., उचरी, गणधरें ते रचना करी ॥ पीस्तालीश .गम जाणीयें, अर्थ तेहना चित्तें आणीयें ॥ ३ ॥

गढ गिरनारनी अधिष्टायिका, जिनशासननी रखवालिका ॥ समरु सा देवी अंबिका, कवि उदय रत्न सुखदाइका ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजिन स्तुति ॥

॥ श्री गिरनार शिखर सिणगार, राजीमती हीयडानो हार, जिनवर नेमकुमार ॥ पुर्णकरुणा रस भंडार, उगार्यां पशुआ अपार, समुद्र विजय मल्हार ॥ मोर करे मधुरा किगार, विचे विचे कोयलनो टहुकार, सहसे गमे सहकार ॥ सहसा वनमां हुआ अणगार, प्रभुजी पाम्या केवलसार, पोहोंना मुगति मझार ॥ ॥१॥ श्री शत्रुजय तीरथ सार, आबु अष्टापद गीरनार, चित्रकोट वैभार ॥ सोवन गीरी समेन श्रीकार, नंदी सर वरद्वीप उदार, जिहां बावन विहार ॥ कुंडल रुचकने इष्युकार, शाश्वता अशाश्वता चैत्यविचार, अवर अनेक प्रकार ॥ कुमति वचन मभूल गमार, तीर्थ भेटे लाभ अपार, भवियण भावे जोहार ॥२॥ प्रगट छठे अंगे कहणी, द्रुपदी पाण्डवनी पटराणी, पुजा जिन [illegible] पेसु कीधी टसटें आणी

नारद मिथ्यादृष्टि अन्नाणी, गरुया अविरती जाणी ॥ श्रावक कुलनी प महिमाणी, समकीत आसावें आ दाणी, सातमे अंग वखाणी ॥ पुजनीक प्रतिमा क हांणी, एम अनेक आगमनी वाणी, ते सुणजो नवि प्राणी ॥ ३ ॥ कटी कटी मेखल घुघरी आली, पाए रमझम नेउर वाली, उज्वल गीरी रखवाली ॥ अधर लाल जीस्यो परवाली, कनकवान काया शुकमाली, काटि लहके अवाकाली ॥ वयरीने लागे विकराली, सघ विघन हरे उजमाली, अवाई देवी मयाली ॥ महिमाए दिस दिस उजुआली, गुरु श्री सघविजय सत्ताली, दिन दिन नित दीवाली ॥४॥ इति ॥

॥ अथ श्री शखेश्वर पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ कल्याण कारक, दुःख निवारक, सकल सुख आवास ॥ ससार तारक, मदन मारक, श्री शखेश्वर पास ॥ अश्वसेन नदन, नविया नदन, विश्ववदन देव ॥ नवनीत नजन, कमठ गजन, नमीजे नित्य मेव ॥१॥ त्रयलोक दीपक, मोह झीपक, शिव सरो-हंस ॥ मुनि ध्यान मग्न, दूरित खग्न, भुवन

शिर अवतंस ॥ द्रव्य नाव थापन, नाम नेदी, जहां निखेपा चार ॥ ते देव देवा, मुक्ति लेवा, नमो नित्य सुखकार ॥२॥ षट द्रव्य गुण, परजाय नयगम, नेद त्रिसद वखाणी ॥ ससार पारा, वार तरणी, कुमति कद कृपाणी ॥ मिथ्यात नूधर, शिखर नेदन, वज्र सम जेह जाणी ॥ अति नगति आणी, नवि प्राणी सुणो ते जिनवाणी ॥ ३ ॥ जश वदन सारद, चंद सुंदर, सुधा सदन विशाल ॥ निकलंक सकल, कलंक तमहर, अंग अति सुकुमाल॥ पद्मावती सा, नगवती सवी, विघ्न हरण सुजाणी॥ श्री संघने, कल्याण का-रणी, हस कहे हित आणी ॥४॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधर प्रमुख विचरता जिननी स्तुति ॥

॥श्री सीमंधर सेवित सुरवर, जिनवर जग जयकारीजी॥ धनुष्य पांचशें कचन वरणी, मूरति मोहन गारीजी ॥ विचरता प्रनु माहाविदेहें, नवि जिनने हितकारीजी ॥ प्रह उठी नित्य नाम जपीजें, हृदय कमलमा धारीजी ॥ १ ॥ सीमंधर युग बाहु सुबाहु, सुजात स्वयप्रन नामजी ॥ अनंत सूर विशाल वज्र-

धर, चंद्रानन अभिरामजी॥ चंद्र भुजंग इश्वर नेमि प्रभ, वीरसेन गुणधामजी॥ महाभद्रने देवयशा वली, अजित करु प्रणामजी ॥२॥ प्रभुमुख वाणी बहु गुण खाणी, मीठी अमीय समाणीजी ॥ सूत्र अने अर्थे गुंथाणी, गणधरथी वीर वाणीजी॥ केवळनाणो बीज वखाणी, शिवपुरनी नीशाणीजी ॥ उलट आणी दिलमांहें जाणी, व्रत करो भवि प्राणीजी ॥३॥ पहेरी पटोली चरणा चोली, चाली चाल मरालीजी॥ अति रूपाली अधर प्रवाली, आखरुडी अणीयालीजी ॥ विघ्न निवारी सान्निध्यकारी, शासननी रखवाळीजी ॥ धीरविमल कविरायनो सेवक, बोले नय निहालीजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजनी स्तुति ॥

॥ महीमरुण पुन्नसोवन्नदेह, जणाणदणं केवलनाण गेह ॥ महानंद लच्छी बहू बुध्दिराय, सुसेवामि सीमंधर तित्थराय ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भवस्तति ते सव्व भवाण लाया ॥ तहा सपय जिणा वट्ट माणा, सुह दितु ते मे तिलोयप्पहाणा

॥२॥ दुरुत्तार संसार कुवार पोय, कलंका वली पंक पक्काल तोय ॥ मणोवठियब्ते सुमदारकप्प, जिणदा गम वदिमो सुमहप्प ॥ ३ ॥ त्रिकोसे जिणदाणण ज्ञोजलीणा, कलारूव लावम सोहग्ग पीणा ॥ वद तस्स चित्तमि णिच पिऊाण, सिरी ज्ञारई देहि मे सुह्लाण ॥४॥ इति ॥

॥ अथ पचमीनी स्तुति ॥

॥ नेमि जिनेसर, प्रज्ञु परमेसर, वदो मन उल्लासजी॥ श्रावण शुदी, पचमी दिन जनम्या, हुर्ड त्रिजग प्रकाशजी ॥ जन्म महोत्सव, करवा सुरपति, पांचरूप करी आवेजी ॥ मेरु शिखपर, उछव करीने, विबुध सयल सुख पावेजी ॥ १ ॥ श्री शत्रुजय, गिरनार वछू, कचन गिरि वैज्ञारजी॥ समेत शिखर, अष्टापद आबू, तारग गिरिने जुहारजी॥ श्रीफल वर्दि, पास मनोवर, शखेसर प्रज्ञु देवजी ॥ सयल तीरथनु, ध्यान धरीजें, अहनिश कीजें सेवजी ॥ २ ॥ वरदत्तने, गुणमजरी परवध, नेमि जिनेसर दाख्योजी ॥ पचमी तप करतां, सुख पाम्या, सूत्र सकलमा ज्ञा-

रयोजी॥ नमोनाणस्स इम, गणणुं गणियें, विधि म-
हित तप कीजेंजी ॥ उलट धरी, उजमणु करता, पचमी
गति सुख लीजेंजी ॥३॥ पचमीनु तप, जे नर करशे,
सान्निध्य करे अचाइजी ॥ दोलतदाई, अधिक सवाइ
देवीये ठकुराइजी ॥ तप गछ अवर, दिनकर सरिखो
श्रीविजयसिंह सूरीशजी ॥ वीरविजय, पंडित कवि-
राजा, विबुध सदा सुजगीशजी ॥४॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमु हु नितमेव ॥ आ-
ठम दिन करियें, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन
मोहे, जाणे पूनिम चद॥ दीठा दु:ख जाये, पामे
परमानद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभुजीना
पाय॥ इंद्राणी अपछरा, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदी-
श्वर द्वीपें, मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाईमहो-
छव, करता होडा होड ॥२॥ शेत्रुजा शिखरें, जाणी
लाभ अपार॥ चउमासे रहिया, गणधर मुनि परि-
वार ॥ भवियणने तारे, देई धरम उपदेश॥ दूध सा-
करथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥३॥ पोसो प्रति-

क्षमण, करियें व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोमि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥४॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ माधव उज्वल एकादशी, गणधर पद थापत चित्तवसी ॥ चउ सहस्स अधिक सय च्यार रीसी, कीया त्रिशला नंदन समरुसी ॥१॥ उत्सर्पिणी अंतिम जिनवरा, अवसप्पिणी आदिम गुण भरा ॥ दशमी दिन केवल श्रीवरा, दश खेत्रें विचरे तिर्थंकरा ॥२॥ प्रभु वदन पदम ऊह नीसरी, जग पावन त्रिपदी सुरसरी ॥ पसरी गणधर हृदे पाप हरी, मुनि माहृत कीधें रंग भरी ॥३॥ महावीर पदबुज मधुकरी, रणऊणति याए नेउरी॥ सिघाई सरुं शांतिकरी, जिनविजयसुं भक्ति अलंकरी ॥४॥ इति ॥

॥ अथ वीशस्थानक तपनी स्तुति ॥

॥ पूछे गौतम वीरजिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा, पूजित अमर सुरिंदा ॥ केम निकाचे पद

जिनचंदा, किण विध तप करतां जव फंदा, टाले डुरितह दंदा ॥ तव जाखे प्रजुजी गत निंदा, सुण गौतम वसुजूति निंदा, निर्मल तप अरविंदा ॥ वीशस्थानक तप करत महिंदा, जेम तारक समुदाई चंदा, तेम ए सवी तप इंदा ॥१॥ प्रथम पदें अरिहंत नमीजें, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठवीजे ॥ उपाध्यायने साधु ग्रहीजे, नाण दंसण पद विनय वहीजे, अगीयारमे चारित्र लीजें ॥ बंजवय धारीण गणीजें, किरियाण तवस्स करीजें, गोयम जिणाण लहीजें ॥ चारित्र नाण सुअ तिथ्यस कीजें, त्रीजे जव तप करत सुणीजें, ए सविजिन तप लीजें ॥२॥ आदि नमो पद सघले ठवीस, वार पन्नर वार वली ठत्रीस, दस पणवीस सगवीस ॥ पाचने सत्त-सठ तेर गणीस, सत्तर नवकिरिया पण वीश, वार अगवीस चौवीस ॥ सीत्तर इगवन पीस्तालीश, पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नोकारवाली वीश ॥ एक एक पदें उपवासज वीश, मास खटें एक ठली करीश, एम सिद्धांत जगीश ॥३॥ शक्ति एकासणुं तिविहार,

छठ अठ्ठम मास खमण उदार, पडिक्कमणा दोय वार ॥ इत्यादिक विधि गुरुगमधार, एक पद आराधन भवपार, उजमणु विविध प्रकार ॥ मातंग जक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाइ शासन रखवाल, संघ विघन अपहार ॥ खिमाविजय जस उपर प्यार, शुभ भवियण धरमी आधार, वीरविजय जयकार ॥४॥ इति ॥

॥ अथ दश त्रिकनी स्तुति ॥

॥ निसिही त्रण प्रदक्षिणा त्रिगे, प्रणाम त्रिण करीजेजी ॥ त्रण प्रकारी पूजा करीने, अवस्था त्रिण धरीजेजी ॥ त्रण दिशि वर्जि जिनजोवो, भूमि त्रण पूजीजेजी ॥ आलंबन मुद्रा त्रण प्रणिधान, चैत्यवंदन त्रण कीजेजी ॥१॥ पहेले भावजिन वीजे द्रव्य जिन, त्रीजे एक चैत्य धारोजी ॥ चोथे नाम जिन पांचमे, सर्व लोक चैत्य जूहारोजी ॥ विहरमान छठे जिन वंदो, सातमे नाण निहालोजी ॥ सिद्ध वीर उजित अष्टापद, शासन सुर संभालोजी ॥२॥ शक्रस्तवमां दोय प्रकार, अरिहंत चेइआणु त्रीजेजी ॥ चोविसथामां दोय प्रकार, स्तुत स्तव दोय लीजेजी ॥ सिद्ध॰

खिलजननननाया' समुदिता ॥ तपो यरकर्त्तृणां विदधति मुख विस्मित हृद, क्विती० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशी स्तुति ॥ हरिगीत छंद ॥

॥ डेंडंकि धपमप धुधुमि धोंधों भ्रसकिधर धपधोरव। दोंदोंकि दों दो दाग्निदि दाग्निदिकिड्मग्निड्ण रणडेणव ॥ झझिंझोंकि झेंझें झणणरणरण निजकि निजजन रजन, सुरशैल शिखरे भवतु सुखद पार्श्वजिनपतिमज्जन ॥ १ ॥ कटरेगिनि थोगिनि किटनि गिरुकदा धुधुकि धुट नटपाटव, गुणगुणण गुण गण रणकि णेंणें गुणणगुणगणगौरव ॥ झझि झेंकि झेंझें झणण रणरणण निजकि निजजन सज्जना, कलयन्ति कमलाकलित कलमल मुकलमीश महेजिना ॥२॥ ठकि ठेकि ठेठें ठड्डि ठड्डिक ठड्डिपद्दा ताक्रते, तललोंकि लोलो त्रेपि त्रेपिनि मेपिकेपिनि वाछले ॥ डॅडॅ कि डॅ डॅ थुगि थुगिनिधोगिथोगिनि कटरत्ने, जिनमतमनंत महिम तनुता नमति सुर नरमुद्दते॥३॥ पुदाकि पुदा पुपुडदि पुदा पुपुडदि दोंदों अबरे, चाचपट चचपट रणकि णेंणें कणण केंकें कबरे॥ निद्दासरगम-

पधुनि निधपमगरस सस ससस सुरसेवता, जिनना-
त्परगे कुशलमुनिश दिशतु शासनदेवता ॥४॥ इति॥

॥ अथ दीपमालिका स्तुति ॥

॥ पापायां पुरिचारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासन, क्ष्मा पालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरण तूर्यारकाले शुभे, स्वातौ य. शिवमाप पापरहित संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥१॥ यज्ज्ञानागमनोत्सवव्रतवरज्ञानाकरातिक्षणे, सन्न्याशु सुपर्सततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिजवाढिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वरा, सधायानघचेतसे विदधता श्रेयास्यनेनासि च ॥ २ ॥ अर्थात्पूर्वमिद जगाद जिनप श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयाचक्रुतरा सूत्रत. ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशा, भूयाद्भावुककारकप्रवचन चेतश्चमत्कारि यत् ॥३॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देवता, चचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायात्पायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिनचन्द्रसूरिसुमतिनो भ्रव्यात्मन प्राणिनौ, याचकेऽत्रमकष्टहस्तिनिधने शा-

र्ईलविक्रीडित ॥४॥ इति॥

॥ अथ श्री नाकोल पद्मप्रभु स्वामीनी स्तुति

॥ नाकोलमां देवल अति सुदर, श्री पद राजेंजी ॥ परिकर विंब अष्टोत्तर गाजें, झालर वाजेंजी ॥ जिन पडिमा जिन सरखी परखी, आगम वाणीजी ॥ श्यामा अमरी जिनपद, न समरी सान्निध्य करणीजी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथ जिन स्तुति ॥

॥ नारद पुरी मंडण यदुनंदन, नमीए नेम जिनेशोजी ॥ देवल आठ अनोपम, बीजा तिणमां चौवीसजी ॥जीवादिक नवतत्व प्रकाशी, आतम लीला-वासीजी ॥ अंबा देवी सार करेवी, नेमि जिनम वा-सीजी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवखंडा पार्श्वनाथनी स्तुति ॥

॥ घोंघाबिंदर गुणमणि मंदिर, श्री न... पासजी ॥जीराउल चंद्रप्रभ सुविधि, शांति सदा सु-खवासजी ॥ जिन पडिमा जिन सरखी परखी, पुजो आगम वाणीजी ॥ पउमावई देवी प्रभु सेवी, खिमा-

विजय जिन भ्राताजी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनी स्तुति ॥

॥ राजनगरमां वीर जिणंदा, भविक कुमुद वन चंदाजी ॥ शेत्रुंजे श्री ऋषभादिक जिन, प्रणमु प्रेम आणंदाजी ॥ सपदकारी दुरित निवारी, जेहने प्रवचन भाख्यु जी॥ श्रीगुरु खिमाविजय सुपसाये, मुनि जिन चितमां राख्युजी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप छंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि, हुं गाउ त्रिभुवनको स्वामी ॥ शांति शांति जपे सब कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अभिराम ॥ शांति जपी पर देश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥२॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी, शांतिजी नाम दियो हित कारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋधि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाइ, ता नरकूं क्या आरति भाइ॥ जो कछु वंछे सोई पूरे, दारिद्र दुख ,मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निर-

जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्यु नवि जाय, कहेतां मोमन अच रिज थाय ॥ ५ ॥ मार दीए सवहीं हथियारा, जी त्या मोह तणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवशु रंग राचे, राज तज्यु पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहिजे देवा, कायर कुंथु न एक दृणेवा ॥ ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजककुं सम नायक, पण सेवकहीकू सुख दायक ॥ तजो परिग्रह नये जगना यक, नाम अतिथि सवि सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित गणीजे, नामदेव अरिहंत भणीजें ॥ सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी माहापद दीजे ॥ ए ॥ सायर जेसा होत गंभीरा, दूपण एक न माहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन जो सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥११॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशु

लय लाई ॥ लोभ विना गुणराशि ग्रहीजें, निरभ भये त्रिगको सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नास यति पण चमर ढलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजें, करम सबें को मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लछो घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगव त कहावे, न काहूकू शीश नमावे ॥ अकिंचनको विरु द धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नहीं पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहि यें, तोरा गुनको पार न लहीयें ॥ तु प्रभु समरथ साहेब मेरा, हु मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तू रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हू रे अनाथी तु रे दयाल ॥ तुं शरणागत राखणधीरा, तु प्रभु तारक छो वड वीरा ॥ १८ ॥ तुहि समोवड भागज पायो, तो मेरे काज चडयो रे सवायो ॥ कर जोडी प्रभु विनव

तोसु, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १० ॥ जनम मरणना दोष निवारो, भव सागरथी पार उतारो ॥ श्री दक्षिणाउरमध्य सोहे, तिहां श्री शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन भाया ॥ नरनारी जे चित्तें गावे, ते मनोवंछित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ सोरठमें सोहामणो, तीरथमें अति तुंग ॥ गिरिवरमें गिरनार गिरि, भूधर भूषण चंग ॥१॥ निशाणी छंद ॥ तीरथ अति ताजा, मोटी माजा, राजा मन मोहदाए ॥ अति विषमा दीपे, अरियल जींपे, शिखर सात सोहदाहे ॥ निझरणां झरता, जल बहु वहता, हारोपम फावदाहे ॥ गिरनार गिरिंदा, नेमि जिणंदा, दर्शन सुख पावदाहे ॥१॥ ए आंकणी ॥ दामोदर तीर, नीर्मल नीर, जलचर केलिकरदाहे ॥ जोगी सन्यासी, विष्णु उपासी, निश्चल ध्यान धरदाहे ॥ ब्राह्मण स्तुति करता, वेद भणंता, गीतागुण गावदाहे ॥ गिरनार० ॥ २ ॥ मृगकुंड बिराजे,

सजलो ठाजे, वृक्षतणां तिहां वृंदा हे ॥ तिम माली पवँ, सूरिजन सर्वे, गीतज्ञान सुखकदाहे॥ षट दर्शन वासी, धर्म्म अभ्यासी, सकल लोक आवदा हे॥ गिरनार० ॥ ३ ॥ भीमकुरू भलेरा, गजपद केरा, ग्यान वाव निरखंदा हे ॥ काचलिया कुरू, कमरूल भरूं, जल भरी देखी मन हरखदा हे॥ तिहां वहु वनचर, खेचर भूचर, जल अम्नावर चदा ह ॥ गिरनार०॥४॥ चोराशी सिद्ध, निर्मल बुद्ध, निश्चल ध्यान धरदा हे ॥ केइ छूधाधारी, पवन आहारी, धूम्रपान विरचदा हे ॥ चोराशी आसन, वलि विकटासन, योगासन भावदा हे ॥ गिरनार० ॥ ५ ॥ सहसावन सुदर, नेमि जिणेश्वर, व्रत कल्याण करदा हे॥ तिम गिरिवर सुदर, नेमि जिणेश्वर, केवल ज्ञान धरदा हे॥ गिरिशृंगें निर्मल, अति शुचि उज्वल, मुक्ति मोहल पोंचिदा हे ॥ गिरनार० ॥ ६ ॥ इण डुगर उपर, वहुल मुनीश्वर, व्रत पच्चरकाण करदा हे ॥ तिम समकित धारी, वहु नर-नारी, गिरिवर ध्यान धरदा हे ॥ आतम अजवाली, सद्गति धारी, धर्मध्यान ध्यावदा हे ॥ गिरनार० ॥७॥

देवल अति सुंदर, जिम सुर मंदिर, तिम जिन जुवन सोहदा हे ॥ जीरण गढ श्रावक, जिनमत धारक, निरखी मन मोहदा हे ॥ पूजा तिहां विरचे, चंदन चरचे, जाव जलो जावदा हे ॥ गिरनार० ॥८॥ अवाजी सारी, सब सुखकारी, जगदंबा ते कहदाहे ॥ मनवंछित पूरे, संकट चुरे, जिनपति आण वहदा हे ॥ जैरव निकराला, तेज ऊमाला, अंबा सेव करदा हे ॥ गिरनार० ॥९॥ कलश ॥ छप्पय ॥ जावे निर्मल जाव, जावपरे जवजल तारे ॥ ए गिरिवरनु नाम, कष्ट सब दूर निवारे ॥ नेमीश्वर गिरधार, सार ए तीरथ जाणी ॥ समवसरया सुविचार, तरया तिम बहुला प्राणी ॥ संघ सकल सब देशना, आवे गिरियात्रा जाणी ॥ कर दोय जोमि जिन विनवे, तुम नमो रेवत गिरिधणी ॥१०॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ जुजंग प्रयात वृत्त ॥ वदो देव वामेय देवाधि देव, सुरा आसुरा जासुरी सारे सेव ॥ नवे खरूमा आण अगरू जेहनी, प्रजु कांति शी जाति नहीं विश्व के

हनी॥१॥ महादुष्ट जेह धिष्ट पापिष्ट पूरा, प्रभू नामथी ते दोषी जाय दूरा ॥आवी वाट घाटें बाधे जेह उंडा, थाये आधला ते घणा तो न थोडा ॥२॥ धरा वीश धोखो धरी धीज दाखे, रागी सेवकानी प्रभु लाज राखे ॥ वेरिनाथ जे वातनो जोर वाध्यो, बहु नामी वधू पलिपास वाध्यो ॥३॥ जुठी वात जंपी हियानी उपाई, मेहलें साधुने असाधु पजाई॥ साचो तो वेदी ते प्रभु तु सदाई, स्वामी तु सधारे नधारे वडाई ॥ ॥ ४ ॥ पछि वात बाधे प्रभु पार पीजो, जिहां जिहां रुडा तिहा प्रभुजी धणी छो॥ साचु करी जूठु करजो जोर सासो, वेदेरी थया वांसे राखो नाथ वासो॥५॥ गुडा जे गुमानी लिये गुज्जाभाथी, जुडा जे जनेरया जरी तीरजाथी ॥ करी क्रोधने जे करे पातकेना, तमें वारज्यो तातजी नाक तेना ॥६॥ गति गोवरा तोवरा मुखें तुडा, वली वाकडा आकरा दार डंडा ॥ मले-छा यथेछा गछें मछराला, प्रभु पार्श्वध्यानें नमे ते मदाला ॥७॥ क्रोधाला सूपाला हठाला कराला, वडा धिंग त्रिसिंग महासिघपाला ॥ रोसाला दोसाला मो-

साला ते रूडा, तोसाला पेसाला हुवे पास तूडा ॥ ॥ ८ ॥ करी केसरी दाव दो जीहवाला, रणें आणंवें रोग महाराण पाला ॥ पन्नगा तास पास न्नांजि पास पास, गोमी सर्व त्रास आवे ते आवास ॥ ए ॥ पूरें दास आशा प्रज्ञु पास पूरी, सदा सपदा खेल लिंचे सन्नूरी॥ टले आपदाने करे सार टाणे, जयकार पामे न्नजी जेह जाणे ॥१०॥ उदय उवज्झाया वदे आज पाया, विलासा सवाया सवासें वसाया ॥ लीला लहेर वाधे प्रज्ञु नाम साधां, वोली सर्व वाधा लघाश अ-गाधा ॥११॥ इति ॥

॥ अथ श्री गोमी पार्श्वनाथनो ढद ॥

॥ ज्ञुजग प्रयात ढद ॥ प्रज्ञु ज्योती दीपे शशी सूर जीपें, मुखे नाम जपे महा वैरि कपे ॥ सदा नम्र कम्रा मरेंद्रा सुरेश, न्नजे न्नावत पार्श्व गोमी जिनेश ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ जयानद कर्त्ता जगत्कष्ट हर्ता, प्रिया मुक्ति न्नर्ता तजी डुःख गर्ता ॥ कलौ पाप सताप नाशे धिजेश ॥ न्नजे० ॥२॥ नमत्पार्श्वयक्ष हरन्पाप पङ्क, दयादान दक्ष दहन कर्म कक्ष ॥ सित साधु

चित्तावुजे सदिनेश ॥ जजे० ॥३॥ चिदानद कूर्प ज-
गत्ध्येय रूप, जगत्देव रूपं त्रिलोकाग्र जूप ॥ व्रते
स्थैर्य जावे रहे मौलिकेश ॥ जजे० ॥४॥ महा मेरु
धीरं कृपाकद नीर, जने दान वीर तृषा जूमि सीरं
॥ नहीं लोकने शोक संताप लेश ॥ जजे० ॥५॥ ख-
सन्नील गात्र गुणाधीर पात्र, जव नाम मत्र जले यान
पात्र ॥ सदा जक्तिने जे वसे पार्श्वदेश ॥ जजे० ॥६॥
अहो शांत मुर्द समांत्र समुर्द, मुखे पूर्णचद्र नहीं
मोह निड ॥ घणु नील अश्व फिरे नील वेश ॥ जजे०
॥७॥ नमू हस्त जोमी स्तवु मान मोमी, शिरी पार्श्व
गोमी करे जड कोमी ॥ मुने दीजीयें स्वामी शिव
सन्निवेश ॥ जजे० ॥८॥ कलश ॥ शार्दूल विक्रीमित
वृत्त ॥ इत्थ जक्ति मता मयावर नव, द्वीपे[1] जुनि
सम्मिते ॥ वर्षे श्रीसु गोमीश्वरो जिनपति, वामाश्व
सेनागज ॥ कल्याणाब्धि गणाधिपेन जगवान्, नीत
स्तुतेः पद्धति ॥ देयाद् जव्य परपरासु सतत, कल्याण
मालां परां ॥९॥ इति ॥

१ सवत १७९०.

॥ अथ श्री जिन सहस्र नाम वर्णन छंद ॥

॥ भुजग प्रयात वृत्त ॥ जगन्नाथ जगदीश ज-गद्बन्धु नेता, चिदानंद चिद्रूप चिन्मूर्ति चेता ॥ म-हामोह भेदी अमायी अवेदी, तथा गत्त तथा रूप भव भय उछेदी ॥१॥ निरातंक निकलंक निर्मल अ-बंधो, प्रभो दीन बंधो कृपानीर सिंधो ॥ सदातन सदाशिव सदा शुद्ध स्वामी, पुरातन पुरुष पुरुष वर वृषभ गामी ॥ २ ॥ प्रकृति रहित हित वचन माया अतीत, महा प्राज्ञ मुनि यज्ञ पुरुष प्रतीत ॥ दलित कर्म भव कर्म फल सिद्धि दाता, दृढय पूत अनभ्रन नूतन विधाता ॥३॥ महा ज्ञान योगी महात्मा अ-योगी, महाधर्म सन्यास वर वछिभोगी॥ महाध्यान लीनो समुक्त्रो अमुक्त्रो, महाशांत अतिदांत मानस अरुद्धो ॥४॥ महेंद्रादि कृत सेव देवाधि देव, नमो ते अनाहुत चरण नित्य मेव ॥ नमो दर्शनातीत द-र्शन समूह, त्रयी गीत वेदांत कृत अखिल ऊह॥५॥ वचन मन अगोचर महा वाक्य वृत्तें, कृता वेद्य स-वेद्य पद सुप्रवृत्तें ॥ समापत्ति आपत्ति सपत्ति भेदी,

सकल पाप सुगरीठ तु दीठ हेटी ॥६॥ नतू डग डग मात्र इति वेद वादो, समापत्ति तुज दृष्टि सिद्धांत वादो ॥ विगूता विना अनुज्नवि सकल वादी, लखी एक सिद्धांत धर अप्रमादी ॥७॥ कुमारी दयिता ज्नोगसुख जेम न जाणे, तथा ध्यान विण तुज मुधा लोक ताणे ॥करी कष्ट तुज कारणे बहुत खोजी, स्वय तु प्रकासी चिदानद मोजी ॥८॥ रटे अटपटे कटपटें वाद ल्यावे, निरत्या तु रमे अनुज्नवें पास आवे ॥ महाचर न हठ योग माहें तु ज्यु जागे, विचारें होइ साइ आगें जो आगें ॥९॥ तथा बुद्धि नहीं शुद्ध तुज जेणि वहिये, कलौनाम माही एक थिर थोज्न रहियें ॥ सहस्रनाम माही दृप्प पण अप्प जाणु, अणते गुणे नाम णता वखाणु ॥१०॥ अनेकात सकात बहु अर्थ शुद्ध, जिके शब्द ते ताहरा नाम बुद्ध ॥ निराशी जपे जेह ते सर्व साचु, जपे जेह आशायें ते सर्व काचु ॥ ११ ॥ नको मत्र निवतत्र निवयत्र मोटो, जिस्यो नाम ताहरो सम अमृत लोटो ॥ प्रज्नु नाम तुज मुज अक्षय निधान, धरु चित्त ससार तारक प्रधान ॥१२॥ अनामी

तणा नामनो शो विशेष, एतो मध्यमा वैखरीनो उ-
लेख ॥ मुनिरूप पश्यंति कांइ प्रमाणे, अकल अलख
तु इम हुवो ध्यान टाणे ॥ १३ ॥ अनवतारनो केह
अवतार ज्ञांखी, घटी तेहनी देवनी कर्म पाखी ॥
तनुग्रह नहीं चूत आवेश न्यायें, प्रथम योग ठे कर्म
तन्मिश्र पायें ॥१४॥ अत्रे शक्ति तो जननी उदरें न
पेशी, तनुग्रहण वली पर अदृष्टें न वेशी॥तुरंग शृंग
सम अर्थ जेह युक्ति, कही सदहि तेह अप्रमाण उक्ति
॥ १५ ॥ यदा जिनवरें दोष मिथ्यात्व टाल्यो, नहुं
सार सम्यकत्व निजवान वाल्यो ॥ तिहांथी हुआ
तेह अवतार लेखी, जगत लोक उपगार जगगुरु ग-
वेखी ॥ १६ ॥ अहो योग महिमा जगन्नाथ केरो,
टखे पञ्च कल्याणके जग अंधेरो ॥ तदा नारकी जीव
पण सुख पावे, चरण सेवना धसमस्या देव आवे ॥
॥१७॥ त्यजी ज्ञोग लै योग चारित्र पाले, धरी ध्यान
अध्यात्म घन घाति टाले ॥ लही केवल ज्ञान सुर-
कोडि आवे, समवसरण मण्डाइ सवदोष जावे॥१८॥
घटे ऊव्य जगदीश अवतार एसो, कहो न्नाव जग-

दीश अवतार केसो॥रमे अंश आरोप धरी भेद दृष्टि ॥ लहे पूर्ण ते तत्त्व जे पूर्ण दृष्टि ॥ १९ ॥ त्रिकालज्ञ अरिहंत जिन पारगामी, विगत कर्म परमेष्टि जगवंत स्वामी ॥ प्रभू बोधिदा ज्ञयद आस स्वयभू, जयो देव तीर्थंकरो तुज शभू ॥ २० ॥ इश्या सिद्ध जिननां कह्यां सहस्र नाम, रह्यो शब्द झगमो लहो शुद्ध धाम ॥ गुरु श्री नयविजय बुध चरण सेवी, कहे शुद्ध पद्मांहि निज दृष्टि देवी ॥२१॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकाररनो लघु छंद ॥

॥ सुख कारण भविपण, समरो नित्य नवकार ॥ जिन शासन आगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मत्रनो महिमा, कहेता न लहु पार ॥ सुरतरु जिम चिंतित, वंछित फल दातार ॥१॥ सुर दानव मानव, सेव करे करजोड ॥ भुविमंडल विचरे, तारे भवियण कोड ॥ सुर छंदे विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पेहेले पद नमियें, अरिगजन अरिहंत ॥२॥ जे पन्नरे भेदें, सिद्ध थया भगवंत ॥ पचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरूपी, पंचानंतक

तेह ॥ जिनवर पय प्रणमु, बीजे पद वलि एह ॥३॥ गच्छभार धुरधर, सुंदर शशिहर सोम ॥ करे सारण वारण, गुण छत्तीसें थोम ॥ श्रुत जाण शिरोमणी, सागर जेम गंभीर ॥ त्रीजे पद नमिये, आचारज गुणधीर ॥४॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र भणावे सार ॥ तप विधि संयोगें, भाखे अर्थ विचार ॥ मुनिवर गुण जूता, कहियें ते उवज्झाय ॥ चोथे पद नमियें, अहो निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले, पाले पंचा चार ॥ तपसी गुणधारी, वारे विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमांहें जे साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमु, परमारथ जिणे लाध ॥६॥ अरि करि हरि सायणी, डायणि भूत वैताल ॥ सवि पाप पणासे, वाधे मंगल माल ॥ एणें समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जपे जिनप्रभ, सूरि शिष्य रसाल ॥७॥ इति ॥

॥ अथ आत्मनिंदित विनति छंद ॥

॥ भुजंगप्रयात वृत्त ॥ प्रभु पाय लागी करु सेव ताहरी, तमे सांभलो श्रीजिन राव माहरी ॥ मने मोह वेरी पराभव करे छे, चिहु गति तणां दुःख

नहि, विसरे ठे ॥१॥ हुतो लक्ष चोराशी जिव जोनि माहे, भ्रम्यो जन्म मरण केरे प्रभावे॥ घणा में कीधा कर्म जे धर्म गामी, कहु ते सर्व साम्भलो स्वामी मामी ॥२॥ मेंतो लोभें लंपट थइ कपट कीधां, घणां भो लवी परतणां द्रव्य लीधा ॥ मेंतो पिण पोख्यो करि जीव हिंसा, करी पारकी कूथली स्वप्रशंसा ॥ ३ ॥ मेंतो बोलीया परतणा मर्म मोसा, नहिं भाखिया आपणा पाप दोषा ॥ सदा संग कीधो परनारि केरो, नहीं पालियो धर्म जिनराज तेरो ॥ ४ ॥ पच्यो घर तणे पाप आशा विलुधो, नहि साम्भल्यो जिनराज उपदेश सुधो ॥ हुंतो पुत्र परिवारशुं रंग रातो, नहीं जाणियो जिनवर काल जातो ॥ ५ ॥ घणु आरम्भनु पाप करी पिण भारयो, में मूरखें नरभव फोक हारयो ॥ गयो काल संसार एलें भमतां, सह्यां तेहथी दुर्गति दुःख अनतां ॥६॥ घणे कार्टें जिनराज हवे देव पाम्यो, तारे सर्व संसारना दुःख वाम्यो ॥ ज्यारें श्री जिनराजनु रूप दीठु, माहरे लोचनें रूवडु अमीय वुठ्यु ॥ ७ ॥ आवी कामधेनु घरमाहि चाली, भरी

रत्न चिंतामणि देम थाली ॥ माहरे घर नणे आंगणे कल्पवृक्ष, फल्यो आपरा वाछित दानदक्षं ॥८॥ गयो रोग संताप ते सर्व भागो, जरा जन्म मरणां तणो त्रास नागो ॥ तोरे शरण आव्या तणी लाज कीजें, करया अपराध ते सर्व खमीजें ॥९॥ घणु विनवुं हु जिनराज देवा, मुने आपजो नवोनव स्वामि सेवा ॥ यह विनति नावथी जेह नणशे, सकल चदनो स्वामी सदा सुख करशे ॥१०॥ इति ॥

॥ पद १ लु ॥ वेर वेर नहीं आवे ॥ अवसर ॥ वेर वेर नहीं आवे ॥ ज्युजाणे त्यु करले नलाइ, जनम जनम सुख पावे ॥ अव० ॥१॥ तन धन जोवन स-वही जूठो, प्राण पलकमें जावे ॥ अव० ॥२॥ तन छूटे धन कौन कामको, कायकु कृपण कहावे ॥ अव० ॥३॥ जाके दिलमें साच वसत हे, ताकु जूठ न नावे ॥ अव० ॥ ४ ॥ आनद घन प्रनु चलत पथमें, समरी समरी गुण गावे ॥ अव० ॥५॥ इति ॥

॥ पद वीजु ॥ राग भैरवी ॥

॥ क्या भरोसा तनका ॥ अवधु ॥ क्या भरोसा० छिनरूप छिन जिनका ॥ अवधु क्या० ॥ ए आकणी ॥ छिनमे ताता छिनमे सीरा, छिनमे भुखा प्यासा ॥ छिनमे रंक रंक ते राजा, छिनमें हर्ष उदासा ॥ अवधु० ॥१॥ तीर्थंकर चक्री बळदेवा, इन्द्र चन्द्र धरणिंदा ॥ असुर सुरवर सामानिक नर, क्या राणा रार्जीदा ॥ अव० ॥ २ ॥ संसारी जीव पुद्गल राते, पुद्गल धर्म प्रचारा ॥ या सगत ते जनम मरण गए, ज्यु जळ विच पतासा ॥ अव० ॥ ३ ॥ निज भाव पुद्गल तें भावे, तु अनकळ अविनाशा ॥ ज्ञानसार निजरूपे नाही ॥ जन्म मरण भवपाशा ॥ अव० ॥४॥

॥ पद त्रीजुं ॥ ख्याल ॥

॥ जिननामकु समरले, या वखत पाया हे ॥ फिर हाथ नहीं आए, सदगुरु बताया हे ॥ जिन० ॥१॥ रावन सरिखे हो ते, जिनके बजे निशान ॥ छीनछीन छीन लीनो, तेरा क्या उरमान ॥ जिन० ॥ २ ॥ मायाके निशानमें, वेफिकर हो रह्या ॥ माया सग न च-

लेगी, फइा निदमें सोया ॥ जिन० ॥ ३ ॥ कहेता हे मेरी मेरी, या तेरी को नाही ॥ जिन नाम नाम सच्चा, कवु नेकी करखें ॥ जिन० ॥ ४ ॥ कहेता हे मनरूप, कवु सज्ज यार मन्न ॥ प्रभु नाम नाम सच्चा, जुठा सब जतन्न ॥ जिन० ॥५॥ इति ॥

॥ पद चोर्थु ॥ ठुमरी ॥

॥ क्या तन माजणारे, आखर मट्टीमें मिलजा ना ॥ क्या० ॥ टेक ॥ मट्टी ओढण मट्टी बिछावण, मट्टीकारे सिराना ॥ मट्टीका ताबूत बनाया, जिसपर भमर छेजाया ॥ क्या तन० ॥१॥ पाचु पेरे ठनी पेरें, पेरे मुजमुज खासा ॥ दमलीका चोतारा पैना, अन खाखमें वासा ॥ क्या० ॥२॥ पाच दश पचिशा जीवे, जीवे शाठ पचाशा ॥ बहुत जीवे तो सो वरस जीवे, फेर मरणकी आशा ॥ क्या० ॥३॥ पाचु काचे ठ नी काचे, काचे राज दरवाजा ॥ पाच पचीशुं स बहि काचे, काचे गढके राजा ॥ क्या० ॥४॥ दिलका मरम कोइ न जाने, जो मिलया सो गरजी ॥ भूधर चोला नया पुराना, कवउग शिवे दरजी ॥क्या०॥५॥

॥ पद पांचमु ॥

॥ मारे दीवाळीरे थइ आज प्रभु० ॥ ए देशी ॥

॥ तने हसी हसीने समजावु हो ॥ चेतन चेतो रे ॥ तने सान करी शीखलावु हो ॥ चेतन० ॥ तने वातो करीने वतलावुं हो ॥ चेतन० ॥१॥ ए आकणी ॥ उपशमना बाजारमां रे, ज्ञान रतन वेचाय रे ॥ ग्राहकतो मलशे घणारे, तेना मूल मोंघेरा थाय ॥ चेतन० ॥ २ ॥ विषय नारी रंगशु रे, निशिदिन रह्यो रे सोजाय रे ॥ सुमति नारिने जोगवो रे, तेहनु जीरतर लेखे थाय ॥ चेतन० ॥३॥ अजली जलनु आउखुंरे, तो तृष्णा न समाय रे ॥ बाजीगर बाजी रचीरे, तुतो जाण एहवो ससार ॥ चेतन० ॥४॥ श्रीगोनीचा रायजीरे, चरणे लागु पाय रे ॥ रूप विबुध कविरायनो, तारे नामें नवनिधि थाय ॥ चेतन० ॥५॥ इति

॥ पद छठु ॥

॥ वीत गइ सारी रेन ॥ प्राणिया ॥ वीत गइ सारी रेन ॥ टेक ॥ दोय घडीको तडको रहियो, दूर करोनी सब फेन ॥ प्राणिया० ॥१॥ जो कछु करणा

होयसो करले, एह अवसर नही एन ॥ प्राणिमा० ॥२॥ दर्शन ज्ञान चरण चित्त धरले, ज्यु पावे सुख चेन ॥ प्राणिमा० ॥ ३ ॥ आतम काज कियो कहु चाहे, सुन सदगुरुका वेन ॥ प्राणिमा० ॥४॥ इति ॥

॥ पद सातमु ॥ रेखता ॥

॥ जगत है स्वनका सुपना, समज कर देखो को नहिं अपना ॥ टेक ॥ कठिन या लोभकी धारा, वह्या सब जात ससारा ॥ घमा एक नीरका फुटा, पता जैसें डारसें त्रूटा ॥ जगत० ॥१॥ ऐसी नरजात जिंदगानी, अजु तु चेत अभिमानी ॥ जूठो नर देख तन गोरा, जगतमें जीवना थोरा ॥ जगत० ॥ २ ॥ सजन सुत दार परिवारा, सबे उसरोज है न्यारा ॥ निकल जब जान जावेगा, नहि कोइ काम आवेगा ॥ जगत० ॥३॥ सदा मत जाण आ देहा, लगावो जिनराजशु नेहा ॥ कटे या जन्मकी धारा, कहे ज डुराय मोहि तारा ॥ जगत० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥ ख्याल ॥

॥ गोरिशी जान जरासा दमपर, क्या मगरुरी

फरणांवे ॥ गो० ॥ टेक ॥ हृदये समरण कर जिनवरका, तातें नव दुःख हरणावे ॥ गो० ॥ १ ॥ दोलत दुनियां माल खजाना, गाफिल होय मत रहणांवे॥ गो० ॥२॥ आनदराम सेवक यु जपे, सो दुःख फद ज्यु कटणावे ॥ गो० ॥३॥ इति ॥

॥ पद नवमु ॥ राग नट्ट ॥

॥ किन गुन भयेरे उदासी, भमरा किन० ॥ टेक ॥ पख तेरी काळी, मुख तेरा पीळा, सब फुलनको वासी ॥ भमरा किन० ॥१॥ सब कळियनको रस तुम लीनो, सो क्यू जाय निराशी ॥ भम०॥२॥ एक कळियनको रस नहिं चाख्यो, अब तु भयो हे उदासी ॥ भम० ॥३॥ आनदघन प्रभु तुमारे मिलनकु, जाय करवत ल्यु कासी ॥ भमरा० ॥४॥ इति ॥

॥ पद दसमु ॥

॥ छुतो भूली गया तें अरिहतने जो ॥ ए टेक ॥ तारे नारी दोलतने दीकराजो, तारे वाली घोमाने टरवारजो ॥ हुतो० ॥ १ ॥ तु तो धन देखीने नीचो नहीं नम्यो जो, तने आवसी शो अभिमानजो ॥

हुंतो० ॥२॥ जीरे काचा ते कुंन्न जळें न्नर्याजो, तेनें फरता न लागे वारजो ॥ हुंतो० ॥ ३ ॥ तुतो मुरख काइ नथी जाणतो जो, आगळ घोर अंधारी रातजो ॥ हुंतो० ॥४॥ तुंतो हीरविजय गुरु हीरलोजो, तारो मोह माया फंद नांख्जो ॥ हुतो० ॥५॥ इति ॥

॥ पद इग्यारमु ॥ राग न्नैरव ॥

॥ विरथा जनम गमायो ॥ मुरख विरथा० ॥ टेक ॥ रंचक सुखरस वश होय चेतन, अपनो मूल नसायो ॥ पांच मिथ्यात धार तु अजहु, साच न्नेद नवि पायो ॥ मुरख० ॥१॥ कनक कामिनी अरु ए-हथी, नेह निरतर लायो ॥ ताहुथी तु फिरत सोरां नो, कनक बीज मानु खायो ॥ मुर० ॥२॥ जनम जरा मरणादिक ङु समें, काल अनत गमायो ॥ अरहट घटिका जिम कहो याको, अत अजहुं नवि आयो ॥ मुर० ॥३॥ लख चोराशी पेहेर्या चोलना, नव नव-रुप बनायो ॥ विन समकित सुधारस चाख्या, गि-णती कोउ नगिणायो ॥ मुर० ॥ ४ ॥ एतीपर नवि मानत मुरख, ए अचरिच चित आयो ॥ चिदानद

ते धन्य जगतमें, जिणे प्रभुशु मन लायो ॥ मुर० ॥
॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद धारमु ॥ राग भैरव ॥

॥ ऊठत प्रभात नाम जिनजि० ॥ ए चाल ॥

॥ जाग रे बटाउ अब, भई भोर वेरा जाग० ॥ टेक ॥ भया रविका प्रकाश, कुमुदहू थए विकास ॥ गया नाश प्यारे मिथ्या, रेनका अंधेरा ॥ जाग० ॥ १ ॥ सूता केम आवे घाट, चालवी जरूर वाट ॥ कोइ नांही मित्त, परदेशमें ज्यु तेरा ॥ जाग० ॥२॥ अवसर वीत जाय, पीछें पिछतावो थाय ॥ चिदानंद निहुचें, ए मान कहा मेरा ॥ जाग० ॥३॥इति॥

॥ पद तेरमु ॥

॥ सोवे सोवे सारी रेन गुमाई, वहेरन निद्रा तु क्यासें आइ ॥ सोवे० ॥ टेक ॥ निद्रा कहे में बाळी भोळी, बडे बडे मुनिजनकू नाखु ढोळी ॥ सोवे० ॥ ॥१॥ निद्रा कहेमें जमकी दासी ॥ एक हाथमें मुक्ति ओर दुसरे हाथमें फासी ॥ सोवे० ॥२॥ समय सुंदर कहे सुनो भाइ बदनीया ॥ आप मुवे सारी डुब गइ

दुनीयां ॥ सोवे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमु ॥ राग पट ॥

॥ स्वारथकी सब हेरे सगाइ, कुण माता कुण वेनरु भाइ ॥ स्वारथ० ॥ टेक ॥ स्वारथ भोजन भुक्त सगाइ, स्वारथ विना कुग पाणी न पाइ ॥ स्वार० ॥ ॥१॥ स्वारथ मा बाप शेट बडाइ, स्वारथ विना नहु होत सहाइ ॥ स्वार० ॥२॥ स्वारथ नारी दासी कहेवाइ स्वारथ विना लही ले धाइ ॥ स्वार० ॥ ३ ॥ स्वारथ चेला गुरु गुरू भाइ, स्वारथ विन नित्य होत लराइ ॥ स्वार० ॥४॥ समय सुदर कहे सुणो रे लोकाइ, स्वारथ हे भला धर्म सखाइ ॥ स्वार० ॥५॥ इति ॥

॥ पद पदरमु ॥

॥ सोवे सोवे सारी रेन गुमाइ ॥ ए चाल ॥

॥ नजर नही आवे आतम ज्योती, घट घट देखु मे प्रभुजीको काती ॥ टेक ॥ तेल न वत्ती नही बुज जाती, नही जागत नही सोती सोती ॥ नजर० ॥ ॥१॥ दश दीप प्रगटे तेज प्रकाशे, जैसे निर्मळ मोती मोती ॥ नजर० ॥२॥ कहेत मोतिसागर सुणत सखी-

मण, घर घर वांचत पोथी पोथी ॥नजर० ॥३॥ इति

॥ वीतरागनी स्तुतिरुप नाह्रानां स्तवनो ॥

॥ स्तवन पहेलु ॥ (ऋषन्नदेवजीनु)

॥आजश्याम मोहे लीनो, बांसरी बजायकेए चाल ॥

॥ उठ तेरो मुख देखु, नान्निजूके नदा ॥ उठ तेरो० ॥ नान्निजूके नदा, प्रज्ञु जगत्के वदा ॥ जैसें मेरे कविन, कर्म दहे फंदा ॥ उठ० ॥ १ ॥ जागीयें महाराज, कुमार, सुरनर ठाढे द्वार ॥ तेरो मुख जोवत, चकोर जेसे चदा ॥ उठ० ॥२॥ रजनीको तिमिर गयो, अरुण उद्योत न्नयो ॥ दीजें मोहे दरस, मिटत छुखदंदा ॥ उठ० ॥ (पाठांतरे) किरण प्रगट न्नइ, चद न्नयो मदा ॥ उठ० ॥३॥ कर प्रज्ञु उपगार, मिटत करमविकार ॥ दूर करो नाथ, अनाथ केरा फदा ॥ उठ० ॥४॥ जेइ न्नवि पूजा करे, तिणहिंकु शिवजरे ॥ स्वर्ग जुवग लोक, करत आनदा ॥ ॥ उठ० ॥ ५ ॥ टोमर जिनस्यु नियम, तुमहिंशु लागो प्रेम ॥ तुमारोहि ध्यान धरन, लागो जिन चदा ॥ उठ तेरो० ॥ इति ॥

॥ स्तवन चोथुं ॥ (पांच तीर्थंकरोनुं) ॥ राग प्रन्नाती ॥
पास सखेश्वरा सारकर सेवका ॥ ए देशी ॥

॥ पंचपरमेश्वरा, परम अलवेसरा ॥ विश्व वाले-सरा, विश्व व्यापी ॥ न्नक्तिवत्सल प्रन्नु, न्नक्तजन उद्धरी ॥ मुक्तिपद जे वरे कर्म कापी ॥ पंच० ॥ १ ॥ वृषन्न अंकित प्रन्नु, ऋषन्न जिन वंदीयें, नान्नि मरु-देवीनो, नदनीको ॥ न्नरतने ब्राह्मीना, तात न्नुवनांतरें ॥ मोहमद मजणो, मुक्ति टीको ॥ पंच० ॥ २ ॥ शांतिपद आपवा, शांतिपद थापवा ॥ अद्‌न्नुत कांत प्रन्नु, शांति साचो ॥ मृगांक पारापत, सेनथी उद्धरी ॥ जगतपति जे थयो जगत जाचो ॥ पंच० ॥ ३ ॥ नेमि बावीशमो, शंख लंछन नमो ॥ समुद्रविजयांगजो, अनंग जीती राजकन्या तजी, साधु मारग न्नजी ॥ ताति जेणें करी, जग वदीती ॥ पंच० ॥ ४ ॥ पास जिनराज, अश्व-सेन कुल उपनो ॥ जननी वामातणो, जेह जायो ॥ आज खटकपुरें, काज साध्यो सवे ॥ न्नीमन्नंजन प्रन्नु जे कहायो ॥ पंच० ॥ ५ ॥ वीर महावीर सर्व, वीर शिरोमणि ॥ रणवट मोहन्नट, मानमोडी ॥

मुक्तिगढ वासीयो, जगत उपासीयो ॥ नाथ नित्य वदीयें, हाथ जोमी ॥ पच० ॥६॥ मातने तात अवदात, ए देवना ॥ गामने गोत्र प्रज्ञु, नाम सुणता ॥ उदय वाचक वदे, उदयपद पामीये ॥ ज्ञावें ज्ञगधतनी, कीर्त्ति ज्ञणतां ॥ पंच० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ स्तवन त्रीजु ॥ (ऋषज्ञदेवनु) ॥ राग गोमी ॥

वीनतमी अवधार जगतपती० ॥ ए देशी ॥

॥ सांऊसमे जिन वंदो ॥ ज्ञविजन ॥ साझ० ॥ मेटत ज्ञवडू ख फदो ॥ ज्ञविजन साऊ० ॥ टेक ॥ प्रथम तीर्थंकर श्री आदि जिनेश्वर, समरत होत आनदो ॥ ज्ञवि० ॥ १ ॥ लेकर दीपक आगेंही वारु, ऊरत पापको फदो ॥ ज्ञवि० ॥२॥ पद्मासन करी ध्यान लगावुं, खेवत धूप सुगधो ॥ ज्ञवि० ॥३॥ रत्नजक्ति करुरे आरति, वाजत तालमृदगो ॥ ज्ञवि० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास समऊ जीया अपनो, तुटत पाप निकदो ॥ ज्ञवि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ स्तवन चोथु ॥ (धुलेवा श्रीकेसरीयाजीनु)

॥ धूलेवा नगरमाहि ऋषज्ञ जिनेश्वर, जगज्ञूलो

काइ ऋटके छे ॥ वारी ऋवऋुलो० ॥ धूलेवा० ॥टेक॥
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण, श्रौर स्यानक कांइ
श्रटके छे ॥ धूले० ॥ १ ॥ काच खंरूसम श्रद्दी श्रन्य
देवा, चितामणि कांइ पटके छे ॥ धूलेवा०॥ २ ॥ क-
लियुग ज्योति श्रखरू गिराजे, ऋवज लतारण तटकेछे॥
॥ धूलेवा० ॥३॥ प्रत्यक्ष देव परमगुरु पायो, ऋपऋदास
गुण रटके छे धूलेवा० ॥ ४ इति ॥

॥ स्तवन पाचमु ॥ (श्रतरीक्ष पार्श्वनाथनुं)

॥ श्राजनोते दीन रलीयामणोजी लाल ॥ ऋेटया
मने श्रतरीक पासरे, माहाराजरे ॥ श्राजनो० ॥टेक॥
सरसती स्वामीने विनवुजी लाल, सदगुरु लागुवुं
पायरे ॥ श्राज० ॥ १ ॥ शिरपुर नयर सोहामणोजी
लाल, तिहा वसे श्रतरीक पासरे ॥ श्राज० ॥ २ ॥
मस्तक मुगट हीरा जडयाजी लाल, कानकुंरूल
साररे ॥ श्राज० ॥३॥ वांहे बाजुबंद बहीरखाजी लाल,
हियरूे नवसर हाररे ॥ श्राज० ॥ ४ ॥ केरूे कदोरा
हेमनाजी लाल, घुंगरु तणो ऋमकाररे ॥ श्राज० ॥५॥
हातनी कहेरूत्री हीरे जरूीजी लाल, सफळ बीजोरु

साररे ॥आज०॥६॥ सांकलीने कहेफली हीरे जमीजो लाल, नीलवट तीलक जमावरे ॥ आज० ॥७॥ मालण लावे फुलफाजी लाल, फुल सोनाने मुलरे ॥आज०॥८॥ न्यायसागरनी विनतीजी लाल, शिरपुर जयजयकाररे ॥ आज० ॥ ए ॥

॥ स्तवन छटु ॥ (समेतशिखरजीनु)

॥ कचनगढ पुजन जाना ॥ शेत्रुजागढ० ॥ उज्वलगढ० ॥ टेक ॥ चलत चलत मधुवनमे सिधाये आनद हरख वधाना ॥ कचन० ॥ १ ॥ वीशे टुके वीश जिनेश्वर, कर्मरहित निर्वाणा ॥ कचन० ॥ २ ॥ प्रेमप्रकाश प्रभु मोक्ष सुधारे, आवागमन निवाश ॥ कचन ॥ ३ ॥ आनदघन प्रभु चलत पथमे, समर समर गुणगाना ॥ कचन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ स्तवन सातमुं ॥ (चपापुरीनु) केरवो ॥

॥ बदरो लगादे ज्ञानी, लगादे ज्ञानी ॥ चपापुरीके घाट ॥बदरो॥टेक॥ हारे भवकी बनाइ दोनो नावकीया॥ दोनो० ॥ खेलन हारतोरा नाव ॥बद०॥१॥ हारे देशदेशके जात्रा आवे जात्रा०॥ पूजा रचे भवि

भाव ॥ बद० ॥२॥ हारे नवल कहे प्रभूजीसें ऐसी ॥ प्रभु० ॥ भव भव चरणसोहाय॥ बद० ॥३॥इति॥

॥ स्तवन आठमु ॥ (केशरीयाजीनु)

केशरीयाने डुवत जहाज तिरायो ॥ म्हाने एहीरे अचवो आयो ॥ केश० ॥ टेक ॥ भर समुद्रमे जहाज डुवत हे, कोइ न आडो आयो ॥ रीखभ नाम जपीयो सौ साथी, जहाज तीर तीरलायो केश०॥१॥ राजारे रावण भक्ति करनकुं गिरि अष्टापद आयो॥ नवा नवा नृत्य निरंतर करता, गौत्र तिर्थंकर पायो ॥ केश० ॥२॥ आदीरे नाम जप्यो अजनाने, कैलास पर्वत पायो ॥ दीक्षारे लेतां केवळ उपन्यो, शिवर-मणी फळ पायो॥ केश० ॥३॥ऋषभदेवकी महिमारे भारी, कहेता नावे पारा ॥ इन्द्र निरजन चरणोकी सेवा, रामसरण गुणगाया ॥ केश० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ स्तवन नवमु ॥ (गीरनारजी श्रीनेमनाथजीनु)

॥ चालो सखी सब देखनकु, रथचढी जादु-नंदन आवतहे ॥ टेक ॥ छपन्न कोड जादव संग लेकर, व्याहा करनकु आवतहे ॥ चालो० ॥ १ ॥

मोर मुगट पितांबर सोन्ने, गिरनारीकु ध्यावतहे ॥ ॥ चालो० ॥ २ ॥ तीन छत्र और तिन सिंघासन, चौसठ चमर ढोलावतहे ॥ चालो० ॥३॥ लालचदकी एही अरज हे, सखीयन मगल गावतहे ॥ चालो० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ स्तवन दशमु ॥ (नेमनाथजीनु)

॥ नेमजीकु मय जाने ग देउगी ॥ रखलेती ॥ नेम० ॥ टेक ॥ तोरण धारी चले रथफेरी, पशुअन सुणी पोकारजी ॥ नेम० ॥१॥ सहसावन जइ सजम लीनो, आप रहे निरुपमजी ॥ नेम० ॥२॥ नेम राजुल दोइ मोक्ष सुधारे, पहिले राजुत नारजी ॥नेम०॥३॥ न्नावविजय कहे चरणपसाये, न्नवजल पारउतारजी॥ ॥ नेम० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ स्तवन इग्यारमु ॥ (नेममायजीनु) राग झींझोटीनी ठुमरी ॥

॥ विहानी आज न्नइ मोरी, नेम खबरीया न लेत ॥ मे वारी जाउ नेम खबरीया न लेत ॥ टेक ॥

ग्रीजसे में श्राइ मोरी बादलीयां लाला, ग्रीजसे में श्रायो मेह ॥ विहानी० ॥ १ ॥ जो श्रावु तो भींजे मोरी चुदरीया लाला, न श्रावु लो तूटे सनेह ॥ ॥ विहानी०॥२॥ श्राठ जन्म तु नेह कीयो हे जादव, अब क्यु तूटे सनेह ॥ विहानी० ॥ ३ ॥ नथु कहे प्रभु नेम जिनेश्वर, श्रमृत पद मोही लेत ॥ बिहानी०॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ स्तवन बारमु ॥ (नेमनाथजीनु) ॥ राग काफी ॥

॥ देखतही चित्त चोर लीयो हे, देखतही० ॥ शामको नाम रुचे मोहि अहोनिश, शाम बिना कहा काज जीयो हे ॥ देख०॥१॥ (टेक) सिद्धिवधुके लीए मुझ छोडी, पशुअनके शिर दोष दीयो हे ॥ परकी पीर न जाणे तासो, वैर वसायो जो नेह कीयो हे॥ देखत० ॥ २ ॥ प्रान धरु में प्रानपिया बिन, वज्र हृदे मोहि कठिन हीयो हे ॥ जश प्रभु नेमि मिले दुःख डारयो, राजुल शिव सुख श्रमृत पियो हे ॥ देख०॥ ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ स्तवन तेरमु ॥ राग काफी ॥ चदाप्रञुजीसे
ध्यानरे ॥ ए चाल ॥

॥ए जिनके पाय लागरे, तुने कहीयें केतो ॥ ए जिन० ॥ टेक० ॥ आनेइ जाम फिरे मदमातो, मोह निंदरीयाशु जागरे ॥ तुने० ॥ १ ॥ प्रञुजी प्रीतम विन नहीं कोइ प्रीतम, प्रञुजीनी पूजा घणी मागरे ॥ ॥ तुने० ॥ २ ॥ ञवका फेरा वारी करो जिनचदा, आनदघन पाय लागरे ॥ तुने० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ स्तवन चौदमु ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ प्रञु मेरे तु सब वातें पूरा ॥ परकी आश कहा करे प्रीतम, ए किण वातें अधूरा ॥ प्रञु० ॥ ॥ १ ॥ टेक ॥ परवश वसत लहत परतक्ष डुख, सबही वातें सनुरा ॥ निजघर आप सत्नार सपदा, मत मन होय सनूरा ॥ प्रञु० ॥ २ ॥ परसग त्याग लाग निजरगें, आनद वेली अकूरा ॥ निज अनुञव रस लागे मीठा, ज्यु घेवरमें तूरा ॥ प्रञु० ॥ ३ ॥ अपने ख्याल पलकमें खेले, करे शत्रुका चूरा ॥ सहजानद अचल सुख पावे, पूरे जग जस नूरा ॥

॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ स्तवन पदरमुं राग गोडी ॥ बच्चा मत करना अभिमान ॥ ए चाल ॥

॥ निशानी कहा बतावुरे, तेरो अगम अगोचर रूप ॥ निशानी० ॥ टेक ॥ रुपी कहु तो कछु नहीं रे, बधे कैसे अरूप ॥ रुपारूपी जो कहु प्यारे, ऐसे न सिद्ध अनुप ॥ निशानी० ॥ १ ॥ शुद्ध सनातन जो कहु रे, बध न मोक्ष विचार ॥ न घटे ससारी दशा प्यारे, पुण्य पाप अवतार ॥ निशानी० ॥ २ ॥ सिद्ध सनातन जो कहु रे, उपजे विनसे कौन ॥ उपजे विनसे जो कहु प्यारे, नित्य अवाधित गौन ॥ ॥ निशानी० ॥ ३ ॥ सर्वांगी सब नयधनीरे, माने सब परमान ॥ नयवादी पल्लो ग्रही प्यारे, करे लराइ ठान ॥ निशानी० ॥४॥ अनुभव अगोचर वस्तु है रे, जाणवो एह इलाज ॥ कहन सुननको कछु नहीं प्यारे, आनदघन महाराज ॥ निशानी० ५ ॥ इति ॥

॥ स्तवन सोळमुं ॥ राग केरवो ॥

॥ प्रभु भजले मेरा दीनराजीरे ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥

आठ पोहोरकी साठज घमीयां, दो घमीया जिन साजीरे ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ दान पुण्य कतु धर्म कर ले, मोह मायाकू त्याजीरे ॥ प्रजु० ॥२॥ आनद घन कहे समज समज ले, आखर खोवेगा वाजीरे ॥ ॥ प्रजु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ स्तवन सत्तरमु ॥ (नेमनाथजीनु)

॥ बिगरी कोण सुधारे ॥ ए चाल ॥

॥ क्या तारीफ करु पिया नेमजी, तें बाल ब्रह्मचारीरे ॥ क्या० ॥ १ ॥ टेक॥ समुद्रविजय कुल जन्म लियो हे, सब जीवन हितकारीरे ॥ क्या० ॥ ॥२॥ कचन तोरन त्यजो हे वैरागी, राजलकू तें तारी रे क्या० ॥ ३ ॥ नक्तिदास कहे ए विनति, नव नम ना निस्तारीरे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ स्तवन अढारमु (गोडी पार्श्वनाथनु)

॥ विसरी विसरी विसरीरे, राजवसी वगामी केम विसरी ॥ ए चाल ॥

॥ मीनावना मोजावना मोजा मनारे॥ गोमीनो को दरश सोहावन (टेक) अनुत्तर सेरा नजरे

प्रभुजी, उन मोहे दरश देखावनारे ॥ गोडी० ॥१॥
अंतरयामी अंतर निरख्यो, घो दरिशन सुख पावनारे॥
॥ गोडी० ॥ २ ॥ रामविजय कहे जिन प्रभु प्यारा,
तनका ताप मिटावनारे ॥ गोडी० ॥ ३ ॥ इति ॥
॥ स्तवन उंगणीशमु ॥ (गोडी पार्श्वनाथनुं)
झीझोटोनी ठुमरी
॥ सब राह घाटमें धुम फिरी, निंदरावन मोरा
सांवरीया ॥ ए चाल ॥
॥ आजकी आंगी जोर बनी, गोडी पास जि-
नेसरके अंगकी ॥ (टेक) केसर चंदन चरचु अंगे,
बिचमाहे बुटी गुलाबनकी ॥ आज० ॥ १ ॥ चंद्र
ज्योत तेरो मुखको बिराजे, तेरे वदनोकी जाउं बलि-
हारी ॥ आज० ॥२॥ कहे मलुकचंद ए प्रभु साचो,
पूजा करो ए जिनेसरकी ॥ आज० ॥ ३ ॥ इति ॥
॥ स्तवन वीसमु॥ (शांतिनाथनु) ॥ राग विलास॥
॥ अगन कल्प फल्योरी ॥ हमारे माइ ॥
अगन० ॥ (टेक) ऋद्धि वृद्धि सुख संपतिदायक,
श्रीशांतिनाथ मिल्योरी ॥ हमारे० ॥ १ ॥ चुया चंदन

मृगमद ज्रेली, मांहे घरास मिल्योरी ॥ पूजीत श्री शांतिनाथकी प्रतिमा, अलग उठेग टव्योरी॥ हमा०॥ ॥ २ ॥ शरणें रास्यो कृपा करी साहेव, ज्युं पारेवो पल्योरी ॥ समयसुंदर कहे तुमारी कृपातें, शिवसुंदरी शुं मिल्योरी ॥ हमा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ स्तवन एकत्रीसमु ॥ (मंधरस्वामीनु)

॥ सुणो सुणो श्रीमंधर स्वामीके, शासनस्वामी के शासनस्वामी ॥ मोहे लगी मीलनकी आशके, अंतरजामी ॥ सुणो० ॥ १ ॥ मे ज्ररतक्षेत्रके माहेके लीनो वासो ॥ केलीनो० तुम लखो सखो नही आ ज्रके, निरगुण साचो ॥ सुणो० ॥ २ ॥ मारा वीतराग वीन नीरके, नयणा वरसे ॥ के नय० ॥ मारो हइम्रो ठे नही हाथके, सदा दील तरसे ॥ सु० ॥ ३ ॥ इम तरसे दीनने रातके, मनरु महारु ॥ के मनरु० ॥ कब देखु प्रचूजी प्यारके, दरीसण ताहरु ॥सुणो०॥४॥ ॥ मारी नथी उघाती आंखके, निंद न आवे ॥ के निंद० ॥ ज्रगवत विना ज्रवि जीव, घणा दुःख पावे ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ एम बोले ठे जिनदा ,

मधुरीवाणी॥ के मधुरी० ॥चरणोनी रज करी राखके, अपना जाणी ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ इति ॥
॥ स्तवन बावीशमु ॥ (जिननु) गझल (कव्वाली)
॥ नजर टुक महेरकी करके, दिखादोगे तो क्या होगा ॥ अनुपम रूप है प्रभुजी, बतादोगे तो क्या होगा ॥ नज० ॥ [टेक] प्रभु तुम दीनके रक्षक, करो मुज दीनकी रक्षा ॥ चौराशी लाखकी फेरी, मिटादोगे तो क्या होगा ॥ नज० ॥१॥ अनादि कालसें भ्रमता, नही अबी अत आया है ॥ शरण अब आपका लीना, हटादोगे तो क्या होगा नजर० ॥ ॥ २ ॥ अनादि कालसें रुलिया, बन्यो मिट्टी कभी पानी ॥ तेउ वाउ हरि काया, बचादोगे तो क्या होगा ॥ ॥ नजर० ॥३॥ चोती चउ जाति पचेंद्री, पशु परवश दु ख पाया ॥ अमर नर नारकी रूपे, छुडा दोगे तो क्या होगा ॥ नज० ॥४॥ इसी ससार सागरमें, मरी प्रभु डूबती नैया ॥ करी करुणा किनारेपर, लगादोगे तो क्या होगा ॥ नज० ॥ ५ ॥ करो प्रभु पार भवो दधिसें, निजातम सपदा दीजे ॥ सेवकको आपना

वह्नन्न, वनादोगे तो कया होगा ॥ नज० ॥६॥इति॥
॥ स्तवन त्रेवीशमु ॥ (शांतिनाथनुं)
॥ मजा देते है क्या यार, तेर वाल धुंगरवाले ॥
॥ ए चाल ॥

॥ प्रभु शातिनाथ महाराज, दर्शन तुमरे है सुखदाइ ॥ (टेक) तुम मुर्त्ति है मनोहार, न्नव िंधु पार उतार ॥ देखु पलकमे सो सो वार, प्रभु तुम नवनव रूप दिखाइ ॥ प्रज्ञु० ॥ १ ॥ प्रज्ञु तुम न्नव दुःख न्नजनहार, न्नविजन तन मनरंजन हार ॥ दियो मदन सदनको जार ॥ नही तुम विन जग श्रोर सहाइ ॥ प्रज्ञु० ॥ २ ॥ मस्तक मुकुट गलेमें हार, कुन्नल कानमें शोन्ने सार ॥ कहे सूत्र न्नाष्य व्यवहार, कटे श्रघ ऊट देखत जिनराइ ॥प्रज्ञु०॥३॥ नगर विनौली प्रज्ञुजी पधार, मदिर तुमरा हुश्रा तैयार ॥ सुदि दशमी तिथी सोमवार, महिना माधव गाइ वधाइ ॥ प्रज्ञु० ॥ ४ ॥ इपु रसाक चद (१९६५) सन मान, विक्रम श्रातमवार वखान ॥ चउवीसो चउतीस जान ॥ प्रज्ञु वीर सवत कहलाइ

॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ प्रभु आतम लक्ष्मी दातार, तुम दर्शन हर्ष अपार ॥ करे वल्लभ अर्ज पुकार, चरणमें तुम नित चितको लाइ ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ स्तवन चोवीशमुं ॥ (सामान्य जिननु)

चडाप्रभुजीसे ध्यान रे॥मोरी लागी लगनवा॥ए चाल।

होई आनद वहार रे, प्रभु वैठे मगनमें ॥ होइ० ॥ (टेक) अष्टादश दूषण नहीं जिनमे, प्रभुगुण धारे वार रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ चौतिस अतिशय पैतिस वानी, जग जीवन हितकार रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ शांतरूप मुद्रा प्रभु प्यारी, देखो सव नरनार रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ आनंद पावो प्रभु गुणगावो, मुख वोलो जयकार रे ॥ प्रभु० ॥४॥ प्रभु भक्तिसे वल्लभ होवे, आनद हर्ष अपार रे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ स्तवन पच्चीशमु ॥ (मल्लिनाथजीनु)

भक्तिसे मुक्ति पावोगे ॥ ए चाल ॥

मल्लिनाथ प्रभुके गुण गाउंगा, गुण गाउंगा गुण गाउंगा ॥ गानेसे मुक्ति पाउंगा ॥ मल्लि० ॥

(टेक) मैं अनाथ तुम त्रिभुवन नाथा, एक दिन तुम सम थाऊंगा ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ कारण निमित्त प्रभु तुम साचे, मैं उपादान कहाऊंगा ॥मल्लि०॥२॥ आरत रौदर दूर निवारी, धरम शुक्ल चित लाऊंगा ॥ म० ॥३॥ काम क्रोध मद मोह उपाधि, सब को जम्सें जलाऊंगा ॥ म० ॥४॥ कुंदन सम निज रूपको धारी, खोट रहित हो जाऊंगा ॥ म० ॥ ५ ॥ अजर अमर अक्षय अविनाशी, आतम लक्ष्मी प्रगटाऊंगा ॥ म० ॥६॥ परमानंद हर्ष चित्तधारी, वल्लभ ज्योति मिलाऊंगा ॥ मल्लि० ॥७॥ इति ॥

॥ स्तवन छत्रीशमु ॥ (ऋषभदेवनु) राग खमायची ॥

॥ आजरे वधाइ वाजे छे, आजरे० ॥ (टेक) नाभिराय मरुदेव्याके घर, जे जे शब्द सुहावे छे ॥ आज० ॥ १ ॥ तीनलोक नाथ जन्म भयो है, देव दुदुभि ध्वनि वाजे छे ॥ आज० ॥ २ ॥ सुरवनिता मिल-गाय वधाइ, आनद मगल राजे छे ॥ आज० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ स्तवन सत्तावीशमुं ॥ (नेमनाथजीनी होरी)

॥ जादव नेम कुमार रे, चालो खेलीए होरी ॥ जादव० ॥ (टेक) सखी साहेली सव मिलकर चली, सोळे सजी सणगार रे ॥ चालो० ॥ १ ॥ मेरो मन पीया तुमशुं राच्यो, जेसो फूल अनाररे ॥ चालो० ॥२॥ तोरणे आये चले फीर पीछे, अवळा कोन आधार रे ॥ चालो० ॥३॥ ऋतु वसत फुली वहु रगी, और फूली कतु नार रे ॥ चालो० ॥४॥ अपनारे पीयाकु वोलावो, फागुनके दिन चार रे ॥ चालो० ॥५॥ ताल मृदग झांज डफ वाजत, और वाजत पट ताल रे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ शब्द गीत सगीतशु राचत, नाचत ताथेइ कार रे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ उडत गुलाल लाल भए वादल, रग भरके शिर मार रे ॥ चालो० ॥८॥ एकवार प्रभुजी घेर आवो, मानो घणी मनोहार रे ॥ चालो० ॥९॥ सहसावन जइ सजम लीनो, पोहोता मुक्ति मोझार रे ॥ चालो० ॥१०॥ दरिशन सार रत्न सुखकारी, ज्ञान सकळ आधार रे ॥ चालो० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ स्तवन अठावीशमु ॥ (पार्श्वनाथजीनी होरी)
चाल उपरनी ॥ रग मच्यो जिनद्वार रे, चालो खेलीए होरी ॥ पासजीके दरवार रे ॥ चालो० ॥ फागनके दिन चार रे ॥ चालो० ॥ (टेक) कनक कचोळी केसर घोळी, पूजो विविध प्रकाररे ॥ चालो० ॥१॥ कृष्णागरुको धूप घटत हे, परिमळ वहके अपार रे ॥ चालो० ॥२॥ लाल गुलाल अवीर उडावत, पासजीके दरवार रे ॥ चालो०॥३॥ झरी पिचकारी गुलालकी छिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चालो० ॥४॥ ताल मृदंग वेण डफ वाजे, झेरी झुंगळ रणकार रे ॥ चालो० ॥ ५ ॥ सब सखीयन मिली धूवार सुनावत, गावत मगळ सार रे ॥ चालो० ॥६॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावे, मुखे बोले जय-कार रे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ इति ॥

स्तवन ओगणत्रीशमु ॥ [पार्श्वनाथजीनी होरी]
चाल उपर प्रमाणे॥पासजीके दरवाररे॥चलो खेलहोरी॥ [टेक]प्रभु गुन किरतनताल पखावज,विणाके झनकार रे ॥ च० ॥ उदासीनता केसर छिरकत, झरी समता

पेचकारी रे ॥ च० ॥२॥ शुक्र धर्म दोउ ध्यान सु-
गा, उरुत अबीर गुलाल रे ॥ च० ॥ ज्ञावन मुठी
नरी नरी कीजत, दरसन अयर लाल रे ॥ चलो०
॥२॥ समिति फुल पंचरगी गींडुवा, मारो उतियानी
वीचरे ॥ चलो०॥ हृदय चोकके मध्य मचाउं,गुपति
अरगजा कीच ॥ चलो० ॥ ३ ॥ केवल लीला हरख
बढाउं, वाजत अनुज्ञव चग ॥ चलो० ॥ इह विधि
नेहको जोर लगाउं, शिवरमणीकु रग रे ॥ चलो०॥
॥ ४ ॥ वामाजीको नंदन मेरो, आतमको आधार
रे ॥ चलो० ॥ वाचक विमलको राम कहे मोहि,व-
ंठित पूरनहार रे ॥ चलो० ॥५॥ इति ॥

॥ स्तवन त्रीशमु ॥ [पार्श्वनाथजीनी होरी]

॥ राग धमाल ॥

॥ जे वोलो पास जिनेसरकी, जे वोलो० ॥ टेक
मस्तक मुकुट सोहे मन मोहन, अगीयां सोहे के-
सरकी ॥ जे वोलो० ॥ १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अस-
म्ति तनकी,श्याम घटा जैसी जल धरकी ॥ जे वो०
कमठ उमाय वांये ज्यु वादल, जीत करी अपने

घरकी ॥ जे० ॥२॥ बालपणेमें अद्भुत ज्ञानथु, करुणा कीधी निपधरको ॥ जे० ॥ आठ करम दल सवल खपायो, श्रेणी चढी जैसी शिवपुरकी ॥ जे०॥३॥ माता वामा उर जिनजी जायो, राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ जे वो० ॥ कहे जिनचद मेरे प्रभु पारस, जैसी ठाया शिवपुरकी ॥ जे वोलो० ॥४॥ इति ॥

॥ स्तवन एकत्रीशमु ॥ [समेतशिखरजीनी होरी]

॥ राग धमाल ॥

॥ मधु वनमें धूम मची रग होरी ॥ मधुवन० ॥ [टेक] देश देशके यात्रा आवे, पूजा रचे प्रभु कर जोरी ॥ मधु०॥१॥ गावत राग धमालसुणावत, थै थै नाचत मलि गोरी ॥ मधु० ॥२॥ ताल कसाल मृदग बजावे, रणझण घुघरी रमझोरी ॥ मधु०॥३॥ केशर चदन घसी घन गोरी,भरीय कटोरी रंग ठोरी ॥ मधु० ॥४॥ पिचकारी भरे तव नव नारी, अविर गुलाल वस भरी भरीजोरी॥ मधु०॥५॥ जिनगुण गावत हीरदे वधावत, मेरी प्रभुसु लगी दोरी ॥ मधु० ॥६॥ समेत शिखर तीरथ होरी खेलत, पायो दर्शन

अनु नेरी ॥ मधु० ॥७॥ इति ॥

। स्तवन बत्रीशमु ॥ (माहावीर स्वामीनुं) ख्याल ॥

॥ गीरिवर दर्शन विरला पावे ॥ ए चाल ॥

॥ वीर विना वाणी कोण सुणावे, कोण सुणावे कोण बताने ॥ वीर० ॥ [टेक] जबथें वीर गये शिवमंदिर, तब मेरो सासो कोण मिटावे मिटावें ॥ वीर० ॥१॥ तुम विना चहुविद् सघ कमल दल, विकसित कोण करावे कराने ॥ वीर० ॥२॥ कहे गौतम गणधर तुम निरहें, जिनवर दिनकर जावे जावे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मोकु साथ लइ क्यु न चले, चित्त अपराध धरावे धराने ॥ वीर० ॥ ४ ॥ इम परन्नव विचारी अपनो, न्नावशुं न्नाव मिलावे मिलावे ॥ वीर० ॥५॥ समवसरणमें बेठे तखतपर, हुकुम कोण फरमावे फरमावे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर वीर लनते वीर अक्षर, अतर तिमिर हरावे हराने ॥ वीर० ॥ ७ ॥ सकल सुरासुर हर्षित होने, जुहार करणकु आवे हो आवे ॥ वीर० ॥८॥ इन्द्रनूर्ति अनुन्नवकी लीला, ज्ञानवि- ने हो गावे ॥ वीर० ॥९॥ इति ॥

॥ स्तवन तेत्रीशमु ॥ [सिद्धाचलजीनी होरी]

॥ प्रभु चरणे चित्त लाइ रे, ऐसी होरी खेलाइ ॥ जिन चरणे चित्त लाइ रे ॥ ऐसी० ॥ अबिर गुलाल उडाइ रे ॥ ऐसी० ॥ (टेक) श्रीशेत्रुंजा गढके उपर, होरीने धुम मचाई रे ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ चुआ चुवा चंदन ओर अरगजा, केशर कीच मचाइ रे ॥ ऐसी० ॥२॥ वाजीत्र विविधशु लहेर लहेरके, फुलोसे भावना भाइरे ॥ ऐसी०॥३॥ संवत अढारसे त्र्यांशी वरषे, महा वदी तेरसी गाइ रे ॥ ऐसी० ॥४॥ दयाविजय गुरु चरण पसाये, सब संघ मीलकर गाइ रे ॥ ऐसी० ॥५॥ इति ॥

॥ स्तवन चोत्रीशमु ॥ (सुविधिनाथनु)

॥ मुजरा साहिब मुजरासाहिब, साहेब मुजरा मेरा रे (टेक) साहिब सुविधि जिनेश्वर प्यारा, चरण पखालु प्रभु तेरा रे ॥ मुज० ॥ १ ॥ केशर चंदन चर्चु अंग, फुल चटावुं सेहरा रे॥ धंट बनावु अगर उखेवु, करु प्रदक्षिणा फेरारे ॥ मुज० ॥ २ ॥ पचशब्दके वाजे वजाउ, नृत्य करु अति गहिरारे ॥ रुप-

चद्र गुणगावत हरखित, दास निरजन तेरारे ॥ मुज०
॥ ३ ॥ इति ॥

॥ स्तवन पात्रीशमु ॥

॥ वेलमी वेलमी साहेलमी, होजी तमारी मूरती मोहन वेलमी ॥ मीठी लागे छे साकर सेलमी॥ होजी० ॥ [टेक] जाइजुइ ने वळी चपक मरुर्ड, बीजीरे चढावु चवेलमी ॥ होजो० ॥१॥ केशर चदन भर्यारे कचोळा, पूजा करुरे सहु पहेलमी ॥ होजी०॥ ॥ २ ॥ रूपचद कहे नाथ निरजन, दीसे मुरती अलबेलमी ॥ होजी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अष्ट प्रकारी पूजाना दूहा ॥

॥ न्हवण विलेपन कुसुमनी, धूपदीप मनोहार ..
अखन्ड अक्षत नैवेद्यनी, अष्टमी फळ सुविचार ॥१॥
भाव-स्तवने कारणे, द्रव्य स्तव अधिकार ॥ कारणथी कारज सधे, तेणे धुर पूजा उदार ॥ [१जलपूजा]
इणी परे जल पूजा करी, करीए अप्पा शुद्ध ॥ माने-
णिणु जे एहमा, जाणो तेह अशुद्ध ॥ ३ ॥ (चंदन-
पूजा) हवे करवा गुणवासना, असंख्यात प्रदेश ॥

चदननी पूजा करो, आणीनाव-विशेष-॥४॥ पूजाने परिणाम दोउ, करो चदनकी रीत ॥ शीतलता ने सुगधता, जीम नांजे नवनीत ॥ ५ ॥ (पुष्पपूजा) हवे त्रीजी सुमनस तणी,पूजा अतिही उदार ॥सुमनस सुख जीणथी लहे, तिणे सुमनस प्रकार ॥ ६ ॥ [1]प्रणिधाने सदगति होए, पूज्ये किम नवी होय ॥ [2]सुमनस नावे [3]दुर्गता, पूजा पचाशक जोय ॥ ७ ॥ (धूपपूजा) [4]हुताशनथी काष्ट ज्युं, तिम ध्यानानले कर्म ॥ तिणे मिशे धुप पूजा करो, पामो ज्युं शिव शर्म ॥ ८ ॥ इणीपरे धुप पूजा करी, जिन आगळ शुन्न नाव ॥ टाळी विन्नावनी परिणती, दूर करो परन्नाव ॥ ए ॥ (दीपपूजा) [5]जगप्रदीप पुर दीप शुन्न, करतां नावो एह ॥ अवराणु जे अनादिनु, ज्ञान लहो निज तेह ॥ १० ॥ केवळनाए पइवशु,

---

१ एकाग्रभावे २ चोरवाभाने ३ दुर्गता (गरीव) नारी भगवान् महावीर देवने वदन पूजन करवा जती मार्गमाज आयुष्य क्षये च्यवी चोरवा भावथी सद्गति पामी ४ अग्नि ५ जगदीपक श्री जिनेश्वर आगळ जयणा युक्त (गायना घीनो)दीप प्रगटावता ६ प्रदीप–दीपक -

ज्यु लहे लोकालोक ॥ त्यु पूजा द्रव्य दीपनी, करतां शिवफळ रोक ॥ ११ ॥(अक्षतपूजा) हवे [1]अक्षत पूजा करो, शाळी व्रीहि गोधुम ॥ उज्वल प्रभु पर ढोइने, टाळो मोहकी धुम ॥ १२ ॥ अक्षयफळ सेवा भणी, अक्षतपूजा उदार ॥ इह भव पण नाहि क्षय होवे, राज ऋद्धि भंडार ॥१३॥ (नैवेद्य पूजा) हवे नैवेद्य निवेदना, कीजे जीम हलीराय ॥ भव निर्वेद [2]प्रभु मुखे, मागो अविचळ ठाय ॥१४॥ कर्त्ता भोक्ता मुज नहि, पुद्गल भावनो जीव ॥ तिणे पुद्गलनी त्याजना, करता शर्म सदैव ॥१५॥ (फळपूजा) फळ पूजा करता थका, सफळ करो अवतार ॥ फळ मागो प्रभु आगळे, तारतार मुज तार ॥ १६ ॥ जस फळ उपम जग नहि, पाम्या पछी न अंत ॥ अव्याबाध अचल अरुज, मागो सुख अनंत ॥ १७ ॥ इति अष्ट प्रकारी पूजाना दुहा संपुर्ण ॥

॥ अथ श्रीकेशरीयाजीनी लावणी ॥

॥नमा नमा प्रभु अरज करता, समरण करता सब

---

१ (अणीशुद्ध) शालि- चोखादि. २ संसार उपरथी वैराग्य

तोरी॥दीनानाथ मोरी अरजी सुन कर, भवकी टालो तुम फेरी ॥ ख० ॥ ए आंकणी ॥ विनिता नगरीमें तोरा जनम हे, माता तोरी मरुदेवा ॥ चोशठ इन्द्र तोरी करे चाकरी, चन्द्र सूर्य करता सेवा ॥ नाभिरायाके कुलमें सोहे, रूषभ देवजी नाम तोरा ॥ दीना० ॥ १ ॥ धूलेवा नगर तेरा खूब बना हे, वाहे देवल जिनवरका॥फिरती बावन देहरी सोहे, हस्ती खमा मरुदेवीका ॥ दोनुहाथी फूले गिरुवा, दरवाजे प्राक्रम भारी ॥ दीना० ॥२॥ आंगी तेरी खूब बनी हे, बूटी सोने जमावनकी ॥ गले मोतिनको हार बिराजे, सोभा दीसे कुमलकी ॥ चमरी तोर ढले सीर पर, रिषभ देवकी बलिहारी ॥दीना० ॥३॥ ढमक ढमक तोरो मादल ढमके, भणण भणण नाद भालरका ॥ घनन घनन तोरा घटा वाजे, रूका वाजे नोवतका ॥ सभी साजकी होवे आरति, मरूधमादे मिरूभारी ॥ दीना० ॥४॥ नित नित तोरी आंगी सोहे, मुकुटकी गत हे न्यारी ॥ सिरपर तोरे छत्र बिराजे, सामली सूरत दीसे प्यारी ॥ एक दिनमें त्रण रूप होता, दे

खत हे सब नर नारी ॥ दीना० ॥ ५ ॥ चार खकमें नामज तोरा, सघ आवे सब देसनका ॥ छत्रीश खा विद आणा माने, तुम समरण अरिहंतोका ॥ सर्ग लोक पाताल लोकमें, मृत्यु लोक माने भारी ॥ दीना० ॥६॥ रुपन्न देवका दरसन करता, पाप जावे भवो भवका॥समरण करता वेरी भाजे, बध छूटे सब कर्मो का॥मिलका तोरी आण माने, ऐसो परतो हे भारी ॥दीना॥७॥ सम्रत अटार ओगणसाठ आसाढ, शुद बीजे दिन बुधवारी॥ईडर गढका संघज आया, जात्रा करे सब नर नारी॥ मोनता तोरी सहुको माने,ऐसो परतो हे भारी ॥दीना०॥८॥ दरिसन करता जोमी ला वणी,सुन ल्यो उनका ठीकाना ॥ राव मल्लारका कमी परगणा, गाम उनुका मेसाणा ॥ रुपविजयजी सेवक तुह्मारो, सुन ल्यो प्रभु अरज मेरी ॥ दीना० ॥ ए ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजीनी लावणी ॥

॥ तुम तज कर राजुलनार, तज्या सब घर रे ॥ तज्या० ॥ मेंं नमु नेमके पाय, गया गिरिवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर, पछे लागी ॥ पछे० ॥ तुम

त्याग चले वन खरु, हुवे वैरागी ॥ अब राजुल सं खी सती, जावसें त्यागी ॥ जाव० ॥ थारे अतर घ टमें ज्योत, ग्यानकी जागी ॥ यु रोती राजुल नार, नयण जर जर रे ॥ नय० ॥ में नमु० ॥ १ ॥ में अ रज करुं कर जोड, करो मन प्रसन्न ॥ करो० ॥ मेरे शिरपर तुय शिरदार, देजो मोहें दर्शन ॥ अब सुख सखीयनका देख, लग्यो मन तरसन ॥ लग्यो० ॥ मेरे आयो नयनमें नीर, लग्यो नित्य बरसन ॥ मेरे नेम मिलनकी आश, मिलु किम कर रे ॥ मिलु० ॥ में० ॥ २ ॥ में नहिं कीनी तकसीर चले क्युं रूठे ॥चले०॥मेरे घरमें कुटुब परिवार, चार दिशि चूटे ॥ में जो रहुं घरने माहे, जोबन सब लूटे ॥ जोब० ॥ में चलु पियाके साथ, प्रीत क्यु त्रूटे ॥ मेरे नेम विना नहिं और, जगतमें वर रे ॥जग० ॥ में०॥ ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुक्तिमें मेली ॥ मु० ॥ पीछे नेम गये निर्वाण, कर्म सब ठेली ॥ में नित्य ऊगे पर जात, नमु पद पहेली ॥ न० ॥ श्री जिनवर चिन जु गमाहे,नहिं कोई बेली (॥पाठांतरे॥) मेरे नेम विना

नहिं श्रोर जगतमें वेली ॥ यु अरज करे जिनदास, सुणो जिनवर रे ॥ सुणो० ॥ मं० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीगोडी पारसनाथजीनी लावणी ॥

॥ जगत भविककज महेर अनत गुण, तेज तपत हे श्री जिनको ॥ प्रगट प्रबल प्रताप परम गुण, सुणतां सुख दिये तन मनको ॥ नील कमल दल नव कर दीपे, देह हे गुणगणके वृंदा ॥ नमो निरजन फणिपति सेवित, पास गोडीचा सुखकदा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोह करी कुभस्थल भेदन, कंठे रव प्रभु तु सच्चा॥ हरिहर इद्र विरचि देव गण, कर्म कीचमें पड कच्चा ॥ तुज सम श्रर श्रोर कुण जगमे, देव दूसरो जे वदा ॥ नमो० ॥२॥ तु अकलक सरूपी अरूपी,परमानद पद तु दायी ॥ तु शकर ब्रह्मा जगदीश्वर, वीतराग तु निर्मायी, अनुपम रूप देख तुज रीज्या, सुर नर नारीके वृंदा ॥ नमो० ॥ ३ ॥ जल हल ज्वाल वलत चिहु कोर, धूम घटागगनें चाली॥ जलत काठ कोटर सर सर्पन, करपत मरण दिशा भाली ॥ जगत सरण दु ख हरण प्रबल प्रभु, कहत

कमठ सुण जोगिंदा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ तप जप करत धरत नहिं करुणा, वासें दुःख दोहंग पावे ॥ कहत कमठ तब अरुण नयन करी, जोग वात तुमकु नावे ॥ पावक अतर जलत नागकु, सेवक हाथे निकसदा ॥ न० ॥५॥ सुणी नवकार नाग जिन मुखसें, धरणींदर पदवी पावे ॥ चद कीरण उज्ज्वल जस पसरित, पास प्रभु निज घर आवे ॥ तजी ससार चरण प्रभु लीनो, ध्यान धरत मन आनदा ॥ नमो० ॥६॥ ध्यान धरत प्रभु देखी कमठसुर, आय करी परिसह भारी ॥ गगन भाग चिहु ओर घनाघन, घीर घटा उलटी धारी ॥ चचल चपला होत चिहु ओर, चचल चपलाके वृंदा ॥ नमो० ॥ ७ ॥ कटट काटका होत गगनमें, गरूर गरूर चिहु दिशि गाजे ॥ फरर फरर घन पवन फुरत हे, तरुवर करर मरर भाजे ॥ ठनन ठनन पावस जम लागी, मूशल धारे वरसदा ॥ नमो० ॥८॥ खलल खलल जगती जल पसरत, झिनझर नाक तोके आला ॥ मेरु परें प्रभु धीर रही तब, ध्यानरसें रहे मतवाला ॥ ततक्षण धरणरायको आसन, कपटी ध्यान ज्यु चा-

लदा ॥ नमो० ॥ ९ ॥ तत्क्षण धरण राय अरु धरणी,
आय नमत जिनकुं रंगें ॥ शिरपर छत्र धरे फणिग-
णको, शेपनाग सोलत अगे ॥ हाऱ्यो कमठ सरण
करि प्रभुको, गयो निज स्थानक हर्पंदा ॥ नमो० ॥
॥ १० ॥ नाचत धरणरायकी ललना, ठमक ठमक
पग ठमकती ॥ ठमक ठमक वींछुआ ठमकावत घम
घम घुघरी घमकंती॥ ताल तान लयमान प्रकारें, नव
नव छंदें नाचंदा ॥ नमो० ॥ ११ ॥ धप मप धप मप
मादल धमके, करऱ करऱ करताल करे ॥ रण रण
रणके रण रणकती, जल्लरी नाद रसें पसरे॥ दऱऱ दऱऱ
डुक्का वाजे, जुगल भेरोना वृंदा नमो० ॥१२॥ वाजे
श्रीमण्डल सरणांई, वीणा ताल कंसाल छटा ॥ टुक
टुक मिलत मिलत एक एकसें, जोर घनी तव रंग
घटा ॥ प्रभु पण ज्ञान ध्यान लय लीना, मोंने कर्म
अखिंदा ॥ नमो० ॥ १३ ॥ केवल ज्ञान लही प्रभु
निर्मल, स्थापन चउविह संघ करे ॥ चरण कमल
सुर रेचित-कमल शिर, धरत धरणि जन तिमिर हरे ॥
शत सम आयु करी प्रभू पूरण, सिद्ध वधू कर ग्रह-

रंदा ॥ नमो० ॥१४॥ अजर अमर अविनाशि निरजन, सिद्ध बुद्ध समरो रंगे ॥ परम महोदय परमातम पद, लहियें जिन सेवन संगे ॥ रोग सोग दोहग दूर ख जावे, पावे सोहग सुखकंदा ॥ नमो० ॥ ॥ १५ ॥ अरि करी जलण जलोदर जल भय, नाम जप्या सहु दूर टले ॥ प्रभुपद पद्म सेवनसे कमला, रग रसाला आय मिले ॥ रूपविजय कहे सुनत लावनी, पावे चित्त परमानदा ॥ नमो० ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री वीरजगगतननी लावणी ॥

॥ अनतबली निजराजी जगतपति, चरण अंगुठे मेरु कंपाया ॥ देव देवी मिल करे वीनति, सब सुर पति आनद पाया ॥ ए आकणी ॥ तेरे गुणकी महिमा अब पाइ, इतनो गुनो बगसीस करो ॥ खमो अपराध प्रभु पापको, प्रेम नजर हम उपर धरो ॥ करि स्तुति उठे सुरि सुर सब, जन्म मोछव अब करणो खरो ॥ अधिक अधिक धरि हर्ष हियेमें, आलसअपने तनको हरो ॥ शुद्ध तन मनसें करो महोत्सव, शिव रमणीकु सिताब वरो ॥ जगतिसें जर धर्यो ही

ाकुं, अब दुर्गतिसुं काहेकु मरो ॥ जनम मरनकु भेद
ेया हे, सो जिन जक्तिसें नहाया ॥ देव० ॥१॥ सु
नरकी सपत सुख दायक, जिनवरकी ए जक्ति जली
। दोहिलो तु मत होय जीवका, आए तेरी ऋदि आवे
हली ॥ जवाय कलश हाथोमे लीना, सुरपतिका मन
ुवा रली ॥ जय जय शब्द मुखसें सब बोले, विघय
ाये तस दूर टली ॥ हरख वदन कर सुर सब गावे,
आनद घमी मुऊ आय मिली ॥ जन्म हमारो लेखे
लग्यो हे, सुलकी सेज सुरलोक ढली ॥ धन धन हे
जिनकी जिदगानी, जिनवरका गुण मुख गाया ॥
देव० ॥ २ ॥ करे निरत जिनवरके आगें, वाजाकी
धुन वाज रही ॥ सुरतका सुर नर हे सवला, महिमा
मोसें न जाय कही॥ अग मोक हित जोरु करे सब,
सफल घमी मेरी आज जई ॥ उदय आनद दिनकर
घर उग्यो, कुमति कलेसए अलगी गई ॥ सुर नरका
सुलकी नहीं गिनती, अमरापुर पद जाय लही ॥ छ
पन कुमारी जिनगुन गावे, मुखसू कथन कर कीरति
कही ॥ ऐसो उलट धरि करतां महोत्सव, हिरदे ह

रख अधिका आया ॥ देव० ॥ ३ ॥ मेरु शिखर पर कलस ढाल कर, हाथ जोड सुर आगें खडे ॥ में चरणोंका चाकर तेरा, अरज करे यु खडे खडे ॥ छत्र चमर ढाले जिनवर पर, ललि ललि सब सुर पाय पडे ॥हुकम करो तो नीर नमणको, सब सुरपतिके सीस चडे ॥ इण विधिसें भक्ति जे करता, भव भवका सब पाप जडे ॥ तुम गुनको सुर पार नहिं ले, जिन दास कैसो कैसो रडे ॥फूल सुगंधी नीर टटकता,सुर सब प्रभुकु घर लाया ॥ देव० ॥ ४ ॥

॥ अथ जीनउपदेश लावणी ॥

॥ निर्धनका धनवान हुवा तब, दानपुण्य करना चइयें॥श्रावक हो के हो भवि प्राणी, द्वादश व्रत धरना चइयें ॥ मनुष्यजन्म मिल गया तेरे ताइ, दया धरम करनां चइयें ॥ तीन रतनकु ओर समकितकु, शुद्ध समकित मान्या चइयें ॥ वडी फजरमें कुमति तजकें जिनमंदिर जाना चइयें ॥ विषफल तजके अमृत फलको, चतुरा तुम खानां चइये ॥सात व्यसनकु छोड चउदस, नियम नित्य करनां चइयें ॥श्रा०॥१॥उत्तम

कुलकी तरिया हो कें, पानिव्रत रखनां चइयें।।पन्डित हुई न्नविप्राणि मिजलसमे, मृषा न्नखनांना चइयें।। उप शम उग्या वृक्ष जिनोका, अमृतफल खाना चइयें ।। सुकृत करणी करो सखी तुम, अकृतसे कुरनां चइयें ।। श्रा० ।। २ ।। सील मुक्ता करचेला हुवा तव, सुगुरु वचन मान्या चइयें।। न्नोजन हो के हो न्नवि प्राणी, अन्नक्ष खाना नहि चइयें।।जिनशासनका न्नेख लिया तव, आचारसे चलना चइयें ।। काम क्रोध माया लोन्न उनकु, इर सदा तजनां चइयें ।।श्रा०।।३।। ज्यां ज्यां तीरथ हे जिनवरका, त्यां सवकुं चलना चइयें ।। कायाशक्ति हो न्नवि प्राणी, तुमकु व्रत करनां चइयें।। वार वार नरन्नव नहि मिलता,ए याद रखना चइए ।। ।। सत्तगुरुकी शीख सुनके, खिजमतमें रहेनां च-इये ।। दीपचंद कर जोमी कहे मेरी, शीख रुदे ध-रना चइये ।। श्रा०।। ४ ।। इति ।।

।। आदीनाथनी लावणी–होरीनी चालमां ।।

।। आदि जिनेसर कियो पारणो,आरस सेलमीयां ।।श्रा०।।ए टेक ।। घमा एकसो आठ सेरमी, रस न्नरि

था हे नीका ॥ उलट ज्ञाव श्रेयांस वहोरावे, मांन्न दवी आवुका रे आ० ॥ १ ॥ देव दुदुन्नि वाज रही हे; सोनइयारी विरखा ॥ चारे मासशु कियो पारणो, गइ जूख सरव तिरखा रे ॥ आ० ॥२॥ रूद्धि सिद्धि कारज मन कामना, घर घर मगलाचार। दुनिया ह रख वधामणां कांइ, अखात्रीज तिवार रे ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥ सकट काटो विघन निवारो, राखो हमारी लाज ॥ वे कर जोमी नान्हू कहिता, रुषन्न देव महाराज रे ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ अथ केशरीयाजीनी लावणी

॥ श्रीरुषन्नदेव महाराज केसरीया, वेठा पहामोमे ॥ केसरी० ॥ आस पास गुलजार जमी, लग रही पाहामोमे ॥ ए आकणी ॥ टूक टूक पर हे धजा धजा पर, चोकी न्निछनकी ॥ सब श्रावक मिल पूजा करते, केसर चदनकी ॥श्री०॥१॥ खासा देवल वन्या देवल पर, कली चमवाइ ॥ अष्ट द्रव्य लइ पूजा करते, उद्योत सवाई ॥ श्री० ॥ २ ॥ शेत्रुजा गिरनार जीव तुम, अष्टापद जानां ॥ सोनगिरिके दरसन, करके,

चंपा पुरी ध्यानां ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चंपापुर उर पावां पुरी जीव, समेत शिखर जानां॥ मुक्तागिरिके दर्शन करके, आबुजी ध्यानां ॥ श्री० ॥ ४ ॥ रायणपुर उर गढ आबूजी, मार्गे तुगी गिरि जानां ॥ मगसीजीके दरिसन करकें, गोमीजी ध्यान। ॥ श्री० ॥५॥ श्रीशंखेश्वर दरिसन कर चप्त, तारंगे जाना ॥ पुरपट्टणके दरसन करकें, कलिकुन्ड ध्याना ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सब तीरथकी करी जातरा, घरकुं चो जाना ॥ कहे श्रीगंगादास न्नाई वाणी, न्नगवतकी लेनां ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ अथ नवपदजीनी लावणी ॥

॥ जगतमे नव पद जयकारी, पूजता रोग टले न्नारी ॥ ए आंकणी॥प्रथम पद तीर्थपति राजे, दोष अष्टादशकु त्याजे ॥ आठ प्राती हारज गाजे, जगत प्रनु गुण बारे साजे "॥दोहा॥ अष्ट करम दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाय॥सिद्द अनंत न्नजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥" प्रगट न्नयो निज स्वरुप भारी ॥ जगत० ॥ १ ॥ सूरि पदमे गौतम केशी उपमा चंद्र सूरज जैसी ॥ उगारयो राजा परदेशी,

एक भवमांहे शिव लेशी "॥दोहा॥चोथे पद पाठक नमु, श्रुतधारी उवज्झाय ॥ सव्वे साहु पचम पदे, धन्य धन्नो मुनिराय ॥" वखाण्यो वीर प्रभु भारी॥जगत० ॥ २ ॥ द्रव्य खटको श्रद्धा आवे, सम संवेगा दिक पावे ॥ विना ए ज्ञान नहिं किरिया,जैन दरस नसें भव तरिया "॥दोहा॥ ज्ञान पदारथ सातमे, प दमे आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमे निज पद साधे काम ॥" देखता वस्तु जगत सारी ॥जगत०॥ ॥ ३ ॥ जोगकी महिमा व्र जाणी, चक्रवर ठोको सव राणी ॥जति दश धर्मे करी सोहे, मुनि श्रावक सव मन मोहे "॥दोहा॥कर्म निकाचित कापवा, त प कुठार करधाय॥क्षमासु नवमु पद धरे,कर्म मूल कट जाय ॥ भजो तुम नवपद सुखकारी ॥जगत० ॥४॥ श्री सिद्धचक्र भजो भाइ,अचामल तपनीधि थाइ ॥ पाप-विहु जोगें परिहरजो, भाव श्रीपालपरे करजो "॥दोहा॥ सवत उगणी सत्तरा शोम, जे पोषी श्री पास॥चेतर धवलपूनम दिने,सकल फली मुज आशा॥ वाल कहे नव पद छवि प्यारी ॥जगत० ॥ ५ ॥

॥ अथ आरति ॥

त्रिविध रत्नमणि जडित रचावो, थाळ विशाळ अनोपम लावो ॥ आरति उतारो प्रभुजीने आगे, भावना भावि शिवसुख मागे ॥ आ० ॥ १ ॥ सात चौद ने एकवीश भेवा, त्रण प्रदक्षिण देवा ॥ आ० ॥ २ ॥ जीम जीम जळधारा देइ जपे, तिम तिम दोहग थरहर कंपे ॥ आ० ॥ ३ ॥ बहु भव संचित पाप पणासे, द्रव्य पुजाथी भाव उल्लासे ॥ ॥ आ० ॥ ४ ॥ चौद भुवनमां जीनजीने तोले, कोइ नहीं आरति इम बोले ॥ आ० ५ ॥

॥ अथ मंगळीक दीवो ॥

॥ दीवोरे दीवो मंगळीक दीवो, आरती उतारीने चिरंजीवो ॥दी०॥१॥ सोहामणो घेर पर्वदीवाली, अंबर खेले अबलावाली ॥ दी० ॥२॥ देपालभणे एण देव अजुआली, भावें भगते विघ्न निवारी ॥दी०॥३॥ देपालभणे इणें कलीकाले, आरती उतारी राजा कुमारपाले ॥दी० ॥४॥ तुम घर मंगलीक अम घर मंगलीक, चतुर्विध संघघेर मंगळीक होजो ॥दीवो०॥५॥ इति ॥

मारे जन्म मरणनो जोरो, तें तोड्यो तेहथी दोरो; मारो पासो न मेले राग, तमे प्रभुजी थया वीतराग ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ मुने मायाए मूक्यो पासी, तु तो निर्बन्धन अविनाशी, हु तो समकितथी अधूरो, तु तो सकल पदारथ पूरो ॥ सुणो० ॥६॥ मारे छो प्रभु तुंही एक, तारे मुज सरीखा अनेक, हु तो मनथी न मुकु मान, तु तो मान रहित भगवान ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ मारु कीधु कशु नवि थाय, तुं तो रंकने करे राय, एक करो मुज महेरवानी, मारो मुजरो लेजो मानी ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ एक वार जो नजरे नीरखो, तो करो मुजने तुम सरीखो, जो सेवक सरीखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे ॥ सुणो० ॥ ९ ॥ भवोभव तुम चरणनी सेवा, हु तो मागु देवाधिदेवा, सामु जुठने सेवक जाणी, एवी उदयरत्ननी वाणी ॥ सुणो० १०

॥ श्री कुंथुनाथ स्वामीनु स्तवन ॥

राग गुर्जरी

अंबर देहो मोरारी, हमारो–ए देशी.

कुंथुजिन मनडुं किमही न वाजे, हो कुं०,

जिम जिम जतन करीने राखु, तिम तिम अलगु न्हाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती उजड, गयण पायाले जाय, साप खायने मुखडु थोथु[1], एह उखाणो न्याय हो ॥ कु० ॥२॥ मुक्ति तणा अभिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अभ्यासे, वयरीडु काइ एहवु चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कु० ॥ ३ ॥ आगम आगम-धरने हाथे, नावे किणविध आकु, किहांकणे जो हठ करी हटकु तो, व्याल तणीपरे वाकु हो ॥ कु० ॥४॥ जो ठग कहु तो ठगतु न देखु, शाहुकार पण नाही, सर्व मांहेने सहुथी अलगु, ए अचरिज मन माही हो ॥ कु० ॥५॥ जे जे कहु ते कान न धारे, आप मते रहे कालो, सुरनर पंडितजन समजावे, समजे न माहरो सालो[2] हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ में जाण्यु ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले, बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोइ न जेले हो ॥ कु० ॥७॥ मन साध्यु तेणे सघलुं साध्यु, एह वात नहि खोटी, एम कहे साध्युं ते नवि मानु, ए कही वात

१ खाली २ कुमति स्त्रीनो भाइ.